X
1

BIBLIOTHECA INDICA:

A

COLLECTION OF ORIENTAL WORKS

PUBLISHED BY THE

ASIATIC SOCIETY OF BENGAL.

New Series, No. 1273.

THE PADUMĀWATI

OF

MALIK MUḤAMMAD JAISI

EDITED, WITH A COMMENTARY, TRANSLATION, AND CRITICAL NOTES

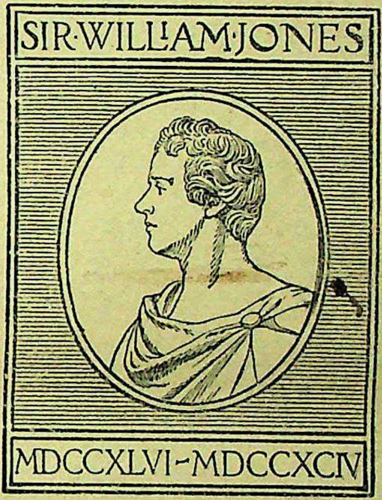

BY

G. A. GRIERSON, C.I.E., Ph.D., D.Litt., I.C.S. (*Retd.*),

AND

MAHĀMAHOPĀDHYĀYA SUDHĀKARA DVIVEDI, F.A.U.,

First Professor, Government Sanskrit College, Benares.

FASCICULUS VI.

CALCUTTA:

PRINTED AT THE BAPTIST MISSION PRESS,

AND PUBLISHED BY THE

ASIATIC SOCIETY, 1, PARK STREET.

1911.

X / 1

LIST OF BOOKS FOR SALE

AT THE LIBRARY OF THE

Asiatic Society of Bengal,

No. 1, PARK STREET, CALCUTTA,

AND OBTAINABLE FROM

The Society's Agents—

MR. BERNARD QUARITCH, 11, *Grafton Street, New Bond Street, London, W.*,
AND MR. OTTO HARRASSOWITZ, BOOKSELLER, *Leipzig, Germany.*

*Complete copies of those works marked with an asterisk * cannot be supplied—some of the Fasciculi being out of stock.*

BIBLIOTHECA INDICA.

Sanskrit Series.

Advaitachintā Kaustubha, Fasc. 1-3 @ /10/ each ...	Rs. 1	14
Aitarēya Brāhmaṇa, Vol. I, Fasc. 1-5; Vol. II, Fasc. 1-5; Vol. III, Fasc. 1-5, Vol. IV, Fasc. 1-8 @ /10/ each	14	6
Aitareyalocana	2	0
*Anu Bhāshya, Fasc. 2-5 @ /10/ each	2	8
Aṣṭasāhasrikā Prajñāpāramitā, Fasc. 1-6 @ /10/ each ...	3	12
Ātmatattvaviveka, Fasc. I	0	10
Açvavaidyaka, Fasc. 1-5 @ /10/ each	3	2
Avadāna Kalpalatā, (Sans. and Tibetan) Vol. I, Fasc. 1-8. Vol. II, Fasc. 1-8 @ 1/ each	16	0
Bālam Bhaṭṭī, Vol. I, Fasc. 1-2, Vol. II, Fasc. 1, @ /10/ each ...	1	14
Baudhāyana Srauta Sūtra, Fasc. 1-3; Vol. II, Fasc. 1-3 @ /10/ each	3	12
Bhāṭṭa Dīpikā, Vol. I, Fasc. 1-6; Vol. II, Fasc. 1, @ /10/ each ...	4	6
Bauddhastotrasangraha	2	0
Bṛhaddevatā, Fasc. 1-4 @ /10/ each	2	8
Bṛhaddharma Purāṇa, Fasc. 1-6 @ /10/ each	3	12
Bodhicaryāvatāra of Çāntideva, Fasc. 1-5 @ /10/ each ...	3	2
Cri Cantinatha Charita, Fasc. 1-3	1	14
Çatadūṣaṇī, Fasc. 1-2 @ /10/ each	1	4
Catalogue of Sanskrit Books and MSS., Fasc. 1-4 @ 2/ each ...	8	0
Çatapatha Brāhmaṇa, Vol. I, Fasc. 1-7; Vol. II, Fasc. 1-5 Vol. III, Fasc. 1-7; Vol. V, Fasc. 1-4 @ /10/ each ...	14	6
Ditto Vol. VI, Fasc. 1-3 @ 1/4/ each	3	2
Ditto Vol. VII, Fasc. 1-5 @ /10/	3	2
Çatasāhasrikā-prajñāpāramitā, Part I, Fasc. 1-14 @ /10/ each ...	8	12
*Caturvarga Chintāmaṇi, Vol. II, Fasc. 1-25; Vol. III, Part I, Fasc. 1-18, Part II, Fasc. 1-10; Vol. IV, Fasc. 1-6 @ /10/ each ...	36	14
Ditto Vol. IV, Fasc. 7-8, @ 1/4/ each ...	2	8
Ditto Vol. IV, Fasc. 8-9 @ /10/	1	4
Çlokavartika, (English), Fasc. 1-7 @ 1/4/ each	8	12
*Çrauta Sūtra of Çānkhāyana, Vol I, Fasc. 1-7; Vol. II, Fasc. 1-4; Vol. III, Fasc 1-4; Vol. 4, Fasc. 1 @ /10/ each ...	10	0
Çrī Bhāshyam, Fasc. 1-3 @ /10/ each	1	14
Dāna Kriyā Kaumudī, Fasc. 1-2 @ /10/ each	1	4
Gadadhara Paddhati Kālasāra, Vol. I, Fasc. 1-7 @ /10/ each ...	4	6
Ditto Ācārasāra, Vol. II, Fasc. 1-4	3	2
Gobhilīya Gṛhya Sūtra, Vol. I, @ /10/ each	3	2
Ditto Vol. II, Fasc. 1-2 @ 1/4 /each ...	2	8
Ditto (Appendix) Gobhila Parisista	2	0
Ditto Grihya Sangraha	0	10
Haralata	1	14
Karmapradiph, Fasc. 1	1	4
Kāla Viveka, Fasc. 1-7 @ /10/ each	4	6
Kātantra, Fasc. 1-6 @ /12/ each	4	8
Kathā Sarit Sāgara, (English) Fasc. 1-14 @ 1/4/ each ...	17	8
Madana Pārijāta, Fasc 1-11 @ /10/ each	6	14
Mahā-bhāsya-pradīpodyota, Vol. I, Fasc. 1-9; Vol. II, Fasc. 1-12; Vol. III, Fasc. 1-10 @ /10/ each	19	6
Ditto Vol. IV, Fasc. 1 @ 1/4	1	4
Manuṭīkā Saṅgraha, Fasc. 1-3 @ /10/ each	1	14
Mārkaṇḍeya Purāṇa, (English) Fasc. 1-9 @ 1/- each	9	0
*Mīmāṁsā Darçana, Fasc. 10-19 @ /10/ each	6	4
Nyāyavārtika, Fasc. 2-6 @ /10/ each	8	2
Nityācārapaddhati, Fasc. 1-7 @ /10/ each	4	6

X
1.

BIBLIOTHECA INDICA:

A

COLLECTION OF ORIENTAL WORKS

PUBLISHED BY THE

ASIATIC SOCIETY OF BENGAL.

NEW SERIES, NOS. 877, 920, 951, 1024, 1172, & 1273.

THE PADUMĀWATI

OF

MALIK MUḤAMMAD JAISI

EDITED, WITH A COMMENTARY, TRANSLATION, AND CRITICAL NOTES

BY

G. A. GRIERSON, C.I.E., PH.D., D.LITT., I.C.S. (*Retd.*).

AND

MAHĀMAHOPĀDHYĀYA SUDHĀKARA DVIVEDI, F.A.U.,
First Professor, Government Sanskrit College, Benares.

VOL. I.

TEXT, COMMENTARY, AND CRITICAL NOTES.

CANTOS I—XXV (VV. 1—286).

CALCUTTA:
PRINTED AT THE BAPTIST MISSION PRESS,
AND PUBLISHED BY THE
ASIATIC SOCIETY, 1, PARK STREET.
1911.

CONTENTS.

		Page
Introduction (*Preliminary*)	... ...	1
Text—		
१।	असतुति-खंड	२
२।	सिंघल-दीप-बरनन-खंड	३७
३।	जनम-खंड	७८
४।	मानसरोदक-खंड	६४
५।	सुआ-खंड	१०७
६।	राजा-रतन-सेन जनम-खंड	११८
७।	बनिजारा-खंड	१२०
८।	नागमती-सुआ-संवाद-खंड	१३४
९।	राजा-सुआ-संवाद-खंड	१४९
१०।	नखसिख-खंड	१६२
११।	प्रेम-खंड	२२०
१२।	जोगी-खंड	२३८
१३।	राजा-गजपति-संवाद-खंड	२८३
१४।	बोहित-खंड	३१०
१५।	सात-समुदर-खंड	३१८
१६।	सिंघल-दीप-भाउ-खंड	३४६
१७।	मंडप-गवँन-खंड	३७०
१८।	पदुमावति-बिओग-खंड	३७८
१९।	पदुमावति-सुआ-भेँट-खंड	३९२
२०।	बसंत-खंड	४०९
२१।	राजा-रतन-सेन-सती-खंड	४४५
२२।	पारबती-महेस-खंड	४६२
२३।	राजा-गढ़-छेँका-खंड	४८२
२४।	मंत्री-खंड	५३०
२५।	सूरी-खंड	५७३
Critical notes. Vv. 1–286	... ...	1–54

With much sorrow I here record the lamented death of my old friend and colleague Mahāmahōpādhyāya Paṇḍit Sudhākara Dvivēdī, the joint editor of this poem.

It was his custom, in the midst of other multifarious occupations, to write the admirable commentary as it was required by the printer, and the present fasciculus, the last few sheets of which have not had the benefit of his revision, contain the final instalment of his work.

Until arrangements can be made by the Asiatic Society of Bengal for another scholar to carry on his task, the publication of this edition of the Padumāwati is necessarily suspended.

As it stands, this first volume fulfils one of the objects with which the edition was undertaken. It gives a very complete example of the old Awadhī dialect spoken in the 16th century A.D. For those who wish to study the poem for its contents, there are published in India numerous uncritical editions of the text, which will meet their requirements.

GEORGE A. GRIERSON.

का प्रथम-पुरुष, पुंलिङ्ग, भूत-काल, एक-वचन। कुसिटी = कुष्ठी = कोढी। कर = का। भेसू = वेष = सूरत। गिरिजा-पति = पार्वती-पति। सत = सत्य = निश्चय। आहि = अस्ति = है। महेसू = महेश = महादेव। चीन्हइ = परिचयति = चीन्हता है। सोइ = स एव = वही। तेहि = तिसे। खोजा = खोजइ (अन्विष्यति) का प्रथम-पुरुष, भूत-काल, पुंलिङ्ग का एक-वचन। जस = यथा = जैसे। बिकरम = विक्रम = अवन्ती का प्रसिद्ध राजा। अउ = और = अपि च। भोजा = भोज = धारा नगरी का प्रसिद्ध राजा। कइ = कि = वा। जिउ = जीव। तंत = तन्त्र = जिस ग्रन्थ में मारण, मोहन इत्यादि की विधि लिखी रहती है। मंत = मन्त्र। सउँ = से। हेरा = हेरइ (हेड़ते) का प्रथम-पुरुष, पुंलिङ्ग, भूत-काल, एक-वचन। गएउ = गया (अगात्)। हेराय = खो। मेरा = मेल॥

बिनु = विना। पंथ = पन्थाः = राह। पाइअ = प्राप्यते = मिलता है। भूलइ = भ्रमति = भूलता है। मेट = मिटाता है। जोगी = योगी। तब = तदा। जब = यदा। गोरख = प्रसिद्ध अवधूत गोरखनाथ। भेँट = समागम = मुलाकात॥

महादेव की भाषा सुन कर, राजा ने मन में लखा कि यह कोई सिद्धपुरुष है। (क्योंकि) सिद्ध की देह पर मक्खी नहीं बैठती, सिद्ध आँखों पर पलक नहीं लगाते (एक टक विना पलक भाँजे देखा करते हैं)। सिद्ध के संग छाया नहीं होती, अर्थात् सिद्ध के देह की छाया नहीं देख पडती। सिद्ध को भूख और माया नहीं होती। यदि जगत् में भगवान् ने सिद्धि की अर्थात् सिद्धि दी, तो (वह पुरुष चाहे) प्रगट वा गुप्त रहे (उसे) कौन चीन्हता है अर्थात् कोई नहीं चीन्हता। (राजा मन में विचार करता है कि) बैल पर चढे कोढी का वेष किए निश्चय पार्वती-पति महादेव हैं। इन्हें वही चीन्हता है जो इन की खोज में रहता है; जैसे विक्रम और राजा भोज। वा (जिस ने) जीव से तन्त्र और मन्त्र को हेरा है (वह इन्हें पाता है)। जो उस (पुरुष) से मेल हुआ तो (मेल होते-ही) वह हेराय गया, अर्थात् ईश्वर से मेल होते-ही वह पुरुष तन्मय हो कर लुप्त हो जाता है॥

गुरु के विना राह नहीं मिलती, जो (राह को) मिटा देता है वही भूलता है। जब गोरखनाथ (ऐसे गुरु) से भेँट हो तब योगी सिद्ध होता है॥

राजा विक्रम भर्तृहरि के बडे भाई थे। इनकी वीरता और सिद्धि बैतालपचीसी और सिंहासनबत्तीसी में प्रसिद्ध है। राजा भोज बडे संस्कृतानुरागी थे। योग इत्यादि में बडे निपुण थे। भोजवृत्ति, राजमार्त्तण्ड इत्यादि अनेक ग्रन्थ इन के बनाए

हैं। ये धारा नगरी के राजा थे। भोजप्रबन्ध में इनकी विस्तृत कथा लिखी है। गोरखनाथ के लिये १२८ वें दोहे की टीका देखो ॥ २१७ ॥

चउपाई।

ततखन रतनसेन गहबरा। छाँडि डफार पाउँ लेइ परा ॥
मातइ पितइ जरम कित पाला। जउँ अस फाँद पेम गिअ घाला ॥
धरती सरग मिले हुत दोऊ। कित निनार कइ दीन्ह बिछोऊ ॥
पदिक पदारथ कर हुत खोआ। टूटहिँ रतन रतन तस रोआ ॥
गगन मेघ जस बरसहिँ भली। पुहुमी पूरि सलिल होइ चली ॥
साएर उपटि सिखर गे पाटी। जरइ पानि पाहन हिअ फाटी ॥
पउन पानि होइ होइ सब गरहीँ। पेम फाँद केहु जनि परहीँ ॥

दोहा।

तस रोअइ जो जरइ जिउ गरइ रकत अउ माँसु।
रोअँ रोअँ सब रोअहिँ सोत सोत भरि आँसु ॥ २१८ ॥

ततखन = तत्क्षणे = तिसी समय = उसी समय। रतन-सेन = रत्न-सेन (राजा)। गहबरा = गह्वर हो गया = गहन हो गया, अर्थात् व्याकुल हो गया। छाँडि = छोड कर (संत्यज्य)। डफार = पुक्का फार रोदन = गाल फार रोदन। पाउँ = पाद = पैर। लेइ = ले कर = पकड कर (आलाय)। परा = परइ (पतति) का प्रथम-पुरुष, पुंलिङ्ग, भूत-काल का एक-वचन। मातइ = माता ने। पितइ = पिता ने। जरम = जन्म दे कर। कित = कुतः = क्यों। पाला = पालइ (पालति) का प्रथम-पुरुष भूत-काल, पुंलिङ्ग का एक वचन। जउँ = यदि = जो। अस = एतादृश = ऐसा। फाँद = फंदा = पाश = फसरी। पेम = प्रेम। गिअ = ग्रीवा = गला। घाला = घालइ (गेरइ = गारयति) का प्रथम-पुरुष, पुंलिङ्ग, भूत-काल का एक-वचन। धरती = धरित्री = पृथिवी। सरग = स्वर्ग। मिले = मिले हुए (मिल सङ्गमे से)। हुत = थे। दोऊ = द्वावपि = दोनो। निनार = निनय = निलग्न = भिन्न भिन्न। दीन्ह = दिया (अदात्) का बहु-वचन। बिछोऊ = विच्छुडन = वियोग। पदिक = रत्न-भूषण। पदारथ = पदार्थ। कर = हाथ। खोआ =

खोग्रद (स्यति) का उत्तम-पुरुष, भूत-काल, पुंलिङ्ग का एक-वचन। टूटहिँ = चुय्यन्ति = टूटते हैँ। रतन = रत्न = जवाहिर। रतन = रत्न-सेन (राजा)। तस = तथा = तैसे। रोग्रा = रोग्रद्द (रोदिति) का प्रथम-पुरुष, भूत-काल, पुंलिङ्ग का एक-वचन। गगन = आकाश। मेघ = बादल = मेह। जस = जैसे = यथा। बरसहिँ = वर्षन्ति = बरसते हैँ। भली = वरम् = भद्रम् = अच्छी तरह से। पुडुमी = पृथिवी। पूरि = पूर हो कर = आपूर्य। सलिल = जल = पानी। होइ = भूत्वा = हो कर। चली = चलइ (चलति) का प्रथम-पुरुष, स्त्रीलिङ्ग, भूत-काल का एक-वचन। साग्रर = सागर = जलस्थान। उपटि = उत्पद्य = भर कर। सिखर = शिखर = चोटी। गे = गए। पाटी = पट = भर। जरइ = ज्वलति = जरता है। पानि = पानीय = पानी। पाहन = पाषाण = पत्थल। हिय = हृदय। फाटी = फटइ (स्फुटति) का भूत-काल, फाटा पुंलिङ्ग के स्थान मेँ फाटी। पउन = पवन = वायु = हवा। सब = सर्व। गरहीँ = गरहिँ = गरइ (गरति) का बहु-वचन = गलते हैँ। केहु = केऽपि = कोई। जनि = मत। परहीँ = परइ (पतति) का बहु-वचन, यहाँ परहिँ = पडेँ॥

जिउ = जीव। गरइ = गरति = गलता है। रकत = रक्त = लोहू। माँसु = माँस = मांस। रोग्रँ = रोम = रोग्राँ। रोग्रहिँ = रुदन्ति = रोते हैँ। सोत सोत = सूत सूत। भरि = भृत्वा = भर कर। आँसु = अश्रु = आँस॥

उस क्षण रत्नसेन व्याकुल हो गया, पुक्का फार, उच्च स्वर निकाल निकाल कर, (महादेव का) पैर पकड कर, (गिर) पडा। (रो कर कहने लगा कि) यदि ऐसा ही गले मेँ प्रेम का फन्दा पडना (डालना) था तो माता-पिता ने पैदा (जनमा) कर क्योँ पाला। पृथ्वी और स्वर्ग दोनोँ मिले हुए थे, क्योँ (ईश्वर ने) अलग कर वियोग कर दिया। (हाय) जो रत्नाभरणरूप पदार्थ हाथ मेँ था (उसे) मैँ ने खो दिया अर्थात् आई हुई पद्मावती हाथ से निकल गई। (इस प्रकार से) रत्नसेन ने रोया, (आँसू के जल टपकते हैँ जैसे) रत्न (मोती) टूट टूट कर गिरते होँ। (वा) आकाश से जैसे मेघ बरसते हैँ (जिस से) अच्छी तरह पृथ्वी भर गई (पीछे भरने के बाद जानोँ वही पृथ्वी) पानी हो कर बह चली। (सब) स्थल भर कर (पहाडोँ) की चोटिआँ डूब गईँ; (रत्नसेन के आसूँ के) पानी जरते हैँ, जिन के लगने से पत्थल के कलेजे (हृदय) फट गए। हवा पानी हो हो कर गलते हैँ, (भगवान् करे कि) प्रेम-फन्द मेँ कोई न पडे॥

जिस का जीव (विरहाग्नि से) जलता है वह उसी तरह से रोता है, (और) उस के रक्त और मांस गलते हैं, अर्थात् गल गल कर गिरते हैं, सूत सूत (अङ्ग के अवयव) आँसू से भर (उस के) रोएँ रोएँ सब रोते हैं ॥ २१८ ॥

चउपाई ।

रोअत बूडि उठा संसारू । महादेओ तब भएउ मयारू ॥
कहेसि न रोउ बहुत तइँ रोआ । अब ईसुर भा दारिद-खोआ ॥
जो दुख सहइ होइ सुख ओ का । दुख बिनु सुख न जाइ सिउ-लोका ॥
अब तूँ सिद्ध भया सुधि पाई । दरपन कया छूटि गइ काई ॥
कहउँ बात अब हो उपदेसी । लागि पंथ भूले परदेसी ॥
जउँ लहि चोर सेँधि नहिँ देई । राजा केर न मूसइ पेई ॥
चढइ त जाइ बार वह खूँदी । परइ त सेँधि सीस सउँ मूँदी ॥

दोहा ।

कहउँ सो तोहि सिंघल गढ हइ खँड सात चढाउ ।
फिरइ न कोई जिअत जिउ सरग पंथ देइ पाउ ॥ २१९ ॥

रोअत = रुदन् = रोते । बूडि = बूड = डूब (ब्रुड संवरणे से) । उठा = उठइ (उत्तिष्ठते) का पुंलिङ्ग, प्रथम-पुरुष, भूत-काल का एक-वचन । संसारू = संसार = जगत् । महादेओ = महादेव । तब = तदा । भएउ = बभूव = भया = हुआ । मयारू = मायालय = दयालु । कहेसि = कहा (अकथयत्) । रोउ = रोओ (रोदीः) । बहुत = बहुतर = अधिक । तइँ = तैँ । रोआ = रोदइ (रोदिति) का प्रथम-पुरुष, भूत-काल का एक-वचन । अब = इदानीम् । ईसुर = ईश्वर । भा = बभूव = हुआ । दारिद = दरिद्र । खोआ = खोने-वाला । जो = यः । दुख = दुःख । सहइ = सहते = सहता है । होइ = (भवति) होता है । ओ का = उस को । जाइ = जाता है (याति) । सिउ-लोका = शिव-लोक = कैलास । तूँ = त्वम् । भया = (बभूव) हुआ । सुधि = शुद्धि = पवित्रता । पाई = पावइ (प्राप्नोति) का प्रथम-पुरुष, भूत-काल, स्त्रीलिङ्ग का एक-वचन । दरपन = दर्पण = आरसी = ऐना । कया = काय = शरीर । गइ = गई (अगात्) । काई = कायी = मैला । कहउँ = कहता हूँ (कथयामि) । बात = वार्त्ता । हो = हे = अहो ।

उपदेसी = उपदेशी = उपदेश-योग्य। लागि = लग कर (लगिला)। पंथ = पन्थाः = राह। भूले = भूलइ (भ्रमति) का प्रथम-पुरुष, भूत-काल, पुंलिङ्ग का बहु-वचन। परदेसी = परदेशी = परदेश के लोग। जउँ = यदि। लहि = लगि = तक = अवधि। चोर = चौर। सँधि = सन्धि। देई = देइ (दत्ते) = देता है। केर = का। मूसइ = मूसने (मुष धातु से)। पेई = पाई = पाता है (प्राप्नोति)। चढइ = चढे (उच्चलेत्)। त = तदा = तर्हि = तो। बार = वार = द्वार। खूँदी = खुन्दन। परइ = पतेत् = पडे। सीस = शीर्ष = शिर। सउँ = से = तेँ। मूँदी = मुद्रित ॥

सो = सो = वह, यहाँ उस। तोहि = तुझ से। सिंघलगढ = सिंहल-गाढ = सिंहल का किला। हइ = है (अस्ति)। खँड = खण्ड = महल। सात = सप्त। चढाउ = (उच्चलन) = चढाव। फिरइ = लौटता है (परावर्त्तते, निवर्त्तते)। कोई = कोऽपि। जिअत = जीवन् = जीता। जिउ = जीव। सरग = स्वर्ग। दइ = दत्त्वा = दे कर। पाउ = पाद = पैर ॥

(रत्न-सेन के) रोते (आँस से) संसार बूड उठा, तब महादेव दयालु हुए। (और) बोले कि बहुत रो चुका अब तूँ न रो, अब ईश्वर (तेरे) दरिद्र के खोने पर हुआ। जो दुःख सहता है उसे (पीछे से) सुख होता है, दुःख किए विना (कोई) सुख से शिवलोक में नहीँ जाता। अब तूँ सिद्ध हो गया, तैँ ने पवित्रता को पाया, शरीर-दर्पण की काई छूट गई। हे (रत्न-सेन) अब (एक) उपदेश-योग्य बात कहता हूँ, (जिस के) लिये परदेशी (लोग) राह में भटके हैँ। जब तक चोर सँध नहीँ देता तब तक राजा को नहीँ मूसने पाता। यदि (वह चोर) चढे तो दरवाजे-ही पर खूँदा जाय; और (गिर) पडे तो सँध-ही मेँ शिर गाडा (मूँदा) जाय ॥

तुझ से कहता हूँ, उस सिंहलगढ में सात महल की चढाई है, सो स्वर्ग की राह में पावँ दे कर, कोई जीता जीव नहीँ लौटता है ॥ २१९ ॥

चउपाई।

गढ तस बाँक जइस तोरि काया। परखि देखु यह ओहि कइ छाया ॥
पाइअ नाहिँ जूझि हठ कीन्हे। जेइँ पावा तेइँ आपुहिँ चीन्हे ॥
नउ पउरी तेहि गढ मँझिआरा। अउ तहँ फिरहिँ पाँच कोटवारा ॥
दसउँ दुआर गुपुत एक नाँकी। अगम चढाउ बाट सुठि बाँकी ॥

जउँ लहि भेद चढइ होइ चाँटी ॥
भेदी कोइ जाइ ओहि घाँटी । तेहि मँह पंथ कहउँ तोहि पाँहा ॥
गढ तर एक कुंड अउगाहा । जुआ पइँत जिउ लाउ जुआरी ॥
चोर पइठि जस सँधि सँवारी ।

दोहा ।

जस मरजिआ समुँद धसइ हाथ आउ तब सीपु ।
ढूँढि लेहु वह सरग दुआरी अउ चढु सिंघल-दीपु ॥ २२० ॥

गढ = गाढ = दुर्ग = किला । तस = तथा = तैसा । बाँक = वक्र = कठिन = बाँका । जइस = यथा = जैसा । काया = काय = शरीर । परखि = परीक्ष्य = परीक्षा कर । देखु = पश्य = देखो । यह = अयम् । ओहि कइ = उस की । छाया = प्रतिबिम्ब = परिछाहीँ । पाइअ = प्राप्यते = पाया जाता है । नाहिँ = नहीँ = न हि । जूझि = युद्ध । हठ = हठेन = जबर्दस्ती । कीन्हे = करने से (डुकृञ् करणे से) । जेइँ = जिन्होँ ने = यैः । पावा = पाया = प्राप्नोत् । तेइँ = तीन्होँ ने = तैः । आपुहिँ = अपने से = स्वयम् = आत्मतः । चीन्हे = चीन्हने से = परिचय करने से । नउ = नव = नौ । पउरी = प्रतोली = पुरद्वारी = डेवढी । मँझिआरा = मध्य मेँ । अउ = अपि च = और । तहँ = तत्र = तहाँ । फिरहिँ = भ्रमन्ति = घूमते हैँ । पाँच = पञ्च । कोटवारा = कोटपाल = कोतवाल । दसउँ = दशम = दसवाँ । दुआर = द्वार = दरवाजा । गुपुत = गुप्त = छिपी । एक = एक । नाँकी = नाँका = नोक्कण = नासिका (नाक) के ऐसा नुकीला स्थान । अगम = जाने योग्य नहीँ = दुर्गम । चढाउ = चढाव = (उच्चालन) । बाट = पथ = राह । सुठि = सुष्ठु = अच्छी-तरह से = अत्यन्त । बाँकी = वक्र = टेढी । भेदी = ज्ञाता = जानकार । कोइ = कोऽपि = कोई । जाइ = जाता है = याति । ओहि = उस । घाटी = घाँटी = घट्ट = घाट का स्त्रीलिङ्ग । जउँ = यदि = जो । लहि = लब्ध्वा = पा कर । चढइ = चढे (उच्चलेत्) । होइ = भूत्वा = हो कर । चाँटी = चीँटी = पिपीलिका । तर = तले = नीचे । कुंड = कुण्ड । अउगाहा = अवगाढ = अगाध । मँह = मध्ये = मेँ । पंथ = पन्थाः = राह । कहउँ = कथयामि = कहता हूँ । तोहि पाँहा = तुझ से । पइठि = प्रविश्य = पैठ कर । जस = यथा = जैसे । सँधि = सन्धि = भेद । सँवारी = सँवारइ (संमार्जयति) का प्रथम-पुरुष, भूत-काल, स्त्रीलिङ्ग का एक-वचन । जुआ = द्यूत = जूआ । पइँत = परितः = सर्वभावतः = सब तरह से । जिउ = जीव । लाउ = लगाता है = लगावइ । जुआरी = द्यूती = जुआ खेलने-वाला = द्यूतकारी ॥

मरजिश्रा = मर कर जीनेवाला = गोताखोर = समुद्र में गोता मारने-वाला। समुँद = समुद्र। धसइ = धँसता है (ध्वंसते)। हाथ = हस्त। श्राउ = श्रायाति = श्राता है, वा श्राती है। तव = तदा। सीपु = सीपी = शुक्ति। ढूँढि = ढूँढ (ढुण्ढि अन्वेषणे से)। लेऊ = लेश्रो। सरग-दुश्रारी = स्वर्ग-द्वारी = स्वर्ग का दरवाजा। चढु = चढ = चढो। सिंघल-दीपु = सिंहल-दीप ॥

(सिंहल) गढ वैसा ही बाँका है जैसी कि तुमारी शरीर, परीचा कर देखो तो यह शरीर उस (सिंहलगढ) की छाया है। हठ कर युद्ध करने से वह (दीप = द्वीप वा = ज्योति) नहीँ मिलता, जिन्हेँ ने (उस को) पाया वे लोग अपने को चीन्हने ही से (पाया)। उस गढ में नौ डेवढिश्राँ हैँ, श्रौर तहाँ (रात दिन) पाँच कोतवाल घूमा करते हैँ। दसवेँ दरवाजे पर एक छिपी ऊई नाकी है, (उस पर जाने में) अगम चढाव श्रौर बऊत ही कठिन राह है। कोई भेदी उस घाटी पर जाता है यदि भेद पा कर चौँटी हो कर चढे तो। गढ के नीचे एक अगाध कुण्ड है, उस मेँ जाने के लिये तुझ से राह कहता हूँ। चोर पैठ कर जैसे सँध को सुधारता है, जुश्राडी जैसे जुश्रा में सब तरह से जीव लगाता है ॥

जैसे गोताखोर समुद्र में धँसता है तब (उस के) हाथ सीपी श्राती है। उसी तरह उस स्वर्ग-द्वार को ढूँढ लेश्रो श्रौर सिंहल-दीप पर चढो ॥ ४१—४२ दोहे की टीका देखो। शरीरपच में दसएँ द्वार से ब्रह्मरन्ध्र लेना जहाँ अथाह ब्रह्माण्डकुण्ड मेँ सच्चिदानन्द-परब्रह्मरूपा दीपशिखोपमा पद्मावती बैठी है ॥ २२० ॥

चउपाई।

दसउँ दुश्रार तारु का लेखा। उलटि दिसिटि जो लाउ सो देखा ॥
जाइ सो जाइ साँस मन बंदी। जस धँसि लीन्ह कान्ह कालंदी ॥
तूँ मन नाथ मारु कइ साँसा। जउँ पइ मरहु श्रापु करु नासा ॥
परगट लोकचार कहु बाता। गुपुत लाउ मन जा सउँ राता ॥
हउँ हउँ कहत मेँटि सब खोई। जउँ तूँ नाहिँ श्राहि सब सोई ॥
जिश्रतहिँ जो रे मरइ एक बारा। पुनि को मीचु को मारइ पारा ॥
श्रापुहि गुरु सो श्रापुहि चेला। श्रापुहि सब श्रउ श्रापु अकेला ॥

दोहा ।

आपुहि मीचु जिअन पुनि आपुहि तन मन सोइ ।
आपुहि आपु करइ जो चाहइ कहाँ क दोसर कोइ ॥ २२१ ॥

इति पारबती-महेस-खंड ॥ २२ ॥

दसउँ = दशम = दसवाँ । दुआर = द्वार = दरवाजा । तारु = तार (ताल वृक्ष) वा तालू । लेखा = हिसाब । उलटि = विपर्य्यय = उलट कर । दिसिटि = दृष्टि । जो = यः । लाउ = लाता है = लगाता है (लाति) । सो = सो = वह । देखा = देख = देखता है (पश्यति) । जाइ = जाय । साँस = श्वास । मन = मनः । बंदी = बन्धी = बन्धन में बँध जाना । जस = यथा = जैसे । धँसि = धँस कर । लीन्ह = लिया (ला देने से) । कान्ह = कृष्ण । कालंदी = कालिन्दी = यमुना । तूँ = त्वम् । नाथ = नाथो (नाथृ बन्धने से) । मारु = मारो । साँसा = श्वास । जउँ = यदि = जो । पइ = अपि = निश्चय । मरजु = मरो (मरत) । आपु = आप = स्वयम् (आत्मा) । करु = कुरु = करो । नासा = नाश । परगट = प्रकट = प्रगट । लोकचार = लोकाचार = लोक का आचार । कहु = कथय = कहो । बाता = वार्त्ता = बात । गुपुत = गुप्त । जा सउँ = जिस से । राता = रक्त = लगा । हउँ = अहम् = मैं । कहत = कथयन् = कहते । मेंटि = मिटा कर = भ्रष्ट कर । सब = सर्व । खोई = खो दिया । आहि = अस्ति = है । सोई = स एव = वही । जिअतहिँ = जीवन्नेव = जीते ही । मरइ = मरे = मरेत् । एक = एक । बारा = बार । पुनि = पुनः = फिर । को = कः = कौन वा किम् । को = कः । मारइ = मारने । पारा = पार = समर्थ । आपुहि = स्वयम् । चेला = शिष्य । अकेला = एकलः = एकाकी ॥

जिअन = जीवन । तन = तनु = शरीर । सोइ = स एव । करइ = करे (कुर्यात्) । चाहइ = चाहे (इच्छेत्) । कहाँ क = कहाँ का = कस्य कः । दोसर = द्वितीय = दूसरा । कोइ = कोऽपि = कोई ॥

तार वा तालू के लेखा सा दसवाँ द्वार है, अर्थात् जैसे तालवृक्ष, अथवा शरीर में तालु-स्थान, ऊँचा है उसी तरह का दसवाँ दरवाजा है; जो उलट कर उस पर दृष्टि लगावे वह (उसे) देखता है । साँस से मन को बाँध कर जो जाय वह (वहाँ पर) जा सकता है, जैसे कि कृष्ण ने यमुना में धँस कर (कालिय नाग को) लिया (पकडा) ।

तूँ साँस को मार और (उसी साँस से) मन को नाथ, यदि निश्चय मरा चाहता है तो अपने को नाश कर। प्रगट (तो) लोकव्यवहार की बात कह, और गुप्त जिस से मन लगा है उसी मेँ मन लगाओ। (तैँ ने) मैँ मैँ कहता सब को मिटा कर खो दिया, (सो अब) यदि तूँ नहीँ हो अर्थात् अपने को मिटा दे तो तूँ सब वही है, अर्थात् सर्वाङ्गरूप से फिर तूँ पद्मावती ही हो जाय। अरे (रत्न-सेन) जो जीते ही एक बार मर जाय, फिर (उस के लिये) मौत क्या है और (उसे) कौन मार सकता है। वह आप ही गुरु और आप ही चेला है, वह (यद्यपि) आप अकेला है (तथापि वह) आप ही सब है ॥

(वह) आप ही मृत्यु और आप ही जीवन है, वह आप ही शरीर और मन है। (वह) जो चाहे सो आप अपने को करे, (फिर) कहाँ का कौन (उस के) सामने दूसरा है, अर्थात् फिर वह अद्वितीय, घट घट व्यापक परब्रह्म-रूप ही है ॥ २२१ ॥

इति पार्वती-महेशखण्डं नाम द्वाविंशति-खण्डं समाप्तम् ॥ २२ ॥

अथ राजा-गढ-छेँका-खंड ॥ २३ ॥

चउपाई ।

सिद्धि-गोटिका राजइ पावा। अउ भइ सिद्धि गनेस मनावा ॥
जब संकर सिधि दीन्ह को टेका। परी हूल जोगिन्ह गढ छेँका ॥
सबइ पदुमिनी देखहिँ चढी। सिंघल घेरि कीन्ह उठि मढी ॥
जस खर-फरा चोर मति कीन्ही। तेहि बिधि सेँधि चाह गढ दीन्ही ॥
गुपुत जो चोर रहइ सो साँचा। परगट होइ जीउ नहिँ बाँचा ॥
पउरि पउरि गढ लाग केवारा। अउ राजा सउँ भई पुकारा ॥
जोगी आइ छेँकि गढ मेले। न जनउँ कउनु देस कहँ खेले ॥

दोहा ।

भएउ रजाएसु देखहु को अस भिखारी ढीठ।
जाइ बरजि तिन्ह आवहु जन दुइ जाहिँ बसीठ ॥ २२२ ॥

सिद्धि = अष्टसिद्धि। गोटिका = गुटिका = गोली। राजइ = राजा ने = राज्ञा। पावा = पाया (प्राप्नोत्)। अउ = अपि च = और। भइ = (भवति) होई = होता है का प्रथम-पुरुष, स्त्रीलिङ्ग, भूत-काल का एक-वचन। गनेस = गणेश। मनावा = (मानयति)

मनावद् का प्रथम-पुरुष, पुंलिङ्ग, भूत-काल, एक-वचन । जब = यदा । संकर = शङ्कर = महादेव । सिधि = सिद्धि । दीन्ह = दिया का बहु-वचन । को = कौन । टेका = टेके = रोके (रोधयेत्) । परी = परद् (पतति) का प्रथम-पुरुष, स्त्रीलिङ्ग, भूत-काल का एक-वचन । हूल = हुङ्कार = हौरा = कोलाहल । जोगिन्ह = जोगी (योगी) का बहु-वचन । गढ = गाढ = दुर्ग = किला । छेंका = रोका = शङ्कित किया = छेंकद् (शङ्कते) का प्रथम-पुरुष, पुंलिङ्ग, भूत-काल का एक-वचन । सबद् = सर्वा हि = सभी । पदुमिनी = पद्मिनी । देखहिँ = देखद् (पश्यति) का बहु वचन । चढी = चढी हुई (उच्चलन्ती) । सिंघल = सिंहल । घेरि = घेरा (अग्रहीत्) । कीन्ह = किया का बहु-वचन । उठि = उत्थाय = उठ कर । मढी = मठ = मठी = देव-मन्दिर । जस = यथा = जैसे । खर-फरा = चर-फरा = आतुर = जल्दबाज । तेहि विधि = तिसी तरह = उसी तरह । सँधि = सन्धि । चाह = इच्छा । दीन्ही = देद् (दत्ते) का प्रथम-पुरुष, स्त्रीलिङ्ग, भूत-काल, बहु-वचन । गुपुत = गुप्त । जो = जो = यः । रहद् = रहे (तिष्ठेत्) । सो = सः = वह । साँचा = सत्य = सच । परगट = प्रगट = प्रकट । होद् = होय (भवेत्) । जीउ = जीव । बाँचा = बचे = उर्वर्यात् = अवशिष्येत । पउरि = पुरद्वारी = पौरी = प्रतोली । लाग = लगा = लग्न हुआ । कॅवारा = केवारा = कपाट । राजा सउँ = राजा से । भई = (भवति) होद् का प्रथम-पुरुष, स्त्रीलिङ्ग, भूत-काल का एक-वचन । पुकारा = पुकार = पुत्कार । जोगी = योगी । आद् = एत्य = आ कर । छेंकि = छेंक कर (आशङ्क्य) = शङ्कित कर = रोक कर । मेले = मिले हुए हैं (मिल सङ्गमे से) = एकट्ठाँ हो कर । जनउँ = जानउँ = जाने । कउनु = कौन = क नु । देस = देश । कहँ = को । खेले = खेले हैं = खेलयन्ति वा खेलन्ति ॥

भश्रउ = भया (बभूव) । रजाश्रसु = राजाज्ञा = राजादेश । देखहु = देखो (दृशि प्रेक्षणे से) । को = कः = कौन । अस = एतादृश = ऐसा । भिखारी = भिक्षुक । ढीठ = धृष्ट = ढीठा । जाद् = जा कर (यात्वा) । बरजि = वर्जन । तिन्ह = तिन्हैं । आवहु = आओ (आयाहि) । जन = आदमी । दुद् = दो (द्वौ) । जाहिँ = जायँ (याताम्) । बसीठ = दूत ॥

राजा ने (महादेव से) सिद्धि-गुटिका को पाया, गणेश को मनाया और सिद्धि (प्राप्त) हुई । जब महादेव ने सिद्धि दी (तो उस को) कौन रोके, योगिओं ने गढ को छेंक लिया यह कोलाहल हुआ । सब पद्मिनी (अटारिओं पर) चढी देख रही हैं, (योगिओं ने) देवमन्दिर से उठ कर सिंहल (गढ) को घेर लिया । जिस तरह जल्द-बाज चोर मति करता है अर्थात् आतुर चोर की जैसी बुद्धि होती है उसी

तरह योगी लोग (शीघ्र) गढ में सेंध दिया चाहते हैं। वही सच्चा चोर है जो कि छिपा रहता है, (यदि चोर) प्रगट हो जाय तो जीव न बचे। गढ की हर एक पौरी पर दरवाजे बंद हो गए, और राजा से पुकार की गई। (कि) योगी गढ छेंक कर एकट्ठे हुए हैं, नहीं जानते कि किस देश में खेला चाहते हैं॥

राजा की आज्ञा हुई कि देखो कौन ऐसे ढीठे भिखारी हैं, दो आदमी दूत ऐसे जायँ और उन्हें बरज आवैं॥ २२२॥

चउपाई।

उतरि बसिठ दुइ आइ जोहारे। कइ तुम्ह जोगी कइ बनिजारे॥
भएउ रजाएसु आगइ खेलहु। गढ तर छाँडि अनत होइ मेलहु॥
अस लागेहु केहि के सिखि दीन्हे। आएहु मरइ हाथ जिउ लीन्हे॥
इहाँ इँदर अस राजा तपा। जउँ-हि रिसाइ सूर डरि छपा॥
हहु बनिजार तो बनिज बेसाहहु। भरि बइपार लेहु जो चाहहु॥
जोगी हहु तो जुगुति सउँ माँगहु। भुगुति लेहु लेइ मारग लागहु॥
इहाँ देओता अस गए हारी। तुम्ह पतंग को आहि भिखारी॥

दोहा।

तुम्ह जोगी बइरागी कहत न मानहु कोहु।
लेहु माँगि किछु भिच्छा खेलि अनत कहँ होहु॥ २२३॥

उतरि = उत्तीर्य = उतर कर। बसिठ = वसीठ = वशिष्ठ, के ऐसा दूत। दुइ = द्वौ = दो। आइ = एत्य = आ कर। जोहारे = जोहार किए = प्रणाम किए (हे जीव-हार ऐसा कह कर प्रणाम किए)। कइ = कि। जोगी = योगी। कइ = कि = वा। बनिजारे = वणिज = बनिए। भएउ = बभूव = हुआ। रजाएसु = राजादेश = राजाज्ञा। आगइ = आगे = अग्रे। खेलहु = खेलो = खेलइ (खेलति) का, मध्यम-पुरुष, लोट लकार, बहु-वचन। गढ = गाढ = दुर्ग = किला। तर = तल। छाँडि = (सञ्छुद्य) छोड कर। अनत = अन्यत्र। होइ = हो कर (भूत्वा)। मेलहु = मिलो = एकट्ठाँ हो (मिल सङ्गमे से)। अस = एतादृश = ऐसा। लागेहु = लगे = लग्न हुए। केहि के = किस के। सिख = शिक्षा। दीन्हे = देने से (दा दाने से)। आएहु = आए। मरइ = मरने के लिये = मरणाय। हाथ = हस्त।

जिउ = जीव = प्राण। लीन्हे = लिए हुए (ला दाने से)। इहाँ = अत्र = यहाँ। इँदर = इन्द्र = देवताओं का राजा। तपा = तप = तपइ (तपति) = तपता है। जउँ = यदि। हि = निश्चयेन। रिसाइ = रिस करे = क्रुद्ध हो (रुष्येत्)। सूर = सूर्य। डरि = डर कर (आदर्य)। छपा = छप = छपे = छिपे (चिप प्रेरणे से)। हऊ = हो (भवथ)। तो = तो = तर्हि। बनिज = वाणिज्य। बेसाहऊ = बेसाहइ (क्रीणीते) का लोट लकार, मध्यम-पुरुष, बहु-वचन। भरि = भर कर (भृत्वा)। बइपार = व्यापार। लेऊ = लेइ (लाति) का लोट लकार, मध्यम-पुरुष, बहु-वचन। लेऊ = लेओ (ला दाने से)। चाहहु = चाहो (इच्छथ)। जुगुति = युक्ति = उपाय। सउँ = से। माँगऊ = माँगो। भुगुति = भुक्ति = भोजन। लेइ = ले कर (आलाय)। मारग = मार्ग = राह। लागऊ = लगिए = लगइ (लगति) का लोट लकार, मध्यम-पुरुष, बहु-वचन। देओता = देवता। हारी = हार गए (हृ हरणे से)। पतंग = पतङ्ग = फतिंगे। को = क्व = कौन। आहि = हो। भिखारी = भिचुक = भिखमंगा ॥

बइरागी = वैरागी। कहत = कहते (कथयन्)। मानऊ = मानिए = मानइ (मन्यते) का लोट लकार, मध्यम-पुरुष, बहु-वचन। कोहु = क्रोध। माँगि = माँगना = याचना। किछु = कुछ = किञ्चित्। भिच्छा = भिचा = भीख। खेलि = (खेलित्वा) खेल कर। होऊ = होओ (भवत) ॥

दो दूतों ने (गढ से) उतर कर, (योगिओं के पास) आ कर, (उन को) प्रणाम किए (और पूछे) कि तुम लोग योगी हो वा बनिजारे। राजा की आज्ञा हुई है कि आगे जा कर खेलो, गढ के तल को छोड कर अन्यत्र जा कर एकट्ठा होओ। किस के सिखाने से इस तरह (गढ के नीचे) लगे हो, (क्या) जीव को हाथ में ले कर मरने आए हो। यहाँ इन्द्र के ऐसा राजा (गन्धर्व-सेन) तपता है, यदि सचमुच क्रोध करे तो सूर्य डर कर छिप जाय। (यदि) बनिए हो तो बनिज को खरीदो, (और अपने) व्यापार भर जो चाहो सो लेओ। यदि योगी हो तो युक्ति (कायदे वा रीति) से माँगो, भोजन लो और (भोजन) ले कर रास्ता पकडो। देवता ऐसे (लोग) तो यहाँ हार ही गए, तुम्ह लोग फतिंगे ऐसे भिखारी क्या हो, अर्थात् फतिंगे ऐस तुम फकीरों की क्या गिनती ॥

तुम लोग योगी वैरागी हो, (मेरे) कहने पर क्रुद्ध न हो, कुछ भीख माँग लो (फिर) खेल कूद कर अन्यत्र कहीं चले जाओ ॥ २२३ ॥

चउपाई ।

अनु जो भीखि हउँ आएउँ लेई । कस न लेउँ जउँ राजा देई ॥
पदुमावति राजा कइ बारी । हउँ जोगी तेहि लागि भिखारी ॥
खप्पर लिए बार भा माँगउँ । भुगुति देइ लेइ मारग लागउँ ॥
सोई भुगुति परापति पूजा । कहाँ जाउँ अस बार न दूजा ॥
अब धर इहाँ जीउ ओहि ठाऊँ । भसम होउँ पइ तजउँ न नाऊँ ॥
जस बिनु प्रान पिंड हइ छूँछा । धरम लागि कहिअउ जउँ पूँछा ॥
तुम्ह बसीठ राजा कइ ओरा । साखि होहु यह भीखि निहोरा ॥

दोहा ।

जोगी बार आउ सो जेहि भिखिआ कइ आस ।
जउँ निरास डिढ आसन कित गउँनइ केहु पास ॥ २२४ ॥

अनु = अनुज्ञा = आज्ञा । जो = यः । भीखि = भिक्षा । हउँ = अहम् = हम । आएउँ = आया (या प्रापणे से आ-उपसर्ग) । लेई = लेने (ला दाने से) । कस = कथम् = क्यों । लेउँ = लेऊँ । जउँ = यदि । देई = दे (दद्यात्) । पदुमावति = पद्मावती । कइ = की । बारी = बालिका = कन्या । जोगी = योगी । तेहि लागि = तिस के लिये । भिखारी = भिक्षुक । खप्पर = खर्पर = खप्पड । बार = द्वार । भा = हुआ । माँगउँ = माँगता हूँ (याचे) । भुगुति = भुक्ति । देइ = दे (दद्यात्) । लेइ = ले कर (आलाय) । मारग = मार्ग = राह । लागउँ = लगउँ = लगूँ (लगेयम्) । सोई = स एव = वही । परापति = प्राप्ति । कहाँ = कुत्र । जाउँ = जावँ (यानि) । अस = ऐसा = एतादृश । दूजा = द्वितीय = दूसरा । अब = इदानीम् । धर = धड, यहाँ, शरीर । इहाँ = अत्र = यहाँ । जीउ = जीव । ओहि = तत्र = तहाँ = वहाँ । ठाऊँ = ठावँ = स्थान । भसम = भस्म = राख । होउँ = होवँ (भवानि) । पइ = अपि । तजउँ = तजूँ (त्यजानि) = छोड़ूँ । नाऊँ = नाम । जस = यथा = जैसे । बिनु = विना । प्रान = प्राण । पिंड = पिण्ड = शरीर = देह । हइ = है (अस्ति) । छूँछा = रिक्त = खाली = शून्य । धरम = धर्म । धरम लागि = धर्म के लिये । कहिअउ = कहना । जउँ = यदि = जो । पूँछा = पूँछे (पृच्छेत्) । बसीठ = वसिष्ठ = दूत । कइ = की । ओर = तरफ = अग्र । साखि = साक्षी = गवाह । होऊ = हूजिए (भवत) । निहोरा = निहोरइ (निरोधयति) का उत्तम-पुरुष, भूत-काल का एक-वचन ॥

आउ = आवे (आयात्)। जेहि = जिस। भिखिआ = भिक्षा। कइ = की। आस = आशा = उम्मीद। निरास = निराश। डिढ = दृढ = मजबूत। कित = कुतः = क्यों। गउँनइ = जाय (गच्छेत्)। केहु = किस। पास = पार्श्व = नगीच = निकट ॥

(राजा रत्न-सेन ने कहा कि) यदि आज्ञा हुई है तो जिस भीख लेने के लिये मैं आया हूँ उसे यदि राजा (गन्धर्व-सेन) दे तो मैं क्यों न लेऊँ। पद्मावती जो राजा की लडकी है, उसी के लिये मैं योगी भिखारी हुआ हूँ। (उसी को) खप्पर लिए द्वार पर पडा माँग रहा हूँ, (यदि राजा उस) भुक्ति को दे तो मैं ले कर अपनी रास्ता लूँ। (उस) भुक्ति की प्राप्ति ही (मेरे लिये सब) पूजा है, मैं कहाँ जाऊँ, (उस भुक्ति-प्राप्ति के लिये मुझे) दूसरा ऐसा द्वार नहीं है। अब तो मेरी शरीर यहाँ और जीव (जहाँ पद्मावती है) उस स्थान पर है, (मर कर) भस्म हो जाऊँ पर उस के नाम को न छोडूँ (यही मेरी प्रतिज्ञा है)। यदि (तुम से राजा गन्धर्व-सेन) पूछे तो धर्म के लिये कहना कि जैसे प्राण के विना शरीर छूछी (व्यर्थ) है (उसी तरह उस योगी की दशा है)। तुम राजा की ओर से दूत हो, मैं ने इसी भीख के लिये निहोरा किया है इस बात के तुम लोग गवाह हो ॥

जिस योगी को भिक्षा की आशा होती है वही (भिक्षा के लिये) दरवाजे पर आता है, यदि निराश हो कर आसन पर दृढ रहे तो (फिर) किसी के पास क्यों जाय ॥ २२४ ॥

चउपाई ।

सुनि बसीठ मन उपनी रीसा। जउ पीसत घुन जाइहि पीसा ॥
जोगी अइस कहइ नहिँ कोई। सो कहु बात जोग तोहि होई ॥
वह बड राज इँदर कर पाटा। धरती परइ सरग को चाटा ॥
जउँ यह बात होइ तहँ चली। छूटिहिँ अबहिँ हसति सिंघली ॥
अउ छूटिहिँ तहँ बजर क गोटा। बिसरइ भुगुति होहु तुम्ह रोटा ॥
जहँ लगि दिसिटि न जाइ पसारी। तहाँ पसारसि हाथ भिखारी ॥
आगू देखि पाउँ धरु नाथा। तहाँ न हेरु टूट जहँ माथा ॥

दोहा ।

वह रानी जेहि जोग हइ तेही राज अरु पाट ।
सुंदरि जाइ राज-घर जोगिहि बाँदर काट ॥ २२५ ॥

सुनि = श्रुत्वा = सुन कर । बसीठ = वसिष्ठ = दूत । उपनी = उत्पन्न ऊई । रीसा = रिस = रोष = क्रोध। जउ = जब = यव, एक प्रसिद्ध अन्न। पीसत = पीसते (पिषृ संचूर्णने से)। घुन = घुण = काठ वा अन्न खानेवाला एक प्रसिद्ध कीडा । जाइहि = जायगा (यास्यति)। पीसा = पीस । जोगी = योगी । अइस = एतादृश = ऐसा। कहइ = (कथयति) कहता है। कोई = कोऽपि । सो = सः = वह । कऊ = कह (कथय)। बात = वार्त्ता । जोग = योग्य। तोहि = तुझे । होई = होय (भवेत्) । बड = बडा (वर) । राज = राजा । इंदर = इन्द्र। पाटा = पट्टा = सिंहासन। धरती = धरित्री = भूमि। परई = पडे (पतन्)। सरग = स्वर्ग। को = कः = कौन । चाटा = चाट = चाटता है (चट भेदने से, चटयति)। जउँ = यदि = जो । होइ = होवे (भवेत्) । तहँ = तत्र = तहाँ । चली = चलाई (प्रचार) । कूटिहिँ = कूटेंगे (कुटिष्यन्ति, कुट छेदने, तुदादि)। अबहिँ = इदानीं हि = अभीँ । हसति = हस्ती = हाथी। सिंघली = सिंहली = सिंहल के। तहँ = तत्र = तहाँ। बजर = वज्र। गोटा = गोट = गोला । बिसरइ = बिसरे = भूल जाय (विस्मर्येत) । भुगुति = भुक्ति = भोजन । होउ = हो (भवथ)। रोटा = रोडा = लोष्ट = ढेला । जहँ लगि = जहाँ तक = यावत् । दिसिटि = दृष्टि । जाइ = जाय (यायात्) । पसारी = प्रसार = फैलाय । पसारसि = फैलाता है (प्रसारयसि)। हाथ = हस्त। भिखारी = भिक्षुक। आगू = आगे = अग्रे । देखि = देख कर (दृष्ट्वा)। पाउँ = पाद = पैर। धरु = धर (धर) । नाथा = नाथ = हे गोरखनाथी योगी । हेरु = हेर (हेड्ड्र अन्वेषणे से)। टूट = टूटे (त्रुट्येत)। जहँ = जहाँ = यत्र । माथा = मस्तक ॥

रानी = राज्ञी = राजा की पत्नी, यहाँ गन्धर्वसेन की कन्या । हइ = है (अस्ति)। पाट = पट्ट = सिंहासन । सुंदरि = सुन्दरी (पद्मावती)। जाइ = जायगी (यास्यति)। राज-घर = राज-गृह । जोगिहि = योगी को । बाँदर = बंदर (वानर) । काट = काटे (कर्त्तयेत्) ॥

(रत्न-सेन की बात) सुन कर दूत के मन में रोष उत्पन्न ऊआ, (कहने लगा कि खबर्दार ऐसा न कह, नहीं तो) जौ के पीसते घुन भी पीसा जायगा, अर्थात् तेरे संग

मैँ भी मारा जाऊँगा। कोई योगी ऐसा नहीँ कहता, जो तेरे योग्य बात हो उसे कहे। वह (गन्धर्व-सेन) बडा राजा है (उस का) इन्द्र के ऐसा सिंहासन है, कौन ऐसा है जो जमीन पर पडा स्वर्ग को चाटना चाहे। यदि यह बात वहाँ (गन्धर्व-सेन के यहाँ) चलाई जाय (तो) अभीँ सिंहल के हाथी कूटँगे। और वज्र के गोले कूटँगे, (जिस से यह) भुक्ति-वासना भूल जायगी, तुम (मर कर) ढेले हो जाओगे। जहाँ फैलाने से नजर भी नहीँ पहुँचती तहाँ अरे भिखारी हूँ हाथ फैलाता है। अरे गोरख-नाथ के चेले, आगे देख कर पावँ रख, उस जगह न ढूँढ जहाँ कि माथ टूट जाय ॥

वह (पद्मावती) रानी जिस के योग्य है उसी को (यहाँ के) राज्य और सिंहासन हैँ, (वह) सुन्दरी राजा के घर जायगी; योगी को बंदर काट खायगा ॥

एक माकन्दिका पुरी मेँ मौनी योगी भिक्षा माँगा करता था। दैवात् एक दिन एक बनिए के घर भिक्षा माँगने गया। उस की सुन्दरी कन्या को देख मोहित हो मौनव्रत को त्याग उस के विरह से व्याकुल हो गया। योगी की यह दशा देख वह बनिया योगी के पीछे पीछे दौडा। और ज्योँ ही वह अपनी मठ के पास पहुँचा त्योँ ही वह योगी के पास पहुँच कर प्रार्थना की कि महाराज मेरी कन्या को देख कर आप दुःखी क्योँ हुए। योगी ने कन्या को लेने के लिये उस से धूर्त्तता से कहा कि यह कन्या बडी अभागी है। विवाह होते ही तुमारा सर्वनाश करेगी। सो यदि अपना भला चाहो तो इसे रात को संदूक मेँ बंद कर गङ्गा जी मेँ बहा दो। बहाते समय संदूक के ऊपर एक बरता हुआ दीप रख देना। योगी के कहने से बनिए ने वैसा ही किया। इधर योगी ने अपने चेलोँ से कहा कि जाओ गङ्गा जी मेँ एक संदूक जिस के ऊपर चिराग जल रहा है वह रही है उसे ज्योँ की त्योँ उठा लाओ। इस बीच मेँ एक राजकुमार शिकार खेलते खेलते गङ्गा के किनारे पहुँचा और संदूक को वहते देख अपने नौकरोँ से पकडवा मँगाया। खोलने पर उस मेँ अति सुन्दरी स्त्री को देख, मोहित हो उसे अपनी रानी बनाया और उस संदूक मेँ एक बनैले भयङ्कर बंदर को जिसे कि बन से फँसा लाया था बंद कर गङ्गा जी मेँ बहा दिया। योगी के चेलोँ ने उस संदूक को पकड कर योगी के पास लाए। योगी संदूक देख कर बहुत खुश हुआ और कोठरी के भीतर ले जा कर चेलोँ से कहा कि बाहर से कोठरी बंद कर दो, मैँ योग सिद्ध करूँगा, तुम लोग चुप चाप नीचे जा कर सोओ। निदान संदूक खोलने पर बंदर ने योगी को काट खाया। योगी कोठरी खोलने के

लिये बहुत चिल्लाया पर योगी की पूर्वाज्ञा से चेले चुप चाप नीचे सोए रह गए। इस प्रकार वह सुन्दरी राजा के घर गई और योगी के नाक कान को बंदर ने काट खाया। यह कथा, कथासरित्सागर के तृतीय लम्बक के प्रथम तरङ्ग के २०-५३ श्लोकों में लिखी है ॥ २२५ ॥

चउपाई।

जउँ जोगिहि सुठि बाँदर काटा। एकइ जोग न दोसरि बाटा ॥
अउरु साधना आवइ साधे। जोग-साधना आपुहि दाधे ॥
सिर पहुँचाउ जोग करि साथू। दिसिटि चाहि हो अगुमन हाथू ॥
तुम्हरइ जउँ रे सिंघली हाथी। मोरइ गुरू हसति होइ साथी ॥
हसति नसत जेहि करत न बारा। परबत करइ पाउँ कइ छारा ॥
गढ कइ गरब खेह मिलि गए। मंदिर उठइ ढहइ भइ नए ॥
अंत जो चलना कोउ न चीन्हा। जो आवइ आपुन चह कीन्हा ॥

दोहा।

जोगिहि कोहु न चाहिअ तब न मोहिँ रिस लागि।
पेम-पंथ जेहि पानि हइ कहा करइ तेहि आगि ॥ २२६ ॥

जउँ = यदि। जोगिहि = योगी को। सुठि = सुष्ठु = अच्छी तरह। बाँदर = बंदर (वानर)। काटा = काटे (कर्त्तयेत्)। एकइ = एक एव = एक ही। जोग = योग। दोसरि = दूसरी (द्वितीय)। बाटा = वाट = पथ = राह। अउरु = अपर = दूसरी। साधना = साधन-वस्तु। आवइ = (आयाति) आती है। साधे = साधने से = साधन करने से (साधनेन)। जोग-साधना = योग-साधना। आपुहि = अपने को (आत्मनः)। दाधे = दग्ध करने से। सिर = शिरः = शिर। साथू = साथ (सार्थ)। दिसिटि = दृष्टि। चाहि = बढ कर। हो = अहो (संबोधनसूचक शब्द)। अगुमन = अग्रगमन = आगे। हाथू = हाथ = हस्त। तुम्हरइ = तुम्हारे। सिंघली = सिंहली = सिंहल के। हाथी = हस्ती। मोरइ = मोरे = मुझे। गुरू = गुरु, गोरख-नाथ। हसति = हस्ती = हाथी। साथी = संगी (सार्थी)। नसत = नष्ट। जेहि = जिसे। करत = करते (कुर्वत्)। बारा = वार = विलम्ब। परबत = पर्वत = पहाड। करइ = (करोति) करता है। पाउँ = पावँ = पैर। कइ = की। छारा = चार = राख = भस्म। गढ = गाढ = दुर्ग = किला। गरब = गर्व = अभिमान। खेह = धूर।

मंदिर = मन्दिर = गृह । उठइ = (उत्तिष्ठते) उठता है । ढहइ = (ध्वंसते) ढहता है = गिर पड़ता है । भए = भए ऊए । नए = नव । अंत = अन्त में । चलना = चलन = जाना । कोउ = कोऽपि = कोई । चीन्हा = चीन्हइ (चिन्हयति, चिन्हं लक्ष्म च लक्ष्मणम्—अमरकोश) का प्रथम-पुरुष, भूत-काल, पुंलिङ्ग का एक-वचन । आपुन = अपना । चह = चहइ = (इच्छति) चाहता है । कीन्हा = करना ॥

कोहु = कोह = क्रोध । चाहिअ = चाहिए । मोहिँ = मुझे । रिस = रोष = क्रोध । लागि = लगी = लगइ (लगति) का प्रथम-पुरुष, भूत-काल, स्त्रीलिङ्ग का एक-वचन । पेम = प्रेम । पंथ = पन्थाः = राह । पानि = पानीय = पानी । हइ = है (अस्ति) । कहा = किमु = क्या । करइ = करे (कुर्यात्) । आगि = अग्नि = आग ॥

(राजा रत्नसेन ने कहा कि) यदि योगी को अच्छी तरह से बंदर काटे, तो भी (योगी के) योग की एक ही राह है दूसरी नहीँ । और साधना साधने से आ जाती है, पर योग-साधना अपने को जला देने ही से आती है । योग को साथ में कर, गिर को पहुँचाओ, और हे (वसीठ) दृष्टि से बढ कर, आगे हाथ हो (तब योग-सिद्धि हो) । यदि तुम्हारे (साथ) सिंहली हाथी हैँ, (तो) मेरे साथ भी गुरु (गोरख-नाथ) हाथी हैँ । जिस को (तुम्हारे) हाथिओँ को नाश करते देर नहीँ, और जो कि पर्वत को भी पावँ की धूर कर देता है । (गुरु के आगे) गढ के अभिमान खेह में मिल गए हैँ, मन्दिर उठता है, ढह जाता है (और फिर ढह कर) नए हो जाते हैँ । अन्त में जो (संसार से उठ) चलना है उस चलने को कोई नहीँ जानता, जो (यहाँ) आता है वह अपने ही ऐसा किया चाहता है ॥

(हे दूत तुम ने जो कहा कि) योगी को क्रोध न चाहिए (सो ठीक है), तभी तो मुझे रिस नहीँ लगी । जिस की राह में प्रेम-रूप पानी है, उस को आग क्या कर सकती है ॥ २२६ ॥

चउपाई ।

बसिठहिं जाइ कही असि बाता । राजा सुनत कोहु भा राता ॥
ठाउँहिँ ठाउँ कुअँर सब माखे । केइँ अब लगि जोगी जिउ राखे ॥
अब-हूँ बेगि करहु संजोऊ । तस मारहु हतिआ किन होऊ ॥
मँतिरिन्ह कहा रहहु मन बूझे । पति न होइ जोगिहिँ सउँ जूझे ॥

वेइ मारहिँ तो काह भिखारी। लाज होइ जउँ मानिअ हारी॥
ना भल मुअइ न मारइ मोखू। दुहूँ बात तुम्ह लागिहि दोखू॥
रहइ देहु जउँ गढ तर मेली। जोगी कित आछहिँ बिनु खेली॥

दोहा।

रहइ देहु जो गढ तर जनि चालहु यह बात।
तिन्हहिँ जो पाहन भख करहिँ अस केहि के मुख दाँत॥ २२७॥

वसिठन्हि = बसीठ ने = दूत ने। जाइ = (संयाय) = जा कर। कही = कहइ (कथयति) का प्रथम-पुरुष, भूत-काल, स्त्रीलिङ्ग का एक-वचन। असि = एतादृशी = ऐसी। बाता = वार्त्ता = बात। सुनत = सुनते (शृण्वन्)। कोह = क्रोध। भा = हुआ (बभूव)। राता = रक्त = लाल। ठाउँहिँ ठाउँ = स्थान स्थान में। कुअँर = (राज) कुमार। माखे = आमर्ष में हो गए। केइ = किन लोगों ने। अब लगि = अब तक। जोगी = योगी। जिउ = जीव। राखे = रक्खे (रक्षित किए)। अब-हूँ = इदानीं हि = अब भी। बेगि = वेगेन = शीघ्र। करहु = करो (कुरुथ)। संजोउ = संयोग = युक्ति। तस = तथा = तैसा। मारहु = मारो (मारयथ)। हतिआ = हत्या = पाप। किन = किं न = क्यों न। होउ = होवे (भवेत्)। मँतिरिन्ह = मन्त्री का बहु-वचन। कहा = (अकथयत्)। रहहु = रहो (तिष्ठथ)। बूझे = बूझने पर = बोध होने पर। पति = पत्ति = लज्जा = मर्यादा। होइ = होती है (भवति)। जोगिन्हिँ सउँ = योगिओं से। जूझे = युद्ध करने से (युद्धेन)। वेइ = उन्हें। मारहिँ = मारें (मारयेम)। तो = तर्हि। काह = किम् = क्या। भिखारी = भिक्षुक। लाज = लज्जा। होइ = होय (भवेत्)। जउँ = यदि। मानिअ = मन्येत = मानिए। हारी = हार। ना = नहीं। भल = वर। मुअइ = मरने (मरणे)। मारइ = मारने में (मारणे)। मोखू = मोक्ष। दुहूँ = दोनों में (द्वयोर्हि)। बात = वार्त्ता। लागिहि = लगेगा (लगिष्यति)। दोखू = दोष। रहइ = रहने। देहु = दो। गढ = गाढ = दुर्ग = किला। तर = तल = नीचे। मेली = मिले = एकट्ठे हुए। कित = किम् = क्या। आछहिँ = अच्छे हैं। बिनु = विना। खेली = खेल॥

जनि = मत। चालहु = चलाओ (चालयथ)। पाहन = पाषाण = पत्थर। भख = भक्षण। करहिँ = करते हैं (कुर्वन्ति)। अस = एतादृश = ऐसा। केहि = किम। मुख = मुँह। दाँत = दन्त॥

दूत जा कर (रत्न-सेन की कही) ऐसी बात (गन्धर्व-सेन से) कही, राजा (गन्धर्व-सेन) सुनते ही क्रोध से लाल हो गया। जगह जगह पर सब राज-कुमार माख गए, (कहने लगे कि) किन लोगों ने अभीँ तक योगी के जीव को रख छोडा है। अब भी जल्द उपाय करो, ऐसा मारो (कि सब मर जायँ) पाप क्योँ न हो। मन्त्रिओँ ने कहा कि ठहरो मन मेँ समझने दो, योगिओँ से लडने मेँ इज्जत नहीँ रहती। उन भिखारिओँ को मारिए तो क्या (फल), (और लड कर) हार मानिए तो (बडी) लज्जा हो। मरने मेँ भी भला नहीँ और मारने मेँ भी मोच नहीँ, दोनोँ बातोँ मेँ तुम लोगोँ को दोष लगेगा। यदि गढ के नीचे एकट्ठे ऊए हैँ तो रहने दो, खेल छोड और क्या योगी अच्छे हैँ, अर्थात् योगी लोग सेवाय खेल कूद के और क्या कर सकते हैँ ॥

यदि गढ के नीचे हैँ तो रहने दो, इस (उठा देने की) बात को न चलाओ, जो (योगी लोग) पत्थर को खाते है, उन लोगोँ के ऐसे किस के मुँह मेँ दाँत हैँ ॥ २२७ ॥

चउपाई।

गए जो बसिठ पुनि बहुरि न आए। राजइ कहा बहुत दिन लाए ॥
न जनउँ सरग बात दहुँ काहा। काहु न आइ कही फिरि चाहा ॥
पाँख न कया पउन नहिँ पाया। केहि बिधि मिलउँ होउँ केहि छाया ॥
सवँरि रकत नइनहिँ भरि चूआ। रोइ हँकारेसि माँझी सूआ ॥
परहिँ जो आँसु रकत कइ टूटी। अबहुँ सो राती बीर-बहूटी ॥
उहइ रकत लिखि दीन्ही पाती। सुअइ जो लीन्ह चोँच भइ राती ॥
बाँधा कंठ पडा जरि काँठा। बिरह क जरा जाइ कहँ नाठा ॥

दोहा।

मसि नइना लिखनी बरुनि रोइ रोइ लिखा अकत्थ।
आखर दहहिँ न कोइ गहइ (सो) दीन्ह परेवा हत्थ ॥ २२८ ॥

गए = गए। बसिठ = वसीठ = वशिष्ठ = दूत। पुनि = पुनः। बहुरि = भूयः = लौट कर। आए = (आययुः)। राजइ = राजा ने। कहा = अकथयत्। बहुत = बहुतर =

अधिक। लाए = लगाए। जनउँ = जानउँ = जाने = जानता हूँ। सरग = स्वर्ग। बात = वार्त्ता। दउँ = क्या जानेँ। काहा = किम् = क्या। काउ = किसी ने। आइ = आ कर (एत्य)। कही = कहइ (कथयति) का भूत-काल, प्रथम-पुरुष, स्त्रीलिङ्ग का एक-वचन। फिरि = फिर कर = लौट कर। चाहा = चाह = इच्छा। पाँख = पक्ष = पर। कया = काय = शरीर। पउन = पवन = हवा। पाया = पाद = पैर। कँहि = किस। बिधि = प्रकार = उपाय। मिलउँ = मिलूँ (मिलेयम्)। होउँ = होयँ (भवेयम्)। छाया = आश्रित। सवँरि = संस्मृत्य = स्मरण कर। रकत = रक्त। नइनहिँ = नयनोँ मेँ। भरि = भर कर (भृत्ला)। चूआ = चुअइ (च्यवति) का प्रथम-पुरुष, भूत-काल, पुंलिङ्ग का एक-वचन। रोइ = रो कर (रुदिला)। हँकारेसि = पुकारा (हमकारयत्)। माँझी = मध्यी = मध्यस्थ। सूआ = शुक = सुग्गा। परहिँ = पडती हैँ (पतन्ति)। आँसु = अश्रु = आँस। कइ = की। टूटी = टूट कर (त्रुटिला)। अबहुँ = अब भी (इदानीं हि)। राती = ललित = लाल। बीर-बहूटी = वीर-वधू = इन्द्र-वधू। उहइ = वही = स एव। लिखि = लिख कर (लिखिला)। दीन्ही = देइ (दत्ते) का भूत-काल, प्रथम-पुरुष, स्त्रीलिङ्ग का एक-वचन। पाती = पत्री = चीठी। सुअइ = (शुकेन) = सुग्गे ने। लीन्ह = लिया (ला दाने से)। चोँच = चञ्चु। भइ = भई (बभूव)। बाँधा = बाँधइ (बध्नाति) का प्रथम-पुरुष, भूत-काल, पुंलिङ्ग का एक-वचन। कंठ = कण्ठ = गला। पडा = पडइ (पतति) का प्रथम-पुरुष, भूत-काल, पुंलिङ्ग का एक-वचन। जरि = जर कर (जरिला)। काँठा = कंठा = शुक के गले की धारी। बिरह = विरह = वियोग। क = का। जरा = जरा हुआ = जला हुआ। जाइ = जाय (यात्)। कहँ = कुत्र = कहाँ। नाठा = नष्ट ॥

मसि = मषी = स्याही। नइना = नयन। लिखनी = लेखनी = कलम। बरुनि = वरोनी = वारणी (१०६ दोहे की टीका देखो)। रोइ रोइ = रो रो कर। लिखा = लिखइ (लिखति) का प्रथम-पुरुष, भूत-काल, पुंलिङ्ग का एक-वचन। अकत्थ = अकथ्य = कहने के न योग्य। आखर = अक्षर। दहहिँ = दहइ (दहति) का बहु-वचन। गहइ = (गृह्णाति) पकडता है। दीन्ह = दिया (अदात्)। परेवा = पारावत = यहाँ पक्षी शुक। हत्थ = हाथ = हस्त ॥

राजा (रत्न-सेन) ने कहा कि, दूत बहुत दिन लगाए, जो गए सो फिर लौट कर न आए। नहीँ जानता कि (क्या हुआ), क्या जानेँ स्वर्ग मेँ बात है क्या, (क्योँकि) किसी ने आ कर फिर (अपनी) इच्छा न कही। (मेरी) शरीर मेँ न पर, न प्राण

(पवन) और न पैर है, किस तरह से मिलूँ, किस के शरण मैँ जाऊँ। (पद्मावती के) स्मरण करते ही आँखोँ मैँ रक्त भर कर चूने लगे, रो कर (रत्न-सेन ने) मध्यस्थ हीरामणि शुक को पुकारा। रक्त की आँस टूट टूट कर जो पडी हैँ, उन्हीँ से अब तक बीर-बहूटी लाल हैँ। उसी अश्रु रक्त से लिख कर चिट्ठी को दिया, सुग्गे ने जो (उस रक्ताचर की चीठी) ली उसी से उस की चोँच लाल हो गई। (रत्न-सेन ने उस चीठी को शुक के) गले मैँ बाँध दिया, (बाँधने से) गला जल गया (इसी से) कण्ठ मैँ लाल धारी का कंठा पड गया। (चीठी मैँ यही लिखा था कि,) विरह का जला हुआ नष्ट हो कर कहाँ जाय॥

आँख की (आँस की) स्याही, और बरौनी की कलम से, (और भी बहुत विरह की बातेँ जो) कहने योग्य नहीँ (सब) रो रो कर लिखा। अक्षर जलते हैँ, कोई (जल जाने के डर से जिस पक्षी को) पकडता नहीँ, (उस को) सुग्गे के हाथ मैँ दिया॥ २२८॥

चउपाई।

अउ मुख सउँ बच कहेसु परेवा। पहिलइ मोरि बहुत कइ सेवा॥
पुनि सवँराइ कहेसु अस दूजे। जो बलि दीन्ह देओतन्ह पूजे॥
सो अबहूँ तइसइ बलि लागा। कब लगि कया सून मढ जागा॥
भलेहि ईस तुम्ह-हूँ बलि दीन्हा। जहँ तुम्ह भाउ तहाँ बलि कीन्हा॥
जउँ तुम्ह मया कीन्ह पगु ढारा। दिसिटि देखाइ बान-बिख मारा॥
जो अस जा कर आसा-मुखी। दुख मँह अइस न मारइ दुखी॥
नइन भिखारि न मानहिँ सीखा। अगुमन दउरि लीन्ह पइ भीखा॥

दोहा।

नइनहिँ नइन जो बेधि गइ नहिँ निकसहिँ बेइ बान।
हिअइ जो आखर तुम्ह लिखे ते सुठि घटहिँ परान॥ २२९॥

अउ = अपि च = और। मुख सउँ = मुख से = मुँह से। बच = वचः = वचन। कहेसु = कहना (कथनीयम्)। परेवा = पारावत = पक्षी। पहिलइ = प्रथम = पहले ही। मोरि = मेरी। बहुत = बहुतर = अतिशय। कइ = कर। सेवा = खुशामद = विनति = विनय।

पुनि = पुनः = फिर। सवँराइ = स्मरण करा कर (संस्मार्य)। अस = एतादृश = ऐसा। दूजे = दूसरी = द्वितीय। बलि = बलिदान। दीन्ह = दिया (अदात्)। देओतन्ह = देवता का बहु-वचन। पूजे = पूजइ (पूजयति) का प्रथम-पुरुष, भूत-काल, पुंलिङ्ग का बहु-वचन। अब-हुँ = इदानीं हि = अब भी। तइसइ = तथैव = तैसा ही। लागा = लगा है (लग्नः)। कब लगि = कब तक = कियत् कालम्। कया = काय = देह। सून = शून्य = खाली। मढ = मठ = देव-मन्दिर। जागा = जागे = जागइ (जागर्ति) का सम्भावना में, प्रथम-पुरुष, पुंलिङ्ग का एक-वचन। भलेहि = भले ही = अच्छी तरह से = वरम्। ईस = ईश = महादेव। तुम्ह-हुँ = तुम्ह भी = त्वमपि। दीन्हा = दीन्ह। जहँ = यत्र = जहाँ। तुम्ह = तुम्हें। भाउ = भाया = अच्छा मालूम हुआ (भा दीप्तौ से)। तहाँ = तत्र। कीन्हा = कीन्ह = किया (अकरोत्)। जउँ = यदि = जो। मया = माया = मोह = कृपा। पगु = प्रग = पैर। ढारा = धारा = धारण किया। दिसिटि = दृष्टि। देखाइ = देखा कर (प्रदर्श्य)। बान-बिष = विषवाण = विष से बुझाया हुआ वाण। मारा = मारइ (मारयति) का प्रथम-पुरुष भूत-काल, पुंलिङ्ग, एक-वचन। जा कर = जिस का। आसा = आशा = दिशा, वा उम्मीद। आसा-मुखी = दिशा वा उम्मेद की तरफ मुँह रखने-वाला। दुख = दुःख। मँह = मध्ये = में। अइस = एतादृश = ऐसा। मारइ = मारता है (मारयति)। दुखी = दुःखी = दुखिआ। नइन = नयन = आँख। भिखारि = भिखारी = भिक्षुक। मानहिँ = मानइ (मन्यते) का बहु-वचन। सीखा = शिक्षा = उपदेश। अगुमन = अग्रगमन = आगे। दउरि = दौड कर (संद्रुत्य वा द्रुत्वा)। लीन्ह = लिया (ला दाने से)। पइ = अपि = निश्चय। भीखा = भिक्षा = भीख॥

बेधि गइ = बिध गई = विद्ध हो गई। निकसहिँ = (निष्क्रशति) निकसइ का बहु-वचन। वेइ = वे। बान = वाण। हिअइ = हृदय में (हृदये)। लिखे = (लिखति) लिखइ का मध्यम-पुरुष, पुंलिङ्ग, भूत-काल का बहु-वचन। ते = वे। सुठि = सुष्ठु = अच्छी तरह से। घटहिँ = घटाते हैं। परान = प्राण॥

(रत्न-सेन ने कहा कि) और पहले हमारी ओर से बहुत खुशामद कर, हे पारावत (शुक पक्षी) मुख से (चीठी की) बात कहना। फिर सुधि दिला कर ऐसा कहना कि, जिस ने देवताओं को पूजा और बलि को दिया, वह अब तक (अपने को) बलि देने के लिये उसी तरह से लगा हुआ है, अर्थात् तैयार है, (सो) शून्य (प्राण के विना) देह कब तक मठ में जागती रहे (अन्त में सो गई)। तुम ने भी

अच्छी तरह से महादेव को बलि दी, जहाँ तुम्हें भाया तहाँ तुम ने बलि की, अर्थात् बलिदान दिया। यद्यपि तुम ने अनुग्रह कर (मेरे यहाँ) पैर को धारण किया, अर्थात् आप आईं, (तथापि) दृष्टि को देखा कर विष-वाण मार दिया। सो जो जिस का ऐसा आशामुखी हो, उस दुखिआ को वह ऐसे दुःख में नहीं मारता। (क्या किया जाय) भिख-मंगी आँखें सीख नहीं मानतीं, आगे-ही से दौड कर भीख को ले लिया॥

आखों से आँखें बिध गईं, वे (तुम्हारे विष-)वाण नहीं निकसते, हृदय में जो तुम ने अक्षर लिखे वे अच्छी तरह से प्राण को कम कर रहे हैं। (हृदय के अक्षर के लिये २०० दोहे को देखो)॥ २२९॥

चउपाई।

तेइ बिख-बान लिखउँ कहँ ताईं। रकत जो चुआ भीँज दुनिआई॥
जानु सो गारइ रकत पसेऊ। सुखी न जान दुखी कर भेऊ॥
जेहि न पीर तेहि का करि चीता। प्रीतम निठुर होइ अस नीता॥
का सउँ कहउँ बिरह कइ भाखा। जा सउँ कहउँ होइ जरि राखा॥
बिरह आगि तन जर बर जरई। नइन नीर सायर सब भरई॥
पाती लिखी सवँरि तुम्ह नावाँ। रकत लिखे आखर भए स्यावाँ॥
आखर जरहिँ न कोई छूआ। तब दुख देखि चला लेइ सूआ॥

दोहा।

अब सुठि मरउँ छूँछि गइ पाती पेम पिआरे हाथ।
भेँटि होति दुख रोइ सुनावत जीउ जात जउँ साथ॥ २३०॥

तेइ = तिस। बिख-बान = विष-वाण = विष के वाण। लिखउँ = लिखूँ (लिखानि)। कहँ ताईं = कहँ ताईँ = कहाँ तक। रकत = रक्त = खून। जो = यत् = जो। चुआ = चुअइ (च्यवति) का प्रथम-पुरुष, पुंलिङ्ग, भूत-काल का एक-वचन। भीँज = भीँगा = अभिषिक्त हुआ। दुनिआई = दुनिआ। जानु = जाने = जानोँ। सो = वह = सः। गारइ = (गारयति) गारता है। पसेऊ = प्रस्वेद = पसीना। सुखी = सुखिआ। जान = जानइ (जानाति) = जानता है। दुखी = दुःखी = दुखिआ। कर = का। भेऊ = भेद।

पीर = पीडा = व्यथा। का करि = किस की। चीता = चिन्ता = फिक्र। प्रीतम = प्रियतम। निठुर = निष्ठुर = कठोर। होइ = (भवति) होता है। अस = एतादृश = ऐसा। नीता = नीत। कहउँ = कहूँ (कथयानि)। बिरह = विरह = वियोग। भाखा = भाषा = वाणी। जरि = जल कर (प्रज्वल्य)। राखा = राख = रचा = भस्म। आगि = अग्नि। तन = तनु = शरीर। जर = जड। बर = वट = बर का पेंड। जरइ = (ज्वलति) जलता है। नइन = नयन = आँख। नीर = पानी। सायर = सागर = जलस्थान। सब = सर्व। भरइ = (भरति) भरता है। पाती = पत्री = चिट्ठी। लिखी = लिखइ (लिखति) का प्रथम-पुरुष, भूत-काल, स्त्रीलिङ्ग का एक-वचन। सवँरि = (संस्मृत्य) स्मरण कर। नावाँ = नावँ = नाम। आखर = अक्षर। भए = भए (बभूवुः)। स्यावाँ = श्याम = काले। जरहिँ = जरइ का बहु-वचन। छूआ = छुअइ (स्पृशति) का प्रथम-पुरुष, भूत-काल, पुंलिङ्ग का एक-वचन। तब = तदा। दुख = दुःख। देखि = (दृष्ट्वा) देख कर। चला = चलइ (चलति) का प्रथम-पुरुष, पुंलिङ्ग भूत-काल का एक-वचन। लेइ = ले कर (आलाय)। सूआ = शुक = सुग्गा ॥

अब = इदानीम् = अधुना। सुठि = सुष्ठु = अच्छी तरह से। मरउँ = मरता हूँ (मरामि)। छूँछि = छूँछी = खाली (रिक्त)। गइ = गई (अगात्)। पेम = प्रेम। पिआरे = प्रिय। हाथ = हस्त। भेँटि = भेँट = समागम। होति = होती (भवेत्)। रोइ = रो कर (रुदित्वा)। सुनावत = सुनावता (श्रावयेत्)। जीउ = जीव। जात = जाता (यात्)। जउँ = यदि। साथ = सार्ध ॥

उस विष-बाण (की कथा) कहाँ तक लिखूँ, (उस से विद्ध होने से आँखोँ से) जो रक्त चुआ, उस से दुनिआ भीँग गई। कवि कहता है कि जान पडता है कि वह (रत्न-सेन) खून का पसीना गार रहा है, (सच है) सुखी दुःख का भेद नहीँ जानता। जिसे पीडा नहीँ उसे किस की चिन्ता, प्रियतम निष्ठुर होता है, ऐसी नीति है। मैँ (अपनी) विरह की वाणी किस से कहूँ, जिस से कहता हूँ वही जल कर राख हो जाता है। विरहाग्नि से बर के जड ऐसी देह जलती है, आँखोँ के पानी से सब जलस्थल भर रहे हैँ। (हे पद्मावती) तेरे नाम को स्मरण कर (मैँ ने इस) पत्री को लिखी है, रक्त के लिखे अक्षर (विरहाग्नि से) काले हो गए। कवि कहता है कि अक्षर जल रहे हैँ (उन्हेँ जल जाने के डर से) कोई छूता नहीँ है, तब (अन्त मेँ रत्न-सेन का) दुःख देख कर शुक (हीरामणि) (उस पत्री को) ले कर चला ॥

(रत्न-सेन कहता है कि हाय) मेरी प्रेम-पत्नी प्यारे (पद्मावती) के हाथ में खाली गई, अर्थात् पत्नी के साथ मेरा जीव नहीं गया, (इसी पछतावे से) अब अच्छी तरह से मरता हूँ, यदि पत्नी के साथ जीव जाता तो भेंट होती और (रो) रो कर मेरे दुःख को सुनाता ॥ २३० ॥

चउपाई ।

कंचन तार बाँधि गिअँ पाती । लेइ गा सुआ जहाँ धनि राती ॥
जइसइ कवँल सुरुज कइ आसा । नीर कंठ लहि मरइ पिआसा ॥
बिसरा भोगु सेज सुख बासू । जहाँ भवँर सब तहाँ हुलासू ॥
तब लगि धीर सुना नहिँ पीऊ । सुनतहि घरी रहइ नहिँ जीऊ ॥
तब लगि सुख हिअ पेम न जामा । जहाँ पेम गा सुख बिसरामा ॥
अगर चँदन सुठि दहइ सरीरू । अउ भा अगिनि कया कर चीरू ॥
कथा कहानी सुनि सुठि जरा । जानहुँ घिउ बइसंदर परा ॥

दोहा ।

बिरह न आपु सँभारइ मइल चीर सिर रूख ।
पिउ पिउ करत रात दिन पपिहा भइ मुख सूख ॥ २३१ ॥

कंचन = काञ्चन = सुवर्ण । तार = तागा = सूत्र । बाँधि = बाँध कर (बन्धयित्वा) । गिअँ = ग्रीवा = गला । पाती = पत्नी । लेइ = ले कर (आलाय) । गा = गया (अगात्) । सुआ = शुक = सुग्गा । जहाँ = यत्र । धनि = धन्या, पद्मावती । राती = रक्ता = रत्न-सेन के ध्यान में मग्ना । जइसइ = यथा = जैसे । कवँल = कमल । सुरुज = सूर्य । कइ = की । आसा = आशा = उम्मीद । नीर = जल । कंठ = कण्ठ । लहि = लब्धा = पा कर । मरइ = मरता है (मरति) । पिआसा = पिपासा = प्यास । बिसरा = बिसरइ (विस्मरति) का प्रथम-पुरुष, भूत-काल, पुंलिङ्ग का एक-वचन । भोगु = भोग = सुखविलास । सेज = शय्या = पलँग । बासू = वास । भवँर = भ्रमर = भौंरा । सब = सर्व । तहाँ = तत्र । हुलासू = उल्लास । तब लगि = तब तक । धीर = धैर्य = ढाढस । सुना = सुनइ (शृणोति) का प्रथम-पुरुष, भूत-काल, पुंलिङ्ग का एक-वचन । पीऊ = प्रिय । सुनतहि = सुनते-ही (शृण्वन् हि) । रहइ = रहता है (तिष्ठति) । जीऊ = जीव । हिअ = हृदय में । पेम =

प्रेम । जामा = जमद् (जायते) का प्रथम-पुरुष, भूत-काल, पुंलिङ्ग का एक-वचन। बिसरामा = विश्राम । अगर = अगुरु = एक सुगन्ध काष्ठ । चँदन = चन्दन = एक प्रसिद्ध सुगन्ध काष्ठ । सुठि = सुष्ठु = अच्छी तरह = अत्यन्त । दहद् = दहता है (दहति) = भस्म करता है । सरीरू = शरीर = देह । भा = भया = हुआ (बभूव) । अगिनि = अग्नि = आग । कया = काय = शरीर । कर = का । चीरू = चीर = वस्त्र । कहानी = कथानीक । सुनि = सुन कर (श्रुत्वा) । जरा = जरद् (ज्वलति) का प्रथम-पुरुष, भूत-काल, पुंलिङ्ग का एक-वचन । जानऊँ = जाने = जानोँ । घिउ = घृत = घी । बद्दसंदर = वासंदर = वैश्वानर = आग । परा = परद् (पतति) का प्रथम-पुरुष, भूत-काल, पुंलिङ्ग का एक-वचन ॥

बिरह = विरह = वियोग = जुदाई । आपु = आप = स्वयम् । सँभारद् = सँभारता है (सम्भारयति) । मद्दल = मैला = मलिन = मलयुक्त । चीर = वस्त्र । सिर = शिर । रूख = रूच = रूखा । पिउ = प्रिय । करत = करते (कुर्वत्) । रात = रात्रि । पपिहा = पपीहा = चातक = एक प्रसिद्ध पक्षी जो स्वाती ही का जल पीता है । भद् = भई (बभूव) । मुख = मुँह । सूख = शुष्क हुआ = सूख गया = सुखद् का भूत-काल ॥

(अपने) गले में सोने के तार से पक्षी को बाँध कर, जहाँ रत्न-सेन के ध्यान में लगी पद्मावती थी (वहाँ पर हीरा-मणि) शुक (पक्षी को) ले गया । जैसे सूर्य की आशा से कमल, कण्ठ तक पानी पा कर भी (रवि-किरणरूप जल के) प्यास से मरता रहता है, (उसी तरह रत्न-सेन के विना पद्मावती मरती थी) । (पद्मावती को) भोग, सय्या, सुख का वासस्थान, (सब) भूल गया, जहाँ भ्रमर (रत्न-सेन) था, वहाँ ही पर सब भोग-विलास चला गया । जब तक प्रिय (के आगमन) को नहीँ सुना था, तब तक धैर्य था, (आगमन) सुनते-ही (अब) घडी (घरी = घटी) भर भी जीव (स्थिर) नहीँ रहता है । जब तक हृदय में प्रेम नहीँ जमा था तभी तक सुख था, जहाँ प्रेम जमा कि सुख के साथ विश्राम गया । अगर और चन्दन शरीर को भस्म करते हैं, और देह पर का वस्त्र आग हो गया है । (रत्न-सेन की) कथा कहानी सुन (सुन) कर और भी जीव जल रहा है, जानें आग में घी पडा हो ॥

बिरह से (पद्मावती) अपने को नहीँ सँभारती है, कपडा मैला हो गया है, शिर (के बाल) रूखे हो गए हैं; रात दिन पी, पी (प्रिय, प्रिय) करती पपीहा हो गई है, (और) मुँह सूख गया है ॥ २३१ ॥

चउपाई ।

ततखन हीरामनि गा आई । मरत पिआस छाँह जनु पाई ॥
भल तुम्ह सुआ कीन्ह हइ फेरा । गाढ न जानेउँ प्रीतम केरा ॥
बाटहि जानहुँ बिखम पहारा । हिरदइ मिला न होइ निनारा ॥
मरम पानि कर जान पिआसा । जो जल मँह ता कहँ का आसा ॥
का रानी यह पूँछहु बाता । जनि कोइ होइ पेम कर राता ॥
तुम्हरे दरसन लागि बिओगी । अहा सो महादेओ मढ जोगी ॥
तुम्ह बसंत लेइ तहाँ सिधाई । देओ पूजि पुनि ओ पहँ आई ॥

दोहा ।

दिसिटि बान तस मारेहु घाइ रहा तेहि ठाउँ ।
दोसरि बार न बोला लेइ पदुमावति नाउँ ॥ २३२ ॥

ततखन = तत्क्षणे = उसी समय । हीरामनि = हीरामणि (शुक) । गा = गया (अगात्) । आई = आ कर (एत्य) । मरत = मरता (मरन्) । पिआस = पिपासा = प्यास । छाँह = छाया । जनु = जाने = जानोँ । पाई = पावइ (प्राप्नोति) का प्रथम-पुरुष, भूत-काल, स्त्रीलिङ्ग का एक-वचन । भल = वर = भला । सुआ = शुक = सुग्गा । कीन्ह = किया (अकरोत्) । हइ = है (अस्ति) । फेरा = स्फुरण = पुनरागमन । गाढ = कठिन = कष्ट । जानेउँ = जानी (अजानम्) । प्रीतम = प्रियतम । केरा = का । बाटहि = बाट मेँ = राह मेँ । जानहुँ = जाने = जानोँ । बिखम = विषम = नीचा ऊँचा । पहारा = पहाड = प्रहार = पर्वत । हिरदइ = हृदये = हृदय मेँ । मिला = मिला हुआ = मिलित । होइ = होता है (भवति) । निनारा = निरालय = अलग = निर्गत । मरम = मर्म = भेद । पानि = पानीय = पानी । जान = जानइ (जानाति) जानता है । पिआसा = प्यासा हुआ = पिपासु । जो = यः । जल = पानी । मँह = मध्ये = मेँ । ता कहँ = तिस को । का = किम् = क्या । आसा = आशा = उम्मीद । रानी = राज्ञी = पद्मावती । यह = इदम् । पूँछहु = पूछती हो (पृच्छय) । बाता = वार्त्ता = बात । जनि = मत = न । कोइ = कोऽपि = कोई । होइ = होय = होवे (भवेत्) । पेम = प्रेम । कर = का । राता = रक्त =

सक्त । दरसन = दर्शन । लागि = लिये = वास्ते = लग्न । बिश्रोगी = वियोगी = विरही । अहा = था = आसीत् । सो = वह = सो । महादेश्रो = महादेव । मढ = मठ = मन्दिर । जोगी = योगी । बसंत = वसन्त ऋतु । लेइ = ले कर (आलाय) । तहाँ = तत्र । सिधाई = सिधावइ (सेधति) का प्रथम-पुरुष, भूत-काल, स्त्रीलिङ्ग का एक-वचन । देश्रो = देव = देवता । पूजि = पूज कर (आपूज्य) । पुनि = पुनः = फिर । श्रो पहँ = उस के यहाँ । आई = आवइ (आयाति) का प्रथम-पुरुष, भूत-काल, स्त्रीलिङ्ग का एक-वचन ॥

दिसिटि = दृष्टि । बान = बाण । तस = तथा = तैसा । मारेउ = मारा = मारइ (मारयति) का मध्यम-पुरुष, भूत-काल, स्त्रीलिङ्ग का एक-वचन । घाइ = घाव = घात । रहा = था = आसीत् । तेहि = तिसी = उसी । ठाउँ = स्थान = ठावँ । दोसरि = दूसरी = द्वितीया । बार = वार = मर्तब । बोला = बोलइ (वदति) का प्रथम-पुरुष, भूत-काल, पुंलिङ्ग का एक-वचन । पदुमावति = पद्मावती । नाउँ = नाम = नावँ ॥

उसी समय हीरामणि (शुक) आ गया, जानौँ प्यास से मरता छाँह पा जाय (ऐसी दशा पद्मावती की हुई) । (कहने लगी कि) हे शुक अच्छा किया जो तुम्ह ने फेरा की, मैँ (अपने) प्रियतम के कष्ट को नहीँ जानी (कि क्या उस पर बीत रही है) । (मेरे लिये उस के मिलने की) राह मेँ जानौँ विषम पहाड पडा हुआ है, (तौ भी) हृदय मेँ मिला (वह किसी तरह से) अलग नहीँ होता । प्यासा पानी का मर्म जानता है, जो पानी मेँ है उस के लिये क्या (पानी की) आशा । (शुक ने उत्तर दिया कि) रानी इस बात को क्या पूछती हो; (भगवान करे कि) प्रेम का अनुरागी कोई न हो । वह (रत्न-सेन) विरही योगी तुम्हारे दर्शन के लिये महादेव के मन्दिर मेँ (ठहरा) था । तुम वसन्त ऋतु (सखिश्रोँ) को ले कर वहाँ पधारी और देवता पूज कर फिर उस के पास आई ॥

तुम ने ऐसा दृष्टि-बाण मारा कि (उस) घाव से (वह बेचारा) उसी जगह रह गया, (एक वार) पद्मावती (ऐसा तुमारा) नाम ले कर (मूर्छित हो गया फिर) दूसरी वार न बोला ॥ २३२ ॥

चउपाई ।

रोश्रँहिँ रोश्रँ बान बेइ फूटे । सोतहिँ सोत रुहिर मुख छूटे ॥
नइनन्ह चली रकत कइ धारा । कंथा भीँजि भएउ रतनारा ॥

सूरुज बूडि उठा परभाता। अउ मँजीठ टेँसू बन राता ॥
भएउ बसंत रात बनफती। अउ राते सब जोगी जती ॥
पुहुमि जो भीँज भई सब गेरू। अउ तहँ अहा सो रात पखेरू ॥
राती सती अगिनि सब काया। गगन मेघ राते तेहि छाया ॥
ईँगुर भा पहार तस भीँजा। पइ तुम्हार नहिँ रोअँ पसीजा ॥

दोहा।

तहाँ चकोर कोकिला तिन्ह हिअ मया पईठि।
नइन रकत भरि आए तुम्ह फिरि कीन्ह न दीठि ॥ २३३ ॥

रोअँहिँ रोअँ = रोम रोम। बान = वाण। वेइ = वे। फूटे = फूटइ (स्फुटति) का प्रथम-पुरुष, भूत-काल, पुंलिङ्ग का बहु-वचन। सोतहिँ सोत = सोते सोते = स्रोत स्रोत। रुहिर = रुधिर। मुख = मुँह। कूटे = कूटइ (कुटति) का प्रथम-पुरुष, भूत-काल, पुंलिङ्ग का बहु-वचन। नइनन्ह = नयनन्ह = आँखोँ से। चली = चलइ (चलति) का प्रथम-पुरुष, भूत-काल, स्त्रीलिङ्ग का एक-वचन। रकत = रक्त = रुधिर = खून = लोहू। कइ = की। धारा = प्रवाह। कंथा = कन्था = गुदरी। भीँजि = भीँग कर (अभ्यज्यते)। भएउ = हुआ (बभूव)। रतनारा = रक्तवर्ण = लाल। सूरुज = सूर्य। बूडि = बूड कर = डूब कर (संब्रुड्य)। उठा = उठइ (उत्तिष्ठते) का प्रथम-पुरुष, भूत-काल, पुंलिङ्ग का एक-वचन। परभाता = प्रभात = प्रातःकाल। मँजीठ = मञ्जिष्ठा। टेँसू = किंशुक = पलास। बन = वन। राता = रक्त। बसंत = वसन्त ऋतु। रात = रक्त। बनफती = वनस्पति। राते = रक्त हो गए। सब = सर्व। जोगी = योगी। जती = यतिः। पुहुमि = पृथ्वी = भूमि। भीँज = भीँजी = भीँगी। भई = हुई (बभूव)। गेरू = गैरिक। तहँ = तत्र = तहाँ। अहा = था = आसीत्। सो = सः = वह। पखेरु = पक्षी। राती = रक्तवर्ण की। सती = साध्वी स्त्री = पतिव्रता, जो मृतपति के साथ चिता पर भस्म हो जाती है। अगिनि = अग्नि = आग। काया = काय = देह। गगन = आकाश। मेघ = बादल। ईँगुर = हिङ्गुल। भा = भया = हुआ (बभूव)। पहार = प्रहार = पहाड = पर्वत। तस = तथा = तैसा। पइ = अपि = पर। पसीजा = पसीजइ (प्रस्विद्यति) का प्रथम-पुरुष, भूत-काल पुंलिङ्ग का एक-वचन ॥

तहाँ = तत्र । चकोर = एक प्रसिद्ध पक्षी, जो अङ्गार खाता है । कोकिला = एक प्रसिद्ध पक्षी । तिन्ह = तिन्ह के = उन के । हिय = हृदय । मया = माया = दया । पईठि = पैठी = प्रविष्ट हुई । नइन = नयन । भरि = भर = पूर्ण । आए = आवइ (आयाति) का प्रथम-पुरुष, भूत-काल, पुंलिङ्ग का बहु-वचन । फिरि = फिर कर । कीन्ह = किया (अकरोत्) । दीठि = दृष्टि = नजर ॥

उन वाणों से रोएँ रोएँ फूट गए, (उन के) मुखों से रुधिर के सोते के सोते छूटे । आँखों से रक्त की धारा (बह) चली, कन्या भीँग कर लाल हो गया । प्रातःकाल का सूर्य (उसी रक्त-धारा से) बूड उठा और वन के मजीठ और टेंसू लाल हो गए । (उसी रक्त-धारा से) वसन्त ऋतु में वनस्पतिआँ लाल हो गईं, और योगी यती सब लाल हो गए, अर्थात् उन के गेरुआ वस्त्र उसी रक्तधारा से लाल हो गए हैं । (उस धारा से) पृथ्वी जो भीँगी उसी से भूमि में गेरू हुए (कवि के मत से गेरू स्त्रीलिङ्ग है इसी से भइ का प्रयोग किया है) और उस जगह जितने पक्षी थे सब लाल हो गए । (उसी रक्त-धारा से) अग्नि में सती की सब शरीर लाल हो गई, (उसी धारा की) छाया पडने से आकाश में मेघ लाल रङ्ग के हुए । (उसी रक्त-धारा से) पहाड ऐसा भीँग गया कि उस में ईँगुर (की खानि) हो गई, (यह सब कवि की उत्प्रेक्षा है), ये सब तो हुए पर तुम्हारा एक रोआँ भी न पसीजा ॥

उस स्थान में चकोर और कोकिला जो थे उन के हृदय में दया आई, (दया से) उन की आँखों में रुधिर भर आए पर तुम फिर कर (उस की ओर) दृष्टि न की । चकोर और कोकिला की आँखें लाल लाल होती हैं वहाँ कवि की उत्प्रेक्षा है कि दया-ही के कारण रक्ताश्रु भर जाने से उन की आँखें लाल हो गई हैं ॥ २३३ ॥

चउपाई ।

अइस बसंत तुम्हहूँ पइ खेलहु । रकत पराए सेँदुर मेलहु ॥
तुम्ह तउ खेलि मँदिर कहँ आईं । ओहि क मरम पइ जानु गोसाईं ॥
कहेसि मरइ को बारहिं बारा । एकहि बार होउँ जरि छारा ॥
सर रचि चहा आगि जो लाई । महादेओ गउरइ सुधि पाई ॥
आइ बुझाइ दीन्ह पँथ तहवाँ । मरन खेल कर आगम जहवाँ ॥

उलटा पंथ पेम कइ बारा। चढइ सरग सो परइ पतारा॥
अब धँसि लीन्ह चहइ तेहि आसा। पावइ आस कि मरइ निरासा॥

दोहा।

पाती लिखि जो पठाई लिखा सबइ दुख रोइ।
दहुँ जिउ रहइ कि निसरइ काह रजाएसु होइ॥ २३४॥

अइस = एतादृश = ऐसा। बसंत = वसन्त-ऋतु। तुम्हइँ = तुम्हीँ। पइ = अपि। खेलडु = खेलती हो (खेलथ)। रकत = रक्त = रुधिर। पराए = परस्य = दूसरे के। सँदुर = सिन्दूर = सँधुर। मेलडु = मेलती हो = लगाती हो (मेलयथ)। तउ = तो। खेलि = खेल कर (खेलिला)। मँदिर = मन्दिर = गृह। कहँ = को। आईँ = आवइ (आयाति) का मध्यम-पुरुष, भूत-काल, स्त्रीलिङ्ग का बहु-वचन। ओहि क = उस का। मरम = मर्म = भेद। जानु = जान = जानता है (जानाति)। गोसाईँ = गोस्वामी = भगवान्। कहेसि = कहा (अकथयत्)। मरइ = मरे (मरेत्)। को = कः = कौन। बारहिँ बारा = बरम्बार। होउँ = होऊँ (भवानि)। जरि = जल कर (प्रज्वल्य)। छारा = छार = भस्म = राख। सर = शर = शरशय्या = चिता। रचि = रच कर (आरचय्य)। चहा = चाहा = चाहइ (इच्छति) का प्रथम-पुरुष, भूत-काल, पुंलिङ्ग का एक-वचन। आगि = अग्नि = आग। लाई = लगावँ (लगयेः)। महादेओ = महादेव। गउरइ = गौरी ने। सुधि = शोध = खबर। पाई = पावइ (प्राप्नोति) का प्रथम-पुरुष, भूत-काल, स्त्रीलिङ्ग का एक-वचन। आइ = आ कर (एत्य)। बुझाइ = बुझा कर (निर्वाप्य)। दीन्ह = दिया (अदात्)। पँथ = पथ = पन्थाः = राह। तहवाँ = तहाँ = तत्र। मरन = मरणार्थ। खेल = लीला। आगम = आगमन। जहवाँ = जहाँ = यत्र। उलटा = उद्वर्त्तन = विपरीत। पेम = प्रेम। कइ = के। बारा = द्वार। चढइ = चढे (उच्चलेत् वा आरोहेत्)। सरग = स्वर्ग। सो = सः = वह। परइ = पडे (पतेत्)। पतारा = पाताल। अब = इदानीम् = अधुना। धँसि = धँस कर (आध्वंस्य)। लीन्ह = लेना। चहइ = चाहता है (इच्छति)। आसा = आशा = उम्मीद। पावइ = पावे (प्राप्नुयात्)। कि = वा = अथवा। मरइ = मरे (मरेत्)। निरासा = निराश = नैराश्य = नाउम्मीद॥

पाती = पत्री। लिखि = लिख कर (लिखिला)। पठाई = पठवइ (प्रेषयति वा प्रस्थापयति) का प्रथम-पुरुष, भूत-काल, स्त्रीलिङ्ग का एक-वचन। लिखा = लिखइ

(लिखति) का प्रथम-पुरुष, भूत-काल, पुंलिङ्ग का एक-वचन। सबइ = सभी। दुख = दुःख। रोइ = रो कर (रुदित्वा)। दखउँ = देखूँ = क्या जानें। जिउ = जीव। रहइ = रहता है (तिष्ठति)। निसरइ = निकलता है (निःसरति)। काह = किम् = क्या। रजाएसु = राजाज्ञा। होइ = होती है (भवति) ॥

(शुक पद्मावती से कह रहा है कि) ऐसा वसन्त निश्चय है कि तुम्ही खेलती हो, दूसरे के रुधिर का सेंदुर लगाती हो। तुम तो खेल कर घर चली गई पर उस (रत्न-सेन) का हाल भगवान-ही जानता है। (उस रत्न-सेन ने) कहा कि वारंवार (पद्मावती के ध्यान से) कौन मरता रहे, एक-ही वार जल कर राख हो जाऊँ (तो अच्छा)। (ऐसा विचार कर) चिता रच कर, ज्यों-ही आग लगा कर जलना चाहा, त्यों ही महादेव और पार्वती (गौरी) ने खबर पाई (कि रत्न-सेन जल रहा है)। आ कर, आग को बुझा कर, उस पथ को दिया, अर्थात् बताया, जिस में कि मरने के खेल का आगम है। (कवि कहता है कि) प्रेम-द्वार की राह उलटी है, स्वर्ग को चढे तो पाताल में गिरे। (राजा रत्न-सेन) अब उस (पद्मावती) की आशा से, (गढ में) धँस कर। (उस राह को) लेना चाहता है; (उस राह में) आशा को पावे या नैराश्य हो कर मरे ॥

(रत्न-सेन ने) जो पत्नी भेजी थी (उस में) सभी दुःख रो रो कर लिखा था, (उस में यह भी लिखा था कि) देखूँ जीव रहता है कि जाता है (देखूँ) राजा (गन्धर्व-सेन) की क्या आज्ञा होती है ॥ २३४ ॥

चउपाई।

कहि कइ सुअइ छोडि दइ पाती। जानहुँ दीप छुअत तस ताती ॥
गिअहिँ जो बाँधे कंचन तागे। राते स्यावँ कंठ जरि लागे ॥
अगिनि साँस सँग निसरी ताती। तरुअर जरहिँ तहाँ को पाती ॥
रोइ रोइ सुअइ कही सब बाता। रकत क आँसुहिँ भा मुख राता ॥
देखु कंठ जरि लागु सो गेरा। सो कस जरइ बिरह अस घेरा ॥
जरि जरि हाड भए सब चूना। तहाँ माँस को रकत बिहूना ॥
वेइ तोहि लागि कया असि जारी। तपत मीन जल रहइ न पारी ॥

दोहा ।

तेहि कारन वह जोगी भसम कीन्ह तन दाहि ।
तूँ अस निठुर निछोही बात न पूँछी ताहि ॥ २३५ ॥

कहि कइ = कह कर (कथयित्वा)। सुअइ = शुक ने। छोडि दइ = छोड दी। दइ = दी = दई (अदात्)। जानऊँ = जाने = जानेँ। दीप = दीपक = दीया = चिराग। छुअत = छूते (स्पृशन्)। तस = तथा = तैसी। तातो = तप्त = गर्म। गिअहिँ = ग्रीवा मेँ = ग्रीवायाम्। बाँधे = बँधे ये = बद्ध ये। कंचन = काञ्चन = सुवर्ण। तागे = सूत्र। राते = रक्त = लाल। स्याव = श्याम = काला। जरि = जल कर (प्रज्वल्य)। लागे = लगे = लग्न हो गए। अगिनि = अग्नि = आग। साँस = श्वास। सँग = संग = साथ। निसरी = निसरइ (निःसरति) का प्रथम-पुरुष, भूत-काल, स्त्रीलिङ्ग का एक-वचन। तरुअर = तरुवर = बडे वृक्ष। जरहिँ = जरइ (ज्वलति) का बहु-वचन = जलते हैँ। तहाँ = तत्र। को = क्या = किम्। रोइ = रो कर (रुदित्वा)। कही = कहइ (कथयति) का प्रथम-पुरुष, भूत-काल, स्त्रीलिङ्ग का एक-वचन। वाता = वार्त्ता = वात। रकत = रक्त = रुधिर। क = की। आँसुहिँ = आँसुओँ से = अश्रुभिः। भा = भया (बभूव) = हुआ। मुख = मुँह। राता = रक्त = लाल। देखु = देख (पश्य)। कंठ = कण्ठ = गला। लागु = लगा = लग्न हुआ। सो = वह। गेरा = गिरा दिया। कस = कथम् = कैसा। जरइ = जलता है (ज्वलति)। बिरह = विरह = वियोग। अस = एतादृश = ऐसा। घेरा = घेर लिया। हाड = अस्थि = हड्डिआँ। भए = हुए (बभूवुः)। चूना = चूर्ण। तहाँ = तत्र। माँस = मांस। को = किम् = क्या। बिहूना = विहीन। वेइ = उन्होँ ने। तोहि लागि = तेरे लिये। कया = काय = शरीर = देह। असि = एतादृशी = ऐसी। जारी = जारइ (ज्वालयति) का प्रथम-पुरुष, भूत-काल, स्त्रीलिङ्ग का एक-वचन। तपत = तप्त। मीन = मछली। जल = पानी। रहइ = रहने को। पारी = पारइ (पारयति) का प्रथम-पुरुष, भूत-काल, स्त्रीलिङ्ग का एक-वचन ॥

कारन = कारण। जोगी = योगी। भसम = भस्म = राख। कीन्ह = किया (अकरोत्)। तन = तनु = देह। दाहि = दाह कर (दग्ध्वा)। तूँ = त्वम्। निठुर = निष्ठुर = क्रूर। निछोही = निःक्षोभी = निर्मोही। बात = वार्त्ता। पूँछी = पूँछइ (पृच्छति) का प्रथम-पुरुष, भूत-काल, स्त्रीलिङ्ग का एक-वचन ॥

शुक ने (इतनी बात) कह कर (पद्मावती के आगे, गले से) खोल कर पत्ती को रख दी, (पत्ती) छूने से ऐसी तप्त जान पडती है जैसे कि दीप। (दो फेरे) सोने के ताग जो गले में बाँधे गए थे (वे पत्ती की आग से) जल कर कण्ठ में लाल काले (कण्ठे) हो गए, कवि की उत्प्रेचा है कि शुक के गले में लाल काले जो कण्ठे हैं वे पत्ती की आग से ताग के जल जाने से हैं। (शुक की) गर्म स्वास के साथ आग भभक उठी जिस से बडे बडे वृच जलने लगे, तहाँ (वृच की) पत्तिओं की क्या गिनती है। शुक (हीरा-मणि) ने रो रो कर सब बात कही, रक्त की आँसुओं से मुख लाल हो गया। (शुक कहता है कि, पद्मावती) देख, कण्ठ जलने लगा तब (इस पत्ती को) गिरा दिया, सो (जिस के हाथ की पत्ती है वह) ऐसी विरहाग्नि के घेरे से कैसा जरता है (यह तूँ ही समझ)। (उस रत्न-सेन के) सब हाड जल जल कर चूने हो गए, वहाँ रक्त के विना मांस की क्या बात है। उन्हों ने तेरे लिये इस तरह से देह को भस्म कर दिया; (सो तूँ ही कह कि) जलती मछली पानी में रह सकती है ? ॥

तेरे लिये उस योगी ने देह को जला कर, राख कर दी, (पर) तूँ ऐसी निर्मोही है कि उस से बात तक न पूछी ॥ २३५ ॥

चउपाई ।

कहेसि सुआ मो सउँ सुनु बाता । चहउँ तो आजु मिलउँ जस राता ॥
पइ सो मरमु न जानइ भोरा । जानइ प्रीति जो मरि कइ जोरा ॥
हउँ जानति हउँ अब-हूँ काँचा । ना जेहि प्रीति रंग थिर राँचा ॥
ना जेहि होइ भवँर कर रंगू । ना जेहि दीपक होइ पतंगू ॥
ना जेहि करा भिंगि कइ होई । ना जेहि अवहि जिअइ मरि सोई ॥
ना जेहि पेम अउटि एक भएउ । ना जेहि हिअइ माँह डर गएऊ ॥
ना जेहि भएउ मलइ गिरि बासा । ना जेहि रबि होइ चढेउ अकासा ॥

दोहा ।

तेहि का कहिअ रहन खन जो हइ पीतम लागि ।
जहाँ सुनइ तहँ लेइ धँसि कहा पानि का आगि ॥ २३६ ॥

कहेसि = कहा (अकथयत्)। सुआ = शुक। मो सउँ = मुझ से। सुनु = सुन (शृणु)। बाता = वार्त्ता = बात। चहउँ = चाहूँ (इच्छामि)। तौ = तर्हि। आजु = आज = अद्य। मिलउँ = मिलूँ (मिलामि)। जस = यथा = जैसे। राता = रक्त = अनुरक्त। पइ = अपि = पर। सो = सः = वह। मरमु = मरम = मर्म = भेद। जानइ = जानता है (जानाति)। भोरा = भुलना = बौरहा = गवाँर = वातुल। प्रीति = प्रेम। जो = यः = जो। मरि कइ = मर कर (मृत्वा)। जोरा = जोरइ (जोटयति) का प्रथम-पुरुष, भूत-काल, स्त्रीलिङ्ग का एक-वचन। हउँ = अहम् = मैं। जानति = जानती (ज्ञाता)। हउँ = हूँ (अस्मि)। अब-हूँ = इदानीमपि = अधुनापि = अब भी। काँचा = कच्चा (कच्यः कच बन्धने से)। ना = न = नहीं। रंग = रङ्ग = वर्ण। थिरु = स्थिर = ठहराऊ। राँचा = रचा गया, वा रचा = रचइ (रचयति) का प्रथम-पुरुष, भूत-काल, पुंलिङ्ग का एक-वचन। होइ = होता है (भवति) भवँर = भ्रमर = भौंरा। रंगू = रङ्ग = वर्ण। दीपक = दीप = दीया। पतंगू = पतङ्ग = फतिंगा। करा = कला। भिंगि = भृङ्गी = बिलनी = एक कीट विशेष। होई = होइ (भवति)। अबहि = अभीं। जिअइ = जीवता है (जीवति)। मरि = मर कर (मृत्वा)। सोई = स एव = वही। पेम = प्रेम। अउटि = आवर्त्य = औट कर। एका = एक। भएऊ = भया (बभूव) = हुआ। हिअइ = हृदय। माँह = मध्ये = मैं। डर = दर = भय। गएऊ = गया (अगात्)। मलइ = मलय। गिरि = पर्वत। बासा = वास। रबि = रवि = सूर्य। होइ = हो कर (भूत्वा)। चढेउ = चढा (उच्चलित हुआ)। अकासा = आकाश = स्वर्ग॥

का = किम् = क्या। कहिअ = कहिए (कथ्यते)। रहन = रहना। खन = क्षण। हइ = है (अस्ति)। पीतम = प्रियतम। लागि = लिये। जहाँ = यत्र। सुनइ = सुने (शृणुयात्)। तहँ = तहाँ। लेइ = लेता है (लाति)। धँसि = धँस कर (प्रध्वंस्य)। कहा = किम् = क्या। पानि = पानीय = पानी। का = किम् = क्या। आगि = अग्नि = आग॥

(पद्मावती ने) कहा कि, हे शुक मुझ से बात सुन, जैसा (वह मेरे में) अनुरक्त है (इस बात के सुनने से) चाहूँ तो आज ही मिलूँ। पर वह गवाँर (प्रीति का) मर्म नहीं जानता, जो मर कर प्रीति को जोडता है वही (प्रीति को) जानता है। मैं जानती हूँ, अभीं वह कच्चा है, जिस मैं स्थिर प्रीति-वर्ण नहीं रचा गया। जिस मैं (अभीं) भौंर का रङ्ग नहीं आया, जो कि (अभीं) दीए का फतिंगा न हुआ। जिस मैं अभीं भृङ्गी की कला न हुई, जो कि वह अभीं मर कर नहीं जीआ है।

(भङ्गी के लिये ७८ वँ दोहे की टीका देखो)। जिस की (देह मेँ) ओट कर प्रेम एक नहीँ हुआ है, अर्थात् मिल नहीँ गया है, जिस के हृदय मेँ से डर नहीँ गया है। जिस को मलयाचल का वास नहीँ हुआ, अर्थात् मलय-चन्दन की प्राप्ति नहीँ हुई, जो सूर्य हो कर, आकाश पर नहीँ चढा ॥

जो प्रियतम के लिये (उपस्थित) है, उस को क्या रहने का क्षण कहा जाता है, अर्थात् वह क्या एक क्षण भी ठहरता है; उस को क्या पानी क्या आग, जहाँ (प्रियतम का नाम) सुने वहीँ धँस कर (प्रियतम-प्राप्ति का सुख) ले ॥ २३६ ॥

चउपाई ।

पुनि धनि कनक पानि मसि माँगी। उतर लिखत भीँजी तनु आँगी ॥
तेहि कंचन कहँ चहिअ सोहागा। जउँ निरमल नग होइ सो लागा ॥
हउँ जो गइउँ मढ मंडप भोरी। तहवाँ तुइँ न गाँठि गहि जोरी ॥
गा बिसँभारि देखि कइ नइना। सखिन्ह लाज का बोलउँ बइना ॥
खेलहि मिसु मइँ चंदन घाला। मकु जागसि तो देउँ जइ-माला ॥
तबहुँ न जागा गा तूँ सोई। जागइँ भेँटि न सोअइँ होई ॥
अब तउ ससि होइ चढेउँ अकासा। जो जिउ देइ सो आवइ पासा ॥

दोहा ।

तब लगि भुगुति न लेइ सका रावन सिअ एक साथ ।
कउन भरोसइँ अब कहउँ जीउ पराए हाथ ॥ २३७ ॥

पुनि = पुनः = फिर। धनि = धन्या (पद्मावती)। कनक = सुवर्ण। पानि = पानी = पानीय। मसि = मषी = स्याही। माँगी = माँगइ (याचते) का प्रथम-पुरुष, भूत-काल, स्त्रीलिङ्ग का एक-वचन। उतर = उत्तर = जवाब। लिखत = लिखते (लिखन्)। भीँजी = भीँजइ (अभ्यज्यते) का प्रथम-पुरुष, भूत-काल, स्त्रीलिङ्ग का एक-वचन। तनु = शरीर = देह। आँगी = अँगिआ (अङ्गिनी) = चोलिआ = चोली। तेहि = तिस। कंचन = काञ्चन = सुवर्ण। कहँ = को। चहिअ = चाहिए। सोहागा = सोहागा = (शुभाङ्ग)। जउँ = यदि = जो। निरमल = निर्मल = स्वच्छ = साफ। नग = रत्न का खण्ड, जो अँगूठी इत्यादि मेँ

जड़ा जाता है। होइ = होय = होवे (भवेत्)। सो = वह = सः। लागा = लाग = लगता है (लगति)। हउँ = अहम् = मैं। गइउँ = गई (अगाम्)। मठ = मठ = देव-मन्दिर। मंडप = मण्डप = मन्दिरद्वार के बाहर की शाला। भोरी = बौरही। तहवाँ = तहाँ = तब। तुइँ = त्वम् = तूँ। गाँठि = ग्रन्थि = गाँठ। गहि = गहीला = गह कर = पकड़ कर। जोरी = जोरइ (जोटयति) का, प्रथम-पुरुष, भूत-काल, स्त्रीलिङ्ग का एक-वचन। गा = गया (अगात्)। बिसँभारि = बेसँभार (विसम्भार)। देखि कर = देख कर (दृष्ट्वा)। नइना = नयन = आँख। सखिन्ह = सखी का बहु-वचन। लाज = लज्जा। का = किम् = क्या। बोलउँ = बोलूँ (वदानि)। बइना = वचन। खेलहि = खेल के = खेलायाः। मिसु = मिष = व्याज = बहाना। मइँ = मैं। चंदन = चन्दन = सुगन्ध द्रव्य। घाला = घालइ (गारयति) का प्रथम-पुरुष, भूत-काल, पुंलिङ्ग का एक-वचन। मकु = मैं ने कहा = कि। जागसि = जागे = जागइ (जागर्त्ति) का मध्यम-पुरुष, सम्भावना में पुंलिङ्ग का एक-वचन। तो = तर्हि। देउँ = देऊँ (ददानि)। जइ-माला = जय-माला। तबहूँ = तदापि = तौ भी। जागा = जागइ (जागर्त्ति) का प्रथम-पुरुष, भूत-काल, पुंलिङ्ग का एक-वचन। गा = गया (अगात्)। तूँ = त्वम्। सोई = सोय = शयित = शयन। जागइँ = जागने से (जागरणेन)। भेंटि = भेंट = समवेत = समागम। सोअइँ = सोने से (शयनेन)। होई = होइ = होता वा होती है (भवति)। अब तउ = अब तो = इदानीं तु। ससि = शशी = चन्द्र। होइ = हो कर (भूत्वा)। चढउँ = चढी (उच्चलिताक्षि)। अकासा = आकाश। जो = यः। जिउ = जीव। देइ = दे = देवे (दद्यात्)। सो = सः = वह। आवइ = आवे (आयात्)। पासा = पार्श्व = पास॥

तब लगि = तब तक। भुगुति = भुक्ति = भोजन। सका = सकइ (शक्नोति) का प्रथम-पुरुष, भूत-काल, पुंलिङ्ग का एक-वचन। राओन = रावण = प्रसिद्ध लङ्का का राजा। सिअ = सीता = प्रसिद्ध पतिव्रता, राम-पत्नी, जनक की कन्या। एक = एक। साथ = सार्थ। कउन = क्व नु = किस। भरोसइँ = भरोसे से (भराशया)। कहउँ = कहूँ (कथयेयम्)। जीउ = जीव। पराए = परस्य = दूसरे के। हाथ = हस्त॥

फिर धन्या (पद्मावती) ने सोने की पानी की स्याही, अर्थात् सोने की स्याही माँगी, उत्तर लिखती बेरा (प्रियतम के अनुराग से, रोमाञ्च और पसीना आ जाने से) देह की चोलिआ भीँग गई। (लिखने लगी कि) उस सोने में सोहागा मिलना चाहिए यदि (वह सोना चाहे कि मैं) निर्मल होऊँ (तब) उस में नग लगा हो,

अर्थात् तब उस में नग लगाया जाता है। मैं बौरही जब मठ-मण्डप में गई, उसी जगह तैं ने क्यों न (मुझ से) गाँठ जोडी। (मेरी) आँखों को देख कर तूं बेसँभार, अर्थात् बेहोश, हो गया, (मैं उस समय) सखिओं की लाज से क्या बात बोलूं। मैं ने खेल के बहाने से (तेरे ऊपर) चन्दन को डाल दिया, कि तूं जागे तो मैं जय-माला (तुझे) देऊँ। तब भी तूं न जागा, सो गया, (सो) जागने से भेंट होती है सोने से नहीं। अब तो मैं चन्द्र हो कर आकाश (धरहरे) पर चढी हूं; जो जीव दे, अर्थात् मर कर स्वर्ग पर चढे, वह मेरे पास आवे, (जीव रहते स्वर्ग पर आना असम्भव है)॥

सीता के एक साथ में (रह कर भी) तब तक रावण ने भुक्ति (स्वर्ग-सुख) को न ले सका (जब तक कि जीव को न दिया)। सो अब किस भरोसे से कहूँ (कि मैं कैसे मिलूंगी), जीव तो दूसरे के, अर्थात् पिता के हाथ में है ॥ २३७ ॥

चउपाई ।

अब जउँ सूर गगन चढि आवइ। राहु होइ तउ ससि कहँ पावइ॥
बहुतइँ अइस जीउ पर खेला। तूँ जोगी केहि माँह अकेला॥
बिकरम धँसा पेम कइ बारा। चंपावति कहँ गएउ पतारा॥
सुदइ बच्छ मगधावति लागी। कँकन पूरि होइ गा बइरागी॥
राज कुअँर कंचन-पुर गएऊ। मिरगावति कहँ जोगी भएऊ॥
साध कुअँर गंधावति जोगू। मधु मालति कहँ कीन्ह बिओगू॥
पेमावति कहँ सर सुर साधा। उखा लागि अनिरुध बर बाँधा॥

दोहा ।

हउँ रानी पदुमावती सात सरग पर बास।
हाथ चढउँ हउँ ताहि के प्रथम करइ अपुनास ॥ २३८ ॥

अब = इदानीम्। जउँ = यदि = जो। सूर = सूर्य, वा शूर = बहादुर रत्न-सेन। गगन = आकाश। चढि = चढ कर = आरुह्य = प्रचाल्य। आवइ = आवे (आयात्)। राहु = प्रसिद्ध दैत्य। होइ = होवे = भवेत् = हो। तउ = तर्हि = तो। ससि = शशि = चन्द्र। कहँ = को। पावइ = पावे = प्राप्नुयात्। बहुतइँ = बहुत लोग = बहवो हि। अइस = ऐसे = एतादृश। जीउ = जीव। पर = उपरि। खेला = अखेलत्। तूँ = त्वम्।

जोगी = योगी। केहि = कस्य = किस। माँह = मध्ये = में। अकेला = एकल: = एकाकी। बिकरम = विक्रम = उज्जयिनी का प्रसिद्ध राजा। धँसा = पैठा [ध्वंसु अवस्रंसने (भ्वादि) से]। पेम = प्रेम। कइ = के। बारा = बार = द्वार। चंपावति = चम्पावती = एक पाताल की राज-कन्या। कहँ = के। गअउ = गया (अगात्)। पतारा = पाताल। सुदइ बच्छ = सुदेव वत्स = वत्सदेव। मगधावति = मगधावती = मागधी = मगधराज की कन्या। लागी = लिये। कँकन = कङ्कण = कडा। पूरि = आपूर्य = पहन कर। होइगा = हो गया। बइरागी = वैरागी = विरागी। राज-कुअँर = राज-कुमार = राज-पुत्त्र। कंचन-पुर = काञ्चन-पुर। मिरगावति = मृगावती = एक राज-कन्या। भअऊ = भया (बभूव)। साध = साधा (असाधयत्)। कुअँर = कुमार = राज-पुत्त्र। गंधावति = गन्धावती = एक राज-कन्या। जोगू = योग। मधु = मधुकर = एक राजा। मालति = मालती = एक राज-कन्या। कीन्ह = किया (अकरोत्)। बिओगू = वियोग। पेमावति = प्रेमावती = मोहनी। सर = शर = फूस की चिता। सुर = देव = महादेव। साधा = असाधयत्। उखा = ऊषा = वाणासुर की कन्या। अनिरुध = अनिरुद्ध = कृष्ण का पौत्त्र = प्रद्युम्न का पुत्त्र। बर = वर = विवाहयोग्य पुरुष। बाँधा = बाँधा गया॥

हउँ = मैँ। पदुमावती = पद्मावती। सात = सप्त। सरग = स्वर्ग। पर = उपरि। बास = वास = रहने का स्थान। हाथ = हस्त। चढउँ = चढती हूँ। ताहि के = तिस के। प्रथम = पहले। अपुनास = अपना नाश॥

अब तो सूर्य (रत्न-सेन) यदि आकाश पर चढ कर आवे और राऊ होवे तो शशि (पद्मावती) को पावे अर्थात् शशि के साथ का सुखानुभव करे। (मेरे लिये) ऐसे-ही बहुत से लोग जीव पर खेल गए, अर्थात् योग कर मर गए, हूँ अकेला योगी किस गिनती में है। प्रेम के द्वार में विक्रम धँसा, (और) चम्पावती के लिये पाताल में चला गया। वत्सदेव मगधावती के लिये (हाथों में) कङ्कण पहन कर वैरागी हो गया। राज-कुअँर मृगावती के लिये काञ्चन-पुर गया और योगी हो गया। कुअँर ने गन्धावती के लिये योग साधा। मधुकर ने मालती को वियोग, अर्थात् व्याकुल, किया, अर्थात् विरहिणी किया। सुर ने प्रेमावती के लिये चिता लगाई, अनिरुद्ध ऊषा के लिये बाँधा गया॥

मैँ पद्मावती रानी हूँ सात स्वर्ग (धरहरे) के ऊपर मेरा वास है, जो पहले अपने को खोवे (नाश करे) उस के हाथ मेँ आती हूँ (चढती हूँ)॥

विक्रम—चम्पावती—लल्लू जी की सिंहासनबत्तीसी में पाँचवीं पुतली लीलावती की कथा में चम्पावती के स्थान में सिंहावती नाम लिखा है, जिस के लिये विक्रम बहुत कष्ट भोगा है। यदि सिंहावती यह नाम शुद्ध है तो मूल में 'चंपावति' के स्थान में 'सिंहावति' होना चाहिए ॥

वत्सराज—मगधावती—अवन्ती का राजा वत्सराज मगध देश के लावानक-पुर के वन में अपनी पत्नी वासवदत्ता के साथ विहार करने आया था। एक दिन शिकार खेलने के लिये राजा दूर चला गया। अवसर पा कर यौगन्धरायण ने वासवदत्ता को छिपा दिया। राजा के आने पर कहा कि लावानक में वासवदत्ता आग लगने से जल गई आप मगधराज प्रद्योत की पुत्री पद्मावती से विवाह कर मागधी पद्मावती को रानी बनाइए। अन्त में वत्सराज ने मागधी से विवाह किया फिर पीछे से वासवदत्ता भी मिली। यह कथा बृहत्कथामञ्जरी के तृतीयलम्बकान्तर्गत सातवीं आख्यायिका में मिलती है और बृहत्कथा सरित्सागर के तृतीयलम्बक के दूसरे तरङ्ग में भी है। संभव है कि इसी की छाया ले कर किसी ने मगधावती नाम की कथा लिखी हो ॥

राज-कुअँर—मिरिगावती—सेख बुर्हान का चेला कुतवन ने सन् ९०९ में मिरिगावती नाम की पुस्तक बनाई है। उस में राज-कुअँर और मिरिगावती की सविस्तर कथा लिखी है। यह मलिक महम्मद की पद्मावती से २८ वर्ष पहले की है। बाबू हरिश्चन्द्र के पुस्तकालय में एक खण्डित पुस्तक मुझे मिली है। इस में मुझे राज-कुमार का नाम नहीं मिला है संभव है कि "राज-कुअँर" यही नाम हो क्योंकि पुस्तक में एक स्थान में लिखा है कि "तुला रास गनि नाउँ जो राखा। राज-कुअँर सब पंडित भाखा ॥" चित्रा के तीसरे चरण में जन्म होने से राज-कुअँर की तुला राशि होती है। एक दिन यह शिकार खेलते खेलते मान-सरोवर के तीर पर पहुँचा। इसे देखते-ही एक हरिणी उतर कर सरोवर के भीतर लोप हो गई। राज-कुअँर इसे ढूँढने के लिये पानी के भीतर गया है। कुतवन ने लिखा है—

कुअँर सँकेत कुरंगिन डरी। मानसरोदक भीतर परी ॥
तेहि महँ सो मिरगी छिपि जाए। फिरि नहिँ निकसी गई हेराए ॥

दोहरा।

तुरी बाँधि तरवर सो कापर धरा उतार।
बेग पैठ सरवर महँ ढूँढइ लाग निहार ॥

मिरगावती किसी राजा की लडकी थी राज-कुअँर ने किसी स्थान में इसे देख कर इस की धाई से अपना विरह कहा है। यह धाई के कहने पर उड कर आकाश को चली गई है। चलती बेरा अपनी धाई से कही है—

धाइ न अउगुन आहइ तोरा । कहियो जोहार कुअँर सो मोरा ॥
अउ अस कहउ कुअँर सो बाता । मोर जीउ आहे तोहि राता ॥
सँत-हि पाए सुख-हि अमोला । ता कर मरम न जानइ भोला ॥
जेहि कारन हउँ जाउँ उडाई । कहउ कुअँर सो आवइ धाई ॥
कंचन-नगर हमारो ठाऊँ । रूप-मुरार पिता कर नाऊँ ॥

निदान राज-कुअँर ने बडे कष्ट से कञ्चन-पुर में जा कर इस से विवाह किया है। राज-कुअँर की पहली रानी रुक्मिणी थी ॥

पद्मावती और मिरगावती दोनों की एक चाल है। एक पुस्तक की छाया दूसरी पुस्तक है। मुझे मिरगावती की भाषा पद्मावती की भाषा से नई जान पडती है। संभव है कि इस खण्डित पुस्तक में जो सन् ९०९ दिया है वह हिजरी सन् न हो। कुतबन जहाँ रहता रहा हो वहाँ के नवाब के राज्यकाल से सन् लिखा हो जो कि पद्मावती के सन् से बहुत पीछे हो। कुतबन ने एक जगह पर लिखा है कि—

शाह हुसेन आहि बड राजा । छच सिंहासन उन को छाजा ॥

मुझे इतिहास में कोई हुसेन शाह नाम का प्रसिद्ध बादशाह नहीं मिलता। हुसेन शाह शरकी जौन-पुर के सुलतान सन् ८६८ हिजरी (१४५८ ईसवी) में हुए थे। संभव है कि इन्हीं को कुतबन शाह हुसेन कहा हो। इतिहास के जानने-वालों को इस का पूरा पता लगाना चाहिए ॥

कुअँर—गन्धावती— स्त्रियों में परम्परा से कहानी सुनी जाती है कि एक राजा को पाँच लडके थे। सब से छोटा लडका एक दिन चुप चाप अपनी भौजाई के पास बैठा था बोलाने से भी नहीं बोलता था। इस पर भौजाई ने ताना मार कर कहा कि मानों आप गन्धावती से जो तौल में एक फूल के बराबर है विवाह कर उसी से बोलिएगा। इस पर उस कुअँर ने निश्चय कर लिया कि गन्धावती-ही से विवाह करूँगा। इस के लिये योग धारण कर जङ्गल जङ्गल घूमता फिरता था। एक दिन एक वन में एक योगी से भेंट हुई। यह वहीं ठहर कर उस की सेवा करने लगा। योगी ने प्रसन्न हो कर उस से कहा कि वर माँग। कुअँर ने गन्धावती से विवाह हो जाना वर माँगा। योगी ने कहा कि दूसरे वन में मेरा साथी रहता है उस के पास जाओ वह

तुम्हारी मनकामना पूरी करेगा । कुअँर उस के पास जा कर उस की सेवा में लगा । बहुत दिनों पर वह प्रसन्न हो कर कहा कि क्या चाहते हो । कुअँर ने कहा कि योगि-राज गन्धावती को चाहता हूँ। इस पर उस ने कहा कि यह मेरी सामर्थ्य से बाहर है तुम मेरे गुरु के पास जाओ । कुअँर उस के गुरु के पास जा कर उस की सेवा करने लगा और उस के प्रसाद से शुक हो कर गन्धावती से मिला । गन्धावती तौल में एक फूल से बढ गई इस पर उस के पिता को उस पर पर-पुरुष संयोग का संशय हुआ। बहुत खोज करने पर उस ने चाहा कि सुग्गे को मार डालें पर गन्धावती ने उसे उडा दिया । वह कुअँर मनुष्य वेष से वहीं रहने लगा अन्त में स्वयंवर के समय गन्धावती ने उसी के गले जय-माल डाल कर उसी से विवाह किया । संभव है कि इसी कहानी को बढा कर किसी ने गन्धावती नाम की कोई पुस्तक लिखी हो ॥

मधु-मालती—मोहनपुर में मधुकर नाम का राजा रहता था । एक दिन राजा अहेर करने गया वहाँ एक हरिण के पीछे दौडा । बहुत दूर जाने पर हरिण लोप हो गया। राजा एक वृक्ष की घनी छाँह के नीचे कपडे को बिछा कर आराम करने लगा। बहुत दिनों के बिछुडे दो सुग्गे दैवात् उस वृक्ष पर आए। दोनों से भेंट होने पर दोनों प्रसन्न हो कर आपस में बात चीत करने लगे। एक ने कहा कि मित्र तुम से बिछुड कर एक वृक्ष पर बैठा था तहाँ अचानक एक व्याधे ने मुझे फँसा लिया। उस ने प्रेम-नगर की हाट में रूप-राजा के यहाँ मुझे बँच दिया। राजा ने अपनी कन्या मालती से कहा कि इस सुग्गे को पालो। उस ने मुझे बडे प्यार से पाला। वह ऐसी सुन्दरी है कि मैं वर्णन नहीं कर सकता। एक दिन वह सरोवर में स्नान करने गई। घर को सूना पा कर मेरे पिँजरे पर बिलैया झपटी। भाग्य-वश पिँजरे से भाग कर उड आया। मधुकर मालती का नाम सुन प्रेम से विकल हो गया। मधुकर ने उस सुग्गे से कहा कि नीचे उतर कर मेरे पास आओ और मालती कैसे मिलेगी इस का उपाय बताओ। राजा के बहुत कहने पर सुग्गे ने मालती के पास जा कर राजा का सँदेसा सुनाया। मधुकर का नाम सुन कर मालती भी उस के मिलने की चाह से बहुत व्याकुल हुई। मालती की दशा पर सुग्गा फिर लौटा और मालती की फुलवारी में रहने लगा। धाई ने मालती की दशा देख कर सब वृत्तान्त पूछी। मालती ने धाई के कहने से प्रेम बनिजारे के साथ सुग्गे को भेज कर मधुकर को बुला कर उस के साथ विवाह किया। इस की सविस्तर कथा इन्द्रावती के मधुकरखण्ड में नूर महम्मद ने लिखी है। नागरी प्रचारिणी ग्रन्थमाला में इन्द्रावती छापी गई है ॥

सुर-प्रेमावती—इस नाम से मुझे यह कथा नहीं मिली है। बहुत लोग कहते हैं कि प्रेमावती मोहनी का नामान्तर है। समुद्र मथने के समय जब अमृत निकला है तब उस के लिये देवता और राक्षस लडने लगे। इस पर भगवान् मोहनी स्त्री का रूप बन कर आए। सब लोग उस पर मोहित हो गए, अमृत का घट उसी को दे दिया। मोहनी ने छल से सुरा राक्षसों में और अमृत देवताओं में बाँट दिया। एक दिन महादेव ने भगवान् से कहा कि मैं आप का मोहनी रूप देखा चाहता हूँ। बहुत कहने पर भगवान् विष्णु ने मोहनी रूप देखाया। महादेव मोहित हो उस के पीछे पीछे दौडने लगे। अन्त में मोहनी अन्तर्धान हो गई। इस पर व्याकुल हो उस के लिये महादेव जी मरने के लिये तयार हुए। पुराणों में यह कथा मिलती है। मैं नहीं कह सकता कि प्रेमावती से मोहनी-ही है वा दूसरी। संभव है कि प्रेमावती कोई राज-कन्या हो और सुर देवता रूप कोई राजा रहा हो ॥

अनिरुद्ध—ऊषा। शोणित-पुर के राजा बाणासुर की कन्या ऊषा थी। एक दिन इस ने स्वप्न में अनिरुद्ध को देखा। उस के व्याकुल होने पर उस की सखी चित्र-लेखा ने सब के चित्र खींच खींच कर उसे देखाया। अन्त में अनिरुद्ध के चित्र को उस ने पहचाना और कहा कि यही चित-चोर रात को स्वप्न में मेरे पास आया था। चित्र-लेखा द्वारिका से सोते हुए अनिरुद्ध को उठा लाई और ऊषा से मिलाई। खबर लगने पर बाणासुर ने अनिरुद्ध को कैद किया। फिर पीछे कृष्ण ने यदुवंशियों के साथ आ कर, बाणासुर से लड कर, अनिरुद्ध को छुडाया। यह कथा श्रीमद्भागवत के दशमस्कन्ध में विस्तार के साथ लिखी है ॥ २३८ ॥

चउपाई।

हउँ पुनि अहउँ अइसि तोहि राती। आधी भेँटि पिरीतम पाती ॥
तोहि जउँ प्रीति निबाहइ आँटा। भवँर न देखु केत मँह काँटा ॥
होहु पतंग अधर गहि दीआ। लेहु समुँद धँसि होइ मरजीआ ॥
राति रंग जिमि दीपक बाती। नइन लाउ होइ सीप सेवाती ॥
चातक होइ पुकारु पिआसा। पीउ न पानि सेवाति क आसा ॥
सारस होहु बिछुरि जस जोरी। रइनि होहु जल चकइ चकोरी ॥
होहु चकोर दिसिटि ससि पाँहा। अउ रबि होहु कवँल ओहि माँहा ॥

दोहा ।

हम-हुँ अइसि हउँ तो सउँ सकसि त प्रीति निबाहु ।
राहु बेधि अरजुन होइ जिति दुरपदी बिआहु ॥ २३९ ॥

हउँ = अहम् = मैं । पुनि = पुनः = फिर । अहउँ = हूँ (अस्मि) । अइसि = एतादृशी = ऐसी । तोहि = तेरे में । राती = रक्त = अनुरक्त । आधी = अर्ध । भेंटि = भेंट = समवेत = मुलाकात । पिरीतम = प्रियतम । पाती = पत्नी = चिट्ठी । तोहि = तुझे । जउँ = यदि = जो । प्रीति = प्रेम । निबाहह = निर्वाह करना = निबाहना । आँटा = आँट = अँटइ (समेति) । भवँर = भ्रमर = भौंरा । देखु = देख = देखता है (पश्यति) । केत = केतक = केतकी = एक प्रसिद्ध पुष्प । मँह = मध्ये = में । काँटा = कण्टक । होऊ = होओ (भवथ) । पतंग = पतङ्ग = फतिंगा । अधर = ओठ । गहि = गह कर (गृहीला) = पकड कर । दीआ = दीप = चिराग । लेऊ = लेओ (लाथ) । समुँद = समुद्र । धँसि = धँस कर (आध्वंस्य) । होइ = हो कर (भूत्वा) । मरजीआ = मर कर जीने-वाला = गोताखोर = समुद्र में गोता लगाने-वाला । राति = रक्त = लाल । रंग = रङ्ग = वर्ण । जिमि = यथा = जैसे । दीपक = दीप = दीआ । बाती = वर्त्ती = बत्ती । नइन = नयन = आँख । लाउ = लगावो (लगय) । होइ = हो कर (भूत्वा) । सीप = शुक्ति । सेवाती = स्वाती = वर्षा की एक नक्षत्र । चातक = पपीहा = एक प्रसिद्ध पक्षी । पुकारु = पुकार (फुत्कारय) । पिआसा = पिपासित = प्यासा । पीउ = पी (पिब) । पानि = पानी (पानीय) । क = की । आसा = आशा = उम्मीद । सारस = एक प्रसिद्ध जल-पक्षी । बिछुरि = बिछुड कर = विच्छुरित हो कर । जस = यथा = जैसे । जोरी = जोडी = युगल । रइनि = रजनी = रात्रि । जल = पानी । चकइ = चकई = चक्रवाकी = चकवा (चक्रवाक) की स्त्री । चकोरी = चकोर पक्षी की स्त्री । दिसिटि = दृष्टि । ससि = शशी = चन्द्र । पाँहा = पार्श्व = निकट । रबि = रवि = सूर्य । कवँल = कमल । ओहि माँहा = उस में ॥

हम-हुँ = अहमपि = हम भी । अइसि = एतादृशी = ऐसी । हउँ = हूँ (अस्मि) । तो सउँ = तुझ से । सकसि = सकते हो (शक्नोसि) । त = तर्हि = तो । प्रीति = प्रेम । निबाहु = निबाह (निर्वाहय) । राहु = राहु (सर्प वा मत्स्य) के आकार का लक्ष्य (निशाना) । बेधि = बेध कर (विद्धा) । अरजुन = अर्जुन = युधिष्ठिर के भाई, भारत के प्रसिद्ध योद्धा । जिति = जीत कर (जित्वा) । दुरपदी = द्रौपदी = युधिष्ठिरादि पाँचो पाण्डवों की स्त्री । बिआहु = व्याह (विवाहय) ॥

फिर मैं भी तुझ में ऐसी-ही अनुरक्त हूँ, (अनुरक्त होने-ही से आधी भेंट के लिये तेरे पास चिट्ठी भेजी है क्योंकि कहावत है कि) पत्री प्रियतम की आधी मुलाक़ात है। यदि तूँ प्रीति-निर्वाह कर सकता है तो भ्रमर यह नहीँ देखता कि, केतकी में (कितने) काँटे हैं। ओठों से दीप (ज्योति) को पकड कर, फतिंगा हो जाओ, अर्थात् दीप-ज्योति-सम मैं जो हूँ उस के लिये फतिंगा हो जाओ, गोताखोर हो कर समुद्र में धँस कर (मोती-रूप मुझे) लेओ। जैसे दीए की बत्ती लाल रंग की होती है, वैसे-ही खाती के लिये सीप हो कर (मेरे में) आँखोँ को लगाओ। कहावत है कि यद्यपि सीप समुद्र में रहती है तथापि खाती-ही का पानी पीती है, उसी पानी के पीने से उस में मुक्ता पैदा होती है। चातक हो कर प्यास के दुःख से खाती के पानी की आशा से "पीव, पीव" पुकार, अर्थात् मेरे लिये प्यासा हो कर दिन रात मेरे नाम को पुकारा कर। कहावत है कि चातक खाती-ही का पानी पीता है, इस के ऊपर तुलसी-सतसई में अनेक दोहे लिखे हैं। (१४१ वें दोहे की टीका देखो)। जोडी बिछुडने पर जैसी सारस की दशा होती है वैसा-ही मेरे लिये तुम सारस हो। सारस के जोडे में बहुत-ही प्रीति होती है, एक के वियोग से दूसरा प्राण दे देता है, इसी पर वाल्मीकि-रामायण का पहला श्लोक बनाया गया है। रात्रि में (पति-वियोग के कारण) पानी में चकई और चकोरी की जो दशा होती है वैसा-ही तुम भी हो। कहावत है कि चकवे और चकोर के जोडे में रात्रिसमय वियोग हो जाता है। चकोर हो कर चन्द्र पर दृष्टि लगाओ; (कहावत है कि रात को चकोर चन्द्र-ही को देखा करता है) अर्थात् मुझे चन्द्र समझ कर तुम चकोर हो जाओ; और रवि जो है उस में कमल हो जाओ, अर्थात् मुझे रवि ज़ान कर उस के लिये तुम कमल हो जाओ॥

हम भी तुम से ऐसी-ही (प्रीति लगाई हुई) हैं, (सो) तूँ भी, यदि कर सकता है, तो प्रीति को निबाह। अर्जुन हो कर राहु (मत्स्याकार लक्ष्य) को बेध कर, (और सब को) जीत कर, द्रौपदी से विवाह कर, अर्थात् मुझ से विवाह कर। राहु के लिये १०४ दोहे की टीका देखो॥ २२९॥

चउपाई।

राजा इहाँ तइस तप झूरा। भा जरि बिरह छार कर कूरा॥
मउन लगाए गएउ बिमोही। भा बिनु जिउ जिउ दीन्हेसि ओही॥

गहि पिंगला सुखुमना नारी । सुन्न समाधि लागि गइ तारी ॥
बूँद-हि समुँद होइ जस मेरा । गा हेराइ तस मिलइ न हेरा ॥
रंग-हि पानि मिला जस होई । आपुहि खोइ रहा होइ सोई ॥
सुअइ आइ देखा भा नासू । नइन रकत भरि आएउ आँसू ॥
सदा पिरीतम गाढ करेई । वह न भूल भूला जिउ देई ॥

दोहा ।

मूरि सजीओनि आनि कइ अउ मुख मेला नीर ।
गरुर पाँख जस झारइ अँबिरित बरसा कीर ॥ २४० ॥

इहाँ = यहाँ = अत्र । तइस = तैसा = तथा । तप = तपः = तपस्या । झूरा = झूर हो गया = शुष्क हो गया । भा = भया (बभूव) = हुआ । जरि = जल कर (आज्वल्य) । बिरह = विरह = वियोग । छार = चार = राख । कूरा = कूट = ढेर । मउन = मौन = चुप । गएउ = गया = (अगात्) । बिमोही = विमोह = मूर्छित । बिनु = विना । जिउ = जीव । दीन्हेसि = दिया (अदात्) । ओही = उसे । गहि = गह कर (गृहीत्वा) = पकड कर । पिंगला = पिङ्गला = नासिका का दहिना स्वर । सुखुमना = सुषुम्णा = नासिका के दोनों स्वर । नारी = नाडी । सुन्न = शून्य = ब्रह्माण्ड । समाधि = ध्यान में मग्न हो जाना, संसार से चित्तवृत्ति को हटा लेना (चित्तवृत्तिर्निरोधः समाधिः, ऐसा योगशास्त्र में लिखा है) । लागि गइ = लग गई । तारी = ताली = तालिका = कुञ्जी । बूँद-हि = बूँद से (विन्दुतः) । समुँद = समुद्र । होइ = होता है (भवति) । जस = यथा = जैसे । मेरा = मेल = संग । गा = गया (अगात्) । हेराइ = लोप (हेडृ अन्वेषणे से) । तस = तथा = तैसे । मिलइ = मिलता है (मिलति) । हेरा = हेरने से = ढूँढने से (हेडृ अन्वेषणे से) । रंग-हि = रङ्ग में । पानि = पानी (पानीय) । मिला = मिलित । होई = होइ = होता है (भवति) । आपु-हि = अपने को (आत्मनः) । खोइ = खो = नाश । रहा = रहइ (तिष्ठति) का प्रथम-पुरुष, भूत-काल, पुंलिङ्ग का एक-वचन । होइ = हो कर (भूत्वा) । सोई = सा एव = वही । सुअइ = शुक ने । आई = आ कर (एत्य) । देखा = देखइ (पश्यति) का प्रथम-पुरुष, भूत-काल, पुंलिङ्ग का एक-वचन भा = भया (बभूव) = हुआ । नासू = नाश । नइन = नयन = आँख । रकत = रक्त = खून = रुधिर । भरि = भर = पूर्ण । आएउ = आया (आयात्) । आँसू = आँसु (अश्रु) ।

सदा = हमेशा। पिरीतम = प्रियतम = प्यारा। गाढ = कठिन = कष्ट। करेई = करइ (करोति) = करता है। भूल = भूलइ (भ्रमति) = भूलता है। भूला = भूला ऊआ = भ्रान्त। जिउ = जीव। देई = देइ = देता है (दत्ते)॥

मूरि = मूली = मूलिका। सजीओनि = सञ्जीवनी = जिलानेवाली। आनि कइ = आन कर (आनीय)। मेला = मेलइ (मेलयति) का प्रथम-पुरुष, भूत-काल, पुंलिङ्ग का एक-वचन। नीर = पानी। गरुर = गरुड = प्रसिद्ध पक्षी, विष्णु का वाहन। पाँख = पक्ष = पर। जस = यथा = जैसे। झारइ = झारता है (झारयति)। अँबिरित = अमृत। बरसा = बरसइ (वर्षति) का प्रथम-पुरुष, भूत-काल, पुंलिङ्ग का एक-वचन। कीर = शुक॥

यहाँ राजा तप से ऐसा सूख गया कि, विरहाग्नि से जल कर राख का ढेर हो गया। चुप साधे मूर्छित हो गया, जीव उस (पद्मावती) को दे दिया, (आप) विना जीव का हो गया। पिङ्गला और सुखम्णा नाडी को पकड कर (ऊपर खींच लिया इसी से) शून्य (ब्रह्माण्ड) में, अर्थात् ब्रह्मरन्ध्रस्थान में समाधि लग गई (और ब्रह्म-कपाट में) ताली लग गई, अर्थात् जिस ब्रह्मछिद्र से प्राण ऊपर चढ गया वह छिद्र बंद हो गया। योगी लोग इसी तरह से ब्रह्माण्ड पर प्राण चढाते हैं। (इस ग्रन्थ का २५१–२५२ पृष्ठ देखो।) जैसे समुद्र में एक जल-विन्दु का मेल हो जाय (तो फिर उस का पता नहीँ लगता, उसी तरह (राजा रत्न-सेन पद्मावती के ध्यान में) लोप हो गया, ढूँढने से भी नहीँ मिलता। जैसे (किसी) रंग में पानी मिला होता है (पर पानी की सूरत नहीँ देख पडती) उसी तरह (राजा रत्न-सेन) अपने को खो कर, वही (पद्मावती) हो कर रह गया है। शुक (हीरा-मणि) ने आ कर देखा कि, (राजा का तो) नाश हो गया, (देख कर) आँखों में रक्ताश्रु भर गई। (मन में कहने लगा कि हाय विरही) सदा (अपने) प्रियतम के लिये कष्ट करता है, वह प्रियतम नहीँ भूलता पर आप भूला ऊआ (उस के लिये) जीव देता है॥

सञ्जीवनी मूली ला कर और (उस के रस के साथ राजा के) मुख में पानी डाला, जैसे गरुड अपने पंख को झारता है उसी तरह सुग्गे ने (राजा के मुख के ऊपर) अमृत की वृष्टि की॥ २४०॥

चउपाई।

सुआ अहा जेहि आस सो पावा। बहुरी साँस पेट जिउ आवा॥
देखेसि जागि सुअइ सिर नावा। पाति दीन्ह मुख बचन सुनावा॥

गुरू सबद दुइ सरवन मेला। गुरू बोलाउ बेगि चलु चेला॥
तोहि अलि कीन्ह आपु भा केवा। हउँ पठवा कइ बीच परेवा॥
पउन साँस तो सउँ मन लाई। जोवइ मारग दिसिटि बिछाई॥
जस तुम्ह कया कीन्ह अगि-डाहू। सो सब गुरु कहँ भएउ अगाहू॥
तब उडंत-छाला लिखि दीन्हा। बेगि आउ चाहउँ सिधि कीन्हा॥

दोहा।

आवहु स्यावँ सुलक्खनेँ जीउ बसइ तुम्ह नाउँ।
नइनहिँ भीतर पंथ हइ हिरदहि भीतर ठाउँ॥ २४१॥

सुआ = शुक = सुग्गा। अहा = था (आसीत्)। जेहि = जिस। आस = आशा। सो = सो = वह = सः। पावा = पावइ (प्राप्नोति) का प्रथम-पुरुष, भूत-काल, पुंलिङ्ग का एक-वचन। बहुरी = फिरी = लौटी (न्यवर्त्ति = व्यवर्त्ति)। साँस = श्वास। पेट = पेटिका। जिउ = जीव। आवा = आवइ (आयाति) का प्रथम-पुरुष, भूत-काल, पुंलिङ्ग का एक-वचन। देखेसि = देखा (अपश्यत्)। जागि = जाग कर (जागृत्वा)। सुअइ = शुक ने। सिर = शिर। नावा = नावइ (नामयति) का प्रथम-पुरुष, भूत-काल, पुंलिङ्ग का एक-वचन। पाति = पाती = पत्री = चिट्ठी। दीन्ह = दिया (अदात्)। मुह = मुँह = मुख। बचन = वचन = बात। सुनावा = सुनावइ (श्रावयति) का प्रथम-पुरुष, भूत-काल, पुंलिङ्ग का एक-वचन। गुरू = गुरु। सबद = शब्द। दुइ = दो = द्वयम्। सरवन = श्रवण = कान। मेला = मेलइ (मेलयति) का प्रथम-पुरुष, भूत-काल, पुंलिङ्ग का एक-वचन। बोलाउ = बुलाता है (ह्वलयति)। बेगि = बेग = शीघ्र। चलु = चल (चल)। चेला = शिष्य। तोहि = तुझे। अलि = भ्रमर = भौंरा। कीन्ह = किया (अकरोत्)। आपु = आप = स्वयम्। भा = भया (बभूव) = हुआ। केवा = कमल वा केवडा। हउँ = अहम्, यहाँ मुझे। पठवा = पठवइ (प्रेषयति) का प्रथम-पुरुष, भूत-काल, पुंलिङ्ग का एक-वचन। कइ = कर। बीच = मध्य। परेवा = पारावत = पक्षी। पउन = पवन = वायु। साँस = श्वास। तो सउँ = तुझ से। लाई = लगाई = लगावइ (लगयति) का प्रथम-पुरुष, भूत-काल, स्त्रीलिङ्ग का एक-वचन। जोवइ = जोहता है (जेहति) प्रा० जोएदि। मारग = मार्ग। दिसिटि = दृष्टि। बिछाई = बिछा कर (विस्तीर्य)। जस = यथा = जैसे।

कया = काय = शरीर। कीन्ह = किया (अकरोत्)। अगि-डाह = अग्नि-दाह = अग्नि से दाह। सो = सः = वह। सब = सर्व। गुरु कहँ = गुरु को। भएउ = भया (बभूव) = ऊआ। अगाह = आगाह = विदित। तब = तदा। उडंत-छाला = उड्डयन-चैल = उडने-वाली छाल = जिसे शरीर मेँ रखने से मनुष्य को उडने की शक्ति होती है। लिखि = लिख कर (लिखिला)। दीन्हा = दिया (अदात्)। आउ = आव (आयाहि)। चाहउँ = चाहता हूँ (इच्छामि)। सिधि = सिद्ध। कीन्हा = करना (करणम्)।

आवज = आइए = (आयाथ)। स्वावँ = श्याम। सुलक्खनँ = सुलचण = जिस मेँ सुन्दर लचण होँ। जीउ = जीव। बसइ = बसता है (वसति)। नाउँ = नाम = नावँ। नइनन्हिँ = नयनोँ के = आँखोँ के। भीतर = अभ्यन्तर। पंथ = पन्थाः = राह। हइ = है (अस्ति)। हिरदहि = हृदय के। ठाउँ = ठावँ = स्थान ॥

जिस आशा मेँ (कि राजा जी जाय) शुक था, उस आशा को पाया, अर्थात् रत्न-सेन जी उठा, पेट मेँ साँस फिर आई और जीव (प्राण) भी लौट आया। (राजा रत्न-सेन ने) जाग कर (सुग्गे को) देखा, सुग्गे ने भी (राजा के सामने) शिर झुकाया, (पद्मावती की) चिट्ठी दी, और मुँह से (पद्मावती का) सँदेसा सुनाया। (कहा कि) गुरु (पद्मावती) ने (तुम्हारे) कान मेँ दो शब्द डाला है, (एक शब्द तो यह है कि) गुरु (तुझे) बोलाता है, (और दूसरा शब्द यह कि कहो) चेला जल्द आवे। (गुरु ने) तुझे भ्रमर बनाया है और आप कमल ऊआ है, और मुझ पची को मध्यस्थ कर (तेरे पास) भेजा है। (गुरु ने) तुझ से, श्वास-वायु के द्वार से, मन को लगाया है, दृष्टि को फैला कर (बिछाई) तेरी राह जोह रहा है। जिस तरह तुम्ह ने अपनी देह को आग मेँ भस्म कर दिया, वह सब गुरु को मालूम ऊआ है। तब (इस पच्ची को) उडंत-छाला (के ऐसा) लिख दिया है, (और कहा है कि) जल्द आव, मैँ (तुझे) सिद्ध किया चाहता हूँ ॥

(और भी कहा है कि) हे सुलचण श्याम (कृष्ण-स्वरूप) (शीघ्र) आओ, (मेरा) जीव तुम्हारे नाम मेँ बस गया है; (तुम्हारे लिये) आँखोँ के भीतर राह और हृदय के भीतर स्थान है ॥ २४१ ॥

चउपाई।

सुनि कइ असि पदुमावति मया। भा बसंत उपनी नइ कया ॥
सुआ क बोलि पउन होइ लागा। उठा सोइ हनुवँत होइ जागा ॥

चाँद मिलन कइ दीन्हेसि आसा । सहसहु कराँ सूर परगासा ॥
पतरि लीन्ह लेइ सीस चढावा । दिसिटि चकोर चाँद जनु पावा ॥
आस पिआसा जो जेहि केरा । जउँ झिझिकार ओही सो हेरा ॥
अब यह कउन पानि मइँ पीआ । भा तन पाँख पनग मरि जीआ ॥
उठा फूलि हिरदइ न समाना । कंथा टूक टूक बिहराना ॥

दोहा ।

जहाँ पिरीतम वेइ बसहिँ यह जिउ बलि तेहि बाट ।
जउँ सो बोलावइ पाउँ सउँ हउँ तहँ चलउँ ललाट ॥ २४२ ॥

सुनि कइ = सुन कर (श्रुत्वा)। असि = ऐसी = एतादृशी । पदुमावति = पद्मावती । मया = माया = दया = कृपा । भा = भया (बभूव) = हुआ । बसंत = वसन्त-ऋतु । उपनी = उत्पन्न हुई (उत्पन्ना)। नइ = नई (नव)। कया = काय = शरीर = देह । सुआ = शुक = सुग्गा । क = की । बोलि = बोली = वाणी । पउन = पवन = वायु । होइ = हो कर (भूत्वा)। लागा = लगा = लगइ (लगति) का प्रथम-पुरुष, भूत-काल, पुंलिङ्ग का एक-वचन । उठा = उठइ (उत्तिष्ठते) का प्रथम-पुरुष, भूत-काल, पुंलिङ्ग का एक-वचन । सोइ = सो कर (आशीय)। हनुवँत = हनुमान् । जागा = जागइ (जागर्त्ति) का प्रथम-पुरुष, भूत-काल, पुंलिङ्ग का एक-वचन । चाँद = चन्द्र । मिलन कइ = मिलने की = मेलनस्य । दीन्हेसि = दिया (अदात्)। आसा = आशा = उम्मीद । सहसहु = सहस्रैः = हजारों । कराँ = कला वा किरण । सूर = सूर्य । परगासा = प्रकाश किया (प्राकाशयत्)। पतरि = पत्री = चिट्ठी । लीन्ह = लिया [अलात्)। लेइ = ले कर (आलाय)। सीस = शीर्ष = शिर । चढावा = चढावइ (उच्चालयति) का प्रथम-पुरुष, भूत-काल, पुंलिङ्ग का एक-वचन । दिसिटि = दृष्टि । चकोर = एक प्रसिद्ध पक्षी, जो चन्द्र से अत्यन्त प्रेम रखता है । जनु = जाने = जानों । पावा = पावइ (प्राप्नोति) का प्रथम-पुरुष, भूत-काल, पुंलिङ्ग का एक-वचन । आस = आशा । पिआसा = पिपासित = प्यासा । जो = यः । जेहि केरा = जिस का वा जिस के । जउँ = यदि । झिझिकार = झझकारे = झट-कारे (झट् कारयेत्)। ओही = उसी को । सो = सः = वह । हेरा = हेरइ (हेडते) का प्रथम-पुरुष, भूत-काल, पुंलिङ्ग का एक-वचन । अब = अधुना = इदानीम् । यह = अयम् वा इदम् ।

कउन = क नु = कौन। पानि = पानी (पानीय)। मइँ = मैं। पीआ = पीअइ (पिबति) का उत्तम-पुरुष, भूत-काल, पुंलिङ्ग का एक-वचन। भा = (बभूव) = भया = ऊआ। तन = तनु = देह। पाँख = पक्ष = पर। पनग = पन्नग = साँप। मरि = मर कर (मृत्वा)। जीआ = जीअइ (जीवति) का प्रथम-पुरुष, भूत-काल, पुंलिङ्ग का एक-वचन। फूलि = फूल कर (सम्फुल्ल्य)। हिरदइ = हृदय। समाना = समाइ (संमाति) का प्रथम-पुरुष, भूत-काल, पुंलिङ्ग का एक-वचन। कंथा = कन्था = गुदरी। टूक टूक = खण्ड खण्ड = टुकडे टुकडे। बिहराना = बिहरइ (विहरति) का प्रथम-पुरुष, भूत-काल, पुंलिङ्ग का एक-वचन॥

जहाँ = यत्र। पिरीतम = प्रियतम। वेइ = वे = ते। बसहिँ = बसइ (वसति) का बऊ-वचन। जिउ = जीव। बलि = बलिदान। तेहि = तिस। बाट = वाट = मार्ग = राह। बोलावइ = बोलावे (आह्वयेत्)। पाउ सउँ = पायँ से। हउँ = अहम् = मैं। तहँ = तहाँ = तत्र। चलउँ = चलूँ (चलानि) = जाऊँ। ललाट = मस्तक = माथा॥

ऐसी पद्मावती की करुणा भरी वाणी को सुन कर, (राजा रत्न-सेन के लिये) वसन्त (का समय) हो गया, नई शरीर उत्पन्न हो गई। शुक की वाणी (देह में ठंढी) हवा सी लगी, सोता ऊआ, हनुमान के ऐसा उठा और जाग गया। चन्द्र (पद्मावती) ने मिलने की आशा दी (इस लिये) सूर्य (रत्न-सेन) हजारोँ कला वा किरणोँ से प्रकाशित ऊआ। चिट्ठी को लिया, ले कर शिर पर चढाया, (ऐसा प्रसन्न ऊआ) जानोँ चकोर कीं दृष्टि ने चन्द्र को प्राप्त कर लिआ हो। (कवि कहता है कि, सच है) जो जिस की आशा का प्यासा है, वह, यदि झिझिकारा भी जाय, तो भी उसी को ढूँढा करता है। (राजा कहता है कि) अब मैं यह कौन पानी को पी लिया, (जिस से) शरीर मैं पर जम गए (जिस से उडने की शक्ति हो गई), और मरा ऊआ (मैं) साँप जी उठा। हृदय फूल उठा (देह मैं) नहीँ समाता, और कंथा टुकडे टुकडे हो कर फट गया॥

(रत्न सेन कहने लगा कि) जहाँ वह प्रियतम (पद्मावती) बसता है, उस राह मैं यह जीव बलि है; यदि वह (पद्मावती) पैर से बोलावे वहाँ मैं शिर से चलूँ॥ २४२॥

चउपाई।

जो पँथ मिला महेसइ सेई। गएउ सो मुंद उहइ धँसि लेई॥
जहँ वह कुंड बिखम अउगाहा। जाइ परा जहँ पाओ न थाहा॥

बाउर अंध पेम कर लागू। सउँह धँसइ किछु सूझ न आगू॥
लीन्हेसि धँसि सुआँस मन मारा। गुरू मछंदर-नाथ सँभारा॥
चेला परइ न छाँडइ पाछू। चेला मच्छ गुरू जस काछू॥
जनु धँसि लीन्ह समुँद मरजीआ। उघरइ नइन बरइ जनु दीआ॥
खोजि लीन्ह सो सरग दुआरा। बजर जो मूँदे जाइ उघारा॥

दोहा।

बाँक चढाउ सरग गढ चढत गएउ होइ भोर।
भइ पुकार गढ ऊपर चढे सेँधि देइ चोर॥ २४३॥

जो = यः। पँथ = पंथ = पन्थाः = राह। मिला = मिलइ (मिलति) का प्रथम-पुरुष, भूत-काल, पुंलिङ्ग का एक-वचन। महेसह = महेश (महादेव) को। सेई = सेवा कर (संसेव्य)। गएउ = गया (अगात्)। सो = वह। मुंद = मुद्रित = बंद। उहइ = उसी को। धँसि = धँस कर (आध्वंस्य)। लेई = लेने के लिये। जहँ = जहाँ = यत्र। कुंड = कुण्ड। बिखम = विषम = कठिन = नीँचा ऊँचा। अउगाहा = अगाध = अथाह। जाइ = जा कर (संयाय)। परा = परइ (पतति) का प्रथम-पुरुष, भूत-काल, पुंलिङ्ग का एक-वचन। पाओ = पावइ (प्राप्नोति) = पाता है। थाहा = थाह = स्थल = तल। बाउर = वातुल = बौरहा। अंध = अन्ध = अंधा। पेम = प्रेम। लागू = लगा = लग्न हुआ। सउँह = सौँह = संमुख। धँसइ = धँसता है (ध्वंस्यते)। किछु = कुछ = किञ्चित्। सूझ = सूझइ (शुध्यति) = सूझता है। आगू = आगे = अग्रे। लीन्हेसि = लिया (अलात्)। सुआँस = श्वास = साँस। मारा = मारइ (मारयति) का प्रथम-पुरुष, भूत-काल, पुंलिङ्ग का एक-वचन। गुरू = गुरु। मछंदर-नाथ = मत्स्येन्द्र-नाथ। सँभारा = सँभारइ (सम्भारयति) का प्रथम-पुरुष, भूत-काल, पुंलिङ्ग का एक-वचन। चेला = शिष्य। परइ = पडता है (पतति)। छाँडइ = छोडता है (छोडयति)। पाछू = पीछा = पृष्ठे। मच्छ = मत्स्य। जस = जैसा = यथा। काछू = कछुआ (कच्छप)। जनु = जाने = जानोँ। लीन्ह = लिया (अलात्)। समुँद = समुद्र। मरजीआ = मर कर जीने-वाला = गोता खोर = गोता लगाने-वाला। उघरइ = उघरे = उघरइ (उद्घटते) का प्रथम-पुरुष, भूत काल, पुंलिङ्ग का बहु-वचन। नइन = नयन = आँख। बरइ = बरे = बरइ (ज्वलति) का प्रथम-पुरुष, भूत-काल, पुंलिङ्ग का बहु-वचन।

जनु = जाने = जानों। दीश्रा = दीप = चिराग। खोजि लीन्ह = खोज लिया = ढूँढ लिया। सो = वह। सरग = स्वर्ग। दुआरा = द्वार = दरवाजा। बजर = वज्र। मूँदे = मुद्रित थे = बंद थे। जाए = जाइ (याति) यहाँ जाए = गए। उघारा = उद्घटित = खुला ॥

बाँक = वक्र = टेढा। चढाउ = चढाव (उच्चलन)। गढ = गाढ = किला = दुर्ग। चढत = चढते (उच्चलन्)। गएउ होइ = हो गया। भोर = व्यह = सबेरा। भइ = भई (बभूव) = हुई। पुकार = हंकार (पुं-वा ऊं-कार)। ऊपर = उपरि। चढे = चढइ (उच्चलति, आरोहति) का प्रथम पुरुष, भूत-काल, पुंलिङ्ग का बहु-वचन। सँधि = सन्धि। देइ = दे कर (दत्त्वा)। चोर = चौर ॥

महादेव की सेवा करने से जो (रत्न सेन को) पथ (राह) मिला था (२१९—२२० दोहे को देखो) वह मुद्रित, अर्थात् बंद था, उसी को (रत्न-सेन) धँस कर लेता है, अर्थात् लेना चाहता है। जहाँ पर वह विषम और अगाध कुण्ड था, वहाँ पर जा कर पडा, जहाँ कि थाह नहीं पाता है। (कवि कहता है कि,) प्रेम के लाग, अर्थात् प्रेम के लगने से (मनुष्य) पागल और अंधा हो जाता है, सामने-ही धँसता है, आगे, अर्थात् सामने, कुछ भी नहीं सूझता है कि, (आग है कि पानी)। (रत्न-सेन ने) धँस कर (राह को) लिया, अर्थात् राह को पा गया, मन में श्वास को मार लिया, अर्थात् हृदय के भीतर श्वास को रोक लिया, (और) गुरु मोछंदर-नाथ को सँभारा, अर्थात् स्मरण किया (मोछंदर-नाथ के लिये १६३ दोहे की टीका देखो)। (कवि कहता है कि) चेला गिर पडे (तो भी गुरु का) पीछा नहीं छोडता, गुरु कच्छप ऐसा (अचल) होता है और चेला मछली के ऐसा (चञ्चल)। जैसे गोताखोर समुद्र में धँस कर (तीव्र दृष्टि से देख कर मोती को) लिया, अर्थात् निकाल लेता है (उसी तरह रत्न सेन के) नयन खुल गए जानों दीप बरे (ऐसे तीव्र हो गए)। सो (रत्न-सेन ने) स्वर्ग, अर्थात् ऊपर चढने का दरवाजा खोज लिया, जो दरवाजे वज्र (कपाट) से बंद थे खुल गए ॥

गढ के स्वर्ग, अर्थात् ऊपर जाने के लिये (बहुत) टेढा (कठिन) चढाव था, चढते चढते भोर हो गया, (चौकीदारों की) पुकार हुई कि, चोर सँध दे कर ऊपर चढे हैं ॥ २४३ ॥

चउपाइ।

राजइ सुना जोगि गढ चढे। पूँछो पास पँडित जो पढे ॥
जोगी गढ जो सँधि देइ आवहिँ। कहहु सो सबद सिद्धि जिन्ह पावहिँ ॥

कहहिँ बेद पढ पंडित बेदी। जोगि भवँर जस मालति-भेदी ॥
जइसइ चोर सैँधि सिर मेलहिँ। तसि ए्इ दोउ जीउ पर खेलहिँ ॥
पंथ न चलहिँ बेद जस लिखे। चढे सरग सूरी चढि सिखे ॥
चोरहि होइ सूरी पर मोखू। देइ जो सूरी तेहि नहिँ दोखू ॥
चोर पुकारि बेधि घर मूँसा। खोलहिँ राज-भँडार-मँजूसा ॥

दोहा।

जइस भँडारहि मूँसहिँ चढहिँ रइनि देइ सैँधि।
तइस चहिअ पुनि उन्ह कहँ मारहु सूरी बेधि ॥ २४४ ॥

इति राजा-गढ-छेँका-खंड ॥ २३ ॥

राजइ = राजा (गन्धर्व-सेन) ने। सुना = अशृणोत्। जोगि = योगी। गढ = गाढ = दुर्ग = किला। चढे = चढइ (उच्चलति) का प्रथम-पुरुष, भूत-काल, पुंलिङ्ग का बहु-वचन। पूँछी = पूछइ (पृच्छति) का प्रथम-पुरुष, भूत-काल, पुंलिङ्ग का बहु-वचन। पास = पार्श्व = निकट। पँडित = पण्डित। पढे = पढइ (पठति) का प्रथम-पुरुष, भूत-काल, पुंलिङ्ग का बहु-वचन। जोगी = योगी। सैँधि = सन्धि। देइ = दे कर (दत्त्वा)। आवहिँ = आवइ (आयाति) का बहु-वचन। कहहु = कहिए (कथयथ)। सो = सः = वह। सबद = शब्द = बात। जिन्ह = जिन से। पावहिँ = पावइ (प्राप्नोति) का बहु वचन। कहहिँ = कहइ (कथयति) का बहु-वचन। पढ = पढहिँ = पढते हैँ (पठन्ति)। बेदी = वेदी = जानने-वाले = विज्ञ। भवँर = भ्रमर। जस = यथा = जैसे। मालति = मालती = एक प्रसिद्ध सुगन्धित पुष्प। भेदी = भेद (मर्म) के जानने-वाले = जासूसी। जइसइ = जैसे = यथा। चोर = चौर। सैँधि = सैँध दे कर। सिर = शिर। मेलहिँ = मेलइ (मेलयति) का बहु-वचन। तसि = तथा = तैसे-ही। एइ = ए = एते। दोउ = दोनोँ = दो। जीउ = जीव। पर = उपरि। खेलहिँ = खेलइ (खेलति) का बहु-वचन। पंथ = पन्थाः = राह। चलहिँ = चलइ (चलति) का बहु-वचन। लिखे = लिखइ (लिखति) का प्रथम-पुरुष, भूत-काल, पुंलिङ्ग का बहु-वचन। सरग = स्वर्ग = ऊपर। सूरी = शूली। चढि = चढना। सिखे = सीखे हैँ = शिक्षित हुए हैँ। होइ = होता है (भवति)। मोखू = मोक्ष। देइ = देता है (दत्ते)। जो = यः। तेहि = तिसे।

दोसू = दोष = पाप । पुकारि = पुकार कर (पुंकृत्य वा ऊंकृत्य) । वेधि = वेध कर = (विद्धा) । घर = गृह । मूँसा = मूँस = मूँसहिँ (मुष्णन्ति) = मूसते हैँ । खोलहिँ = खोलइ (उद्घाटयति) का बहु-वचन । राज-भँडार = राज-भाण्डालय = राजा के भंडार का घर, जहाँ सब चीज रहती है । मँजूसा = मञ्जूषा = संदूक ॥

जइस = यथा = जैसे । भँडारहि = भंडारे को । चढहिँ = चढइ (उच्चलति, आरोहति) का बहु-वचन । रइनि = रजनी = रात । तइस = तथा = तैसे । चहिअ = चाहिए । पुनि = पुनः = फिर । उन्ह कहँ = उन को । मारहु = मारो (मारयत) ॥

राजा (गन्धर्व-सेन) ने सुना कि, योगी गढ पर चढ गए हैँ, (इस विषय पर विचार करने के लिये कि, क्या किया जाय) पास मैँ (बैठे) पढे (लिखे) जो पण्डित लोग थे (उन से बात) पूछी कि, जो योगी लोग सँध दे कर गढ मैँ आ रहे हैँ (उन के विषय मैँ) उस बात को कहो (जिस से) वे लोग सिद्धि को पावैँ, अर्थात् जिस से उन लोगोँ को मुक्ति मिले । (वेद) कहते हैँ और विज्ञ पण्डित लोग भी पढा करते हैँ कि योगी वैसा-ही होते हैँ जैसा कि मालती का भेदिआ भ्रमर, अर्थात् जैसे भ्रमर मालती को ढूँढ लेता है उसी तरह योगी लोग भी अपने अभीष्ट को ढूँढ लेते हैँ । जैसे चोर सँध दे कर (तब) शिर डालता है, वैसे-ही ए दोनोँ (योगी, और भ्रमर) भी जीव पर खेलते हैँ । ए वेद मैँ जैसा लिखा है उस राह पर नहीँ चलते, स्वर्ग पर, अर्थात् ऊपर, चढ गए हैँ, (ए) सूली पर चढना सीखे हैँ, अर्थात् इस बुरे काम से सूली पर चढाए जायँगे । चोर को सूली-ही पर मोच होता है, अर्थात् सूली पर चढा देने से उस का पाप दूर हो जाता है । (इस लिये उन के पाप की निवृत्ति के लिये) जो सूली देता है उसे दोष नहीँ होता । चोर लोग पुकार कर, अर्थात् ललकार कर, (भीत को) बेध कर घर मूसते हैँ और राज-भंडारे की संदूकोँ को खोल डालते हैँ ॥

जिस तरह से ए राज-भँडारे को मूसते हैँ और रात को सँध दे कर (ऊपर) चढ जाते हैँ ; उसी तरह उन को भी (ऊपर चढाना) चाहिए, सो सूली से बेध कर (उन लोगोँ को) मार डालो ॥ सूली (शूली) त्रिशूलाकार होती थी जिस पर अपराधी चढा दिया जाता था, फिर खटका खीँच लेने से त्रिशूल कण्ठ को छेदते शिर के ऊपर निकल जाता था ॥ २४४ ॥

इति राज-दुर्गावरोधनं-नाम त्रयोविंश-खण्डं समाप्तम् ॥ २३ ॥

अथ मंत्री-खंड ॥ २४ ॥

चउपाई ।

राँधि जो मंत्री बोलइ सोई । अइस जो चोर सिद्ध पइ कोई ॥
सिद्ध निसंक रइनि पइ भवँहीँ । ताकहिँ जहाँ तहाँ उपसवहीँ ॥
सिद्ध निडर पइ अइसइ जीआ । खरग देखि कइ नावँहिँ गीआ ॥
सिद्ध जाहिँ पइ जिउ बधि जहाँ । अउरहि मरन पंख अस कहाँ ॥
चढहिँ जो कोपि गगन उपराहीँ । थोरइ साज मरहिँ सो नाहीँ ॥
जंबुक कहँ जउँ चढिअहि राजा । सिंघ साजि कइ चढिअ त छाजा ॥
सिद्ध अमर काया जस पारा । छरहिँ मरहिँ पइ जाहिँ न मारा ॥

दोहा ।

छरहिँ काज किरिसुन कर साजा राजा धरहिँ रिसाइ ।
सिद्ध गिद्ध जेहिँ दिसिटि गगन पर बिनु छर किछु न बसाइ ॥ २४५ ॥

राँधि = आराध्य = आराधना कर = पूज कर = प्रणाम कर । जो = जो = यः । मंत्री = मन्त्री । बोलइ = वदति = बोलता है । सोई = स एव = वही । अइस = एतादृश = ऐसा । चोर = चौर । पइ = अपि = निश्चय से । कोई = कोऽपि । निसंक = निःशङ्क = बेडर । रइनि = रजनी = रात । भवँहीँ = भ्रमन्ति = भ्रमण करते हैँ । ताकहिँ =

तर्कयन्ति = ताकते हैं = देखते हैं। जहाँ = यत्र। तहाँ = तत्र। उपसवहीं = उपसर्पन्ति = चले जाते हैं। निडर = निर्दर = निर्भय। अइसइ = एतादृशो हि = ऐसे ही। जीश्रा = जीव = प्राणी। खरग = खड्ग = तलवार। देखि कइ = दृष्ट्वा = देख कर। नावँहिं = नमयन्ति = झुकाते हैं। गीश्रा = ग्रीवा = गला। जाहिं = यान्ति = जाते हैं। जिउ = जीव = प्राण। बधि = हत्वा = बध कर। श्रउरहि = श्रपरस्य = दूसरे को। मरन = मरण = मृत्यु। पंख = पक्ष = पर। श्रस = एतादृश = ऐसा। कहाँ = क्व हि। चढहिं = उच्चलन्ति = चढते हैं। कोपि = सङ्कुप्य = कोप कर = क्रोध कर। गगन = श्राकाश। उपराहीं = उपरि हि = ऊपर। थोरइ = स्तोकेन = थोडे। साज = सज्जन = तयारी। मरहिं = मरन्ति = मरते हैं। सो = सः, यहाँ = वे। नाहीं = नहि। जंबुक = जम्बुक = सियार। कहँ = को। जउँ = यदि = जो। चढिश्रहि = चढिए = उच्चलेत्। सिंघ = सिंह। साजि कइ = सज कर = तयारी कर। चढिश्र = चढिए = उच्चलेत्। त = तर्हि = तो। छाजा = शोभित हो। काया = काय = शरीर। जस = यथा = जैसे। पारा = पारद। छरहिं = चरन्ति = छरते हैं। मारा = मारे ॥

काज = कार्य = काम। किरिसुन = कृष्ण = कृष्ण-चन्द्र। कर = का। साजा = सज्जित। धरहिं = धरन्ति = धरते हैं। रिसाइ = रिस कर = रोष कर। गिद्ध = गृध्र = मांस खाने-वाला प्रसिद्ध पक्षी। जेहिं = येषाम् = जिन की। दिसिटि = दृष्टि = नजर। पर = उपरि। बिनु = विना। छर = चर = नाश। किछु = किञ्चित् = कुछ। बसाइ = वशमेति = बसाता है = चलता है ॥

(गन्धर्व-सेन को) प्रणाम कर जो मन्त्री था वह बोलता है कि, ऐसा जो चोर वह निश्चय कर कोई सिद्ध है। सिद्ध बेडर रात में घूमा करते हैं, जहाँ देखते हैं, अर्थात् इच्छा करते हैं, वहीं चले जाते हैं। सिद्ध निडर होते हैं और ऐसे जीव हैं कि खड्ग देख कर (उस के सामने अपना) गला झुका देते हैं। निश्चय कर सिद्ध जहाँ चाहते हैं वहाँ जीव का नाश कर चले जाते हैं, दूसरे को कहाँ ऐसा मरना और पक्ष है (जो श्राकाश पर जाय)। जो सिद्ध क्रोध कर श्राकाश पर चढते हैं, वे थोडी (सेना की) तयारी से नहीं मरते। हे राजा यदि स्यार पर चढाई करना हो तो सिंह (के मारने) की तयारी कर चढिए तो उचित हो। सिद्ध की शरीर श्रमर है जैसे कि पारा, (ए दोनों) छर जाते हैं, अर्थात् टुकडे टुकडे हो जाते हैं, पर (किसी के) मारे नहीं मरते ॥

सिद्ध कृष्ण भगवान का भी सजा सजाया काम बिगाड देते हैँ। क्रोध कर राजा लोगोँ को भी पकड लेते हैँ। सिद्धरूप गिद्ध जिन की दृष्टि आकाश के ऊपर रहती है उन से (अपने) नाश के सेवाय कुछ नहीँ बसाती अर्थात् कुछ नहीँ चलती॥

दशमस्कन्ध श्रीमद्भागवत के ५७ अध्याय मेँ कथा है कि उदास हो कर द्वारिका से महात्मा अक्रूर के चले जाने पर कृष्ण से कुछ भी न हो सका। द्वारिका के लोग आधि व्याधि और अवर्षण से बहुत ही पीडित हो गए। अन्त मेँ कृष्ण के उपदेश से जब लोग प्रार्थना कर अक्रूर को द्वारिका मेँ ले आए तब सब रोग नष्ट हुए और वृष्टि भी हुई॥

सिद्ध गोरख-नाथ जब कामाचा मेँ गए तो वहाँ एक दुष्टा स्त्री ने व्यभिचार की इच्छा से भिचा माँगते हुए गोरख के एक गरीब चेले को पकड रक्खा। गोरख ने क्रोध से उस राज्य के सब लोगोँ को पत्थर कर दिया। अन्त मेँ जब वहाँ का राजा गिडगिडा कर गोरख के पैरोँ पर पडा तब गोरख ने कृपा कर सब का उद्धार किया। इस प्रकार भारतवर्ष मेँ सिद्धोँ की सैकडोँ कहानिआँ प्रसिद्ध हैँ॥ २४५॥

चउपाई।

आवहु करी गुदर मिस साजू। चढहु बजाइ जहाँ लगि राजू॥
होहु सँजोइल कुअँर जो भोगी। सब दर छेँकि धरहु अब जोगी॥
चउबिस लाख छतर-पति साजे। छपन कोटि दर बाजन बाजे॥
बाइस सहस सिंघली चाले। गिरिह पहार पुहुमि सब हाले॥
जगत बराबर देइ सब चाँपा। डरा इँदर बासुकि हिअ काँपा॥
पदुम कोटि रथ साजे आवहिँ। गिरि होइ खेह गगन कहँ धावहिँ॥
जनु भुइँ-चाल चलत तहँ परा। कुरमहि पीठि टूटि हिअ डरा॥

दोहा।

छतरहिँ सरग छाइ गा सूरज गएउ अलोपि।
दिनहिँ राति असि देखी चढा इँदर होइ कोपि॥ २४६॥

आवहु = आयात = आओ। करी = करिए। गुदर = गुदरी = कन्था। मिस = मिष = बहाना। साजू = साज = तयारी। चढहु = उच्चलत = चढो। बजाइ = संवाद्य =

बजा कर। जहाँ लगि = जहाँ तक। राजू = राज्य। होऊ = भवत = हो। सँजोइल = संसज्जित = तयार। कुअँर = कुमार = राज-कुमार। जो = जो = ये। भोगी = भोग करने-वाले = जागीर पाने-वाले। सब = सर्व। दर = दरी = घाँटी। छेंकि = छेकयित्वा = छेंक कर = रोक कर। धरऊ = धरत = धरो। अब = अधुना = इदानीम्। जोगी = योगी। चउबिस = चतुर्विंशति = चौबीस। लाख = लक्ष। छतर-पति = छत्रपति। साजे = सज्जित किए गए। छपन = षट्पञ्चाशत् = छप्पन। दर = दल = सेना। बाजन = वाद्य। बाजे = बजे = बजाए गए। बाइस = द्वाविंशति। सहस = सहस्र = हजार। सिंघली = सिंहली = सिंहल के हाथी। चाले = चलाए गए। गिरिह = गृह = घर। पहार = प्रहार = पहाड। पुहुमि = पृथ्वी = भूमि। हाले = हिले = हिलने लगे। जगत = जगत् = संसार। बराबर = एकतार = लगातार। देइ = देइ = दत्त्वा = दे कर। चाँपा = चाँपइ (चापयति) का भूत-काल, पुंलिङ्ग, एक-वचन। डरा = डरइ (दरति) का भूत-काल, पुंलिङ्ग, एक-वचन। इँदर = इन्द्र = देवराज। बासुकि = वासुकि = एक प्रकार का सर्प। हिअ = हृदय। काँपा = चकम्पे = काँप उठा। पदुम = पद्म = सौ करोड। कोटि = करोड। साजे = सज्जित किए। आवहिँ = आयान्ति = आते हैँ। गिरि = पर्वत। होइ = भूत्वा = हो कर। खेह = धूलि = धूर। गगन = आकाश। कहँ = को। धावहिँ = धावन्ति = दौडते हैँ। जनु = जानोँ। भुइँ-चाल = भूमिचाल = भूकम्प = भूडोल। चलत = चलते। तहँ = तहाँ = तत्र। परा = परइ (पतति) का भूत-काल, पुंलिङ्ग का एक-वचन। कुरमहि = कूर्म को = कछुए को। पीठि = पृष्ठ = पीठ। टूटि = टूटी = टूटइ (त्रुट्यति) का भूत-काल, स्त्रीलिङ्ग, एक-वचन ॥

छतरहिँ = छत्रोँ से = छाताओँ से। सरग = स्वर्ग। छाइ गा = छा गया = छादित हो गया। सूरुज = सूर्य। गअउ = अगात् = गया। अलोपि = अलोप = अदृश्य। दिनहिँ = दिन मेँ। राति = रात्रि = रात। अस = एतादृशी = ऐसी। देखी = देखइ (दृश्यते) का भूत-काल, स्त्रीलिङ्ग, एक-वचन। चढा = चढइ (उच्चलति) का भूत-काल, पुंलिङ्ग, एक-वचन। कोपि = सङ्कुप्य = कोप कर = क्रोध कर ॥

(मन्त्री ने कहा कि) आइए गुदर अर्थात् गुदरी वाले योगिओँ के बहाने तयारी करिए, जहाँ तक राज्य है (सब कोई) बाजा बजा कर, अर्थात् डंका दे कर, चढिए। जो जागीरदार कुअँर हैँ सब तयार होँ और सब घाटिओँ को रोक कर योगी को पकडेँ। चौबीस लाख छत्रपति तयार हुए, सेना मेँ छप्पन करोड बाजे बजने लगे।

बाइस हजार सिंहली हाथी चलाए गए (जिस से) पृथ्वी पर के सब घर और पहाड हिल उठे। सब (हाथी, घोडे, पैदल) बराबर (पैर) दे कर जगत् (भूमि) को चाँपा (जिस से) इन्द्र डर गया, वासुकि नाग का हृदय काँपने लगा। सजे हुए करोड पद्म रथ आए, (जिन से) पहाड धूर हो कर आकाश में उडने लगे। (सेना के) चलते जानों वहाँ पर भूडोल आ गया, कछुए की पीठ टूट गई और उस का हृदय डर गया। पुराणों में कथा है कि भगवान कच्छप का अवतार ले कर पृथ्वी को अपनी पीठ पर रक्खे हुए हैं जिस से वह नीचे नहीं जाती। सेना से कच्छप की पीठ का टूटना यह अतिशयोक्ति है जैसा विहारी ने सतसई में लिखा है कि—

"अहो पथिक कहियो तुरत गिरिधारी सों टेरि।
दृग झरि लाई राधिका बह्यो चहै ब्रज फेरि॥"

तोष कवि ने भी कहा है,—

गोपिन के अँसुआन के नीर पनारे भए बहि के भए नारे।
नारे भए सो भई नदिआँ नदिआँ नद ह्वै गए काटि करारे॥
बेगि चलो जू चलो ब्रजको कवि तोष सुनो ब्रज-राज दुलारे।
वे नद चाहत सिंधु भए अब सिंधु तें ह्वैहैं जलाहल सारे॥

(छत्रपतिओं के) छाते से स्वर्ग छा गया सूर्य अलोप गया, दिन में रात ऐसी देख पडने लगी। (जान पडा कि) इन्द्र देवराज क्रोध कर (जगत् को विध्वंस करने के लिये) चढा है॥ २४६॥

चउपाई।

देखि कटक अउ मइमत हाथी। बोले रतन-सेन के साथी॥
होत आउ दर बहुत असूझा। अस जानत हहिँ होइहइ जूझा॥
राजा तूँ जोगी होइ खेला। इहइ दिवस कहँ हम भए चेला॥
जहाँ गाढ ठाकुर कहँ होई। संग न छाडइ सेवक सोई॥
जो हम मरन दिवस मन ताका। आज आइ सो पूजी साका॥
बरु जिउ जाउ जाए जनि बोला। राजा सत्त सुमेरु न डोला॥
गुरू केर जउँ आएसु पावहिँ। सउँह होइ हम चकर चलावहिँ॥

दोहा।

आजु करहिँ रन भारथ सत्त बचा दइ राखि।
सत्त करइ सब कउतुक सत्त भरइ पुनि साखि ॥ २४७ ॥

देखि = दृष्ट्वा = देख कर। कटक = सेना। अउ = अपि। मदमत = मदमत्त = मद से मस्त। हाथी = हस्ती। बोले = बोलइ (वदति) का भूत-काल, पुंलिङ्ग, बहु-वचन। रतन-सेन = रत्न-सेन। साथी = सार्थ = संगी। होत = होता = भवन्। आउ = आयाति = आता है। दर = दरी = घाँटी। बहुत = बहुत्र, वा बहुतर। असूझा = अदृश्य = अँधेरा = अशुद्ध। अस = ऐसा = एतादृश। जानत = जानते। हहिँ = स्मः = हैँ। होइहइ = भविष्यति = होगा। जूझा = युद्ध। तुँ = त्वम्। जोगी = योगी। होइ = भूला = हो कर। खेला = खेलइ (खेलइ) का भूत-काल, पुंलिङ्ग, एक-वचन। इहइ = इह हि = इसी। दिवस = दिन। कहँ = को। हम = अहम्, यहाँ वयम्। भए = हुए = बभूविम। चेला = शिष्य। जहाँ = यत्र। गाढ = कठिन। ठाकुर = ठक्कुर = मालिक। होई = होवे = भवेत्। संग = सङ्ग = साथ। छाडइ = छोटयति = छोडता है। सेवक = दास। सोई = स एव = वही। जो = यः। मरन = मरण। मन = मनसि = मन में। ताका = ताकइ (तर्कयति) का भूत-काल, पुंलिङ्ग, एक-वचन। आज = अद्य। आइ = एत्य = आ कर। सो = सः = वह। पूजी = पूरी हुई। साका = शक = वर्ष। बरु = वरम् = बल्कि। जिउ = जीव = प्राण। जाउ = यातु = जाय। जाय = जाय। जनि = यो न = जिन = मत। बोला = बोली = वचन। सत्त = सत्ता = सत्य। सुमेरु = सोने का पहाड जो उत्तर ध्रुव के नीचे है। डोला = डोल = डोलइ (दोलति)। गुरू = गुरु। केर = का। जउँ = यदि = जो। पावहिँ = पावैँ = प्राप्नुयाम्। सउँह = सम्मुख = सामने। चकर = चक्र। चलावहिँ = चलावैँ = चालयेयम् ॥

आजु = आज = अद्य। करहिँ = करैँ = कुर्याम्। रन = रण = संग्राम। भारथ = भारत। बचा = वचन। दइ = देव = भगवान। राखि = राख = रखता है (रचति)। कउतुक = कौतुक = क्रीडा। भरइ = भरति = भरता है। पुनि = पुनः = फिर। साखि = साखी = गवाह ॥

सेना और मदमत्त हाथिओं को देख कर राजा रत्न-सेन के साथी (कुअँर लोग) बोले, कि घाटिओं में बहुत अँधेरा होता आता है, ऐसा जान पडता है कि युद्ध

होगा। हे राजा तूँ (तै ने) योगी हो कर खेल किया, हम लोग इसी दिन के लिये चेले ऊए हैं। जहाँ मालिक के ऊपर कष्ट पडे वहाँ पर जो संग न छोडे वही (सच्चा) सेवक है। हम लोग जिस मरणदिन को मन में अनुमान किया था, आज वह शाका (वर्ष) पूरी ऊई। (ईश्वर से प्रार्थना है कि) जीव जाना अच्छा पर वचन (बात) न जाय, हे राजा सत्य (वचन) और सुमेरु नहीं हिलता, अर्थात् नहीं डगमगाता। यदि गुरु की आज्ञा पावँ तो हम लोग सामने हो कर चक्र चलावँ॥

(हम लोग) आज भारत के ऐसा सङ्ग्राम करँ। भगवान् सत्य वचन को रखता है। सत्य ही सब कौतुक करता है और सत्य ही साखी भरता है, अर्थात् मनुष्य का सच्चा गवाह सत्य ही है; शास्त्र में भी लिखा है कि सत्ये सर्वं प्रतिष्ठितम्। जल, वायु, पृथ्वी, अग्नि, और सूर्यादि ग्रह सब सत्य ही से अपने अपने कामों में लगे हैं। कहावत है कि साँच को आँच क्या, अर्थात् सच्चे को आग की आँच क्या है॥

गोरखनाथी और नान्हकशाही साधु लोग अपने शिर की पगडी में एक लोहे का वृत्ताकार हथिआर रखते हैं। उसी को चक्र कहते हैं। इसे हाथ की अँगुली से घुमा कर शत्रु के गले पर फेँकते हैं। वह गला काटता ऊआ आगे निकल जाता है। सुनते हैं कि पहले यह इस चाल से फेँका जाता था जिस से यह शत्रु का गला काटता और चक्कर लगाता ऊआ घूम कर फिर अपने मालिक के पास लौट आता था। भगवान कृष्ण का सुदर्शन चक्र सर्वत्र प्रसिद्ध है॥

कौरव पाण्डवों का भारत सङ्ग्राम व्यासकृत महाभारत में प्रसिद्ध है जहाँ सत्य-धुरन्धर, धर्मराजावतार, युधिष्ठिर ने भी कृष्ण के कहने से द्रोणाचार्य के मारने के लिये 'अश्वत्थामा हतो नरो वा कुञ्जरः' यह झूठी बात कह कर अपने को कलङ्कित किया॥ २४७॥

चउपाई।

गुरू कहा चेला सिध होहू। पेम बार होइ करी न कोहू॥
जा कहँ सीस नाइ कइ दीजिअ। रंग न होय ऊभ जउँ कीजिअ॥
जेहि जिउ पेम पानि भा सोई। जेहि रँग मिलइ तेही रँग होई॥
जउँ पइ जाइ पेम सउँ जूझा। कित तपि मरहिँ सिद्ध जेइँ बूझा॥
यह सत बहुत जो जूझि न करिअइ। खरग देखि पानी होइ ढरिअइ॥

पानिहि काह खरग कइ धारा। लउटि पानि सोई जो मारा॥
पानी सैंति आगि का करई। जाइ बुझाइ पानि जउँ परई॥

दोहा।

सीस दीन्ह मइँ अगुमन पेम पाअ सिर मेलि।
अब सो पिरीति निबाहउँ चलउँ सिद्ध होइ खेलि॥ २४८॥

गुरू = गुरु। कहा = कहइ (कथयति) का भूत-काल, पुंलिङ्ग, एक-वचन। चेला = शिष्य। सिध = सिद्ध। होऊ = होऊ = भवत = हो। पेम = प्रेम। बार = वार = द्वार। होइ = भूत्वा = हो कर। करी = करिए = कुर्य्याम्। कोह = कोह = क्रोध। जा कहँ = यस्य = जिस को। सीस = शीर्ष = शिर। नाइकइ = आनमय्य = झुँका कर। दीजिअ = दीजिए = दीयेत। रंग = रङ्ग = वर्ण। होय = हो = भवेत्। ऊभ = उद्वेग = घबड़ाहट = भय। जउँ = यदि। कीजिअ = कीजिए = क्रियेत। जेहि = यस्य = जिस। जिअ = जीव। पानि = पानीय = पानी। भा = अभूत् = हुआ। रँग = रंग। मिलइ = मिले = मिलेत्। तेही = तिसी। होई = होवे = भवेत्। पइ = अपि = निश्चय कर। जाइ = जाय = यात्। सउँ = सोँ = से। जूझा = युद्ध। कित = कुतः = कस्मात् = क्यों। तपि = प्रतप्य = तप कर। मरहिँ = मरेँ = मरेयुः। जेइँ = जिन्हों ने। बूझा = बूझइ (बुध्यति) का भूत-काल, पुंलिङ्ग, एक-वचन। यह = अयम्, वा इदम्। सत = सत्य। जूझि = युद्ध। करिअइ = कीजिए = कुर्य्याम्। खरग = खड्ग। देखि = दृष्ट्वा = देख कर। ढरिअइ = ढरिए = धारा के ऐसा होइए। (धृङ् अवस्थाने से अङ् प्रत्यय कर फिर टाप् करने से धारा बनता है उसी से, ढरइ (धरति) होता है।) पानिहि = पानी को। काह = क्या = किम्। कइ = की। धारा = धार। लउटि = उलट कर = अवलुप्य। पानि = पानी। सोई = वही। मारा = मारइ (मारयति) का भूत-काल, पुंलिङ्ग, एक-वचन। सैंति = सैंती = से। आगि = अग्नि। का = किम्। करई = करइ (करोति)। जाइ = याति = जाती है। बुझाइ = बुझ। परई = पतेत् = पड़े॥

दीन्ह = अदाम् = दिया। अगुमन = अग्रतः। पाअ = पाद = पैर। सिर = शिर। मेलि = मेलयित्वा = डाल कर। पिरीति = प्रीति। निबाहउँ = निर्वाहयामि = निबाहता हूँ। चलउँ = चलामि = चलता हूँ। खेलि = खेलयित्वा = खेल कर॥

गुरु (रत्न-सेन) ने कहा कि चेले लोग सिद्ध हो जाओ, प्रेम-द्वार में हो कर अर्थात् पैठ कर, क्रोध न करना चाहिए। जिस के लिये झुका कर शिर दीजिए, (वहाँ) यदि भय कीजिए तो (फिर) रंग नहीँ होता, अर्थात् भय करने से मनुष्य बदरंग हो कर फीका पड जाता है। जिस के हृदय में वह (सच्चा) प्रेम का पानी (उत्पन्न) हुआ, उस (पानी) में जो रंग मिले वह वही (प्रेम-)रंग हो जाय, अर्थात् प्रेम-रस में किसी रंग के पडने से उस में विकार नहीँ होता वह ज्योँ का त्योँ बना रहता है। यदि प्रेम से युद्ध होता हो तो सिद्ध लोग, जिन्होँ ने (प्रेम को) बूझ लिया है, क्योँ तपस्या कर के मरते। यही बहुत सत्यता है जो युद्ध न कीजिए, अर्थात् इस अवसर पर युद्ध न करना यही सब से बढ कर सच्ची बहादुरी है, (इस अवसर पर) खड्ग को देख कर पानी हो कर ढरक जाना चाहिए। पानी के लिये खड्ग की धारा क्या है, अर्थात् कुछ नहीँ है, (पानी को) जो मारता है वही उलट कर पानी हो जाता है, अर्थात् पानी को मारने के लिये जो पानी में पैठता है वह पानी के भीतर ही गल कर पानी हो जाता है। पानी से आग क्या कर सकती है, अर्थात् क्रोधाग्नि शान्त-रूप पानी के पडते ही बुझ कर ठंढी हो जाती है, जहाँ पानी पडा कि (वह) बुझ जाती है॥

प्रेम के पैर में शिर डाल कर मैं ने पहले ही से (अपने) शिर को दे दिया है, अब तो मैं उस प्रीति को निबाहता हूँ, और सिद्ध हो कर खेल कर (उस प्रेम-द्वार में) चलता हूँ॥ २४८ ॥

चउपाई ।

राजहि छेँकि धरे सब जोगी। दुख ऊपर दुख सहइ बिओगी॥
ना जिउ धडक धरत हइ कोई। न जनउँ मरन जिअन कस होई॥
नाग-फाँस उन्ह मेली गीआ। हरख न बिसमउ एकउ जीआ॥
जेइँ जिउ दीन्ह सो लेउ निरासा। बिसरइ नहिँ जउँ लहि तन साँसा॥
कर किँगरी तेइ तंत बजावा। नेह गीत बैरागी गावा॥
भलेहिँ आनि गिअ मेली फाँसी। हिअइँ न सोच रोस रिस नासी॥
मइँ गिअ-फाँद ओही दिन मेला। जेहि दिन पेम-पंथ होइ खेला॥

दोहा।

परगट गुपुत सकल महि पूरि रहा सब ठाउँ।
जहँ देखउँ ओहि देखउँ दोसर नहिँ कहँ जाउँ॥ २४९ ॥

राजहि = राजा को। छेंकि = छेकयिला = छेंक कर = रोक कर। धरे = धरइ (धरति) का भूत-काल, पुंलिङ्ग, बहु-वचन। सब = सर्व। जोगी = योगी। दुख = दुःख। ऊपर = उपरि। सहइ = सहते = सहता है। बिओगी = वियोगी = विरही। ना = न। जिउ = जीव। धउक = धउका = धडधडाहट। धरत हइ = धरइ (धरति) धरता है। कोई = कोऽपि। जनउँ = जाने = जानता हूँ। मरन = मरण। जिअन = जीवन। कस = कथम् = कैसा। होई = भवति होता है। नाग-फाँस = नाग-पाश = सर्पाकार फंदा। उन्ह = उन्हों ने। मेली = मेलइ (मेलयति) का भूत-काल, स्त्रीलिङ्ग, एक-वचन। गीआ = ग्रीवा = गला। हरख = हर्ष = खुशी। बिसमउ = विस्मय = चिन्ता। एकउ = एकोऽपि = एक भी। जीआ = जीव। जेइँ = यैः = जिन्हों ने। दीन्ह = अदात् = दिया। सो = सः = वह। लेउ = लातु = लेवे। निरासा = नैराश्येन = निराश से। बिसरइ = बिसरे (विस्मर्यंत) = भूले। जउँ लहि = जब तक। तन = तनु = शरीर। साँसा = श्वास। कर = हाथ। किँगरी = किन्नरी = एक तरह की चिकारी जिसे पौरिया वा योगी हाथ में लिए बजाया करते हैं। तेइ = तिस ने। तंत = तन्तु = तार। बजावा = बजावइ (वादयति) का भूत-काल, पुंलिङ्ग, एक-वचन। नेह = स्नेह = प्रीति। गीत = गान। बैरागी = विरागी = योगी। गावा = गावइ (गायति) का भूत-काल, पुंलिङ्ग, एक-वचन। भलेहिँ = वरम् = अच्छा। आनि = आनीय = आन कर। गिअ = ग्रीवा = गला। मेली = मेलइ (मेलयति) का भूत-काल, स्त्रीलिङ्ग, एक-वचन। फाँसी = पाशी = फाँसी लगाने की रस्सी। हिअइँ = हृदय में। सोच = शोच = चिन्ता। रोस = रोष = क्रोध। रिस = रिष्ट = शुभ। नासी = नसइ (नश्यति) का भूत-काल, स्त्रीलिङ्ग, एक-वचन। मइँ = मैं = अहम्। फाँद = पाश = फंदा। ओही = उसी। मेला = मेलइ (मेलयति) का भूत-काल, पुंलिङ्ग, एक-वचन। जेहि = जिस। पेम = प्रेम। पंथ = पन्थाः = राह। खोइ = भूला = खो कर। खेला = खेलइ (खेलति) का भूतकाल, स्त्रीलिङ्ग, एक-वचन॥

परगट = प्रकट = जाहिर। गुपुत = गुप्त = छिपा। सकल = सब = समग्र। महि = पृथ्वी = भूमि। पूरि = पूर = पूर्ण। रहा = रहइ (रहति) का भूत-काल, पुंलिङ्ग,

एक-वचन । सब = सर्व । ठाउँ = ठावँ = स्थान । जहँ = जहाँ = यत्र । देखउँ = पश्यामि = देखता हूँ । ओहि = उसी को । दोसर = दूसरा = द्वितीय । कहँ = कहाँ = कुत्र । जाउँ = यानि = जाऊँ ॥

सब (कुअँर) योगिओं ने राजा (रत्न-सेन) को पकड रक्खा, (बेचारा) वियोगी (रत्न-सेन) दुःख के ऊपर दुःख सह रहा है। (मुझे) कोई पकड रहा है इस बात का खटका (राजा के) जीव में नहीं है, (राजा कहने लगा कि) मैं नहीं जानता कि मरना और जीना कैसा होता है। उस (पद्मावती) ने गले में नाग-पाश डाल दिया है, (अब) हर्ष और विस्मय एक भी जी में नहीं है। जिस ने जी दिया है, वही नैराश्य कर (जी को) ले ले, (मुझे कुछ परवाह नहीं) जब तक शरीर में श्वास है तब तक (वह) न भूले (यही मेरी प्रतिज्ञा है)। (ऐसा कह) उस वैरागी (रत्न-सेन) ने हाथ से किंगरी के तारों को बजाने और स्नेह गीत को गाने लगा। (गीत का अर्थ यही था कि) उस (पद्मावती) ने अच्छा किया जो ला कर मेरे गले में फाँसी डाली, (अब) मेरे दिल में शोच नहीं क्रोध और शुभेच्छा भी नष्ट हो गई। मैं तो उसी दिन अपने गले में फंदे को डाल दिया जिस दिन प्रेम-राह में पड कर खेलने को चला, अर्थात् योगी का सवाँग बनाया ॥

(मेरी समझ में तो वह प्राणप्रिया पद्मावती) समग्र पृथ्वी में क्या प्रगट क्या छिपे सब स्थानों में पूर्ण (विराजमान) हो रही है, जहाँ देखता हूँ तहाँ उसी को देखता हूँ (मेरे लिये) दूसरा (हई) नहीं है, (इस लिये) कहाँ जाऊँ ॥ २४९ ॥

चउपाई ।

जब लगि गुरु मइँ अहा न चीन्हा । कोटि अँतर पट हुत बिच दीन्हा ॥
जउँ चीन्हा तउ अउरु न कोई । तन मन जिउ जोबन सब सोई ॥
हउँ हउँ कहत धोख अँतराहीं । जो भा सिद्ध कहाँ परछाहीं ॥
मारइ गुरू कि गुरू जिआवा । अउरु को मार मरइ सब आवा ॥
सूरी मेलि हसति गुरु पूरू । हउँ नहिँ जानउँ जानइ गूरू ॥
गुरू हसति पर चढा सो पेखा । जगत जो नास्ति नास्ति सब देखा ॥
अंध मीन जस जल मँह धावा । जल जीअन पुनि दिसिटि न आवा ॥

दोहा ।

गुरू मोर मोरइ सिर देइ तुरंगहि ठाठ ।
भीतर करहि डोलावई बाहर नाँचइ काठ ॥ २५० ॥

जब लगि = जब तक = यावत् । मइँ = मैं । अहा = था, अहइ (अस्ति) का भूत-काल, पुंलिङ्ग, एक-वचन । चीन्हा = चीन्हइ (चिह्नयति) से संज्ञा बनाई गई है । कोटि = करोड । अँतर = अन्तर । पट = वस्त्र वा पट्ट = केवाडा = पर्दा । हुत = था । बिच = बीच = मध्य । दीन्हा = दिया हुआ । जउँ = यदि वा जब । तउ = तदा = तव । अउरु = अपर । कोई = कोऽपि । तन = तनु = शरीर । मन = मनः = मानस । जिउ = जीव । जोबन = योवन = जवानी । सोई = वही = स एव । हउँ = अहम् = मैं । कहत = कथयन् = कहते । धोख = धोखा = भ्रम । अँतराहीँ = अन्तरे हि = भीतर में । जो = जब, वा यदि । भा = बभूव = हुआ । कहाँ = कुत्र । परछाहीँ = परिच्छाया । मारइ = मारे = मारयेत् । गुरू = गुरु । जिआवा = जीवयेत् = जिलावे । को = को = कः = कौन । मार = मारने । मरइ = मरने । आवा = आवइ (आयाति) का भूत-काल, पुंलिङ्ग, एक-वचन । सूरी = शूली = फाँसी । मेलि = मेलयिला = मेल कर = डाल कर । हसति = हस्ती = हाथी । पूरू = पूर = पूरइ = पूरयति = पूरा करता है । हउँ = मैं = अहम् । जानउँ = जानामि = जानता हूँ । जानइ = जानाति = जानता है । गूरू = गुरु । चढा = उच्चलन् = चढा हुआ । सो = सः = वह । पेखा = पेख = प्रेक्षति = पेखता है, देखता है वा परीक्षा करता है । जगत = जगत् = संसार । जो = जो = यत् । नास्ति = नहीं है = नष्ट है । देखा = देख = देखइ (पश्यति) = देखता है । अंध = अन्ध = अंधा । मीन = मछली । जस = यथा = जैसे । जल = पानी । मँह = मध्ये = में । धावा = धाव = धावइ (धावति) = दौडता है । जल = जड = मूर्ख । जीअन = जीवन = पानी = जल । पुनि = पुनः = फिर । दिस्टि = दृष्टि = नजर । आवा = आव = आवइ (आयाति) = आता है ॥

मोर = मेरा = मम । मोरइ = मोरे = मेरे = मम । सिर = शिरः । देइ = दत्त्वा = दे कर । तुरंगहि = तुरङ्गस्य = घोडे को । ठाठ = ठाट = संस्थान = साज । भीतर = अभ्यन्तर । करहि = कला को (कलायाः) = कल को । डोलावई = डोलावइ (दोलयति) = डोलाता है = घुमाता है । बाहर = वाह्य । नाँचइ = नृत्यति = नाँचता है । काठ = काष्ठ = लकडी, यहाँ काठ सो शरीर ॥

(राजा रत्न-सेन कहता है कि) जब तक मैं गुरु (पद्मावती) को नहीँ पहचाना था तब तक (उस के और मेरे) बीच में करोडों पर्दे थे। जब चीन्ह गया तो (उस के सेवाय) दूसरा कोई नहीँ, शरीर, मन, जीव और यौवनावस्था सब वही गुरु है। (मुझे) मैं मैं कहता भीतर धोखा था, जो सिद्ध हुआ तो (फिर) कहाँ परछाहीँ, अर्थात् अब गुरु-कृपा से सिद्ध होने पर फिर दिल के भीतर कहाँ भ्रम रह सकता है, प्रसिद्ध है कि सिद्ध के शरीर की परछाहीँ नहीँ देख पडती, वह सिद्ध हो कर स्वयं प्रकाशवान् हो जाता है। (चाहे) गुरु मारे वा गुरु ज़िश्रावे और (दूसरा) कौन मार सकता है (क्योँकि इस संसार में गुरु को छोड) और सब मरने के लिये आए हुए हैं। गुरु शूली पर चढा कर (फिर) हाथिओँ से (घर को) भर देता है, मैं कुछ नहीँ जानता हूँ, (सब कुछ) गुरु जानता है। हाथी पर चढा हुआ गुरु सब की परीक्षा करता है वा सब को देखता रहता है, (निश्चय समझो कि) जो यह जगत् (कुछ) नहीँ है, (कुछ) नहीँ है, उस सब को भी गुरु देखा करता है। जैसे अंधा मीन जल में दौडा करता है (पर उस) जड को वह जीवन, अर्थात् जल, देख नहीँ पडता, (उसी तरह प्राणी लोग अंधे हो कर इस संसार में दौडा करते हैं परन्तु यह संसार उन को नहीँ देख पडता)॥

मेरा गुरु घोडे को साज दे कर, अर्थात् तुरङ्ग सा चञ्चल मन को तयार कर, मेरे शिर पर खडा हुआ है, (शिर के) भीतर कल को हिला रहा है (इसी से) बाहर काठ (की पुतली सी) यह शरीर नाँच रही है। योगक्रिया में उस परमात्मा का स्थान, जिसे ब्रह्मगुफा कहते हैं, शिर में है। वही मन-घोडे को इन्द्रिय-कल के द्वार से चारो ओर नँचाया करता है। योगाभ्यास से जब योगी उस ब्रह्मगुफा में पहुँच जाता है। तब ब्रह्म-रूप गुरु को पहचानता है। पहचानने पर फिर उसे जीने और मरने की चिन्ता मिट जाती है। स्वयं ब्रह्मस्वरूप हो जाता है॥ २५०॥

चउपाई।

सो पदुमावति गुरु हउँ चेला। जोगतंत जेहि कारन खेला॥
तजि ओहि बार न जानउँ दूजा। जेहि दिन मिलइ जातरा पूजा॥
जीउ काढि भुइँ धरउँ ललाटू। ओहि कहँ देउँ हिश्रा मँह पाटू॥

को मोहिँ लेइ सो छुआवइ पाया। नउ अउतार देइ नइ काया॥
जीउ चाहि सो अधिक पिआरी। माँगइ जीउ देउँ बलिहारी॥
माँगइ सीस देउँ सइँ गीआ। अधिक नवउँ जउँ मारइ जीआ॥
अपने जिउ कर लोभ न मोही। पेम-बार होइ माँगउँ ओही॥

दोहा।

दरसन ओहिक दिआ जस हउँ रे भिखारि पतंग।
जउँ करवत सिर सारइ मरत न मोरउँ अंग॥ २५१॥

सो = सा = वह। पदुमावति = पद्मावती। हउँ = अहम् = मैं। चेला = शिष्य। जोग = योग। तंत = तन्त्र = शास्त्र। जेहि = जेहि = जिस। कारन = कारण। खेला = खेलइ (खेलति) का भूत-काल, पुंलिङ्ग, एक-वचन। तजि = त्यक्त्वा = त्याग कर। ओहि = ओहि = उस। बार = द्वार = दरवाजा। जानउँ = जानामि = जानता हूँ। दूजा = दूसरा = द्वितीय। मिलइ = मिलेत् = मिले। जातरा = याचा। पूजा = पूरी हुई = पूर्यंत। जीउ = जीव = प्राण। काढि = कर्षयित्वा = खींच कर = निकाल कर। भुइँ = भूमि में। धरउँ = धरूँ = धराणि। ललाटू = ललाट = मस्तक। कहँ = को। देउँ = दद्याम् = देऊँ। हिआ = हृदय = दिल। मँह = मध्ये = में। पाटू = पाट = पट्ट = पीढा = आसन। को = कः = कौन। मोहिँ = मोहिँ = मुझे। लेइ = लेइ = लाला = ले कर। सो = वह, यहाँ उस का। छुआवइ = छुआवे (स्पर्शयेत्)। पाया = पाय = पाद = पैर। नउ = नव = नया। अउतार = अवतार = जन्म। देइ = दद्यात् = देवे। नउ = नवा = नई। काया = काय = शरीर। चाहि = बढ कर। अधिक = ज्यादा। पिआरी = प्रिया = प्यारी। माँगइ = याचेत = माँगे। बलिहारी = बलिदान। सीस = शिर। सइँ = सह = साथ। गीआ = ग्रीवा = गला। नवउँ = नमेयम् = झुकूँ। जउँ = यदि। मारइ = मारयेत् = मारे। जीआ = जीव = प्राण। अपने = आत्मनः। कर = का। लोभ = लालच। मोही = मोहीँ = मुझे। पेम = प्रेम। बार = वार = द्वार = दरवाजा। होइ = हो कर = भूला। ओही = उसी से॥

दरसन = दर्शन। ओहिक = ओहिक = उस का। दिआ = दीप = दीआ = चिराग। जस = यथा = जैसे। भिखारि = भिखारी = भिक्षुक = भिखमंगा। पतंग = फतिंगा =

फनगा = पाँखी । करवत = करपच = आरा । सिर = शिरः । सारह्र = सारे = रचे = सारयेत् । मरत = मरते । मोरउँ = मोरूँ = फेरूँ = मूर्छानि । अंग = अङ्ग = देह ॥

(रत्न-सेन कहता है कि) वह पद्मावती गुरु है और मैं (उस का) चेला हूँ, जिस (गुरु) के कारण मैं ने योग-शास्त्र को खेला अर्थात् सीखा। उस के द्वार को छोड कर दूसरा (द्वार) नहीं जानता, जिस दिन मिले उसी दिन (मेरी) याचा पूरी होगी। (यदि वह मिले तो) प्राण को निकाल कर मस्तक को जमीन पर रक्खूँ, उस के लिये हृदय में आसन देऊँ। कौन ऐसा है जो मुझे ले कर उस के पैर को छुआवे, और नया जन्म दे कर नई शरीर करे। वह प्राण से भी अधिक प्यारी है, (यदि) माँगे (तो) प्राण दे कर बलिदान करूँ। यदि शिर माँगे तो गले के साथ शिर को देऊँ, यदि जी मारे तो और भी अधिक झुक जाऊँ। मुझे अपने प्राण का लोभ नहीं है, प्रेम-द्वार में हो कर, अर्थात् पैठ कर, (केवल) उसी को, अर्थात् उसी के, दर्शन को माँगता हूँ, अर्थात् यही चाहता हूँ कि कोई उपकारी उस का दर्शन करा दे ॥

(मेरे लिये) उस का दर्शन दीए के ऐसा है और अरे (कुअँर लोग) मैं भिखारी (उस दीए में जलने-वाला) फतिंगा हूँ। यदि वह मेरे शिर पर आरा रक्खे, अर्थात् चलावे, तो मरते मरते अंग न मोरूँ, अर्थात् प्राण निकलते निकलते भी आरे के सामने से न हटूँ ॥ २५१ ॥

चउपाई ।

पदुमावति कवँला ससि जोती। हँसइ फूल रोअइ तब मोती ॥
बरजा पितइ हँसी अरु रोजू। लाए दूत होइ निति खोजू ॥
जउ हिँ सुरुज कहँ लागेउ राह्र। तउ हिँ कवँल मन भएउ अगाह्र ॥
बिरह अगस्ती बिसमउ भएऊ। सरवर हरख सूखि सब गएऊ ॥
परगट ढारि सकइ नहिँ आँसू। घटि घटि माँसु गुपुत होइ नासू ॥
जस दिन माँझ रइनि होइ आई। बिगसत कवँल गएउ कुम्हिलाई ॥
राता बदन गएउ होइ सेता। भवँर भवँति रहि गई अचेता ॥

दोहा ।

चितहिँ जो चितर कीन्ह धनि रोअँ रोअँ अंग समेटि ।
सहस साल दुख आहि भरि मुरुछि परी गइ मेटि ॥ २५२ ॥

पदुमावति = पद्मावती। कवँला = कमल (ससि = शशि = चन्द्र। जोती = ज्योतिः = प्रकाश। हँसइ = हसति = हँसती है। फूल = फुल्ल। रोअइ = रोदिति = रोती है। तब = तदा। मोती = मुक्ता = मौक्तिक। बरजा = बरजइ (वर्जयति) का भूत-काल, पुंलिङ्ग, एक-वचन। पितइ = पित्रा = पिता ने। हँसी = हास्य। अरु = अपि च = और। रोजू = रुज = रोग वा रोज। लाए = लगाए। दूत = भेदी। होइ = होता है। निति = नित्य = रोज। खोजू = खोज = शोध। जउहिँ = जबहि = यदा हि। सुरुज = सूर्य। कहँ = को। लागेउ = लगा = लगइ (लगति) का भूत-काल, पुंलिङ्ग, एक-वचन। राहु = राहु। तउहिँ = तबहि = तदा हि = तभी से। कवँल = कमल। भएउ = भया = बभूव = हुआ। अगाहू = आगाह = खबर। बिरह = विरह = वियोग। अगस्ती = अगस्त्य ऋषि। बिसमउ = बेसमय = विना समय। भएऊ = भएउ = हुआ। सरवर = सरोवर = तडाग। हरख = हर्ष। सूखि = शुष्क = सूख। सब = सर्व। गएऊ = गया (अगात्)। परगट = प्रगट = प्रकट। ढारि = धारायित = धारा के ऐसा (धातृ विसरणे से)। सकइ = शक्नोति = सकती है। आँसू = अश्रु = आँस। घटि घटि = घट घट कर = कम हो हो कर। माँसु = मांस = माँस। गुपुत = गुप्त = लोप। होइ = भवति = होती है। नासू = नाश। जस = यथा = जैसे। माँझ = मध्ये = में। रइनि = रजनी = रात। आई = आवइ (आयाति) का भूत-काल, स्त्रीलिङ्ग, एक-वचन। बिगसत = विकाश होते। कुम्हिलाइ = कुमलिन = कुम्लान। राता = रक्त = लाल। बदन = वदन = मुख। सेता = श्वेत = सफेद। भवँर = भ्रमर = आवर्त्त। भवँति = भ्रमन्ति = घूमती। रहि गई = हो गई। अचेता = अचेतन = बेहोश॥

चितहिँ = चित्त में। चितर = चित्र = तसवीर। कीन्ह = किया (अकृत)। धनि = धन्या (पद्मावती)। रोअँ रोअँ = रोअँ रोअँ = रोम रोम = रोआँ रोआँ। अँग = देह के अवयव। समेटि = समेत्य = समेट कर = सङ्कुचित कर। सहस = सहस्र = हजार। साल = सालइ (शल्यति) का भूत-काल पुंलिङ्ग, एक-वचन। दुख = दुःख। आहि = आह। भरि = भृत्वा = भर कर। मुरुछि = मूर्छा खा कर = संमूर्छ्य = मूर्छित हो कर। परी = परइ (पतति) का भूत-काल, स्त्रीलिङ्ग, एक-वचन। गइ = गई = अगात्। मेटि = मिट = मट्टी = मृत्तिका॥

पद्मावती कमल और चन्द्र-ज्योति है, हँसती है तो फूल चूता है और रोती है तब (आँसुओं से) मोती टपकती है। पिता ने हँसी और (विरह) रोग को रोक दिया, अर्थात् पिता का हुक्म हुआ कि यह हँसी ठट्ठा न करने पावे और अकेली

बैठ कर रोवे भी न, (पिता ने) भेदिओँ को लगा दिया, रोज खोज होने लगी। जैसे ही सूर्य को राहु लगा, अर्थात् सूर्य-स्वरूप रत्न-सेन को राहु-रूप गन्धर्वसेन के सेना के लोग पकडने की इच्छा की उसी समय कमल (पद्मावती) के मन में यह खबर पहुँच गई। विरह अगस्त्य बेसमय (उदित) हुआ, सब हर्ष-रूप तडाग सूख गया। (पिता के भय से) जाहिरा में आँसू को नहीँ गिरा सकती, (पर) मांस कम होते होते लोप हो कर नष्ट हो गई, अर्थात् दुबली हो गई, मांस गल गई, खाली हड्डी भर रह गई। जैसे दिन में रात हो आई (इस लिये) प्रफुल्लित कमल (पद्मावती) कुम्हिला गया। ललित मुँह सफेद हो गया, (जल के) भवँर ऐसी घूमती घूमती अचेत हो गई ॥

अंग के रोएँ रोएँ को समेट कर जो धन्या पद्मावती ने (अपने) चित्त के भीतर (रत्न-सेन की) तसबीर की, अर्थात् बनाई (इस से) हजारोँ बाणोँ के सालने के ऐसा दुःख हुआ; आह भर के मूर्छा खा कर गिर पडी और मिट गई ॥

देवा-सुर-सङ्ग्राम में जब भगवान् मोहिनी-रूप धारण कर देवताओँ में अमृत परोसने लगे तब सूर्य और चन्द्र के बीच में राहु दैत्य छिप कर बैठ गया था, अमृत पान करते ही सूर्य चन्द्र के बताने से भगवान ने सुदर्शन चक्र से उस का शिर काट डाला परन्तु अमृत के प्रभाव से दोनोँ टुकडे अमर हो कर आकाश में चलने लगे। धड को राहु और शिर को केतु कहते हैँ। सूर्य और चन्द्र के कारण से राहु का शिर काटा गया इसी लिये वह बदला लेने के लिये अवसर पा कर सूर्य और चन्द्रमा को गरासता है। यह पुराणोँ में प्रसिद्ध कथा है ॥

वर्षा-ऋतु के अन्त में अगस्त्य तारा, जिसे अंगरेजी में Canopus कहते हैँ, उदय होता है। इस के उदय होते ही वर्षा की समाप्ति होती है और पोखरी, पोखरे, सूखने लगते हैँ; तुलसी-दास ने भी अपने रामायण के किष्किन्धाकाण्ड में लिखा है कि—

उदित अगस्त पंथ-जल सोखा। जिमि लोभहि सोखइ संतोखा ॥

प्रसिद्ध है कि रात को खिले हुए कमल कुम्हिला जाते हैँ, कमल के फूल का मुँह बंद हो जाता है ॥ २५२ ॥

चउपाई।

पदुमावति सँग सखी सयानी। गनि कइ नखत पीर ससि जानी ॥
जानहिँ मरम कवँल कर कोई। देखि बिथा बिरहिनि कइ रोई ॥

बिरहा कठिन काल कइ कला। बिरह न सहइ काल पर भला॥
काल काढि जिउ लेइ सिधारा। बिरह काल मारे पर मारा॥
बिरह आगि पर मेलइ आगी। बिरह घाउ पर घाउ बजागी॥
बिरह बान पर बान बिसारा। बिरह रोग पर रोग सँचारा॥
बिरह साल पर साल नवेला। बिरह काल पर काल दुहेला॥

दोहा।

तन राओन होइ गढ चढा बिरह भएउ हनुवंत।
जारे ऊपर जारई तजइ न कइ भसमंत॥ २५३॥

पदुमावति = पद्मावती। सँग = संग। सखी = सहेली। सयानी = सज्ञाना = चतुर। गनि-कइ = गणयित्वा = गन कर। नखत = नक्षत्र। पीर = पीडा। ससि = शशि = चन्द्र। जानी = जानइ (जानाति) का भूत काल, स्त्रीलिङ्ग, एक-वचन। जानहिँ = जानन्ति = जानती हैँ। मरम = मर्म = भेद। कवँल = कमल। कर = का। कोईँ = कुमुदिनी। देखि = दृष्ट्वा = देख कर। बिथा = व्यथा = पीडा। बिरहिनि = विरहिणी। कइ = की। रोईँ = रोअइ (रोदिति) का भूत-काल, स्त्रीलिङ्ग, बड-वचन। बिरहा = विरह = वियोग। कठिन = कठोर। काल = प्राण लेने-वाला = यम-दूत। कला = अंश = अवतार। सहइ = सहते = सहता है। पर = परन्तु। भला = वर = अच्छा। काढि = कर्षयित्वा = खीँच कर। जिउ = जीव। लेइ = ले कर (आलाय)। सिधारा = सिधार = सिधारइ (सेधति) = सिधारता है = चला जाता है। मारे = मारने। पर = उपरि = ऊपर। मारा = मार = मारइ (मारयति) = मारता है। आगि = आग = अग्नि। मेलइ = मेलयति = मेलता है = डालता है। आगी = आग। घाउ = घात = क्षत = घाव। बजागी = वज्राग्नि = बिजली की आग। बान = बाण। बिसारा = बिसार = बिसारइ (विसारयति) = विशेष कर सारता है = विशेष कर फेँकता है। सँचारा = सँचार = सँचारइ (सञ्चालयति) = सँचारता है = फैलाता है। साल = शाल = शल्य = दुःख। नवेला = नवल = नया। दुहेला = दुर्हेल = भयङ्कर = कठिन॥

तन = तनु = शरीर। राओन = रावण। होइ = होइ = भवति = है। गढ = गाढ = दुर्ग = किला। चढा = चढइ (उच्चलति) का भूत-काल, पुंलिङ्ग, एक-वचन। भएउ =

बभूव = भया = ऊत्रा । हनुवंत = हनुमंत = हनुमान्, प्रसिद्ध रामायण के महावीर और राम के सेवक। जारे = जारने । ऊपर = उपरि (ज्वलनोपरि) । जारई = जारइ (ज्वलयति) = जारता है। तजइ = त्यजति = तजता है = छोडता है। कइ = झला = कर। भसमंत = भस्म = राख ॥

पद्मावती के साथ की नखत्र-रूप चतुरी सखी गन कर, अर्थात् लख देख कर शशि (पद्मावती) की पीडा को जान गई। कमल (पद्मावती) का भेद कोई (सखिआँ) ही जानती हैँ, विरहिणी (पद्मावती) की पीडा देख कर (सब सखिआँ) रोने लगीँ। (आपस मैँ कहने लगीँ कि) विरह (पति-वियोग) कठिन काल का अवतार है, विरह नहीँ सहा जाता (इस लिये उस से) बल्कि काल भला है। काल (तो) प्राण खीँच कर, और ले कर चला जाता है, अर्थात् जीव केवल ले कर मरी शरीर को छोड देता है। पर विरह-काल (तो) मारने पर मारता है। विरह आग पर आग डालता है, बज्राग्नि विरह घाव पर घाव करता है। विरह बाण के ऊपर बाण फँकता है, विरह रोग पर रोग फैलाता है। विरह साल पर नया साल है, विरह काल पर भयङ्कर काल है॥

शरीर रावण का गढ (लङ्का) ऊई है, विरह हनुमान् ऊत्रा है और (उस गढ पर) चढा है,। जारने के ऊपर जार रहा है (शरीर को) भस्म कर के (भी) नहीँ छोडता है॥

सहवासी विजानीयात् चरित्रं सहवासिनाम्, इस नियम से साथ की रहने-वालीँ कोईरूप सखिआँ ही कमल (पद्मावती) का भेद जानती हैँ॥ यह कवि का लिखना बऊत उचित है॥

रामायण-सुन्दर-काण्ड मैँ हनुमान् का लङ्का जारना प्रसिद्ध है, तुलसी-दास ने भी लिखा है कि 'उलटि पलटि लंका कपि जारा। कूदि परा पुनि सिंधु मँझारा'॥ इस लिये मलिक महम्मद का तनु लंका, विरह हनुमान् और जारे ऊपर जारई यह कहना बऊत ही रोचक है॥ २५२ ॥

चउपाई।

कोइ कुमोद कर परसहिँ पाया। कोइ मलयागिरि छिडकहिँ काया॥
कोइ मुख सीतल नीर चुआवहिँ। कोइ अंचल सउँ पउन डोलावहिँ॥

कोइ मुख अबिँरित आनि निचोआ। जनु बिख दीन्ह अधिक धनि सोआ॥
जोवहिँ साँस खनहिँ खन सखी। कब जिउ फिरइ पउन अउ पँखी॥
बिरह काल होइ हिअइँ पईठा। जीउ काढि लेइ हाथ बईठा॥
खन एक मूँठि बाँध खन खोला। खनहिँ जीभ मुख जाइ न बोला॥
खनहिँ बजर के बानन्ह मारा। कँपि कँपि नारि मरइ बिकरारा॥

दोहा।

कइसेहु बिरह न छाडइ भा ससि गहन गिरास।
नखत चहुँ दिसि रोअहिँ अँधिअर धरति अकास॥ २५४॥

कोइ = कोई = कापि। कुमोद = कुमुदिनी = कोईँ। कर = हाथ। परसहिँ = स्पृशन्ति = परसती हैँ = छूती हैँ। पाया = पाद = पैर। मलयागिरि = मलयगिरि का चन्दन। छिडकहिँ = शेकन्ते = छिडकती हैँ। मुख = मुँह। सीतल = शीतल = ठंढा। नीर = जल = पानी। चुआवहिँ = च्योतयन्ति = चुआती हैँ। अंचल = अञ्चल = आँचर। सउँ = सोँ = से। पउन = पवन = हवा। डोलावहिँ = दोलयन्ति = चलाती हैँ। अबिँरित = अमृत। आनि = आनीय = आन कर। निचोआ = निचोअ = निचोती हैँ = निच्योतयन्ति = गारती हैँ। जनु = जाने = जान पडता है। बिख = विष = जहर। दीन्ह = दिया = अदात्। अधिक = ज्यादा = और भी। धनि = धन्या (पद्मावती)। सोआ = सोअइ (स्वपिति) का भूत-काल, स्त्रीलिङ्ग, एक-वचन, सोई के स्थान मेँ अनुप्रास मिलाने के लिये सोआ किया गया। जोवहिँ = जोवइ (जेहते) का बहु-वचन, जोहती हैँ = देखती हैँ वा द्युत दीप्तौ से संद्योतयति का बहु-वचन। साँस = श्वास। खनहिँ खन = क्षणे क्षणे = क्षण क्षण पर। सखी = सहेली। कब = कदा। जिउ = जीव = प्राण। फिरइ = परिवर्त्तयति = फिरता है। अउ = अपि च। पँखी = पक्षी। बिरह = विरह = प्रियवियोग। काल = मारने-वाला = यम-दूत। होइ = होइ = भूत्वा = हो कर। हिअइँ = हृदय मेँ। पईठा = पइठा = पैठा = पइठइ (प्रविशति) का भूत-काल, पुंलिङ्ग, एक-वचन। काढि = कर्षयित्वा = खीँच कर = निकाल कर। लेइ = लेइ = आलाय = ले कर। हाथ = हस्त। बईठा = बइठा = बैठा = बइठइ (विशति) का भूत-काल, पुंलिङ्ग, एक-वचन। खन = क्षण। एक = एक। मूँठि = मुट्ठी = मुष्टि। बाँध = बाँधइ (बध्नाति) = बाँधता है।

खोला = खोल = खोलइ (खोलति) = खोलता है। खनहिँ = चण में। जीभ = जिह्वा। मुख = मुँह। जाइ = याति = जाती है = निकलती है। बोला = बोल = बोली = बात। बजर = वज्र। बानन्ह = बान (वाण) का बक्र-वचन। मारा = मार = मारइ (मारयति) = मारता है। कँपि कँपि = कम्पयित्वा कम्पयित्वा = कँप कँप कर। नारि = नारी (पद्मावती)। मरइ = मरति = मरती है। बिकरारा = विकराल = भयङ्कर ॥

कइसेङ = कथमपि = कैसेङ = किसी तरह से। छाडइ = छोडता है = छन्दति। भा = भया = बभूव = हुआ। ससि = शशि = चन्द्र। गहन = ग्रहण। गिरास = ग्रास। नखत = नक्षत्र। चहूँ दिसि = चतुर्दिक्षु = चारो दिशा। रोअहिँ = रोदन्ति = रोती हैँ। अँधिअर = अँधिआर = अन्धकार = अँधेरा। धरति = धरती = धरित्री। अकास = आकाश = आस्मान ॥

कोई कुमुदिनी (सखिआँ) हाथ से (पद्मावती के) पैर को छू रही हैँ (कि ठंढा तो नहीँ हो गया), कोई शरीर पर मलय-चन्दन को छिडक रही हैँ। कोई मुँह में ठंढा पानी चुआ रही हैँ, कोई (अपने) आँचर से हवा कर रही हैँ। कोई मुँह में अमृत, अर्थात् संजीवनी जडी को निचोड रही हैँ, (वह औषधि ऐसी हो गई) जानोँ विष दिया गया, वह धन्या (पद्मावती) और भी सो गई, अर्थात् बेहोश हो गई। सखिआँ चण चण पर साँस देखती हैँ, कि कब जी आता है और पवन पची (का संयोग होता) है, अर्थात् देखेँ कब शरीर में प्राण फिर कर आता है। (पद्मावती के) हृदय में विरह काल हो कर पैठ गया है, जी को निकाल कर, हाथ में ले कर बैठा हुआ है। एक चण में मुट्ठी को बाँध लेता है (तब पद्मावती बेजीव की हो जाती है), एक चण में (मुट्ठी को) खोल देता है (तब पद्मावती की साँस कुछ चलने लगती है), एक चण में मुख की जीभ से कुछ बोली नहीँ बोली जाती, अर्थात् एक चण में जीभ ऐँठ जाती है, मुँह से बोली नहीँ निकलती। एक चण में (वह विरह-काल) वज्र के वाणोँ से (पद्मावती को) मारता है, (जिस से) वह नारी (पद्मावती) काँप काँप कर बेकरार (विकराल) हो जाती है ॥

विरह किसी तरह से (पद्मावती को) नहीँ छोडता है (जानोँ) ग्रहण में चन्द्र का ग्रास हो गया, अर्थात् चन्द्र-रूपा पद्मावती कान्तिहीन हो गई। चारो ओर से नक्षत्र-रूप (सखिआँ) रो रही हैँ, धरती और आकाश में अँधेरा छा गया ॥ २५४ ॥

चउपाइ।

घरी चारि इमि गहन गिरासी। पुनि बिधि जोति हिश्रइँ परगासी॥
निसँसि ऊभि भरि लीन्हेसि साँसा। भइ अधार जीअन कइ आसा॥
बिनवँहिँ सखी छूटि ससि राहू। तुम्हरी जोति जोति सब काहू॥
तूँ ससि-बदन जगत उँजिआरी। केइ हरि लीन्ह कीन्ह अँधिआरी॥
तूँ गजगाविँनि गरब गहीली। अब कस अस छाडइ सत ढीली॥
तइँ हरि लंक हराई केहरि। अब कस हारि करसि हइ हे हरि॥
तूँ कोकिल-बइनी जग मोहा। को व्याधा होइ गहइ बिछोहा॥

दोहा।

कवँल करी तूँ पदुमिनि गइ निसि भएउ बिहान।
अबहुँ न संपुट खोलेसि जो रे उठा जग भान॥ २५५॥

घरी = घटी = २४ मिनट। चारि = चार = चत्वारि। इमि = एवम् = इस तरह से। गहन = ग्रहण। गिरासी = ग्रस्त हुई। पुनि = पुनः = फिर। बिधि = विधि = ब्रह्मा। जोति = ज्योतिः = प्रकाश। हिश्रइँ = हृदय में। परगासी = परगासइ (प्रकाशयति) का भूत-काल, स्त्रीलिङ्ग, एक-वचन। निसँसि = निश्वस्य = उसास ले कर = उच्छ्वास ले कर। ऊभि = ऊब कर = घबडा कर = उद्विज्य। भरि = भर कर = भला। लीन्हेसि = लिया = अलात्। साँसा = श्वास। भइ = भई = होइ (भवति) का भूत-काल, स्त्रीलिङ्ग, एक-वचन। अधार = आधार। जीअन = जीवन। कइ = की। आसा = आशा = उम्मीद। बिनवँहिँ = विनमन्ति = विनय करती हैं। सखी = सहेली। छूटि = छूटा। ससि = शशि = चन्द्र। राहू = राहु। तुम्हरी = तुम्हारी = आप की। काहू = को। तूँ = त्वम् = तुम। ससि-बदन = शशि-वदना = चन्द्र-मुखी। जगत = जगत् = संसार। उँजिआरी = उज्ज्वलता। केइ = केइ = केन = किस ने। हरि = हर = चुरा। लीन्ह = लिया = अलात्। कीन्ह = किया = अकृत। अँधिआरी = अन्धकार = अँधेरा। गजगाविँनि = गजगामिनी = हाथी के चाल ऐसी चलने-वाली। गरब = गर्व = अभिमान। गहीली = ग्रहिला = आग्रह करने-वाली। अब = अधुना = इदानीम्। कस = कथम् = क्यों। अस = एतादृश = ऐसा। छाडइ = छोडती है (छन्दति)। सत = सत्ता वा सत्य। ढीली = अधीर्य = ढीली हो कर।

तइँ = त्वम् = तैँ। हरि = हला = हरण कर। लंक = लङ्क = कटि = कमर। हराई = हरावइ (हारयति) का भूत-काल, स्त्रीलिङ्ग, एक-वचन। केहरि = केशरी = सिंह। हारि = हार कर = आहार्य। करसि हइ = करती है (करोषि)। हे हरि = हे हरे। कोकिल-बइनी = कोकिल-वचनी = कोकिला-सी बोलने-वाली। जग = जगत् = संसार। मोहा = मोही = मोहइ (मोहयति) का भूत-काल, मध्यम-पुरुष, स्त्रीलिङ्ग, एक-वचन। को = कौन = कः। ब्याधा = व्याध। होइ = होइ = हो कर = भूला। गहइ = ग्रसति = ग्रसता है। बिछोहा = विचुम्भा = वियोगिनी = विरहिणी ॥

कवँल = कमल। करी = कली = कलिका। पदुमिनि = हे पद्मिनि। गइ = गई = अगात्। निसि = निशा = रात। भण्उ = भया = बभूव = हुआ। बिहान = व्यह = सबेरा। अबहूँ = अब भी = इदानीमपि। सम्पुट = बंद मुख। खोलेसि = खोली = खोलइ (खोलति) का भूत-काल, मध्यम-पुरुष, स्त्रीलिङ्ग, एक-वचन। उठा = उठइ (उत्तिष्ठते) का भूत-काल, पुंलिङ्ग, एक-वचन। जग = जगत् वा जग = जगि = जाग्रत्वा = जाग कर। भान = भानु = सूर्य ॥

इस तरह से (पद्मावती) चार घडी तक ग्रहण में ग्रस्त थी, फिर ब्रह्मा ने हृदय में ज्योति की प्रकाश की, अर्थात् फिर हृदय में प्राण आया। उच्छ्वास ले कर, ऊब कर, और (हृदय में) भर कर (ठंढी) साँस ली, (सब सखिओं का) आधार हुई और जीने की आशा हुई। सब सखिआँ विनय करने लगीं कि राहु से चन्द्रमा छूट गया, (हे रानी) तेरी ही ज्योति से सब किसी को ज्योति है। तूँ चन्द्रमुखी संसार की उँजिआरी है, (नहीं जानतीं कि) किस ने (उस उँजिआरी को) हर लिया था और अँधेरा कर दिया था। तूँ गज-गामिनि, गर्वीली और हठीली है, अब क्यों इस तरह से ढीली हो कर (अपने) सत को छोडती है। तैं ने कमर को चुरा कर सिंह को हरा दिया, अर्थात् सिंह की कमर से भी तेरी कमर पतली है, अब क्यों हार कर हे हरि, हे हरि करती है, अर्थात् अब क्यों जी में हार कर हे हरि, हे भगवान्, हाय भगवान् कह कह कर कराहती है। तूँ जग के मोहने-वाली कोकिल-वचनी है, कौन व्याध हो कर (तुझ) विरहिणी को पकडता है ॥

हे पद्मिनि तूँ कमल-कली है सो रात बीत गई, सबेरा हुआ अब तक भी सम्पुट को नहीं खोली, अर्थात् अब तक तेरी मुख-कमल-कली नहीं खुली (विकसित हुई), क्योंकि रे (पद्मावति देख) जगत् में सूर्य उठ आया, वा सूर्य जग कर उदय हुआ ॥ २५५ ॥

चउपाई ।

भान नाउँ सुनि कवँल बिगासा । फिरि कइ भवँर लीन्ह मधु बासा ॥
सरद चाँद मुख जीभ उघेली । खंजन नइन उठे कइ केली ॥
बिरह न बोल आउ मुख ताईं । मरि मरि बोलि जीउ बरिआईं ॥
दवइ बिरह दारुन हिअ काँपा । खोलि न जाइ बिरह दुख झाँपा ॥
उदधि समुँद जस तरँग देखावा । चखु घूमहिँ मुख बात न आवा ॥
यह सुठि लहरि लहरि पर धावा । भवँर परा जिउ थाह न पावा ॥
सखी आनि बिख देहु त मरऊँ । जिउ नहिँ पेट ताहि डर डरऊँ ॥

दोहा ।

खनहिँ उठइ खन बूडइ अस हिअ कवँल सँकेत ।
हीरामनिहि बोलावह्नु सखी गहन जिउ लेत ॥ २५६ ॥

भान = भानु = सूर्य । नाउँ = नाम । सुनि = श्रुत्वा = सुन कर । कवँल = कमल । बिगासा = विगसा = बिगसइ = बिकसइ (विकाशते) का भूत-काल, पुंलिङ्ग, एक-वचन । फिरि कइ = फिर कर = लौट कर । भवँर = भ्रमर = भौंरा । लीन्ह = लिया = अलात् । मधु = पुष्परस = मकरन्द । बासा = वास = सुगन्ध । सरद = शरत् = शरत् ऋतु । चाँद = चन्द्र = चंद । मुख = मुँह । जीभ = जिह्वा । उघेली = उघारी = उघेरइ वा उघारइ (उद्घाटयति) का भूत-काल, स्त्रीलिङ्ग, एक-वचन । खंजन = खञ्जन = खञ्जरीट = एक प्रसिद्ध पक्षी जो शरत् ऋतु में देख पडता है । नइन = नयन = आँख । उठे = उठइ (उत्तिष्ठते) का भूत काल, पुंलिङ्ग, द्वि-वचन । कइ = कर । केली = केलि = क्रीडा । बिरह = विरह = प्रियवियोग । बोल = बोली = बात । आउ = आवइ (आयाति) = आती है । ताईं = तावइ (त्रायसते) का भूत-काल, स्त्रीलिङ्ग, एक-वचन = ताय गई = मूँद गई = बंद हो गई । मरि मरि = मर मर कर = मारं मारम् । बोलि = बोली = बात । जीउ = जीव = प्राण । बरिआईं = वरबलेन = प्राबल्येन = हठ से = जबर्दस्ती से । दवइ = दव = दवाग्नि = वन की आग । दारुन = दारुण = कठिन । हिअ = हृदय = दिल । काँपा = काँपइ (कम्पते) का भूत-काल, पुंलिङ्ग, एक-वचन । खोलि = खोला । जाइ = याति = जाता है । दुख = दुःख । झाँपा = झाँपइ (झम्पति) का भूत-काल, पुंलिङ्ग एक-वचन ।

उदधि = उदक (जल) जिस में रहे । समुँद = समुद्र । जस = जैसे = यथा । तरँग = तरङ्ग = लहर । देखावा = देखावइ (दर्शयति) का भूत-काल, पुंलिङ्ग, एक-वचन । चखु = चक्षुः = आँख । घूमहिँ = घूर्मयन्ति = घूमती हैँ । बात = वार्त्ता = बोली । आवा = आवइ (आयाति) = आती है । यह = अयम्, वा इदम् । सुठि = सुष्ठु = अच्छा । लहरि = लहर = लहरी = तरङ्ग । धावा = धाव = धावइ (धावति) = धावती है = दौडती है । भवँर = भ्रमर = भौँर । परा = पडा हुआ = पतित । जिउ = जीव = प्राण । थाह = स्थल = जमीन । पावा = पाव = पावइ (प्राप्नोति) = पाता है । सखी = हे आली । आनि = आनीय = आन कर = ला कर । देऊ = देओ = दद्याः । त = तर्हि = तो । मरऊँ = मरूँ = मराणि । पेट = पिटक = उदर । ताहि = तिस के । डर = दर = भय । डरऊँ = डरती हूँ (दरामि = बिभेमि) ॥

खनहिँ = क्षण मेँ । उठइ = उत्तिष्ठते = उठता है = ऊपर आता है । खन = क्षण मेँ । बूडइ = ब्रुडते = बूडता है = डूब जाता है । अस = ऐसा = एतादृश । हिय = हृदय । सँकेत = संकेत = संकष्ट = महादुःख । हीरामनिहि = हीरामणेः = हीरामणि (शुक) को । बोलावहु = बोलावइ (वादयति) का विध्यर्थ मेँ मध्यम-पुरुष का बहु-वचन । सखी = हे आली । गहन = ग्रहण । लेत = लेइ (लाति) = लेता है ॥

सूर्य का नाम सुन कर (पद्मावती) कमल खिल उठा, भ्रमर लौट कर (उस के) रस का वास लेने लगा, अर्थात् शरीर मेँ प्राण आ जाने से शरीर की सुगन्ध चारो ओर फैल गई जिस से फिर भ्रमर लौट कर बास लेने लगे । शरद काल के चन्द्र ऐसे मुख ने जीभ खोली, खञ्जन नयन, अर्थात् खञ्जन से नयन क्रीडा कर उठे, अर्थात् खुले । खञ्जन, और मछली की चञ्चलता ले कर कवि लोग आँख की उपमा खञ्जन और मछली से देते हैँ । गिरिधरदास ने भी लिखा है कि 'सफरी से चल नैन' । विरह से मुख बंद हो गया, बोल नहीँ आती है, प्राण मर मर कर जबर्दस्ती से बोली (कुछ) बात कहता है । कठिन विरहाग्नि से हृदय काँपने लगा, विरहदुःख ने (फिर मुख को) बंद कर दिया, (मुँह) खोला नहीँ जाता । सुस्वादु पानी के समुद्र ऐसा (विरह ने) तरंग को देखाने लगा, आँख घूमने लगी, मुँह से बात नहीँ आती । पुराणोँ मेँ कथा है कि जिस समुद्र का सुस्वाद पानी है उसी मेँ बडवानल है जिस कारण से उस समुद्र मेँ बडे बडे तरँग उठते हैँ । भास्कराचार्य ने भी अपनी सिद्धान्त-शिरोमणि के गोलाध्याय मेँ लिखा है कि "स्वादूदकान्तर्बडवानलोऽसौ" । बडे तरंग ही के

कारण कवि ने 'उदधि समुँद' का प्रयोग किया है। यहाँ उदधि से समुद्र ग्रहण करने से पुनरुक्ति दोष होता है इस लिये उदधि से 'सुन्दरपानी-वाला' यही अर्थ करना चाहिए। इस अच्छे (समुद्र) में लहर पर लहर दौडती है, अर्थात् उठती है, भौंर में पडा जी थाह नहीं पाता है। (पद्मावती कहती है, कि) हे सखि विष ला कर दे दे तो मर जाऊँ (जिस से) पेट में जी न रहे, (क्योंकि उसी जी के रहने के) डर से डरती हूँ, अर्थात् जब तक पेट में जी है तब तक यह डरा करता है और उसी के डर से मैं भी डरती हूँ॥

एक क्षण में जी उठता है, अर्थात् होश में आ जाता है दूसरे क्षण में (विरह सागर में) डूब जाता है, अर्थात् बेहोश हो जाता है। इस तरह से (हे सखि) हृदय-कमल में बहुत-ही कष्ट है। (हे सखि) (विरह) ग्रहण जी लेता है। (शीघ्र) हीरामणि (शुक) को बुलाओ॥ २५६॥

चउपाई।

पुरइनि धाइ सुनत खन धाईँ। हीरामनिहि बेगि लेइ आईँ॥
जनहुँ बइद ओखद लेइ आवा। रोगिआ रोग मरत जिउ पावा॥
सुनत असीस नइन धनि खोली। बिरह बइन कोइल जिमि बोली॥
कवँलहि बिरह बिथा जसि बाढी। केसरि बरन पिअरि हिअ गाढी॥
कित कवँलहि भा पेम अँकूरू। जउँ पइ गहन लीन्ह दिन सूरू॥
पुरइनि छाँह कवँल कइ करी। सकल बिभास आस तुम्ह हरी॥
पुरुख गँभीर न बोलहिँ काह्न। जउँ बोलहिँ तउ अउरु निबाह्न॥

दोहा।

एतना बोल कहत मुख पुनि होइ गई अचेत।
पुनि कइ चेत सँभारी उहइ बकत मुख लेत॥ २५७॥

पुरइनि = पर्णिनी = जल का पुष्प विशेष जिस के पत्र चारो ओर से जल को छिपाए रहते हैं। धाइ = धाई = धात्री = बचपन में दूध पिलाने-वाली। सुनत = सुनते ही। खन = क्षण। धाईँ = धावइ (धावति) का भूत-काल, स्त्रीलिङ्ग, बहु-वचन।

हीरामनिहि = हीरामणि को । बेगि = बेगेन = शीघ्र । लेइ = ले कर = आलाय । आईँ = आवइ (आयाति) का भूत-काल, स्त्रीलिङ्ग का बहु-वचन । जनहुँ = जानौं = जानें = जान पडता है । बइद = वैद्य = बैद । ओखद = औषध = दवा । आवा = आवइ (आयाति) का भूत-काल, पुंलिङ्ग, एक-वचन । रोगिआ = रोगी । रोग = बीमारी । मरत = मरन् = मरते । जिउ = जीव = प्राण । पावा = पावइ (प्राप्नोति) का भूत-काल, पुंलिङ्ग, एक-वचन । असीस = आशीस = आशीर्वाद । नइन = नयन = आँख । धनि = धन्या (पद्मावती) । खोली = खोलइ (खोलति) का भूत-काल, स्त्रीलिङ्ग, एक-वचन । बिरह = विरह = प्रियवियोग । बइन = वचन = बैन । कोइल = कोकिला = कोयल = पिक । जिमि = यथा = जैसे । बोली = बोलइ (वदति) का भूत-काल, स्त्रीलिङ्ग, एक-वचन । कवँलहि = कमल में (पद्मावती को) । बिथा = व्यथा = पीडा । जसि = जैसी = यथा । बाढी = बाढइ (वर्धते) का भूत-काल, स्त्रीलिङ्ग, एक-वचन । केसरि = केशर = एक प्रसिद्ध पुष्प की पखडी । बरन = वर्ण = रङ्ग । पिअरि = पीली = पीत । हिअ = हृदय । गाढी = गाढ का स्त्रीलिङ्ग = गहिरी । कित = कुतः = क्यौं । भा = बभूव = भया = हुआ । पेम = प्रेम । अँकूरू = अङ्कुर = अँखुआ । जउँ = यदि = जो । पइ = अपि = निश्चय । गहन = ग्रहण । लीन्ह = लिया = अलात् । सूरू = सूर्य । छाँह = छाया । कइ = की । करी = कली । सकल = सब । बिभास = विभास = प्रकाश = तेज = कान्ति । आस = आशा = उम्मीद । तुम्ह = तुम ने । हरी = हरइ (हरति) का भूत-काल, स्त्रीलिङ्ग, एक-वचन। पुरुख = पुरुष = मनुष्य । गँभीर = गभीर = गम्भीर । बोलहिँ = वदन्ति = बोलते हैँ । काहु = कस्यापि = किसी को वा क्वापि = कभीँ । तउ = तर्हि = तो । अउरु = अपि च = और । निबाहु = निवाह = निबाहहिँ (निर्वाहयन्ति) = निबाहते हैँ ॥

एतना = एतावती = इतनी । बोल = बोली = बात । कहत = कथयन्ती = कहते । मुख = मुँह । होइ गई = हो गई । अचेत = अचेतन = बेहोश । पुनि = पुनः = फिर । कइ = कर = से । चेत = चेतन = होश । सँभारी = सँभारइ (सम्भारयति) का भूत-काल, स्त्रीलिङ्ग का एक-वचन । उहइ = वही । बकत = बकते = कहते । लेत = लेते ॥

(हीरामणि को ले आओ इस बात के) सुनने-ही के क्षण में पुरइनि (ऐसी) धाई दौडीं और झट हीरामणि को ले आईँ । (हीरामणि का उस समय में ले आना ऐसा हुआ) जानौं वैद्य ने औषध को ले आया और जानौं रोग से मरते मरते रोगी ने प्राण पाया । (हीरामणि ने आते-ही आशीस दी) धन्या (पद्मावती) ने आशीस सुनते-ही

आँख खोली और कोयल ऐसी विरह वचन बोली। कमल में अर्थात् मेरे में जैसी जैसी विरह व्यथा बढने लगी (वैसा वैसा मेरी देह का) रंग केशर सा होता गया, (अब) हृदय में गाढी पिअराई (छा गई) है। यदि दिन ही में निश्चय कर ग्रहण ने सूर्य को ले लिया, अर्थात् यदि दिन में सूर्य को ग्रहण से अदृश्य होना था, तो क्यों कमल (मेरे) में प्रेम का अङ्कुर उत्पन्न हुआ। पुरइनि (धाइओं) की छाया में (सुख से) कमल-कली (मैं) थी, (उस की) तुम ने सब आशा और कान्ति को हर लिया, अर्थात् तुम ने उस सूर्य रत्न-सेन का नाम सुना कर, मेरे में प्रेमाङ्कुर पैदा किया फिर उस सूर्य रत्न-सेन को अदृश्य कर अब मेरी सब आशा और कान्ति नष्ट कर डाली। गम्भीर पुरुष (कभी) किसी से नहीं बोलते अर्थात् किसी को वचन नहीं देते, और यदि देते हैं, तो निर्वाह करते हैं अर्थात् वचन दे कर उस का पालन करते हैं, तुम ने वचन दिया है मुझ को उस सूर्य रत्न-सेन का दर्शन कराओ॥

इतनी बात मुख से कहते कहते (पद्मावती) फिर बेहोश हो गई, (कुछ देर में) उसी (बात) को बकते और उसी (रत्न-सेन के नाम) को मुख से लेते फिर अपने होश को सँभाली, अर्थात् फिर होश में आई॥ २५७॥

चउपाई।

अउरु दगध का कहउँ अपारा। सुनइ सो जरइ कठिन असि झारा॥
होइ हनिवंत बइठ हइ कोई। लंका डाहि लागु तनु सोई॥
लंका बुझी आगि जउँ लागी। यह न बुझइ तस उपज बजागी॥
जनहुँ अगिनि के उठहिँ पहारा। वेइ सब लागहिँ अंग अँगारा॥
कँपि कँपि माँसु सुराग पुरोआ। रकत कि आँसु माँसु सब रोआ॥
खन एक मारि माँसु अस भूँजा। खनहिँ जिआइ सिंघ अस गूँजा॥
यह रे दगध हुति उतिम मरीजिअ। दगध न सहिअ जीउ बरु दीजिअ॥

दोहा।

जहँ लगि चंदन मलइ-गिरि अउ साएर सब नीर।
सब मिलि आइ बुझावहिँ बुझइ न आगि सरीर॥ २५८॥

अउरु = अपर = और । दगध = दग्ध = दाह = जलन । का = किम् = क्या । कहउँ = कहूँ (कथयानि) । अपारा = अपार = बेहद्द । सुनइ = शृणोति = सुनता है । सो = सो = सः = वह । जरइ = ज्वलति = जलता है । कठिन = कठोर । असि = ऐसी = एतादृशी । झारा = झार = तेजी = तीव्रता = तिखाई = तीक्ष्णता । होइ = हो कर (भूत्वा) । हनिवंत = हनुमान् । बइठ = बैठा = उपविष्ट । हइ = है (अस्ति) । कोई = कोऽपि । लंका = लङ्का = रावण की राजधानी । डाहि = दग्ध्वा = दाह कर = जला कर । लागु = लाग = लगा है (लगति) । तनु = शरीर = देह । सोई = स एव = वही । बुझी = बुझइ (बुतते) का भूत-काल, स्त्रीलिङ्ग, एक-वचन । आगि = अग्नि । जउँ = यदि । लागी = लगइ (लगति) का भूत-काल, स्त्रीलिङ्ग, एक-वचन । बुझइ = (बुतते) = बुझती है । तस = तथा = तैसी । उपज = उपजी = उत्पन्न ऊई । बजागी = वज्राग्नि । जनङँ = जाने = जानों = जान पडता है । अगिनि = अग्नि = आग । उठहिं = उत्तिष्ठन्ते = उठते हैं । पहारा = पहाड = प्रहार । वेइ = वे । लागहिं = लगन्ति = लगते हैं । अंग = अङ्ग = देह । अँगारा = अङ्गार । कँपि = कम्पयित्वा = कँप कर । माँसु = मांस = माँस । सुराग = सुरुङ्गा = सुरङ्ग । पुरोआ = पुरोअइ (प्रवयति) का भूत-काल, पुंलिङ्ग, एक-वचन । रकत = रक्त = लोह्र । कि = की । आँसु = अश्रु = आँस । रोआ = रोअ = रोअहिं = रुदन्ति = रोती हैं । खन = चण । एक = एक । मारि = मारयित्वा = मार कर । अस = ऐसा = एतादृश । भूँजा = भूँजइ (भृज्जति) का भूत-काल, पुंलिङ्ग, एक-वचन । खनहिं = चण में । जिआइ = आजीव्य = जिला कर । सिंघ = सिंह, प्रसिद्ध जन्तु । गूँजा = गूँजइ (गर्जति) का भूत-काल, पुंलिङ्ग, एक-वचन । ऊति = से । उतिम = ऊतिम = उत्तम । मरीजिअ = मरजाना । सहिअ = सहना चाहिए (सह्येत) । जीउ = जीव = प्राण । बरु = वरम् = श्रेष्ठ = भला । दीजिअ = दीजिए (दीयेत) ॥

जहँ लगि = जहाँ तक । चंदन = चन्दन । मलइ-गिरि = मलय-गिरि = मलयाचल । अउ = और = अपि च । साएर = सागर = जलस्थान । नीर = जल = पानी । मिलि = मिलित्वा = मिल कर । आइ = एत्य = आ कर । बुझावहिं = बुझावैं । बुझइ = बुझती है । सरीर = शरीर = देह ॥

(पद्मावती फिर कहने लगी कि) और अपार दाह को क्या कहूँ (इस की) ऐसी कठिन तेजी है कि (इस के नाम को) जो सुनता है वही जलने लगता है । (जान पडता है कि) कोई हनुमान हो कर, (शरीर में) बैठा है और वह हनुमान लङ्का को जला कर

(अब मेरी) शरीर में लगा है, अर्थात् शरीर जलाने के लिये शरीर में पैठा है। यदि लङ्का में आग लगी तो (कुछ काल में) बुझ गई; (परन्तु) यह ऐसी वज्राग्नि उत्पन्न ऊई है कि बुझती ही नहीं। जान पडता है कि (शरीर के भीतर से) आग के पहाड उठते हैं और वे सब अङ्गो में अङ्गार से लगते हैं। (जान पडता है कि) काँप काँप कर, अर्थात् गल गल कर, माँस सुरङ्ग में चली जाती हैं, (उस दुःख से) सब माँस रक्ताश्रु के बहाने रो रही हैं। ऐसा (जान पडता है कि कोई) एक क्षण में मार कर माँस को भूँजता है, फिर दूसरे क्षण में जिला कर (भय दिखाने के लिये) सिंह के ऐसा गर्जता है। अरे (हीरामणि) इस दाह से अच्छा तो मर जाना है, जीव दे देना अच्छा पर इस दाह का सहना नहीँ अच्छा ॥

(संसार में) जहाँ तक मलयाचल चन्दन हैं और सब जलस्थल में जितने पानी हैं, सब एकट्ठाँ हो (मेरे पास आ कर यदि बुझावें तो भी शरीर की आग नहीं बुझती) ऐसा मुझे जान पडता है। यहाँ पर यह कवि की अतिशयोक्ति है ॥ २५८ ॥

चउपाई।

हीरामनि जो देखी नारी। प्रीति बेलि उपनी हिअ बारी ॥
कहेसि कस न तुम्ह होहु दुहेली। अरुझी पेम प्रीति कइ बेली ॥
प्रीति-बेलि जनि अरुझइ कोई। अरुझा मुअइ न छूटइ सोई ॥
प्रीति-बेलि अइसइ तनु डाढा। पलुहत सुख बाढत दुख बाढा ॥
प्रीति-बेलि कइ अमर सो बोई। दिन दिन बढइ खीन नहिँ होई ॥
प्रीति-बेलि सँग बिरह अपारा। सरग पतार जरइ तेहि झारा ॥
प्रीति अकेलि बेलि चढि छावा। दोसर बेलि न सरिवरि पावा ॥

दोहा।

प्रीति-बेलि उरझाइ जब तब सो छाँह सुख साख।
मिलइ पिरीतम आइ कइ दाख बेलि रस चाख ॥ २५९ ॥

हीरामनि = हीरामणि (शुक)। देखी = देखइ (पश्यति) का भूत-काल, स्त्रीलिङ्ग, एक-वचन। नारी = स्त्री, वा नाडी हाथ की। प्रीति = स्नेह। बेलि = वल्ली = लता।

उपनी = उपनइ (उत्पद्यते) का भूत-काल, स्त्रीलिङ्ग, एक-वचन। हिश्र = हृदय। बारी = वालिका (पद्मावती) वा वाटिका = बाग। कहँसि = कहा = अकथयत्। कस = कथम् = क्यों। होऊ = हो (भवत)। दुहेली = दुर्हेली = दुःखिता। अरुझी = अरुझइ (अवरुध्यते) का भूत-काल, स्त्रीलिङ्ग, एक-वचन। पेम = प्रेम। कइ = की। बेली = वल्ली। जनि = न = मत। अरुझइ = अरुझे (अवरुध्येत)। कोई = कोऽपि। अरुझा = अरुझा ऊआ = अवरुद्ध। मुअइ = मरता है = मरति। छूटइ = छूटता है (छन्द्यते)। सोई = स हि = वह। अइसइ = ऐसे ही = एतादृश। तनु = शरीर। डाढा = डाढ = दाहइ (दहति) = जलाती है। पलुहत = पल्लवित = लगने में। बाढत = वढते = वर्धयन्। दुख = दुःख। बाढा = बाढइ (वर्धते) का भूत-काल, पुंलिङ्ग का एक-वचन। कइ = के यहाँ को। अमर = जो मरे नहीं। सो = सो = वह (परमात्मा, भगवान्)। बोई = बोअइ (वपति) का भूत-काल. स्त्रीलिङ्ग, एक-वचन। बढइ = वर्धते = बढती है। खीन = क्षीण = नाश। होई = भवति = होती है। सँग = सङ्ग = साथ। बिरह = विरह = प्रियवियोग। अपारा = अपार = बेहद। सरग = स्वर्ग। पतार = पाताल। जरइ = ज्वलति = जलता है। तेहि = तिस के = उस के। झारा = झार = तेजी = तीव्रप्रभाव। अकेलि = अकेली = एकला। चढि = चढ कर (उच्चल्य)। छावा = छाव = छावइ (छादयति) = छावती है। दोसर = दूसरी = द्वितीया। सरिबरि = बराबरी = सादृश्य = साम्य। पावा = पाव = पावइ (प्राप्नोति) = पाती है॥

उरझाइ = उरझइ (अवरुद्ध्यते) = अरुझती है। जब = यदा। तब = तदा। छाँह = छाया। साख = शाखा। मिलइ = मिले (मिलेत्)। पिरीतम = प्रियतम = सब से प्यारा। आइ कइ = एत्य = आ कर। दाख = द्राक्षा = अङ्गूर। चाख = चखे (चषेत्) = स्वखे॥

हीरामणि ने जो नाडी वा नारी (पद्मावती) देखी तो (समझ लिया कि इस के) हृदय-वाटिका में प्रीति की बेलि उत्पन्न ऊई, वा इस वालिका के हृदय में प्रीति-बेलि उत्पन्न ऊई। (देख कर शुक ने) कहा कि (तुमारे हृदय में) प्रीति-बेलि अरुझ गई फिर तुम क्यों न दुखिआ हो। (ईश्वर करे) कोई प्रीति-बेलि में न अरुझे, (क्योंकि) अरुझने-वाले के मरने पर भी वह प्रीति-बेलि नहीं छूटती, अर्थात् मरने पर भी प्रीति-बेलि से छुटकारा नहीं होता। (जैसी तुमारी शरीर जल रही है) उसी तरह प्रीति-बेलि शरीर को जलाती है, प्रीति-बेलि के उत्पन्न होने में तो सुख जान पडता है (परन्तु यह ज्यों ज्यों) बढती जाती है (त्यों त्यों) उसी के साथ दुःख बढता जाता है।

परमात्मा ने प्रीति-बेलि को अमर कर के बोया है। यदि बोई के स्थान में पोई पाठ हो तो पोई=पोअइ (पचति) का भूत-काल, स्त्रीलिङ्ग का एक-वचन समझना और तब 'प्रीति-बेलि को अमर कर के पोया है अर्थात् बनाया है' ऐसा अर्थ करना। (यह) दिन दिन बढती है चीण नहीँ होती। प्रीति-बेलि के साथ साथ अपार विरह भी रहता है जिस के झार (कटुता) से स्वर्ग और पाताल (दोनोँ) जलते हैँ। प्रीति-बेलि अकेली चढ कर (स्वर्ग और पाताल को) छा लेती है, दूसरी बेलि इस की समता को नहीँ पाती है॥

जब प्रीति-बेलि (हृदय मेँ) अरुझ जाती है, तब सुख-रूप शाखा उस की छाया मेँ पड जाती है, अर्थात् प्रीति-बेलि के छा लेने से सुख-शाखा उस की छाया मेँ पड कर दब जाती है, (जब) प्रियतम आ कर मिले (तब) द्राचा-बेलि के रस को चक्खे, अर्थात् द्राचा-रस सदृश प्रियतम मिले तब प्रीति-बेलि-रस से दुःखित प्राणी सुख पावे नहीँ तो जन्म भर प्रीति-बेलि मेँ अरुझा तडप तडप कर कराहता रहे॥ २५९॥

चउपाई।

पदुमावति उठि टेकइ पाया। तुम्ह हुति हो प्रीतम कइ छाया॥
कहत लाज अउ रहइ न जीऊ। एक दिसि आगि दोसरि दिसि सीऊ॥
तुम्ह सो मोर खेवक गुरु देऊ। उतरउँ पार तेही बिधि खेऊ॥
सूर उदइ-गिरि चढत भुलाना। गहने गहा कवँल कुम्हिलाना॥
ओहट होइ मरउँ तेहि झूरी। यह सुठि मरन जो निअरहि दूरी॥
घट मँह निकट बिकट भा मेरू। मिलेहु न मिलइ परा तस फेरू॥
दामवती नल हंस मिलावा। तब हीरामनि नाउँ कहावा॥

दोहा।

सूरि सजीवनि दूरि इमि सालो सकती बानु।
प्रान मुकुत अब होत हइ बेगि देखावहु आनु॥ २६०॥

पदुमावति=पद्मावती। उठि=उत्थाय=उठ कर। टेकइ=टेकती है (टीकयति)। पाया=पाय=पैर=पाद। तुम्ह हुति=तुम से। हो=अहो। प्रीतम=प्रियतम।

कद्द = की। छाया = छाहँ। कहत = कहते (कथयन्)। लाज = लज्जा। अउ = अपि = और। रहद्द = रहति = रहता है। एक = एक। दिसि = दिशि = दिशा में। आगि = अग्नि। दोसरि = दूसरी = द्वितीया। सीऊ = सीत = शीत = पानी। सो = सो = सः = वह। मोर = मेरा = मम। खेवक = खेवने-वाले। गुरुदेऊ = गुरुदेव। उतरउँ = उत्तरामि = उतरूँ। तेही = तेही = तिस। विधि = विधि = प्रकार। खेऊ = खेवद्द (खेवते) का विध्यर्थ में मध्यम-पुरुष, पुंलिङ्ग का एक-वचन। सूर = सूर्य। उदद्द-गिरि = उदय-गिरि = उदयाचल। चढत = चढते = उच्चलन्। भुलाना = भुलद्द (भ्रमति) का भूत-काल, एक-वचन। गहने = ग्रहणे = ग्रहण में। गहा = ग्रस्त हुआ (जगहे)। कवँल = कमल। कुम्हिलाना = कुम्हिलाद्द का भूत-काल, पुंलिङ्ग का एक-वचन = कुम्लान हुआ = बुरी तरह से मलिन हुआ। ओहट = अरहट्ट = रहँट = पुरवट। होद्द = हो कर = भूला। मरउँ = मरती हूँ (मरामि)। झूरी = झूर हो कर = सूख कर = झरिला = झर कर। सुठि = सुष्ठु = अच्छा। मरन = मरण = मरना। निअरहि = निकटे हि = निकट में। दूरी = दूर। घट = शरीर। मँह = मध्ये = में। निकट = नगीच। बिकट = विकट = कठिन। भा = भया = बभूव = हुआ। मेरू = मेरु = मेरुदण्ड। मिलेऊ = मिलने पर। मिलद्द = मिलति = मिलता है। परा = पडा = परद्द (पतति) का भूत-काल, पुंलिङ्ग, एक-वचन। तस = तथा = तैसा। फेरू = फेर = फेरा। दामवती = दमयन्ती। नल = राजा नल। हंस = प्रसिद्ध मानस सर का पची। मिलावा = मिलावद्द (मेलयति) का भूत-काल, पुंलिङ्ग, एक-वचन। तब = तदा = तो। हीरामनि = हीरामणि (शुक)। नाउँ = नाम। कहावा = कहावद्द (कथ्यते) का भूत-काल, पुंलिङ्ग, एक-वचन ॥

मूरि = मूली। सजीवनि = सञ्जीवनी = जिलाने-वाली। दूरि = दूर। दमि = दस तरह से = दस प्रकार से। साली = सालद्द (शल्यति) का भूत-काल, स्त्रीलिङ्ग, एक-वचन। सकती = शक्ति। बानु = बान = वाण। प्रान = प्राण = जीव। मुकुत = मुक्त = छूटता। अब = इदानीम् = अधुना। होत हद्द = होता है। बेगि = वेगेन = शीघ्र। देखावऊ = देखाओ (दर्शयत)। आनु = आनय = आनो = ले आओ ॥

पद्मावती उठ कर (हीरामणि के) पैर को टेकने लगी, अर्थात् उस के पैर पर अपना शिर रख दिया (और कहने लगी कि) अहो (शुक) तुम्ही से प्रियतम की छाया है, अर्थात् तुम्हारे ही उद्योग से अपने प्रियतम की परछाहीँ देख सकती हूँ। कहने में लज्जा आती है और (कहे विना) जी रहता नहीँ, एक तरफ आग और

दूसरी तरफ पानी है (क्या करूँ किधर जाऊँ)। तुम मेरे गुरुदेव सेवक हो, इस रीति से खेओ जिस में (इस विरहसागर के) पार उतर जाऊँ। (तुम ने सुना होगा कि) सूर्य (रत्न-सेन) उदयाचल (गढ) पर चढते भूल गया, (अब) ग्रहण में पकड गया (इसी से) कमल (मैं) कुम्हिला गया, इसी कारण मैं रहँट हो कर भी सूख कर मर रही हूँ, अर्थात् दिन रात आँसू के जल से नहा रही हूँ तौ भी सूख कर मरती हूँ, जैसे ज़ल के भीतर रह कर भी सूर्य के विना कमल मुरझा जाता है। यह अच्छा मरना है (जो प्रियतम के) नगीच में रह कर भी दूर पर हूँ, अर्थात् अलग हूँ। घट (शरीर) में नगीच ही मेरुदण्ड रहने पर भी (उस का मिलना) कठिन हो गया। (गुद-मूल से शिर तक शरीर में पीठ की ओर जो एक हड्डी चली गई है उसी में लगा हुआ भीतरी ओर मेरुदण्ड है इसी में छ कमल हैं। यदि योगाभ्यास से मेरुदण्ड को ठीक ठीक पहचान कर प्राण उन कमलों में चढ जाय तो फिर सिद्ध हो कर अमर हो जाना सहज है।) ऐसा फेर पड गया है कि मिलने पर भी (वह मेरुदण्ड, अर्थात् रत्न-सेन) नहीं मिलता है।) जैसे हंस ने दमयन्ती और नल को मिला दिया (ऐसे ही तुम मुझे राजा रत्न-सेन से मिला दो) तब तो हीरामणि तुमारा नाम कहने योग्य (नहीं तो काच से भी अधम तुमारा नाम समझूँगी)। विदर्भ देश के राजा भीम-सेन की कन्या दमयन्ती थी और निषध देश का राजा नल था। नल ने अपने बाग के तडाग में एक विचित्र हंस को देख कर पकड लिया। उस के रोने पर करुणा में आ कर छोड दिया। छुटने पर हंस ने प्रसन्न हो कर कहा कि राजा आप ने दया कर जो मुझे छोड दिया इस के प्रत्युपकार में मैं जगत्-सुन्दरी दमयन्ती से आप का विवाह करा दूँगा। फिर हंस ने दमयन्ती के यहाँ जा कर नल की प्रशंसा कर बडे उद्योग से दोनों को मिलाया। इस की कथा भारत और श्रीहर्षरचित नैषध काव्य में विस्तार से लिखी है। जिस समय नल से बिदा हो कर हंस दमयन्ती के यहाँ चलने लगा है, उस समय नल के आशीर्वाद की कविता श्रीहर्ष ने नैषध में ऐसी की है—

तव वर्त्मनि वर्त्ततां शिवं पुनरस्तु त्वरितं समागमः।
अयि साधय साधयेप्सितं स्मरणीयाः समये वयं वयः॥

(पद्मावती विलपती है कि) सञ्जीवनी मूली (राजा रत्न-सेन) दूर है (और यहाँ पर मुझे) इस तरह से शक्ति-वाण, अर्थात् शक्ति-साल रही है, (अरे हीरामणि)

अब प्राण छूटने चाहता है, शीघ्र (रत्न-सेन को) देखाओ (शीघ्र उसे) ले आओ। रावण के बेटे मेघनाद की ब्रह्म-दत्त शक्ति (साँगी) प्रसिद्ध है जिस के आघात से लक्ष्मण अचेत हो गए थे। उन के जिलाने के लिये हनुमान द्रोणाचल को उठा लाए थे जिस पर कि सञ्जीविनी जडी थी। रामायण में यह कथा प्रसिद्ध है ॥ २६० ॥

चउपाई ।

हीरामनि भुइँ धरा लिलाटू। तुम्ह रानी जुग जुग सुख पाटू ॥
जेहि के हाथ जरी अउ मूरी। सो जोगी नाहीँ अब दूरी ॥
पिता तुम्हार राज कर भोगी। पूजइ बिपर मरावइ जोगी ॥
पवँरि पंथ कोतवार बईठा। पेम क लुबुध सुरंग पईठा ॥
चढत रइनि गढ होइ गा भोरू। आवत बार धरा कइ चोरू ॥
अब लेइ देन गए ओहि सूरी। तेहि सोँ अगाह बिथा तुम्ह पूरी ॥
अब तुम्ह जीउ कया वह जोगी। कया क रोग जान पइ रोगी ॥

दोहा ।

रूप तुम्हार जीउ लेइ आपन पिंड कमावा फेरि ।
आपु हेराइ रहा तेहि खंडहि काल न पावइ हेरि ॥ २६१ ॥

हीरामनि = हीरामणि (शुक)। भुइँ = भुवि = पृथ्वी में = जमीन में। धरा = धरइ (धरति) का भूत-काल, पुंलिङ्ग का एक-वचन। लिलाटू = ललाट = मस्तक। तुम्ह = आप = आत्मा। रानी = राज्ञी। जुग = युग। पाटू = पाट = पट्ट = सिंहासन। जेहि = जिस। हाथ = हस्त। जरी = जडी। अउ = और। मूरी = मूली। सो = सः = वह। जोगी = योगी। नाहीँ = नहीँ = न हि। अब = अधुना = इदानीम्। दूरी = दूर। पिता = बाप। तुम्हार = तुम्हारा = आप का। राज = राज्य। कर = का। भोगी = भोग करने-वाला। पूजइ = पूजयति = पूजता है। बिपर = विप्र = ब्राह्मण। मरावइ = मारयति = मरवाता है। पवँरि = पवँरी = पौरी = पुरद्वार। पंथ = पन्थाः = राह। कोतवार = कोतवाल = कोटपाल। बईठा = बइठा = बैठा = बइठइ वा बैठइ (विशति) का भूत-काल, पुंलिङ्ग, एक-वचन। पेम = प्रेम। क = का। लुबुध = लुब्ध = लोभी। सुरंग = सुरङ्गा। पईठा = पइठा = पैठा = पइठइ वा पैठइ (प्रविशति) का भूत-काल, पुंलिङ्ग, एक-वचन।

चढत = चढते (उच्चलन्)। रइनि = रजनी = रात। गढ = गाढ = दुर्ग = किला। होइ गा = हो गया। भोरू = भोर = सबेरा। आवत = आते = आयन्। बार = द्वार = दरवाजा। धरा = धरइ (धरति) का भूत-काल, पुंलिङ्ग, एक-वचन। कइ = कर = कृत्वा। चोरू = चोर। अब = इदानीम् = अधुना। लेइ = ले कर = आलाय। देन = देने। गए = जाइ (याति) का भूत-काल, पुंलिङ्ग, बहु-वचन। ओहि = उसे। सूरी = शूली = फाँसी। तेहि सौं = तिसी से = उसी से। अगाह = अगाध = बेहद्द। बिथा = व्यथा = पीडा। तुम्ह = तुम्हें। पूरी = पूरइ (पूर्यते) का भूत-काल, स्त्रीलिङ्ग, एक-वचन। जीउ = जीव = प्राण। कया = काय = शरीर। रोग = मर्ज। जान = जानइ (जानाति) = जानता है। पइ = अपि = निश्चयेन। रोगी = रोगिआ = जिसे रोग हुआ हो॥

रूप = सूरत। आपन = अपना वा अपनी। पिंड = पिण्ड = देह। कमावा = कमाया = कमाइ का भूत-काल, पुंलिङ्ग, एक-वचन। फेरि = फिर = पुनः। आपु = आप = स्वयम्। हेराइ = हेराइ = हरित। रहा = रहइ (रहति) का भूत-काल, पुंलिङ्ग, एक-वचन। खंडहि = खण्ड में। काल = प्राण लेने-वाला यमदूत। पावइ = प्राप्नोति = पाता है। हेरि = हिण्डिला = हेर कर = ढूँढ कर॥

हीरामणि ने जमीन पर (अपने) मस्तक को रक्खा (और आशीर्वाद दिया कि) हे रानी तुम्हें युग युग सुख और सिंहासन है। जिस के हाथ में (जिलाने-वाली) जडी और मूली है, वह (राजा रत्न-सेन) योगी अब दूर नहीं है। तुम्हारा पिता (केवल) राज्य का भोगी है, ब्राह्मण को तो पूजता है (पर) योगी को मरवाता है। पुरद्वार की राह पर कोतवाल बैठा था, (वहाँ) प्रेम का लोभी (रत्न-सेन योगी) सुरंग लगा कर पैठा। रात में गढ पर चढते चढते भोर हो गया, (ऊपर) दरवाजे पर आते आते (कोतवाल के सिपाहिओं ने) चोर समझ कर पकड लिया। अब (लोग) उसे (रत्न-सेन को) पकड कर फाँसी देने गए हैं, इसी से तुम्ह भी अगाध पीडा से भर गई। अब तुम्ह जीव और वह योगी शरीर है, अर्थात् योगी का प्राण तुम हो और उस की खाली वेप्राण की शरीर वहाँ पर पडी है, निश्चय समझो कि रोगिआ ही शरीर के रोग को जानता है, अर्थात् तुम्ह दुखिआ हो तुम्ही समझती हो कि उस वेचारे दुखिआ पर क्या बीतता होगा॥

तुम्हारा रूप और अपना प्राण ले कर (रत्न-सेन ने) फिर से (योगाभ्यास के बल से) अपनी शरीर को बनाया है, अर्थात् अपनी देह को नई कर डाला है

जिसे कि योगी लोग काय-कल्प कहते हैं। (इसी से) उस खण्ड में, अर्थात् नए देह के अवयव में आप हेराय गया है (दूसरी देह हो जाने से) ढूँढने से भी (उसे) काल नहीं पाता है (इसी लिये अभीं तक जीता है)॥ २६१॥

चउपाई।

हीरामनि जो बात यह कही। सुरुज के गहन चाँद पुनि गही॥
सुरुज के दुख जो ससि भइ दुखी। सो कित दुख मानइ करमुखी॥
अब जउँ जोगि मरइ मोहिँ नेहा। मोहिँ ओहि साथ धरति गगनेहा॥
रहइ तो करउँ जरम भरि सेवा। चलइ तो यह जिउ साथ परेवा॥
कउनु सो करनी कहु गुरु सोई। पर-काया परबेस जो होई॥
पलटि सो पंथ कउनु बिधि खेला। चेला गुरू गुरू होइ चेला॥
कउनु खंड अस रहा लुकाई। आवइ काल हेरि फिरि जाई॥

दोहा।

चेला सिद्धि सो पावई गुरु सउँ करइ उछेद।
गुरू करइ जउँ किरिपा कहइ सो चेलहि भेद॥ २६२॥

हीरामनि = हीरामणि (शुक)। जो = जो। बात = वार्त्ता। यह = अयम्, वा इयम्, वा इदम्। कह = कहइ (कथयति) का भूत-काल, स्त्रीलिङ्ग, एक-वचन। सुरुज = सूर्य। के = के। गहन = ग्रहण। चाँद = चन्द्र। पुनि = पुनः = फिर। गही = गहइ (गृह्यते) का भूत-काल, स्त्रीलिङ्ग, एक-वचन। दुख = दुःख। ससि = शशि = चन्द्र। दुखी = दुःखित। सो = सा = वह। कित = कुतः = कस्मात् = क्यों। मानइ = मन्येत = माने। करमुखी = कृष्णमुखी = जिस का काला मुँह हो। अब = इदानीम् = अधुना। जउँ = यदि = जो। जोगि = जोगी = योगी। मरइ = मरेत् = मरे। मोहिँ = मोहिँ = मेरे। नेहा = नेह = स्नेह। ओहि = ओहि = उस का। साथ = सार्थ = संग। धरति = धरती = धरित्री = पृथ्वी। गगनेहा = गगन में = आकाश में। रहइ = रहे (रहेत्)। तो = तो = तर्हि। करउँ = कुर्याम् = करूँ। जरम = जन्म। भरि = भर = पूरा। सेवा = खिदमत = टहल। चलइ = चले (चलेत्)। जिउ = जीव = प्राण। परेवा = पारावत = पक्षी। कउनु = कौन = को नु। करनी = करणी = कर्त्तव्यता।

कहु = कहृ = कथय। सोई = साऽपि = वह, यहाँ उसे। पर-काया = परकाय = दूसरे की शरीर। परबेस = प्रवेश = जाना। होई = होय (भवेत्)। पलटि = परिवर्त्त्य = उलट कर। पंथ = पन्थाः = राह। बिधि = विधि = रीति = प्रकार। खेला = खेल = क्रीडा। चेला = शिष्य। गुरू = गुरु। होइ = होइ = हो = भवेत्। खंड = खण्ड = भूमि-खण्ड। अस = ऐसा = एतादृश। रहा = रहइ (रहति वा तिष्ठति) का भूत काल, पुंलिङ्ग, एक-वचन। लुकाई = लुका कर = लुक्कायित हो कर = छिप कर। आवइ = आयाति = आता है। काल = प्राण लेने-वाला यम-दूत। हेरि = हिण्डिला = हेर कर = ढूँढ कर। फिरि जाई = फिर जाता है = प्रयाति = लौट जाता है॥

सिद्धि = अणिमादि अष्ट सिद्धि, जिन से जो चाहे सो कर ले। पावई = पावइ = प्राप्नोति = पाता है। सउँ = सोँ = से। करइ = करे = कुर्यात्। उछेद = उच्छेद = नाश = सर्वनाश। जउँ = यदि = जो। किरिपा = कृपा = दया। कहइ = कथयति = कहता है। चेलहि = चेला को। भेद = मर्म बात = हाल॥

हीरामणि ने जो यह पिछले दोहे में बात कही (कि सूर्य का ग्रहण हो गया, अर्थात् रत्न-सेन पकड गया, तो) सूर्य के ग्रहण होने से, अर्थात् रत्न-सेन के पकड जाने का वृत्तान्त सुनने से, फिर चन्द्र (पद्मावती) भी ग्रस्त हो गई। सूर्य के दुःख से चन्द्रमा में जो दुःख हुआ, उस दुःख को कर-मुखी (सूर्य) क्योँ माने, अर्थात् ग्रस्त सूर्य (रत्न-सेन) को क्या मालूम कि मेरे दुःख से चाँद (पद्मावती) के ऊपर कैसा वज्रपात के ऐसा दुःख पडा है। (पद्मावती कहने लगी, कि) यदि मेरे स्नेह से योगी (रत्न-सेन) मर जाय तो मेरा और उस का साथ यहाँ पृथ्वी और आकाश दोनों स्थानों में रहेगा। यदि पृथ्वी पर वह योगी (रत्न-सेन) रहे तो जन्म भर (उस की) सेवा करूँ (यदि परलोक में) चले तो यह मेरा प्राण पखेरू भी (उस के) साथ चलेगा। वह कौन सी क्रिया है जिस से परकाय में (प्राण का) प्रवेश हो, उस क्रिया को हे गुरु (शुक) कहु, अर्थात् बताव। किस तरह से खेल अर्थात् काम किया जाय और वह कौन पथ है जिस से पलट कर चेला गुरु और गुरु चेला हो जाय। ऐसे कौन भूमि-खण्ड में (वह रत्न-सेन) लुका रहा है, जहाँ कि काल आता है और ढूँढ कर (लाचार हो कर न पाने से) लौट जाता है॥

वही चेला सिद्धि को पाता है जो कि गुरु से सर्वनाश करता है अर्थात् गुरु के उपदेश से सब विघ्नों का नाश करता है। गुरु यदि कृपा करे तो चेला से सब

भेद कह दे। अर्थात् चेला उस सिद्धि को तभी पा सकता है जब निष्कपट हो सर्वनाश कर गुरु की शरण में आवे और गुरु उसे शुद्ध समझ कर कृपा कर उस सिद्धि मिलने के उपाय को ठीक ठीक बता दे ॥ २६२ ॥

चउपाई ।

अनु रानी तुम्ह गुरु वह चेला। मोहिँ पूँछेहु कइ सिद्ध नवेला ॥
तुम्ह चेला कहँ परसन भई। दरसन देइ मँडफ चलि गईँ ॥
रूप तुम्हार सो चेलइ डीठा। चित समाइ होइ चितर पईठा ॥
जीउ काढि तुम्ह लेइ उपसई। वह भा कया जीउ तुम्ह भई ॥
कया जो लागु धूप अउ सीऊ। कया न जानु जानु पइ जीऊ ॥
भोग तुम्हार मिला वह जाई। ओहि कइ बिथा सो तुम्ह कहँ आई ॥
तुम्ह ओहि घट वह तुम्ह घट माँहा। काल कहाँ पावइ ओहि छाँहा ॥

दोहा।

अस वह जोगि अमर भा पर-काया परवेसु।
आवइ काल तुम्हहिँ तिन्ह (देखे) फिरि कइ करइ अदेसु ॥ २६३ ॥

अनु = आन = शपथ = कसम = अणक। रानी = राज्ञी। तुम्ह = आप। गुरु = उस्ताद। वह = सः। चेला = शिष्य। मोहिँ = मुझ से। पूँछेऊ = पूँछइ (पृच्छति) का भूत-काल, स्त्रीलिङ्ग, बहु-वचन। कइ = कर = कृत्वा। सिद्ध = सिद्ध पुरुष, जो चाहे सो कर डाले। नवेला = नवल = नया। कहँ = को, यहाँ से। परसन = प्रसन्न = खुश। भई = हुईं (बभूविथ)। दरसन = दर्शन। देइ = दत्त्वा = दे कर। मँडफ = मण्डप। चलि गईँ = चली गईं। रूप = सूरत। तुम्हार = आप का। सो = वह = सः। चेलइ = चेला ने। डीठा = देखा = दृष्टिगोचर किया = ददृशे। चित = चित्त। समाइ = समेत्य = समाय कर। होइ = हो कर = भूत्वा। चितर = चित्र = तसवीर। पईठा = पइठा = पैठा = पइठइ (प्रविशति) का भूत-काल, पुंलिङ्ग, एक-वचन। जीउ = जीव = प्राण। काढि = कर्षयित्वा = खींच कर। लेइ = ले कर (आलाय)। उपसई = उपसर्प = उपससार = चली गईं = हट गईं। भा = बभूव = हुआ। कया = काय = शरीर। भई = होइ (भवति) का भूत-काल, स्त्रीलिङ्ग, एक-वचन। लागु = लाग = लागइ (लगति) = लगता है।

धूप = घाम। अउ = अपि च = और। सीउ = शीत = ठंठक। जानु = जान = जानइ (जानाति) जानता है। पइ = अपि = निश्चय। भोग = सुखसामग्री। मिला = मिलइ (मिलति) का भूत-काल, पुंलिङ्ग का एक-वचन। वह = उस में। जाई = जा कर (चाला)। ओहि कइ = उस की। बिथा = व्यथा = पीडा। तुम्ह कहँ = तुम को। आई = आवइ (आयाति) का भूत-काल, स्त्रीलिङ्ग, एक-वचन। ओहि = उस के। घट = शरीर। माँहा = माँह = मध्य = में। काल = प्राण निकालने-वाला यम-दूत। कहाँ = कुच। पावइ = पावे (प्राप्नुयात्)। छाँहा = छाँह = छाया = परछाहीँ॥

अस = ऐसा = एतादृश। जोगि = योगी = जोगी। अमर = जो मरे न। परकाया = परकाय = दूसरे की शरीर। परबेसु = प्रवेश। आवइ = आयाति = आता है। तुम्हहिं = तुम्हेँ। तिन्ह = तिन्हेँ। फिरि कइ = फिर कर = लौट कर। करइ = करोति = करता है। अँदेसु = अंदेश = अँदेशा = चिन्ता॥

(हीरामणि ने कहा कि) रानी तुम्हारा शपथ है, तुम्ह गुरु और वह (रत्न-सेन) तुम्हारा चेला है। आन शपथ के अर्थ में तुलसी-दास ने भी अयोध्याकाण्ड में लिखा है— 'सपथ तुम्हार भरत कइ आना। हेतु न दूसर मैँ कछु जाना'। (उसे) नया सिद्ध कर (अब) मुझ से पूछी हो। आप (उस) चेले के ऊपर प्रसन्न हुईँ, (महादेव के) मण्डप में (उसे) दर्शन दे कर चली गईँ। उस चेले (रत्न-सेन) ने तुम्हारे रूप को देखा, (देखते ही वह रूप) चित्त में समाय कर तसवीर हो कर (भीतर) पैठ गया। आप (उस का) जीव निकाल कर (उस मण्डप से) हट गईँ, (अब) वह (रत्न-सेन) तो शरीर हुआ और आप (उस शरीर का जीव) हुईँ। शरीर में जो धूप और शीत लगते हैं उन्हें शरीर नहीँ जानती निश्चय कर जीव जानता है, अर्थात् प्राण ही धूप और शीत का अनुभव करता है जड शरीर को धूप-शीत का कुछ भी ज्ञान नहीँ। तुम्हारा भोग-विलास जा कर उसे मिला और उस की वह पीडा तुम्हारे यहाँ चली आई। तुम्ह उस की शरीर में और वह तुम्हारी शरीर में है, अर्थात् परकायप्रवेशविद्या से तुम्ह उस की देह में और वह तुम्हारी देह में प्रवेश कर गया है, (इस लिये) काल उस की परछाहीँ भी कहाँ पावे, अर्थात् वह रत्न-सेन योगी परकायप्रवेशविद्या से तुम्हारे (परब्रह्म-स्वरूप रूप) में लीन हो गया, इस लिये अब काल उस के प्रतिबिम्ब को भी नहीँ पा सकता। वह अजर अमर ब्रह्मगुफा में पैठ कर ब्रह्म-रूप हो गया, वहाँ पर काल की गति ही नहीँ फिर वह बेचारा कैसे उस की छाया को पा सकता है॥

इस तरह से वह योगी परकायप्रवेशविद्या से अमर हो गया। काल (प्राण लेने के लिये) तुम्हारे और उन के (रत्न-सेन के) पास आता है (पर आप लोगोँ का यथार्थ रूप न पा कर) लौट कर चिन्ता करता है, अर्थात् झंखता है कि यम-राज की आज्ञा से प्राण लेने के लिये आया पर यहाँ रूप मिलता ही नहीं, अब क्या करूँ, और कहाँ ढूँढूँ ॥ २६३ ॥

चउपाई ।

सुनि जोगी कइ अम्मर करनी । नेउरी बिरह-बिथा कइ मरनी ॥
कवँल-करी होइ बिगसा जीऊ । जनु रबि देखि छूटि गा सीऊ ॥
जो अस सिद्ध को मारइ पारा । नीँऊ रस तइँ जो होय छारा ॥
कहउ जाइ अब मोर सँदेसू । तजहु जोग अब होहु नरेसू ॥
जनि जानहु हउँ तुम्ह सउँ दूरी । नइनहिँ माँझ गडी वह सूरी ॥
तुम्ह परसेत घटइ घट केरा । मोहिँ जिउ घटत न लागइ बेरा ॥
तुम्ह कहँ राज-पाट मइँ साजा । अब तुम्ह मोर दुअउ जग राजा ॥

दोहा ।

जउँ रे जिअहिँ मिलि कोलि करहिँ मरहिँ तो एकइ दोउ ।
तुम्ह पिअ जिउ जनि होउ किछु मोहिँ जिउ होउ सो होउ ॥ २६४ ॥

इति मंची-खंड ॥ २४ ॥

सुनि = श्रुत्वा = सुन कर। जोगी = योगी। कइ = की। अम्मर = अमर। करनी = करणी = कर्म। नेउरी = नेउरइ (निवरति) का भूत-काल, स्त्रीलिङ्ग, एक-वचन। बिरह-बिथा = विरह-व्यथा = विरह की पीडा। मरनी = मरण = मृत्यु। कवँल-करी = कमल-कली = कमल की कली। होइ = हो कर = भूत्वा। बिगसा = विगसइ (विकाशते) का भूत-काल, पुंलिङ्ग, एक-वचन। जीऊ = जीव = प्राण। जनु = जाने = जानता हूँ = जानोँ। रबि = रवि = सूर्य। देखि = दृष्ट्वा = देख कर। छूटि गा = छूट गया। सीऊ = शीत = ठंढक। अस = ऐसा = एतादृश। सिद्ध = सिद्ध-पुरुष, जो चाहे सो कर डाले। को = को = कौन। मारइ = मारे (मारयेत्)। पारा = पारद = तुङ्गबीज।

नीँऊ = निंबू = निबुआ । तइँ = तेँ = से । होय = होय = होता है (भवति)। छारा = क्षार = चार = राख = भस्म। कहउ = कहो (कथयत)। जाइ = गला = याला = जा कर। अब = इदानीम् = अधुना । मोर = मेरा = मम । सँदेसू = सन्देश = सँदेसा । तजऊ = तज देओ = छोड देओ (त्यजय)। जोग = योग । होऊ = होओ (भवथ)। नरेसू = नरेश = राजा । जनि = न = मत । जानऊ = जानइ (जानाति) का विध्यर्थ में मध्यम-पुरुष, बहु-वचन। हउँ = अहम् = मैँ । सउँ = से = तेँ । दूरी = दूर । नइनहिँ = नयनोँ = नयनयोः = आखोँ । माँझ = मध्य = मेँ । गडी = गडइ (गडति) का भूत-काल, स्त्रीलिङ्ग, एक-वचन। वह = सा। सूरी = शूली = फाँसी । तुम्ह = तुम्हारा = आप का। परसेत = प्रस्वेद = पसीना । घटइ = घटे = कम हो । घट = शरीर। केरा = का । मोहिँ = मेरे = मम । जिउ = जीव = प्राण। घटत = घटते = कम होते = निकलते । लागइ = लगता है (लगति), यहाँ लगेगा । बेरा = वेला = समय = काल । कहँ = को । राज-पाट = राज-पट्ट = राज-सिंहासन । मइँ = मैँ । साजा = साजइ (सज्जयते) का भूत-काल, पुंलिङ्ग का एक-वचन। दुअउ = दोनोँ = द्वयोः । जग = जगत् = लोक । राजा = पति ॥

जउँ = यदि = जो । जिअहिँ = जीएँ (जीवेयम्)। मिलि = मिल कर = मिलिला । केलि = केलि = क्रीडा = भोग-विलास । करहिँ = करेँ (कुर्याम्)। तो = तो = तर्हि। एकइ = एक ही । दोउ = दोनोँ = द्वावपि । पिअ = प्रिय = पति । होउ = होवे = भवेत् । किछु = कुछ = किञ्चित् ॥

(हीरा-मणि से) योगी (रत्न-सेन) की अमर-करणी सुन कर, (पद्मावती की) विरह-व्यथा की मृत्यु छट गई। प्राण कमल-कली हो कर (फिर) विकशित ऊआ, जानोँ सूर्य देख कर शीत छूट गया। (पद्मावती कहने लगी कि) यदि ऐसा सिद्ध हो गया, तो (अब) पारे को कौन मारे, जो कि नीबू के रस से भस्म हो जाता है, अर्थात् जब सिद्ध हो गया, तो उसी के मिलने से सब मनोरथ सिद्ध हो जायगा, पारे के मारने से क्या प्रयोजन, क्योँकि मारा ऊआ पारा तो नीबू के रस से भस्म, अर्थात् राख हो जाता है; फिर उस मेँ कुछ शक्ति ही नहीँ रहती। वैद्यशास्त्र मेँ पारा मारने की विधि लिखी ऊई है, उस विधि से बडे प्रयास से पारा मारा जाता है। मरे ऊए पारे के सेवन से अनेक रोग दूर हो जाते हैँ। मरे ऊए पारे को बडे यत्न से रखना पडता है। यदि उस मेँ नीबू का रस पड जाय, तो वह राख हो जाता है;

उस की सब शक्ति नष्ट हो जाती है। इस पर पद्मावती कहती है कि ऐसा जो रत्न-सेन सिद्ध हो गया तो उसी का सेवन करूँगी, उसी से सब रोग दूर करूँगी; जो पारा (चुद्र मनुष्य) नीबू के रस से (चुद्र मनुष्य के भोग-विलास से) राख हो जाता है अब उसे कौन मारे। (हे हीरा-मणि) अब जा कर तुम मेरे सँदेसे को कहो कि (पद्मावती ने कहा है कि) अब योग का त्याग करो (तपस्या पूरी हो गई) और अब राजा हो। यह न जानो कि मैं तुम से दूर हूँ, वह (तुम्हारी) शूली मेरी आँखों में गडी ऊई है। तुम्हारी शरीर के पसीने के घटने में (चाहे देर हो तो हो, पर) मेरे प्राण के घटने में, अर्थात् निकलने में, देर न लगेगी। आप के लिये मैं राज-सिंहासन सज चुकी, अब आप यह लोक पर-लोक दोनों में मेरे राजा अर्थात् स्वामी हैं॥

(अरे हीरा-मणि जा कर बेखटके कह दे कि) जब तक जीएँ मिल कर भोग-विलास करें, और मरें तो एक ही साथ रहें। हे (प्राण) प्रिय, आप के जीव को कुछ न हो, जो हो सो मेरे जीव को हो ॥ २६४ ॥

इति मन्त्रि-खण्ड-नाम चतुर्विंश-खण्डं समाप्तम् ॥ २४ ॥

अथ सूरी-खंड ॥ २५ ॥

चउपाई ।

बाँधि तपा आनेउ जहँ सूरी । जुरी आइ सब सिंघल पूरी ॥
पहिलइँ गुरू देइ कहँ आना । देखि रूप सब कोउ पछिताना ॥
लोग कहहिँ यह होअइ न जोगी । राजकुअँर कोउ अहइ बिओगी ॥
काहु लागि भएउ हइ तपा । हिअइँ सो माल करइ मुख जपा ॥
जस मारइ कहँ बाजा तूरू । सूरी देखि हँसा मन सूरू ॥
चमके दसन भएउ उँजिआरा । जो जहँ तहाँ बीजु अस मारा ॥
जोगी केर करहु पइ खोजू । मकु न होअइ यह राजा भोजू ॥

दोहा ।

सब पूँछहिँ कहु जोगी जाति जरम अउ नाओँ ।
जहाँ ठाओँ रोअइ कर हँसा सो कहु केहि भाओ ॥ २६५ ॥

बाँधि = बद्धा = बाँध कर । तपा = तपस्वी = तपसी । आनेउ = आनयत् = ले आए । जहँ = यत्र = जहाँ । सूरी = शूली = फाँसी । जुरी = युक्ताऽभूत् = एकट्ठी हुई । आइ = एत्य = आ कर । सब = सर्व । सिंघल = सिंहल । पूरी = पुरी = पुर के रहने-वाले । पहिलइँ = प्रथमे = पहले । गुरू = गुरु = रत्न-सेन । देइ कहँ = देने के लिये = शूली देने के लिये । आना = आनयत् = ले आए । देखि = दृष्टा = देख कर । रूप = सूरत । कोउ = कोऽपि = कोई । पछिताना = पश्चात्ताप = पछताने लगे (यहाँ पर बहु-वचन

समझना)। लोग = लोकाः। कहहिँ = कथयन्ति = कहते हैँ। यह = अयम्। होअइ = होवे = भवेत्। जोगी = योगी। राज-कुअँर = राज-कुमार = राज-पुत्त्र। अहइ = अस्ति = है। बिओगी = वियोगी = विरही। काहु लागि = कस्या अर्थम् = किसी के लिये। भएउ = भया = अभूत्। हइ = अस्ति = है। हिअइँ = हृदय = हृदय मेँ। सो = सो = वह। माल = माला। करइ = करोति = करता है। मुख = मुँह। जपा = जप। जस = जैसे ही = यदैव। मारइ कहँ = मारने के लिये। बाजा = बजा = अवादीत्। तूरू = तूर्य = तुरही। हँसा = अहसत् = हँस दिया। मन = मनसः = मन से। सूरू = सूर्य = रत्न-सेन, वा सूरू = शूर = बहादुर रत्न-सेन। चमके = चमक उठे = चकमे। दसन = दशन = दाँत। उँजिआरा = उज्ज्वलन = उँजेरा = प्रकाश। जो = यः। तहाँ = तत्र। बीजु = विद्युत् = बिजुरी। अस = एतादृश = ऐसा। मारा = ममार = मार दिया। केर = का। करऊ = कुरुत = करिए। पइ = अपि = निश्चय। खोजू = खोज = अन्वेषण। मकु = मैँ ने कहा = क्या जानेँ। भोजू = भोज = धारा नगरी का प्रसिद्ध संस्कृतानुरागी राजा॥

सब = सर्वे। पूँछहिँ = पृच्छन्ति = पूछते हैँ। कहऊ = कथय = कहु। जाति = ज्ञाति। जरम = जन्म। अउ = अपि च = और। नाओँ = नावँ = नाम। ठाओँ = ठावँ = स्थान। रोअइ कर = रोने का। केहि भाओँ = किस भाव से = किस अभिप्राय से = केन भावेन॥

तपस्विओँ को (लोग) बाँध कर जहाँ शूली खडी की गई थी (वहाँ) ले आए। (उस के देखने के लिये) सब सिंहल पुरी एकट्ठी हुई, अर्थात् सिंहल के सब लोग एकट्ठे हुए। (सब से) पहले गुरु (रत्न-सेन को शूली) देने के लिये (लोग) ले आए, सब लोग उस के रूप को देख कर पछताने लगे। लोग कहते हैँ कि यह योगी नहीँ है कोई विरही राज-कुमार है। किसी के लिये तपस्वी हो गया है, हृदय मेँ वह माला (ऐसी) है, (उसी के नाम का) जप मुख से करता है। जैसे ही मारने के लिये अर्थात् शूली देने के लिये तुरही बजी, (और शूली देखाई गई उसी चण) शूली को देख कर मन से, अर्थात् (लोगोँ को देखाने के लिये बाहर और बात और मन मेँ और बात नहीँ किन्तु सच्चे) हृदय से हँसने लगा। (हँसने से) दाँत चमक उठे। (सब जगह) उँजेला हो गया, जो जहाँ खडे थे सब (जानोँ) बिजली के मारे हुए हैँ। (सब आपस मेँ चौँक कर कहने लगे कि) योगी का खोज करो, क्या जानेँ यह राजा भोज न हो॥

विक्रम के वाद उज्जयिनी में राजा भोज हुआ है इस ने धारा नगरी बसाई है और यह बडा ही संस्कृतानुरागी था। भोज-प्रबन्ध में इस की बडी बडी कथा लिखी हुई है॥

सब पूछने लगे कि योगी, अपनी जाति, जन्म-स्थान और नाम को कह (बताओ) (क्योंकि हम लोगों को बडा अचरज है) जहाँ रोने का स्थान है वहाँ कह किस अभिप्राय से हँसा॥ २९५॥

चउपाई।

का पूँछहु अब जाति हमारी। हम जोगी अउ तपा भिखारी॥
जोगिहि कवन जाति हो राजा। गारिहि कोह न मारहि लाजा॥
निलज भिखारि लाज जिन्ह खोई। तिन्ह के खोज परउ जनि कोई॥
जा कर जीउ मरइ पर बसा। सूरी देखि सो कस नहिँ हँसा॥
आजु नेह सउँ होइ निबेरा। आजु पुहुमि तजि गगन बसेरा॥
आजु कया-पिंजर बँध टूटा। आजु परान-परेवा छूटा॥
आजु नेह सउँ होइ निरारा। आजु पेम सँग चला पिआरा॥

दोहा।

आजु अवधि सरि पूजी कइ जो चलउँ मुख रात।
बेगि होहु मोहिँ मारहु का चालहु बहु बात॥ २९६॥

का = क्यों = किमर्थम्। पूँछहु = पूछते हो = (पृच्छन्ति) पूछइ का विध्यर्थ में मध्यम-पुरुष का बहु-वचन। अब = इदानीम् = अधुना। जाति = ज्ञाति। हमारी = मेरी का बहु-वचन। हम = हौं (अहम्) का बहु-वचन। जोगी = योगी। अउ = अपर = और। तपा = तपस्वी = तपसी। भिखारी = भिक्षुक। जोगिहि = योगिनः = योगी को। कवन = क नु = कौन। हो = अहो सम्बोधन। गारिहि = गालेः = गाली से। कोह = क्रोध। मारहि = मारणेन = मारने से। लाजा = लज्जा। निलज = निर्लज्ज। जिन्ह = जिन्हों ने। खोई = खोअइ (क्षयति) का भूत-काल, स्त्री-लिङ्ग, एक-वचन, प्रथम-पुरुष। तिन्ह के = तेषाम्। खोज = अन्वेषणे = ढूँढने में। परउ = पतेत् = पडे। जनि = जातु न = कदाचित् न = मत। कोई = कोऽपि। जा कर = यस्य = जिस का।

जीउ = जीव। मरइ पर = मरने पर। बसा = बसइ (वसति) = बसता है। सूरी = शूली। देखि = दृष्ट्वा = देख कर। सो = सो = वह। कस = कथम्। हँसा = हँसे = हसेत्। आजु = अद्य = आज। नेह = स्नेह। सउँ = से। होइ = भवति = होता है। निबेरा = निवृत्ति। पुहुमि = पृथ्वी = भूमि। तजि = त्यक्त्वा = तज कर = छोड कर। गगन = आकाश। बसेरा = वास। कया-पिंजर = काय-पिञ्जर = शरीर-पिंजडा। बँध = बन्धन। टूटा = टूट = टूटइ = त्रुट्यति = टूटता है। परान-परेवा = प्राण-पारावत = प्राण-पक्षी। छूटा = छूटइ = छूट (छोटति) = छूटता है। निरारा = निरालय = अलग। पेम = प्रेम। सँग = सङ्ग = साथ। चला = चल = चलइ (चलति) चलता है। पिआरा = प्यारा = प्रिय॥

अवधि = सीमा = हद्द। सरि = सरित् = नदी। पूजी = पूजइ (पूर्यते) का भूत-काल, प्रथम-पुरुष, स्त्री लिङ्ग, एक-वचन। कइ = कृत्वा = कर के। चलउँ = चलामि = चलता हूँ। मुख = मुँह। रात = रक्त = लाल। बेगि = वेग = शीघ्र। होऊ = भवथ = हो। मोहिँ = मोहिँ = मुझे। मारऊ = मारयथ = मारिए। चालऊ = चालयथ = चलाते हो। बात = वार्त्ता॥

(राजा रत्न-सेन ने कहा कि) अब हमारी जाति क्या पूछते हो, हम योगी और तपस्वी भिखारी हैं। हे राजा, योगी की कौन जात (जिसे) मारने से न क्रोध और गाली से न लज्जा। भिखारी, जिन्हों ने लाज खो दिया है, निर्लज्ज होते हैं, उन्ह के खोज में कोई मत पडो। जिस का जीव मरने पर बस गया वह शूली देख कर क्यों न हँसे। आज स्नेह से निबटेरा (निवृत्ति) होता है, आज भूमि छोड कर आकाश में वास होता है। आज शरीर-पिंजडे का बन्धन टूटता है (इस लिये) आज प्राण-पक्षी छूटता है। आज स्नेह से अलग होना होता है, आज प्यारा (प्राण) प्रेम के साथ चलता है॥

आज (प्रेम-)अवधि-रूप नदी भर गई (इस लिये अपना) मुँह लाल कर चलता हूँ, अर्थात् प्रेम-नदी-धारा में पड कर मुँह नहीं मोडा उस के भर जाने से मरता हूँ। लोग यह तो कहेंगे कि जिस राह में रत्न-सेन पडा उस में प्राण तक दे दिया पर मुँह नहीं मोडा। इस लिये मैं अपना मुँह लाल कर के चलता हूँ। जौं मुँह मोडता तो अवश्य काला मुँह कर के जाता। (रत्न-सेन कहता है कि) बेगि होऊ अर्थात् जल्दी करो, (अभी) मुझे मारो; क्यों बहुत बात चलाते हो॥

योगी लोग परब्रह्म के प्रेम में डूब कर नीचे से षट् चक्र और अष्ट कमलों में क्रम क्रम से प्राण चढाते जब ब्रह्मगुफा के पास ब्रह्माण्ड में प्राण को ले जाते हैं तब अप्सरा-उर्वशी और काम की तरह तरह की मन हरने-वाली लीला सब उस योगी के प्राण को ऊपर न चढने के लिये विघ्न करते हैं। उस घडी जो योगी न घबडाय और उस लीला में फँस कर अपने को फाँसी पर न चढावे तो ब्रह्म-रन्ध्र में अपने प्राण को घुसा कर, उस परब्रह्म के दर्शन को पा कर, आप सच्चिदानन्द हो जाय और प्रकृति-रूप पद्मावती से भेंट कर सायुज्य मुक्ति को पावे। इस लिये मलिक मुहम्मद ने यहाँ रूपकालङ्कार किया है कि योगी रत्न-सेन ब्रह्मगुफा के दरवाजे पर आ चुका है, राजा गन्धर्व-सेन की फाँसी-लीला अप्सरा-उर्वशी इत्यादि लीला के समान हैं जिन्हें देख कर कुछ भी नहीं डरता। जिस प्रकृति-परब्रह्म-रूप पद्मावती के ध्यान में मग्न है उस के बल से उन लोगों की शूली-रचना से कुछ भी नहीं डरता है, बल्कि इस तुच्छ शूली को देख कर हँसता है कि मैं तो आप मरने पर अर्थात् इस मलिन काया के छोडने पर तयार हूँ, शूली की मुझे क्या डर है॥ २९६॥

चउपाई।

कहहिँ सवँरु जेहि चाहसि सवँरा। हम तोहि करहिँ केति कर भवँरा॥
कहेसि ओही सवँरउँ हरि फेरा। मुअइँ जिअत आहइँ जेहि केरा॥
जहाँ सुनउँ पदुमावति रामा। यह जिउ नेवछावरि तेहि नामा॥
रकत क बूँद कया जत अहहीँ। पदुमावति पदुमावति कहहीँ॥
रहहिँ त बूँद बूँद महँ ठाऊँ। परहिँ त सोई लेइ लेइ नाऊँ॥
रोअँ रोअँ तनु ता सउँ ओधा। सूतहि सूत बेधि जिउ सोधा॥
हाडहि हाड सबद सो होई। नस नस माँह उठइ धुनि सोई॥

दोहा।

खाइ बिरह गा ता कर गूद माँसु कइ खान।
हउँ होइ साँच रहा अब वह होइ रूप समान॥ २९७॥

कहहिँ = कथयन्ति = कहते हैं। सवँरु = संस्मर = स्मरण कर = याद कर। जेहि = जेहि = यस्य वा यस्याः = जिसे। चाहसि = इच्छसि = चाहता है। सवँरा = स्मरण = याद। हम = हौं (अहम्) का बहु-वचन। तोहि = तोहि = तव = तुझे। करहिँ = कुर्मः = करते हैं। केति = केतक = केतकी। कर = का। भवँरा = भ्रमर = भौँरा। कहेसि = अकथयत् = कहा। ओही = ओही = तस्याः = उसी को। सवँरउँ = स्मरामि = स्मरण करता हूँ। हरि = हर = प्रत्येक। फेरा = फेर = वार = मर्त्तबा। मुअहूँ = मरने पर = मरणानन्तर। जिअत = जीते = जीवने। आहहूँ = अस्मि = हूँ। जेहि केरा = यस्याः = जिस का। जहाँ = यत्र। सुनउँ = शृणुयाम् = सुनूँ। पदुमावति = पद्मावती। रामा = सुन्दरी = रमणी। यह = अयम्। जिउ = जीव = प्राण। नेवछावरि = न्योछावर = नामोत्सव। तेहि = तेहि = तिस। नामा = नाम। रकत = रक्त = लोहू। क = की। बूँद = बिन्दु। कया = काय = शरीर। जत = यावत्। अहहीँ = सन्ति = हैं। रहहिँ = तिष्ठन्ति = रहैं। त = तर्हि = तो। मँह = मध्ये = में। ठाऊँ = ठावँ = स्थान। परहिँ = पतन्ति = पड़ैं। सोई = स एव = वही। लेइ = आलाय = ले कर। नाऊँ = नावँ = नाम। रोअँ = रोम = रोआँ। तनु = शरीर। ता सउँ = तिस से = उस से = तस्याः। ओधा = रुद्ध = नद्ध = बाँधा। सूत = सूत्र = मुसल्मानी तसू = (इंच) का चौथा हिस्सा। बेधि = विद्धा = बेध कर = छेद कर। सोधा = शोधयामास = शुद्ध किया। हाड = अस्थि = हड्डी। सबद = शब्द = धुनि। सो = वह। होई = भवति = होता है। नस = शिरा। माँह = मँह = मध्ये = में। उठइ = उत्तिष्ठते = उठती है। धुनि = आवाज॥

खाइ = खाय = भक्षण। बिरह = विरह = वियोग। गा = अगात् = गया। ता कर = तस्याः = तिस का = उस का। गूद = गुद्दा। माँसु = मांस। कइ = की। खान = खनि। हउँ = अहम् = हौँ। होइ = भूला = हो कर। साँच = साँचा = सत्ता। रहा = अभूत्। अब = इदानीम् = अधुना। समान = समाय गई = समनयत्॥

(लोग) कहने लगे कि जिसे स्मरण करना चाहता है स्मरण कर, हम (अब) तुझे केतकी का भौँरा किया चाहते हैं, अर्थात् जैसे केतकी के नोख-दार पत्ते पर बैठ कर भौँरा अपने गले को छेदवा कर प्राण देता है उसी तरह हम तुझे शूली पर लटकाया चाहते हैं। (इस बात को सुन कर रत्न-सेन ने) कहा कि हर वार उसी को सुमिरता हूँ जिस का कि मैं मरने और जीने पर हूँ। जहाँ पद्मावती सुन्दरी को

सुनूँ, तहाँ उस के नाम पर इस जीव को नेवछावर करूँ। शरीर में जितने रक्त के बिन्दु हैं (सब) पद्मावती पद्मावती कहा करते हैं। (मेरी शरीर में) रहैं तो (उन रक्त के) बूँद बूँद में (उस के लिये) स्थान है, (जमीन पर) पड़ैं तो उसी के नाम को ले ले कर, अर्थात् भूमि पर गिरैं तो उसी के नाम को ले ले कर गिरैं। शरीर के रोएँ रोएँ उसी से बँध गए हैं, (मेरे) जीव का (भी) सूत सूत उसी से शुद्ध ऊए हैं। (मेरे) हाड हाड में वही (पद्मावती के नाम का) शब्द होता है, नस नस में वही (पद्मावती के नाम की) धुनि उठती है॥

उसका (पद्मावती का) विरह मांस की खानि के गुद्दे को खाय गया, अर्थात् हाड और नस के भीतर मांस की गुद्दी को खा गया, मैं साँचा ऐसा रह गया अब (उस साँचे में) उस का रूप समाय गया, अर्थात् मेरे ठठरी-रूप साँचे में उस का रूप ढारा गया अब वह और मैं दोनों मिल कर एक हो गया, उस के और मेरे रूप में अभेद हो गया। जैसे योगी मुक्त हो कर परब्रह्म में लीन हो जाता है, उसी तरह मैं उस में और उसका रूप मुझ में लीन हो गया है॥ २६७॥

चउपाई।

जोगिहिँ जउहिँ गाढ अस परा। महादेओ कर आसन टरा॥
अउ हँसि पारबती सउँ कहा। जानहुँ सूर गहन अस गहा॥
आजु चढइ गढ ऊपर तपा। राजइँ गहा सूर तब छपा॥
जग देखइ कउतुक कइ आजू। कीन्ह तपा मारइ कहँ साजू॥
पारबती सुनि पाँइन परी। चलहु महेस देखहिँ एक घरी॥
भेस भाट भाटिन कर कीन्हा। अउ हनुवंत बीर सँग लीन्हा॥
आइ गुपुत होइ देखन लागे। दहुँ मूरति कस सती सभागे॥

दोहा।

कटक असूझ देखि कइ (आपनि) राजा गरब करेइ।
दइउ क दसा न देखिअइ दहुँ का कहँ जइ देइ॥ २६८॥

जोगिहिँ = योगिनाम् = योगिओं को। जउहिँ = यदा हि = जैसे ही। गाढ = कठिन (दुःख)। अस = एतादृश = ऐसा। परा = पपात = पड़ा। महादेओ = महादेव।

कर = का । आसन = बैठने की स्थिति । टरा = टरइ (चलति) का भूत-काल, प्रथम-पुरुष, एक-वचन । अउ = अपि = और । हँसि = हसित्वा = हँस कर । पारवती = पार्वती = महादेव की स्त्री । सउँ = से । कहा = कहइ (कथयति) का भूत-काल, प्रथम-पुरुष, एक-वचन । जानऊँ = जाने = जान पडता है । सूर = सूर्य वा शूर = बहादुर । गहन = ग्रहण । गहा = जग्टहे = गहा गया = पकड गया । आजु = अद्य = आज । चढइ = उच्छलने = चढने में । गढ = गाढ = दुर्ग = किला । ऊपर = उपरि । तपा = तपस्वी = योगी । राजइँ = राज्ञा = राजा ने । तब = तदा । छपा = छपइ (चपति) का भूत-काल, प्रथम-पुरुष, एक-वचन । जग = जगत् = संसार । देखइ = दर्शनार्थ = देखने । कउतुक = कौतुक = लीला = खेल । कइ = के । आजू = आज = आजु । कीन्ह = अकृत = किया । मारइ कहँ = मारने के लिये । साजू = सज्जन = तयारी । सुनि = श्रुत्वा = सुन कर । पाँयन = पायँ का बहु वचन, पायँ = पाद = पैर । परी = परइ (पतति) का भूत-काल, स्त्रीलिङ्ग, एक-वचन । चलडु = चलय = चलिए । महेस = महेश = महादेव । देखहिँ = देखँ = पश्येव । एक = एक । घरी = घटी = चौबिस मिनिट, यहाँ एकचण = चणभर । भेस = वेष = रूप । भाट = भट = कवित्त में यश पढने-वाला । भाटिन = भाट की स्त्री । कर = का । कीन्हा = कीन्ह = अकृत = किया । हनुवंत = हनुमान् = राम का प्रसिद्ध भक्त, लङ्का जलाने-वाला । बीर = वीर = योद्धा = बली । संग = संग = सङ्ग = साथ । लीन्हा = अलात् = लिया = लीन्ह । आइ = एत्य = आ कर । गुपुत = गुप्त, गुपुत होइ = गुप्त हो कर = छिप कर । देखन = देखने में । लागे = लग्न ऊए = लग गए । दऊँ = देखँ । मूरति = मूर्त्ति । कस = कथम् = कैसी । सती = सच्ची । सभागे = भाग्यवान = भाग्य के सहित ॥

कटक = सेना = फौज । असूझ = जो समझ न पडे कि कितनी है = अपार = अगोध । देखि कइ = दृष्ट्वा = देख कर । (आपनि) = आत्मनः = अपनी । राजा = गन्धर्व-सेन । गरब = गर्व = गरूर = अभिमान । करेइ = करइ (करोति) = करता है । दइउ = देव = भगवान् । क = की । दसा = दशा = हाल = गति = लीला । देखिअइ = देखी जाती है । दऊँ = न जानेँ = दो में से एक । का कहँ = कस्य = किस को । जइ = जय = विजय = जीत । देइ = दद्यात् = दे ॥

जैसे ही योगिओं पर ऐसा दुःख पडा (उसी चण) महादेव का आसन टल गया, (पार्वती की ओर मुँह को फेर लिया)। और हँस कर पार्वती से कहा कि जान पडता है

सूर रत्न-सेन (सूर्य) ग्रहण के ऐसा पकड गया, अर्थात् जैसे ग्रहण में राहु से सूर्य पकडा जाता है उसी तरह यह रत्न-सेन भी राजा गन्धर्व-सेन के सिपाहियों से पकड गया। आज तपस्वी (रत्न-सेन) को गढ के ऊपर चढने में राजा गन्धर्व-सेन ने पकड लिया, तब (वह) सूर (रत्न सेन वा सूर्य) छिप गया। आज जगत (सिंहल-वासियों) ने तमाशा देखने के लिये तपस्वी (रत्न-सेन) को मारने के लिये तयारी की है। (यह) सुन कर पार्वती (महादेव के) पैरों पर पडी (और कहने लगी कि) हे महादेव जी चलिए एक घडी (इस तमाशे को) देखें। (आपस में सलाह कर) महादेव ने भाट का और पार्वती ने भाटिन का रूप बनाया और हनुमान् वीर को संग में ले लिया। आ कर, छिप कर देखने लगे कि देखें (उस) भाग्यवान् (रत्न-सेन की) कैसी सच्ची मूर्त्ति है॥

राजा गन्धर्व-सेन अपनी असूझ सेना को देख कर (अपने मन में) गर्व करता है (कि मेरे बराबर बली संसार में दूसरा कौन है, पर) देव की गति नहीं देखी जाती, न जानें वह किस को जय दे॥ २६८॥

चउपाई।

अस बोलईं रहा होइ तपा। पदुमावति पदुमावति जपा॥
मन समाधि अस ता सउँ लागी। जेहि दरसन कारन बइरागी॥
रहा समाइ रूप ओहि नाऊँ। अउरु न सूझ बार जहँ जाऊँ॥
अउ महेस कहँ करउँ अदेसू। जेहि एहि पंथ दीन्ह उपदेसू॥
पारबती सुनि सत्त सराहा। अउ फिरि मुख महेस कर चाहा॥
हइँ महेस पइ भई महेसी। कित सिर नावँहिं यह परदेसी॥
मरतेहुँ लीन्ह तुम्हारइ नाऊँ। तुम्ह चुप कीन्ह सुनहु एहि ठाऊँ॥

दोहा।

मारत हइँ परदेसी राखि लेहु एहि बेरि।
कोइ काहु कर नाहीँ जो होइ जाइ निबेरि॥ २६९॥

अस = एतादृश = ऐसा। बोलईं = बोल। रहा = तस्थौ। होइ = होइ = भूला = हो कर। तपा = तपस्वी। पदुमावति = पद्मावती। जपा = जजाप = जपने लगा। मन =

मनः । समाधि = चित्तवृत्तिनिरोध = सब तरफ से चित्त को हटा लेना । ता सउँ = तिस से । लागी = लगइ (लगति) का भूत-काल, स्त्रीलिङ्ग, एक-वचन । जेहि = जेहि = यस्याः = जिस के । दरसन = दर्शन । कारन = कारण । बइरागी = बैरागी = विरागी । समाइ = समापित = समाय । रूप = सूरत । ओहि = ओहि = उस के = तस्याः । नाऊँ = नावँ = नाम । अउरु = अपर = और । सूझ = शुध्यति = सूझता है । बार = द्वार = दरवाजा । जहँ = यत्र = जहाँ । जाऊँ = यानि । अउ = और = अपि । महेस = महेश = महादेव । कहँ = का । करउँ = करोमि = करता हूँ । अदेसू = आदेश = आज्ञा । एहि = अस्मिन् = इस । पंथ = पन्थाः = राह । उपदेसू = उपदेश = शिक्षा । पारबती = पार्वती = महादेव की स्त्री । सुनि = श्रुला = सुन कर । सत्त = सत्यता = सच्चा । सराहा = सराहइ (श्लाघते) का भूत-काल, पुंलिङ्ग, एक-वचन । फिरि = घूम कर । मुख = मुँह । कर = का । चाहा = चाहइ (इच्छति) का भूत-काल पुंलिङ्ग, एक-वचन । हइँ = हहिं = सन्ति = हैं । पइ = अपि = निश्चय से । भई = होइ (भवति) का भूत-काल, स्त्रीलिङ्ग, एक-वचन । महेसी = महेशी = पार्वती । कित = कुतः = कस्मात् = क्यों । सिर = शिर । नावँहिं = नामयेयुः = नवावैं । यह = एते = ये । परदेसी = परदेशी = दूसरे देश के रहने-वाले । मरतेऊँ = मरते समय भी = मरती बेरा भी । लीन्ह = अलात् = लिया । तुम्हारइ = तुम्हारा ही = भवतां हि । तुम्ह = आप । चुप = मौन । कीन्ह = अकृत = किया । सुनहु = शृणुथ = सुनिए । ठाऊँ = स्थान = ठावँ ॥

मारत हइँ = मारयन्ति = मारते हैं । राखि लेहु = रक्षथ = रख लेओ = बचा लेओ । बेरि = बेरा = अवसर । कोइ = कोऽपि = कोई । काहु कर = किसी का = कस्यापि । जो = यः । होइ जाइ = हो जाय । निबेरि = निपटाने-वाला = निवारण करने-वाला ॥

ऐसी बोली पर तपस्वी (रत्न-सेन) ठहर गया और पद्मावती पद्मावती जपने लगा । (कहने लगा कि) मन में पद्मावती से समाधि ऐसी लग गई, जिस के लिये कि बैरागी हुआ हूँ । उसी (पद्मावती) के नाम में (मेरा) रूप समा गया है, और दूसरा द्वार नहीं सूझ पडता जहाँ जाऊँ । और महादेव का कहा करता हूँ जिन्हों ने इस राह में (जाने के लिये) उपदेश दिया । (इस बात को) सुन कर पार्वती ने (राजा रत्न-सेन के) सत्य को सराहा, अर्थात् राजा रत्न-सेन की पद्मावती में सच्ची प्रीति है, इस बात की प्रशंसा की और फिर कर महादेव जी के मुँह को देखने लगी (कि इन के मन में क्या है) । (कवि कहता है कि एक तो) महादेव ही

(राजा रत्न-सेन के पच्च पर) हैं (और अब) निश्चय से पार्वती भी (राजा के पच्च पर) हुई (तो फिर) ये परदेशी (योगी लोग) क्यों (हार मान कर राजा गन्धर्व-सेन के सामने) शिर झुकावें। (पार्वती बडे आग्रह से कहने लगी कि हे नाथ) सुनो मरने समय भी तुम्हारा ही नाम ले रहा है, सो आप चुप अर्थात् मौन व्रत धारण किए हो (ऐसी बेरा में आप को यह उचित नहीं कि मौन-व्रत धारण करें॥)

(ये गन्धर्व-सेन के सिपाही) परदेशी (योगिओं) को मारते हैं, इस बेरा (इन योगिओं को) रख लेओ अर्थात् बचा लेओ, (इस अवसर में) कोई किसी (योगी) का नहीं है जो कि निवारण करने-वाला हो, अर्थात् ऐसा कोई आप के सेवाय दूसरा नहीं देख पडता जो कि इस अवसर में इन योगिओं का प्राण बचावे॥ २६९॥

चउपाई।

लेइ सँदेस सुअटा गा तहाँ। सूरी देन गए लेइ जहाँ॥
देखि रतन हीरामनि रोआ। रतन ग्यान ठगि लोगन्ह खोआ॥
देखि रोदन हीरामनि केरा। रोअहिँ सब राजा मुख हेरा॥
माँगहिँ सब बिधिना पहुँ रोई। करु उपकार छोडावइ कोई॥
कहि सँदेस सब बिनति सुनाई। बिकल बहुत किछु कहा न जाई॥
काढि परान बइसि लेइ हाथा। मरइ तो मरउँ जिअउँ तेहि साथा॥
सुनि सँदेस राजा तब हँसा। प्रान प्रान घट घट मँह बसा॥

दोहा।

हीरामनि अउ भाट दसउँधी भए जिउ पर एक ठाउँ।
चलहु जाइ कह बतकही जहाँ बइठु हहिँ राउ॥ २७०॥

लेइ = लेइ = आलाय = ले कर। सँदेस = सन्देश = सँदेसा = खबर। सुअटा = शुक = सुग्गा। गा = अगात् = गया। तहाँ = तत्र। सूरी = शूली। देन = देने। गए = जग्मुः। जहाँ = यत्र। देखि = देख कर = दृष्ट्वा। रतन = रत्न = रत्न-सेन। हीरामनि = हीरामणि शुक। रोआ = रुरोद = रोया। ग्यान = ज्ञान। ठगि = स्थगिला = ठग कर। लोगन्ह = लोग (लोक) का बहु-वचन। खोआ = खोअद का भूत-काल, पुंलिङ्ग, एक-वचन। रोदन = रोदन = रोना। केरा = का। रोअहिँ = रुदन्ति = रोते हैं।

सब = सर्व । मुख = मुँह । हेरा = हेरद (हेड्रते) का भूत-काल, पुंलिङ्ग, एक-वचन । माँगहिँ = याचन्ते = माँगते हैँ । बिधिना = विधि = ब्रह्मा । पहुँ = पहँ = से । रोई = रुदित्वा = रो कर । करु = कुरु = कर । छोडावद = छोडावे (छोटयेत्) । कोई = कोऽपि । कहि = कथयित्वा = कह कर । बिनति = विनति = विनय । सुनाई = सुनावद (श्रावयति) का भूत-काल, स्त्रीलिङ्ग, प्रथम-पुरुष, एक-वचन । बिकल = विकल = दुःखित । बहुत = बहुतर । किछु = कुछ = किञ्चित् । कहा = कथन । जाई = जायते । काढि = कर्षयित्वा = खीँच कर = निकाल कर । परान = प्राण । बदुसि = बैठी = उपविष्टा । लेद = ले कर = आलाय । हाथा = हाथ = हस्त । मरद = मरे = म्रियेत । तो = तर्हि = तो । मरउँ = मरूँ = मराणि । जिअउँ = जीवेयम् = जीवँ । तेहि = तस्याः = तिस के । साथा = साथ = सार्थ = सङ्ग । सुनि = श्रुत्वा = सुन कर । तब = तदा । हँसा = हँसद (हसति) का भूत-काल, पुंलिङ्ग, प्रथम-पुरुष, एक-वचन । प्रान = प्राण । घट = शरीर । मँह = मध्ये = मेँ । बसा = बस = वसति = बसता है ॥

अउ = अपि = और । भाट = स्तुति करने-वाला (महादेव) दसउँधी = दशधी = साधारण मनुष्य से जिस की दश गुनी बुद्धि हो । आज कल भाटोँ मेँ एक जाति राय और दूसरी दसौँधी कहाती है । भए = भए = बभूवतुः = हुए । जिउ = जीव । पर = उपरि । एक = एक । ठाउँ = ठावँ = स्थान । चलहु = चलौँ । जाद = आयाय = जा कर । कह = कहँ । बतकही = वार्त्ताकथनम् = बातचीत । बदठु हहिँ = बैठे हैँ = उपविशन्ति = तिष्ठन्ति । राउ = राजा ॥

(इसी बीच मेँ) हीरामणि शुक (पद्मावती का) सँदेसा ले कर गया जहाँ कि (लोग) (राजा रत्न-सेन को) शूली (फाँसी) देने ले गए थे । हीरामणि रत्न-सेन को (ऐसी दुर्दशा मेँ) देख कर रोने लगा कि (हाय) लोगोँ ने रत्न-सेन को ठग कर (इस के) ज्ञान को खो दिया । हीरामणि का रोना देख कर सब रोने लगे और राजा रत्न-सेन का मुँह देखने लगे । सब (लोग) रो कर ब्रह्मा से (हाथ जोड जोड कर) माँगते हैँ कि (हे विधि, इस समय) उपकार कर (और ऐसी प्रेरणा कर कि) कोई (आ कर राजा रत्न-सेन को शूली से) छोडावे । (शुक ने पद्मावती का सब सँदेसा) कह कर (उस की) विपत्ति सुनाई कि (पद्मावती) बहुत विकल है, कुछ कहा नहीँ जाता । (घट के भीतर से) प्राण को निकाल कर हाथ मेँ ले कर बैठी है, (और कहती है कि राजा रत्न-सेन) मरे तो मैँ भी मरूँ (और जीवे तो)

उसी के साथ मैं भी जीऊँ। तब (पद्मावती के इस) संदेस को सुन कर राजा रत्न-सेन ने हँस दिया (और कहने लगा कि मेरा) प्राण (उस के) प्राण में और (मेरी) शरीर (उस की) शरीर में बस गई है। (इतना कह कर राजा रत्न-सेन चुप हो गया, आँख बंद कर पद्मावती का ध्यान कर समाधि में हो गया)॥

(यह राजा की दशा देख कर) हीरामणि शुक और दसौंधी भाट (महादेव जी) (दोनों) एक स्थान पर (एकट्ठे हो, सलाह कर) जीव (देने) पर (तयार हुए। कहने लगे कि) चलो जहाँ राजा गन्धर्व-सेन बैठे हैं वहाँ जा कर (कुछ) बात (तो) कहैं॥ २७०॥

चउपाई।

राजा रहा दीठि कइ अउँधी। रहि न सका तब भाट दसउँधी॥
कहेसि मेलि कइ हाथ कटारी। पुरुस न आछहिँ बइठि पिटारी॥
कान्ह कोपि कइ मारा कंसू। गूँग कि फूँक न बाजइ बंसू॥
गँधरब-सेन जहाँ रिस बाढा। जाइ भाट आगइँ भा ठाढा॥
ठाढ देखि सब राजा राऊ। बाएँ हाथ दीन्ह बर-भाऊ॥
गँधरब-सेन तुँ राजा महा। हउँ महेस मूरति अस कहा॥
जोगी पानि आगि तूँ राजा। आगिहि पानि जूझ नहिँ छाजा॥

दोहा।

आगि बुझाई पानि सउँ तूँ राजा मन बूझ।
तोरइ बार खपर हइ (लीन्हे) भिखिआ देहि न जूझ॥ २७१॥

रहा = रहइ (तिष्ठति) का भूत-काल, पुंलिङ्ग, प्रथम-पुरुष, एक-वचन। दीठि = दृष्टि = आँख। कइ = कर = कला। अउँधी = औंधी = अधः = नीचे। रहि = रह = ठहर = स्थिर। सका = सकइ (शक्नोति) का भूत-काल, पुंलिङ्ग, प्रथम-पुरुष, एक-वचन। तब = तदा। भाट = स्तुति करने-वाला। दसउँधी = दशधी = भाटों की एक जाति। कहेसि = अकथयत् = कहा। मेलि = मेलयित्वा = मेल कर = ले कर। हाथ = हस्त। कटारी = कटार = कर्त्तरी। पुरुस = पुरुष = मर्द। आछहिँ = शोभन्ते = सोहते हैं।

बइठि = उपविश्य = बैठ कर। पिटारी = पेटिका = पेटारी। कान्ह = कृष्ण = भारत के प्रधान नेता = भगवान् का आठवाँ अवतार। कोपि = कुपिला = कोप कर = क्रोध कर। मारा = मारइ (मारयति) का भूत-काल, पुंलिङ्ग, प्रथम-पुरुष, एक-वचन। कंसू = कंस = प्रसिद्ध मथुरा का राजा। गूँग = गूँगा = मूक। कि = की। फूँक = फुंकार। बाजइ = वादते = बजता है। बंसू = वंश = बाँस। गँधरब-सेन = गन्धर्व-सेन। जहाँ = यत्र। रिस = रोष = क्रोध। बाढा = वृद्धे = बढा था। जाइ = आथाय = जा कर। आगइँ = अग्रे = आगे = सामने। भा = बभूव = भया = हुआ। ठाढा = खडा = स्थित। ठाढ = खडा। देखि = दृष्ट्वा = देख कर। सब = सर्व। राऊ = राय = छोटे राजा। बाएँ = वाम = बायाँ। दीन्ह = अदात् = दिया। बर = वर = श्रेष्ठ। भाऊ = भाव। बरभाव = श्रेष्ठ-भाव = उचित रीति से हाथ उठा कर आशीर्वाद। तुँ = तूँ = त्वम् = तुम। महा = महान् = बडा। हउँ = हौं = अहम्। महेस = महेश = महादेव। मूरति = मूर्त्ति। अस = एतादृश = ऐसा = एवम्। कहा = अकथयत्। जोगी = योगी। पानि = पानीय = पानी। आगि = अग्नि = आग। तूँ = त्वम्। जूझ = युद्ध। छाजा = छाजइ (सज्जते) का भूत-काल, पुंलिङ्ग, प्रथम-पुरुष, एक-वचन॥

बुझाई = निवर्त्तति = बुझती है। सउँ = से। मन = मनसः = मन से। बूझ = बुध्यस्व = समझ। तोरइ = तवैव = तेरे-ही। बार = द्वार। खपर = खर्पर = खप्पड = भीख माँगने का पात्र। हइ = अस्ति = है। लीन्हे = लिए। भिखिआ = भिक्षा = भीख। देहि = दे। जूझ = युध्यस्व = लड॥

राजा गन्धर्व-सेन नीचे की ओर आँख किए था, (उस समय) तब दसौंधी भाट रह न सका। हाथ में कटार ले कर (मन में) कहने लगा कि पेटारी में बैठने से पुरुष नहीं सोहते, अर्थात् मन की बात मन-ही में रखने से पुरुष की शोभा नहीं। बुद्धिमान् वही जो समय पर अपनी बात सुना कर अपना काम साधे। जिस को प्रौढि नहीं उस का पढना व्यर्थ है। शास्त्रों में लिखा भी है कि,

> प्रागल्भ्यहीनस्य नरस्य शास्त्रं शस्त्रं तथा कापुरुषस्य हस्ते।
> नो प्रीतिमुत्पादयते शरीरे अन्धस्य भार्या इव दर्शनीया:॥

कृष्ण ने क्रोध कर (गर्ज कर और अपना पराक्रम देखा कर) कंस को मारा, गूँगे की फूँक से वंशी नहीं बजती, अर्थात् जिस के गले में बोलने की सामर्थ्य नहीं वह क्या वंशी बजावेगा! (ऐसा विचार कर) जहाँ क्रोध से बढा हुआ राजा गन्धर्व-सेन

(बैठा) था वहाँ आगे जा कर (वह) भाट खडा हो गया। सब राजा राय को (गन्धर्व-सेन के आगे) खडा देख कर बाएँ हाथ से (गन्धर्व-सेन को) आशीर्वाद दिया। (और कहने लगा कि) हे गन्धर्व-सेन तूँ बडा राजा है, और मैं (भाट) महादेव की मूर्त्ति हूँ, ऐसा (लोगों ने) कहा है। (सो सुन) योगी पानी है और हे राजा, तूँ आग है, आग और पानी से युद्ध नहीं सोहता ॥

हे राजा, तूँ मन में समझ आग पानी से बुझ जाती है। (यह योगी) तेरे ही दरवाजे पर खप्पड लिए (आया है। इसे) भीख दे, लड मत ॥ २७१ ॥

चउपाई।

भइ अगिआँ को भाट अभाऊ। बाएँ हाथ दीन्ह बरभाऊ ॥
को जोगी अस नगरी मोरी। जो देइ सेँधि चढइ गढ चोरी ॥
इँदर डरइ निति नावइ माथा। किरिसुन डरइ कालि जेइँ नाथा ॥
बरँभा डरइ चतुर-मुख जासू। अउ पातार डरइ बलि बासू ॥
मेघ डरहिँ बिजुरी जिन्ह डीठी। कुरुम डरइ धरती जेहि पीठी ॥
धरति डरइ मंदर अरु मेरू। चंद सुरुज अउ गगन कुबेरू ॥
चहउँ तो सब भंजउँ गहि केसा। अउ को कीट पतंग नरेसा ॥

दोहा।

बोला भाट नरेस सुनु　गरब न छाजा जीउँ।
कुंभकरन कइ खोपडी　बूडत बाँचा भीउँ ॥ २७२ ॥

भइ = बभूव = हुई। अगिआँ = आज्ञा = हुक्म। को = कः = कौन। भाट = स्तुति करने-वाला। अभाऊ = अभागा = अभाग्य। बाएँ = वाम। हाथ = हस्त। दीन्ह = अदात् = दिया। बरभाऊ = वरभाव = आशीर्वाद। जोगी = योगी। अस = एतादृश = ऐसा। नगरी = पुरी = शहर। मोरी = मम = मेरी। जो = यः। देइ = दत्त्वा = दे कर। सेँधि = सन्धि = सेँध। चढइ = उच्चलति = चढता है। गढ = गाढ = दुर्ग = किला। चोरी = चौर्येण = चोरी से = चोरी के लिये। इँदर = इन्द्र = देवताओँ का राजा डरइ = दरति = डरता है। निति = नित्य = रोज। नावइ = नामयति = नवाता है = झुकाता है। माथा = मस्तक = शिर। किरिसुन = कृष्ण = यदुवंशिओँ में प्रधान पुरुष।

कालि = कालिय नाग जिस की कथा श्रीमद्भागवत दशमस्कन्ध में प्रसिद्ध है। जेइँ = येन = जिस ने। नाथा = नाथइ (नाथते) का भूत-काल, पुंलिङ्ग, प्रथम-पुरुष, एक-वचन। बरँभा = बरह्मा = ब्रह्मा = सृष्टि के रचने-वाले त्रिदेव में एक देव। चतुर-मुख = चतुर्मुख = जिसे चार मुँह हो। जासू = यस्य = जिस को। अउ = अपि = और। पातार = पाताल। बलि = राजा बलि। बासू = वासुकि-नाग = आठ नागों में एक प्रसिद्ध नाग। मेघ = पानी बरसाने-वाले बादल। डरहिँ = डरइ (दरति) का बहु-वचन = डरते हैं। बिजुरी = विद्युत् = बिजली। जिन्ह = येषाम् = जिन की। डीठी = दृष्टि = आँख = नेत्र। कुरुम = कूर्म = कच्छप = पृथ्वी का आधार = भगवान का एक अवतार। धरती = धरित्री = भूमि। जेहि = यस्य = जिस की। पीठी = पृष्ठ = पीठ। मंदर = मन्दर = एक पहाड जिस से समुद्र मथा गया है। मेरू = मेरु = सोने का प्रसिद्ध पर्वत जिस पर देवता वास करते हैँ। चंद = चन्द्र = चाँद। सुरुज = सूर्य। गगन = आकाश। कुबेरू = कुवेर = रावण का बडा भाई, धन का देवता। चहउँ = इच्छेयम् = चाहैं। तो = तर्हि = तो। भंजउँ = भञ्जेयम् = नाश करूँ = तोड डालूँ। गहि = गहीला = ग्रहण कर = पकड कर। केसा = केश = बाल। कीट = कीडे, रेँगने-वाले। पतंग = कीडे, उडने-वाले। नरेसा = नरेश = राजा लोग॥

बोला = बोलइ (वदति) का भूत-काल, पुंलिङ्ग, प्रथम-पुरुष, एक-वचन। नरेस = नरेश = राजा। सुनु = शृणु = सुन। गरब = गर्व = अभिमान। छाजा = छाज = छाजइ (सज्जते वा शोभते) सोहता है = छाजता है। जीउँ = जीवे = जीव में। कुंभकरन = कुम्भकर्ण = रावण का भाई। कइ = की। खोपडी = करोटी = मस्तक के ऊपर का हिस्सा। बूडत = बूडने से = (ब्रुड धातु से) डूबने से। बाँचा = बच गया। भीउँ = भीम = युधिष्ठिर से छोटा और अर्जुन से बडा पाँचो पाण्डवों में एक प्रसिद्ध कुन्ती का पुत्र॥

(राजा गन्धर्व-सेन की) आज्ञा हुई कि (यह) कौन अभागा भाट है जिस ने बाएँ हाथ से (मुझे) आशीर्वाद दिया है। (और) मेरे शहर में ऐसा कौन योगी है जो कि सेँध दे कर चोरी करने के लिये गढ पर चढता है। (मुझ से) इन्द्र डरता है, नित (मेरे सामने) माथ झुँकाता है। जिस कृष्ण ने कालिय नाग को नाथा है वह (मुझ से) डरता है। जिस ब्रह्मा को चार मुँह है वह (मुझ से) डरता है, और पाताल में बलि और वासुकि नाग (मुझ से) डरते हैँ। जिन की आखोँ में बिजली बसती है वे मेघ (भी मुझ से) डरते हैँ। जिस को पीठ पर धरती है

वह कच्छप (भी मुझ से) डरता है। मुझ से धरती, मन्दर और मेरु डरते हैं, आकाश में चन्द्र, सूर्य और कुवेर डरते हैं। चाहूँ तो (शिर के) बाल पकड़ कर सब को (पटक कर) तोड़ डालूँ (मार डालूँ)। (जब मैं इन लोगों को कुछ नहीं समझता, तो) और (मेरे सामने) कीड़े, फतंगे ऐसे राजा लोग कौन हैं॥

(राजा गन्धर्व-सेन की अभिमान भरी बात को सुन कर) भाट बोला कि राजा गन्धर्व-सेन, सुन, जी में गर्व नहीं सोहता। भीम (जिसे अपने बल का बहुत ही अभिमान था) कुम्भकर्ण की खोपड़ी में डूबते डूबते बच गया॥

कश्यप को अदिति स्त्री से जो पुत्र हुए वे देवता कहाते हैं। उन में सब से जेठा इन्द्र, देवताओं का राजा, अमरावती नगरी में रहता है। पुराणों में प्रसिद्ध कथा है कि जो पृथ्वी का राजा सौ अश्वमेध करे वह इन्द्र हो जाय। इसी लिये जब किसी राजा को ९९ अश्वमेध यज्ञ पूरी हो जाती है, तब इन्द्र डर कर सौवें अश्वमेध में विघ्न करता है जिस में वह पूरी न हो।

कृष्ण की कथा श्रीमद्भागवत में प्रसिद्ध है। इन के पिता वसु-देव और माता कंस की बहिन देवकी हैं॥

ब्रह्मा क्षीरशायी भगवान के नाभिकमल से उत्पन्न हुआ है। पुराणों में कथा है कि प्रलय काल में भगवान क्षीर-सागर में शेष के ऊपर सो जाते हैं। फिर जब उन की इच्छा सृष्टि करने की होती है, तब उन की नाभी से एक कमल का वृक्ष उत्पन्न होता है। उस का नाल जब जल के ऊपर आता है तब उस में पुष्प उत्पन्न होता है। उसी कमल के फूल में सृष्टि करने के लिये ब्रह्मा उत्पन्न होता है।

बलि प्रह्लाद का पुत्र है। ऐसा दानी राजा कोई नहीं हुआ। अपने दान और यज्ञ के प्रभाव से इस ने इन्द्र की पदवी को ले लिया। इन्द्र बहुत दुःखी हुआ। इस पर अदिति के गर्भ से भगवान ने वामन-रूप उत्पन्न हो कर बलि को छल कर, इन्द्र को फिर स्वर्ग का राजा और बलि को पाताल का राजा बनाया। पुराणों में प्रसिद्ध कथा है।

वासुकि के लिये इस ग्रन्थ का १६५ पृष्ठ देखो।

मेघ पानी बरसाने-वाले इन्द्र के अनुचर हैं।

ज्योतिषी लोग अपने पञ्चाङ्ग में नव मेघ लिखते हैं, जिन के नाम— आवर्त्त १। संवर्त्त २। पुष्कर ३। द्रोण ४। काल ५। नीलक ६। वरुण ७। वायु ८। तम ९। ये हैं।

मकरन्द-कल्पलता में लिखा है—

शाके ऽष्टगुणिते नन्दैर्भाजिते शेषतो घनः । आवर्त्त एकशेषे स्यात् संवर्त्ताख्यो द्विशेषके ॥
त्रिशेषे पुष्करो द्रोणश्चतुःशेषे प्रकीर्त्तितः । कालनामा पञ्चशेषे षट्शेषे नीलकः स्मृतः ॥
वरुणः सप्तशेषे स्याद्वायुरष्टावशेषके । नवशेषे तमो नामा क्रमान्मेघा नव स्मृताः ॥

कच्छप एक भगवान का अवतार है। पुराणों में कथा है कि जब चीर-सागर मथने जाने लगा उस समय मन्दर मथानी के ठहरने के लिये भगवान ने कच्छप का रूप धारण किया। फिर कच्छप और वराह (शूकरावतार) ये दोनों पृथ्वी को नीचे गिरने से रोके हुए हैं। शेष भी अपने हजार फनों से पृथ्वी को रोके हुए है जिस में पृथ्वी नीचे न चली जाय ॥

कथा है कि एक वार युधिष्ठिर के छोटे भाई भीमसेन अभिमान से अपने साथिओं से कहते बरसात में कहीं चले जाते थे कि कुम्भकर्ण में कुछ भी बल न था। जौं आज वह होता तो मैं एक हाथ से उसे उठा कर समुद्र पार फेंक देता। इस बतकही में ऊपर आँख किए अभिमान से भरे बडे उमंग से आगे आगे चले जाते थे। नीचे की ओर नजर न रहने से अकस्मात् एक पानी भरे बडे ताल में गिर कर डूबने लगे। साथिओं के बडे जतन से मरते मरते निकले। फिर पीछे से पता लगाने पर जान पडा कि कुम्भकर्ण की खोपडी पानी से भरी हुई बडे ताल ऐसी हो गई है। तुलसी-दास के रामायण में भी किसी ने चेपक में लिखा है कि 'जोजन तीन सीस की फेरी' अर्थात् कुम्भकर्ण के शिर की फेरी (खोपडी) तीन योजन याने बारह कोस की थी। भारतवर्ष में भीमसेन के अभिमान-भंग की यह कथा घर घर प्रसिद्ध है पर मुझे अभी तक इस का पता न लगा कि यह कथा किस पुराण की है ॥ २७२ ॥

चउपाई ।

राओन गरब बिरोधा रामू । उहई गरब भएउ सँगरामू ॥
तेहि राओन अस को बरिवंडा । जेहि दस सीस बीस बहु-दंडा ॥
सूरज जेहि कइ तपइ रसोई । बइसंदर निति धोती धोई ॥
सूक सउँटिआ ससि मसिआरा । पउनु करइ निति बार बोहारा ॥
मीचु लाइ कइ पाटी बाँधी । रहा न ओ सउँ दोसरि काँधी ॥

जो अस बजर टरइ नहिँ टारा। सोउ मुआ दुइ तपसिन्ह मारा ॥
नाती पूत कोटि दस अहा। रोअनिहार न एकउ रहा ॥

दोहा।

ओछ जानि कइ काहुही जनि कोइ गरब करेइ।
ओछे पारइँ दइउ हइ जीत-पतर जो देइ ॥ २७१ ॥

राओन = रावण = प्रसिद्ध लङ्का का राजा। गरब = गर्वेण = गर्व से अभिमान से। बिरोधा = बिरोधइ (विरोधयति) का भूत-काल, पुंलिङ्ग, प्रथम-पुरुष, एक-वचन। रामू = राम = भगवान का प्रसिद्ध एक अवतार = दशरथ का पुत्र। उहई = वही = तेनैव। भएउ = बभूव = हुआ। सँगरामू = सङ्ग्राम = युद्ध। तेहि = तस्य = तिस। अस = ऐसा = एतादृश। को = कः = कौन। बरिवंडा = बलवन्त = बलवान्। जेहि = यस्य = जिसे। दस = दश। सीस = शीर्ष = शिर। बीस = विंशति। बाहु-दंडा = बाहु-दण्ड = भुज-दण्ड। सूरज = सूर्य। कइ = की। तपइ = तपति = तपता है। रसोई = रसवती। बइसुंदर = बैश्वानर = आग। निति = नित्य। धोती = धौत वस्त्र। धोई (धावयति) = धोअइ = का भूत-काल, स्त्रीलिङ्ग, प्रथम-पुरुष, एक-वचन। सूक = शुक्र तारा। सउँटिआ = सोँटिआ = सोँटाबर्दार = द्वारपाल। ससि = शशि = चन्द्रमा। मसिआरा = मशालची = मशाल देखाने-वाला। पउनु = पवन = हवा = वायु। करइ = करोति = करता है, यहाँ करता था। बार = द्वार = दरवाजा। बोहारा = बोहारइ (व्याहारयति) = बोहार। मीँचु = मृत्यु = मौत। लाइ करि = आलाय = ले कर = पकड कर। पाटी = पट्टिका = पट्टी। बाँधी = बाँधइ (बध्नाति) का भूत-काल, स्त्रीलिङ्ग, प्रथम-पुरुष, एक-वचन। रहा = आसीत्। ओ सउँ = तत्सदृश = उस के ऐसा। दोसरि = द्वितीय = दूसरा। काँधी = कन्धादेने-वाला = बराबरी करने-वाला। जो = यः। बजर = वज्र। टरइ = टरता = चलता। टारा = टालने से = चलाने से। सोउ = सोऽपि = वह भी। मुआ = ममार = मर गया। दुइ = द्वौ = दो। तपसिन्ह = तपसी (तपस्वी) का बहु-वचन। मारा = मारइ (मारयति) का भूत-काल, पुंलिङ्ग, प्रथम-पुरुष, बहु-वचन। नाती = नप्ता = कन्या का पुत्त्र, या पौत्र, पुत्र का लडका। पूत = पुत्त्र = बेटा। कोटि = करोड। दस = दश। अहा = आसीत्, यहाँ आसन् = थे। रोअनिहार = रोनेवाला। एकउ = एकोऽपि = एक भी। रहा = ठहरा = तस्थौ ॥

ओछ = तुच्छ = छोटा । जानि कइ = ज्ञात्वा = जान कर । काऊही = कस्यापि = किसी को । जनि = न = नहीं । कोइ = कोऽपि = कोई । करेइ = कुर्यात् = करे । पारइँ = पक्षे = पक्ष में । दइउ = देव = भगवान । हइ = है = अस्ति । जीत-पतर = जयपत्र = विजय का परवाना । देइ = दत्ते = देता है ॥

रावण ने गर्व कर राम से विरोध किया, उसी गर्व के कारण (राम-रावण से) सङ्ग्राम हुआ । उस रावण के ऐसा कौन बलवान था जिसे कि दश शिर और बीस भुज-दण्ड थे । जिस की रसोईं में सूर्य तपता था, अर्थात् आग का काम सूर्य से लिया जाता था, आग धोती धोती थी । (सप्तशती दुर्गास्तोत्र के ४ अध्याय के ५२ श्लोक में शुंभ-निशुंभ की प्रशंसा में लिखा है कि 'वह्निरपि ददौ तुभ्यमग्निशौचे च वाससी' ।) शुक्र सोँटेदार, चन्द्रमा मशालची, और वायु दरवाजे पर झाड़ू देता था । (जिस रावण ने) मौत को पकड कर (चारपाई की) पाटी में बाँध रक्खा था, उस रावण का बराबरी करने-वाला दूसरा कोई भी नहीं था । जो (रावण) वज्र के ऐसा था, किसी के टालने से नहीं टलता था, वह भी (गर्व ही के करने से) मरा, दो तपसिओं (राम-लक्ष्मण) ने (उसे) मार डाला । (जिस रावण को) दश करोड नाती और बेटे थे (उस की दुर्गति ऐसी हुई कि मरने पर उस के नाम पर) एक भी रोने-वाला न ठहरा अर्थात् नाती बेटे में कोई भी न रहा जो उस के नाम पर दो चार बूँद आँसू टपकाता ॥

(भाट कहता है कि हे राजा गन्धर्व-सेन, ऐसा जान कर) किसी को छोटा समझ कर (उचित है कि) कोई अभिमान न करे । भगवान छोटे का पक्ष करता है, जो कि विजय-पत्र देता है, अर्थात् विजय-पत्र देने-वाला है ॥ २७३ ॥

चउपाई ।

अउरु जो भाट उहाँ हुत आगे । बिनइ उठा राजा रिस लागे ॥
भाट आहि ईसुर कइ कला । राजा सब राखहिँ अरगला ॥
भाट मौँचु जो आपनि दीसा । ता सउँ कउनु करइ रिस रीसा ॥
भएउ रजाएसु गँधरब-सेनी । काह मौँचु कइ चढा निसेनी ॥
काहे अनबानी अस धरई । करइ बिटंड भटंत न करई ॥

जाति करा कित अउगुन लावसि । बाएँ हाथ राज बरभावसि ॥
भाट नाउँ का मारउँ जीवा । अबहूँ बोल नाइ कइ गीवा ॥

दोहा ।

तूँ रे भाट यह जोगी तोहि एहि कहाँ क संग ।
कहाँ छरइ अस पावा कहा भएउ चित भंग ॥ २७४ ॥

अउरु = अपर = और । जो = जो = यः । भाट = भट = स्तुति करने-वाला । उहाँ = तत्र = वहाँ । हुत = आसीत् = था । आगे = अग्रे = सामने । बिनइ = विनीय = विनय कर । उठा = उत्तस्थौ । रिस = रोष = क्रोध । लागे = लग्ने = लगने पर । आहि = अस्ति = है । ईसुर = ईश्वर = भगवान या महादेव । कइ = की । कला = अंश = अवतार । सब = सर्व । राखहिँ = राखइ (रक्षति) का बहु-वचन = रखते हैँ । अरगला = अर्गला = अगडी = अवरोधक = बन्धन । मीँचु = मृत्यु = मौत । आपनि = अपनी = आत्मनः । दीसा = दीस = देखइ (पश्यति) = देखता है । ता सउँ = तिस से = उस से । कउनु = को नु = कौन । करइ = कुर्यात् = करे । रिस = रोषेण । रीसा = रोष = क्रोध । भएउ = बभूव = हुई । रजाएसु = राजाज्ञा = हुक्म । गँधरब-सेनी = गन्धर्व-सेनी = गन्धर्व-सेन की । काह = किम् = क्या । चढा = चढइ (उच्चलति) का भूत-काल, प्रथम-पुरुष, एक-वचन । निसेनी = निश्रेणी = सीढी । काहे = कथं वा किमर्थम् । अनबानी = अनुचितवाणी = कुवाणी, वा अणुवाणी = छोटी बोली । अस = एतादृश = ऐसी । धरई = धरति = धरता है । बिटंड = वितण्डावाद = बखेडा । भटंत = भटता = भाट का काम । करई = करइ = करता है = करोति । जाति = ज्ञाति = जात । करा = कला । कित = कुतः = क्योँ । अउगुन = अवगुण = दोष । लावसि = लागयसि = लगाता है । बाएँ = वाम । हाथ = हस्त । राज = राज्ञः = राजा को । बरभावसि = वरं भावयसि = आशीर्वदसि = आशीर्वाद देता है । नाउँ = नावँ = नाम । का = किम् = क्या । मारउँ = मारूँ = मारयेयम् । जीवा = जीव = प्राण । अबहूँ = अद्यापि = इदानीमपि = अब भी । बोल = वद । नाइ कइ = विनमय्य = झुँका कर = नवा कर । गीवा = ग्रीवा = गला ॥

तूँ = त्वम् = तैँ । रे = अरे = नीच सम्बोधन । जोगी = योगी । तोहि = त्वत्तः = तुझ से । एहि = अस्मात् = इस से । कहाँ = कस्य । क = का । संग = सङ्ग = साथ ।

कहाँ = कुत्र । छरद = छरने के लिये = नाश करने के लिये = चरणार्थ । पावा = पावइ (प्राप्नोति) का भूत-काल, प्रथम-पुरुष, एक-वचन । कहा = कथम् = क्यों । चित = चित्त = मन । भंग = भङ्ग = विकार ॥

और (फिर) जो वहाँ भाट आगे (खडा) था (वह) राजा गन्धर्व-सेन के क्रोध होने पर विनय कर के खडा हो गया। (और फिर क्रोध में आ कर कहने लगा कि) भाट ईश्वर की कला है, सब राजा लोग (भाट को) अर्गला के लिये (अनुचित कार्य के रोकने के लिये) रखते हैं। जो भाट (सदा) अपनी मौत देखा करता है, उस से कौन क्रोधी क्रोध कर सकता है, अर्थात् जो मौत को नहीं डरता उस पर कोई क्या क्रोध करे। (भाट की ऐसी खरी बात सुन कर) गन्धर्व-सेन को आज्ञा हुई कि (अरे भाट) क्या मौत की सीढी पर चढा है। क्यों ऐसी अनुचित वाणी (मन में) रखता है, क्यों बखेडा करता है, क्यों नहीं भाट के ऐसी बात करता। (तेरी) जात (ईश्वर की) कला है (उस में) क्यों दोष लगाता है, क्यों राजा को बाएँ हाथ से आशीर्वाद देता है। तेरा नाम भाट है, (इस लिये) क्या तेरे जीव को मारूँ, (सावधान हो जा) अब भी गर्दन को झुका कर (उचित बात को) बोल ॥

अरे तू तो भाट और यह योगी, तुझ से और इस (योगी) से कहाँ का सङ्ग। (अपने को) नाश करने के लिये कहाँ ऐसा (योगी का) सङ्ग पाया, क्यों (तेरा) चित्त भङ्ग हो गया ॥ २७४ ॥

चउपाई ।

जो सत पूँछसि गँधरब-राजा । सत पइ कहउँ परइ किन गाजा ॥
भाटहि कहा मीँचु सन डरना । हाथ कटार पेट हनि मरना ॥
जंबुदीप जो चितउर देसू । चितर-सेन बड तहाँ नरेसू ॥
रतन-सेन यह ता कर बेटा । कुल चहुआन जाइ नहिँ मेटा ॥
खाँडे अचल सुमेरु पहारू । टरइ न जउँ लागइ संसारू ॥
दान सुमेरु देत नहिँ खाँगा । जो ओहि माँग न अउरहि माँगा ॥
दाहिन हाथ उठाएउँ ताही । अउरु को अस बरभावउँ जाही ॥

दोहा ।

नाउँ महापातर मोहिँ　　तेहि क भिखारी ढीठ ।
जउँ खरि बात कहत रिस (लागइ)　　खरिअइ कहहिँ बसीठ ॥ २७५ ॥

जो = जौँ = यदि । सत = सत्य = सच । पूँछसि = पृच्छसि = पूछता है । गँधरब-राजा = गन्धर्व-राज = गन्धर्व-सेन राजा । पइ = अपि = निश्चय कर । कहउँ = कथयामि = कहता हूँ । परइ = पतेत् = पडे । किन = किमु न = क्यौँ न । गाजा = गर्ज्या = गरजने-वाली = बिजली । भाटहि = भटस्य = भाट को । कहा = किम् = क्या । मौँचु = मृत्यु = मौत । सन = से । डरना = दरण = भय करना । हाथ = हस्त । कटार = कर्त्तक = काटने-वाला । पेट = पिटक = उदर । हनि = हत्वा = हन कर = मार कर । मरना = मरण । जंबुदीप = जम्बूद्वीप । जो = यः । चितउर = चित्रवर, वा = चित्रपुर = चितौर गढ । देसू = देश । चितर-सेन = चित्र-सेन । बड = वर = बडा । तहाँ = तत्र । नरेसू = नरेश = राजा । रतन-सेन = रत्न-सेन । यह = अयम् । ता कर = तस्य = तिस का = उस का । बेटा = वत्स = वेत्र = आधार = पुत्त्र । कुल = वंश । चहुआन = चतुःस्थान = चौहान । जाइ = जायते । मेटा = मार्ष्टि स्म = मिटाया । खाँडे = खण्डक = काटने-वाला या खाँडा = खड्ग = तलवार । अचल = अटल । सुमेरु = सोने का सब से श्रेष्ठ पर्वत । पहारू = प्रहार = पहाड । टरइ = चलति = टरता है । जउँ = यदि = जौँ । लागइ = लगेत् = लगे । संसारू = संसार । देत = देने में । खाँगा = कम = शुष्क = खुक्ख = खाली खङ्ग (खजि गतिवैकल्ये) । ओहि = तस्मात् = उस से । माँग = माँगइ (याचते) । अउरहि = अपरस्मात् = और से = दूसरे से । माँगा = माँगता = जाँचता । दाहिन = दक्षिण = दहिना । उठाएउँ = उत्थापयामास = उठाया । ताही = तिसे = उसे । को = कः = कौन । अस = एतादृश = ऐसा । बरभावउँ = वरं भावयेयम् = आशीर्वाद देऊँ ।

नाउँ = नाम = नावँ । महापातर = महापात्र । मोहिँ = मम = मेरा । क = का । भिखारी = भिक्षुक । ढीठ = धृष्ट = ढीठा । खरि = खरी = सच्ची = खर । बात = वार्त्ता । कहत = कथयतः = कहने से । रिस = रोष = क्रोध । (लागइ) = लगति = लगती है । खरिअइ = खरी-ही = सच्ची-ही । कहहिँ = कथयन्ति = कहते हैँ । बसीठ = दूत = वशिष्ठ ॥

(भाट बोला कि) जौँ राजा गन्धर्ब-सेन तू सच पूछता है (तो मैं) निश्चय कर सच कहता हूँ, (उस सच के कहने से मेरे ऊपर) बिजली क्यौँ न पडे (पर मैं सच

कहना नहीं छोडूँगा)। भाट को क्या मौत से डरना, (भाट के) हाथ में कटार है (सच कहने पर जौं आप को बुरा लगे तो आप क्या मुझे मारेंगे मुझे तो) पेट में कटार मार कर (आप) मरना है। (अब मैं सच बात कहता हूँ, सुन,) जम्बूद्वीप में जो चितौर देश है, वहाँ का (सब से) बडा राजा चित्र-सेन था। यह रत्न-सेन उस का बेटा है, (यह) चौहान वंश का है (जो कर्म में लिखा रहता है वह) मिटाया नहीं जाता। तलवार चलाने में सुमेरु पहाड ऐसा अचल है, जौं सारा संसार लगे तौ भी टरने-वाला नहीं। दान देने में सुमेरु के ऐसा है (कभी ऐसा नहीं कि धन) घटे; जो कोई उस से माँगता है वह दूसरे से नहीं माँगता, अर्थात् राजा रत्न-सेन के दान से वह सन्तुष्ट हो जाता है, फिर उस को दूसरे से माँगने की जरूरत नहीं पडती। (हे राजा गन्धर्ब-सेन, सुन, मैं आशीर्वाद देने के लिये अपना) दहिना हाथ उस के (आगे) उठा चुका हूँ, (अब) दूसरा ऐसा कौन है जिसे (दहिने हाथ से) आशीर्वाद दूँ ॥

मेरा नाम महापात्र है मैं उसी (रत्न-सेन) का ढीठा भिखारी हूँ (उसी के आगे दहिना हाथ उठाने-वाला हूँ)। यद्यपि खरी बात कहने से (सुनने-वाले को) क्रोध हो जाता है, पर दूत (बुरा लगे तो लगे) सच्ची ही बात कहते हैं ॥

विश्वनाथ महापात्र ने काव्यप्रकाश बनाया है। ये बडे कवि थे इसी लिये ग्रन्थकार ने आदर के लिये केवल पदवी मात्र से भाट का नाम महापात्र रक्खा हो तो आश्चर्य नहीं ॥ २७५ ॥

चउपाई ।

ततखन सुनि महेस मन लाजा। भाट कला होइ बिनवा राजा ॥
गँधरब-सेन तुँ राजा महा। हउँ महेस मूरति सुनु कहा ॥
पइ जो बात होइ भलि आगइँ। कहा चाहि का भा रिस लागइँ ॥
राज-कुअँर यह होइ न जोगी। सुनि पदुमावति भएउ बिओगी ॥
जंबूदीप राज-घर बेटा। जो हइ लिखा सो जाए न मेटा ॥
तोरइ सुअइँ जाइ एहि आना। अउ जा कर बरोक तुइँ माना ॥
पुनि यह बात सुनी सिउ लोका। करहु बिआह धरम बड तो का ॥

दोहा।

खपर लिए उहई पइ माँगइ मुएहु न छाडइ बारु।
बूझि देखु जो कनक कचउरी देहु भीख नहिँ मारु॥ २७६॥

ततखन = तत्क्षणे = उस चण में। सुनि = श्रुत्वा = सुन कर। महेस = महेश = महादेव। लाजा = लज्जित ऊआ। भाट = भट = स्तुति करने-वाला। कला = अंश = रूप। होइ = भूत्वा = हो कर। बिनवा = बिनवइ (विनमति) का भूत-काल, प्रथम-पुरुष, एक-वचन। गँधरब-सेन = गन्धर्ब-सेन। तुँ = त्वं = त्वम्। महा = महान् = बडा। हउँ = हौं = अहम् = मैं। मूरति = मूर्त्ति। सुनु = शृणु = सुन। कहा = कहते हैं = कहा गया है = कथ्यते। पइ = अपि = निश्चय कर। जो = यः, यहाँ या। बात = वार्त्ता। होइ = भवति = होती है। भलि = भली = वर = अच्छी। आगइँ = अग्रे = आगे। कहा चाहि = कहना चाहिए। का = क्या = किम्। भा = बभूव = भया = ऊआ। रिस = रोष = क्रोध। लागइँ = लगने से = लग्नतः। राज-कुअँर = राज-कुमार। यह = अयम्। होइ = अस्ति = है। जोगी = योगी। पदुमावति = पद्मावती। भएउ = बभूव = भया = ऊआ। बिओगी = वियोगी = विरही। जंबूदीप = जम्बूदीप। राज-घर = राज-गृह = राज-घराना। बेटा = वत्स वा वेच। लिखा = लेख। सो = सः = वह। जाए = जाय = जायते। मेटा = मिटाया = मार्ष्टि स्म (मृजू शुद्धौ से)। तोरइ = तवैव = तेरा ही। सुअइँ = शुकेन = सुग्गे ने। जाइ = आयाय = जा कर। एहि = अमुम् = इसे। आना = आनयत् = ले आया। अउ = अपि = और। जा कर = यस्य = जिस का। बरोक = वरेचण = बरच्छा = बरेखी। तुइँ = त्वया = तैँ ने। माना = मानइ (मन्यते) का भूत-काल, प्रथम-पुरुष, पुंलिङ्ग, एक-वचन। पुनि = पुनः = फिर। सुनी = सुनइ (शृणोति) का भूत-काल, प्रथम-पुरुष, स्त्रीलिङ्ग, एक-वचन। सिउ = शिव = महादेव। लोका = लोक। करऊ = कुरुथ = करिए। बिआह = विवाह = व्याह। धरम = धर्म। बड = बडा = बृहत्। तो का = तव = तुझे॥

खपर = खर्पर = खप्पड। लिए = लिए ऊए। उहई = वही = तामेव। माँगइ = याचते = माँगता है। मुएऊ = मृतेऽपि = मरने पर भी। छाडइ = छोडे (छोटयेत्) यहाँ छोडेगा। बारु = द्वार = बार। बूझि = सम्बुध्य = समझ कर = बूझ कर। देखु = पश्य = देख। कनक = सोना। कचउरी = कचौरी = तामा सोने का मेल। देऊ = दद्य = देओ। भीख = भिचा। मारु = मारय = मारो॥

उसी समय (राजा गन्धर्व-सेन के यहाँ बडे बडे लोग जो बैठे थे सभी ने भाट की बात की निन्दा करने लगे। उस निन्दा को) सुन कर महादेव (भाट) का मन लज्जित हो गया, (और) भाट की कला अर्थात् चाल ऐसे हो कर राजा गन्धर्व से विनय करने लगे, अर्थात् भाट के ऐसा दहिने हाथ से गन्धर्व-सेन, को आशीर्वाद दे कर भाट विनय करने लगा। राजा गन्धर्व-सेन, सुन, तूँ बडा राजा है (और लोग) मुझे (भाट को) महेश की मूर्त्ति कहते हैं। पर (ऐसी चाल है कि) जो बात आगे के लिये भली हो, उस को कहना चाहिए, क्रोध लगने से क्या हुआ, अर्थात् सुनने-वाले को क्रोध लगे तो लगे, पर भली बात को जरूर कहना चाहिए। भारवी ने माघकाव्य में सच लिखा है कि 'हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः'। हित की बात मनोहर भी हो यह दुर्लभ है। यह राज-कुमार है योगी नहीँ, पद्मावती (की सुन्दरता) सुन कर विरही हो गया है। जम्बूद्वीप के राज-घराने का बेटा है, जो (कर्म में) लिखा है वह मिटाया नहीँ जाता। तेरेई सुग्गा (हीरामणि) (जम्बू-द्वीप में) जा कर इस को ले आया है, और (यह वही राज-कुमार है) जिस का तैँ (पद्मावती के साथ ब्याह करने के लिये) बरच्छा माना है अर्थात् बरच्छा किया चाहता है। फिर यह बात शिव-लोक में (भी) सुनी गई है (वहाँ भी इस के साथ पद्मावती का ब्याह योग्य समझा गया है। सो आप इस के साथ पद्मावती का) ब्याह कीजिए। (ऐसा करने से) आप को बडा धर्म होगा॥

(यह) खप्पर लिए उसी (पद्मावती) को माँगता है, मरने पर भी (तुम्हारा) दरवाजा न छोडेगा। राजा तूँ बूझ कर देख जो यह (सच्चा) सोना है (या) कचौडी है। (मेरा कहना मान इसे) भीख देओ, मारो मत, अर्थात् पद्मावती के साथ इस का ब्याह कर दो, मारो मत। यही पद्मावती के योग्य वर है॥ २७६॥

चउपाई।

भाट सेस ईसुर जस भाखा। हनुवँत बीर रहइ नहिँ राखा॥
लीन्ह चूरि ततखन वइ छूरी। धरि मुख मेलेसि जानहुँ मूरी॥
महादेओ रन घंट बजावा। सुनि कइ सबद बरम्ह चलि आवा॥
चढे अतर लेइ बिसुन मुरारी। इँदर-लोक सब लाग गोहारी॥
फन-पति फन पतार सउँ काढा। असटउ कुली नाग भा ठाढा॥

तेइँतिस कोटि देश्रोता साजा। श्रउ छाँनबइ मेघु-दल गाजा ॥
छपन कोटि बइसुंदर बरा। सवा लाख परबत फरहरा ॥

दोहा।

नवइ नाथ चलि श्रावहीँ श्रउ चउरासी सिड्व।
श्रहुटि बजर जर धरती गगन गरुर श्रउ गिड्व ॥ २७७ ॥

भाट = भट = स्तुति करने-वाला। भेस = वेष = रूप। ईसुर = ईश्वर = महादेव। जस = यथा = जैसे। भाखा = भाखइ = (भाषते) का भूत-काल, पुंलिङ्ग, प्रथम-पुरुष, एक-वचन। हनुवँत = हनुमान्। बीर = वीर = योद्धा। रहइ = तिष्ठति = रहता है। राखा = रखने से = रक्षणतः। लीन्ह = अलात् = लिया। चूरि = चूर्ण = चूर। ततखन = तत्क्षणे = तिस क्षण में = उस क्षण में। वइ = वह वा उस। सूरी = शूली। धरि = धृत्वा = धर कर = पकड कर। मुख = मुँह। मेलेसि = अमेलयत् = मेल दिया = डाल दिया। जानऊँ = जाने = जानौं। मूरी = मूली = मूलिका = मुरई = एक खाने का कन्द। महादेश्रो = महादेव। रन = रण = सङ्ग्राम। घंट = घण्टा। बजावा = बजावइ (वादयति) का भूत-काल, पुंलिङ्ग, प्रथम-पुरुष, एक-वचन। सुनि कइ = श्रुत्वा = सुन कर। सबद = शब्द = श्रावाज। बरम्ह = ब्रह्मा। चलि श्रावा = श्रायात् = चला श्राया। चढे = चढइ (उच्चलति) का भूत-काल, पुंलिङ्ग, प्रथम-पुरुष, बहु-वचन। श्रतर = अस्त्र = जो कि मन्त्र से चलाया जाय। लेइ = श्रालाय = ले कर। बिसुन = विष्णु। मुरारी = मुरारि = मुर के शत्रु। इंदर-लोक = इन्द्र-लोक। सब = सर्व। लाग = लगइ (लगति) का भूत-काल, पुंलिङ्ग, प्रथम-पुरुष, एक-वचन। गोहारी = गोहार = गोपन = रक्षण = रक्षा करना। फनपति = फणिपति = साँपों का राजा = शेष नाग। फन = फणा। सउँ = से। काढा = काढइ (कर्षति) का भूत-काल, पुंलिङ्ग, प्रथम-पुरुष, एक-वचन। असटउ = अष्टौ = श्राठो। कुली = कुल के। नाग = साँप = सर्प। भा = बभूव = भया = हुआ, यहाँ हुए। ठाढा = खडा = उत्थान। तेइँतिस = तैंतीस = त्रयस्त्रिंशत्। कोटि = करोड। देश्रोता = देवता। साजा = साजइ (सज्जते) का भूत-काल, पुंलिङ्ग, प्रथम-पुरुष, एक-वचन। श्रउ = अपि = और। छाँनबइ = षण्णवति = छानबे। मेघु-दल = मेघ-दल = मेघों की सेना = बादलों के झुंड। गाजा = गाजइ (गर्जति = गरजइ) का भूत-काल, पुंलिङ्ग, प्रथम-पुरुष, एक-वचन। छपन = षट्पञ्चाशत् = छप्पन। बइसुंदर =

वैश्वानर = आग। बरा = बरइ (वरति) का भूत-काल, पुंलिङ्ग, प्रथम-पुरुष, का एक-वचन। सवा लाख = सपादलक्ष। परबत = पर्वत। फरहरा = फरहरइ (स्फुरति) का भूत-काल, पुंलिङ्ग, प्रथम-पुरुष, एक-वचन॥

नवइ = नवापि = नवो। नाथ = नाथान्त सिद्ध-पुरुष, गोरख-नाथादि। चलि = चल कर = चलिला। आवहीँ = आयान्ति = आते हैँ। चउरासी = चतुरशीति = चौरासी। सिद्ध = सिद्ध-पुरुष। अछूटि = औटन = आवर्त्तन। बजर = वज्र = बिजली। जर = जरइ (ज्वलति) = जरता है वा जरती है। धरती = धरित्री = भूमि। गगन = आकाश = आसमान। गरुर = गरुड = मांसखाने-वाला प्रसिद्ध पक्षी, जिसे इस प्रान्त मेँ ढकपडेर कहते हैँ। गिद्ध = गृध्र = मांसखाने-वाला प्रसिद्ध पक्षी॥

जैसे-ही भाट के वेष से महादेव ने (पिछले दोहे की बात) कही, (वैसे-ही) वीर हनुमान रखने से अर्थात् रोकने पर भी नहीँ रहे (झट उठ खडे हुए)। उसी क्षण मेँ उस शूली को चूर कर डाला, (और) पकड कर मुँह मेँ डाल लिया जानोँ (कोई) मूली मुँह मेँ डाल कर खाता हो। महादेव ने रण का घंटा बजाया, जिस का शब्द सुन कर (ब्रह्म-लोक से दौडे) ब्रह्मा चले आए। मुरारि विष्णु अस्त्र ले कर (लडने के लिये) चढाई किए; इन्द्र-लोक के सब लोग (रत्न-सेन की) रक्षा करने लगे। पाताल से शेष नाग ने अपने फन को निकाला, आठो कुल के नाग (आ कर) खडे हुए। तैँतिस करोड देवता (लडने की) तयारी करने लगे और छानवे बादलोँ के झुंड गरजने लगे। छप्पन करोड आग बरने लगी, सवा लाख पर्वत फरकने लगे॥

नवो-नाथ और चौरासी सिद्ध भी (वहाँ) चले आए। बिजली के औटने से भूमि जलने लगी। गरुड और गिद्ध (नर-मांस खाने के लिये) आकाश मेँ अँडराने लगे॥

हनुमान = केशरी के वीर्य से अञ्जना के गर्भ से उत्पन्न हुए हैँ, रामायण मेँ इन की कथा प्रसिद्ध है॥

महादेव, ब्रह्मा और विष्णु ये पुराणोँ मेँ प्रसिद्ध तीन देवता हैँ॥

इन्द्र-लोक मेँ इन्द्र रहता है। वह देवताओँ का राजा है, इस के लोक को स्वर्ग लोक कहते हैँ। इस की राजधानी अमरावतीपुरी और सभा सुधर्मा है। इस ने गौतम की स्त्री अहल्या का सत बिगाडा था। इस लिये गौतम के शाप से इस की देह मेँ हजार योनि हो गई थी। पीछे लङ्का विजय करने पर राम के वर से

वे सहस्र योनि सहस्र आँख हो गईं। इसी से इस का नाम सहस्राच हुआ। रामायण में इसकी सविस्तर कथा लिखी हुई है॥

फणिपति शेषनाग के ऊपर प्रलयकाल में भगवान विष्णु लक्ष्मी के साथ सोते हैं। शेष ही ने पतञ्जलि हो कर अष्टाध्यायी का भाष्य और कपिल हो कर योगशास्त्र को बनाया है॥

अष्टकुली नाग के लिये इस ग्रन्थ का १६५ पृ० देखो॥

ऋग्वेद में ग्यारह भूमि के, ग्यारह पाताल के और ग्यारह स्वर्ग के सब तैंतीस देवता लिखे हैं। पर पुराणों में एक एक के करोड करोड सन्तान मान कर तैंतीस करोड देवता लिखे हैं॥

ज्यौतिष के मेघमाला नाम ग्रन्थ में मन्दर के उत्तर १२ मेघ, बारह महीने के १२ मेघ, कैलास, विकट, जठर, मेरु, शृङ्ग, पारिजात, हिमवान्, और गन्धमादन पर्वत पर के दश दश मेघ सब ९४ लिखे हैं। ग्रन्थकार ने एक प्रलय काल का सांवर्त्तक और दूसरा मेघदूत का पुष्पकावर्त्त ले कर ९६ लिखा है, ऐसा जान पडता हैं। श्रीमद्भागवत दशमस्कन्ध के २५ अध्याय में लिखा है कि इन्द्र ने प्रलय करने-वाले सांवर्त्तादिक मेघों को ले कर व्रज पर चढाई किया था॥

अग्नि— श्रीमद्भागवत षष्ठस्कन्ध—१८ अध्याय के ३ श्लोक की टीका में 'पञ्च वा एते ऽग्नयो यच्चितय इति' यह श्रीधर लिखते हैं। इस से पाँच आग, और चतुर्थ-स्कन्ध के १ अध्याय के ५९—६० श्लोक—

स्वाहाभिमानिनश्चाग्नेरात्मजांस्त्रीनजीजनत्।
पावकं पवमानं च शुचिं च हुतभोजनम्॥
तेभ्यो ऽग्नयः समभवंश्चत्वारिंशच्च पञ्च च।
त एवैकोनपञ्चाशत् साकं पितृपितामहैः॥

इन से ४९ अग्नि हैं। दोनों के जोडने से ५४ अग्नि और स्मार्त्ताग्नि, श्रौताग्नि दो और अधिक करने से ५६ अग्नि होते हैं। इन के, तैंतिस देवताओं के सन्तान ऐसा, कोटि कोटि सन्तान मान कर ग्रन्थकार ने ५६ करोड अग्नि को लिखा है। वेदों में और कर्मकाण्डग्रन्थों में अनेक अग्नि के भेद लिखे हैं॥

पर्वत— पद्म-पुराण के उत्तर-खण्ड के दूसरे अध्याय में लिखा है कि सवा लाख पर्वतों के बीच में बदरिकाश्रम स्थित है। वहाँ नर और नारायण जी रहते हैं।

महेश उवाच ।

एकलक्षं पञ्चविंशत्सहस्राः पर्वतास्तथा ।

तेषां मध्ये महत्पुण्यं बद्रिकाश्रमसुत्तमम् ॥ १ ॥

नरो नारायणो देवो यत्र तिष्ठति नारद ।

तस्य स्वरूपं तेजश्च वच्यामीह च सांप्रतम् ॥ २ ॥

(वेङ्कटेश्वर छापेखाने की छपी पुस्तक, खेतवाडी-मुंबई)।

नवोनाथों के लिये इस ग्रन्थ का २४१ पृ० देखो ।

गोरख-नाथिओं में चौरासी सिद्ध हैं जिन के नाम नीचे लिखे ऊए हैं ।

सिद्ध-नाथ १ । बद्धपद्म-नाथ २ । दृढ-नाथ ३ । वीर-नाथ ४ । पवनमुक्त नाथ ५ । धीर-नाथ ६ । श्वास-नाथ ७ । पश्चिमतान-नाथ ८ । वातायन-नाथ ९ । मयूर नाथ १० । मत्स्येन्द्र-नाथ ११ । कुक्कुट-नाथ १२ । भद्र-नाथ १३ । अर्धपाद-नाथ १४ । पूर्णपाद-नाथ १५ । दक्षिण-नाथ १६ । शव-नाथ १७ । अध्व-नाथ १८ । धनुष-नाथ १९ । पादशिरा-नाथ २० । द्विपादशिरा-नाथ २१ । स्थिर-नाथ २२ । वृक्ष-नाथ २३ । अर्धवृक्ष-नाथ २४ । चक्र-नाथ २५ । ताल-नाथ २६ । ऊर्ध्वधनुष-नाथ २७ । वामसिद्ध-नाथ २८ । स्वस्तिक-नाथ २९ । स्थितविवेक-नाथ ३० । उत्थितविवेक-नाथ ३१ । दक्षिणतर्क-नाथ ३२ । पूर्वतर्क-नाथ ३३ । निःश्वास-नाथ ३४ । अर्धकूर्म-नाथ ३५ । गरुड-नाथ ३६ । व्याघ्र-नाथ ३७ । वामत्रिकोण-नाथ ३८ । प्रार्थना-नाथ ३९ । दक्षिणसिद्ध-नाथ ४० । पूर्णत्रिकोण-नाथ ४१ । वामभुज-नाथ ४२ । भयङ्कर-नाथ ४३ । अङ्गुष्ठ-नाथ ४४ । उत्कट-नाथ ४५ । वामाङ्गुष्ठ नाथ ४६ । ज्येष्ठिका-नाथ ४७ । वामार्धपाद-नाथ ४८ । वामभुजपाद-नाथ ४९ । भुजपाद-नाथ ५० । वामवक्र-नाथ ५१ । वामजानु-नाथ ५२ । वामशाख-नाथ ५३ । त्रिस्तम्भ-नाथ ५४ । वामपादापान-नाथ ५५ । वामहस्तचतुष्कोण-नाथ ५६ । गोमुख-नाथ ५७ । गर्भ-नाथ ५८ । एकपादवृक्ष-नाथ ५९ । मुक्तहस्तवृक्ष-नाथ ६० । हस्तवृक्ष-नाथ ६१ । द्विपादपार्श्व-नाथ ६२ । कन्दपीडन-नाथ ६३ । प्रौढ-नाथ ६४ । उपधान-नाथ ६५ । ऊर्ध्वसंयुक्तपाद-नाथ ६६ । अर्धशव-नाथ ६७ । उत्तानकूर्म-नाथ ६८ । सर्वाङ्ग-नाथ ६९ । अपान-नाथ ७० । योनि-नाथ ७१ । मण्डूक-नाथ ७२ । पर्वत-नाथ ७३ । शलभ-नाथ ७४ । कोकिल-नाथ ७५ । लोल-नाथ ७६ । उष्ट्र-नाथ ७७ । हंस-नाथ ७८ । प्राण-नाथ ७९ । कार्मुक-नाथ ८० । आनन्दमन्दिर-नाथ ८१ । खञ्जन-नाथ ८२ । ग्रन्थिभेदन-नाथ ८३ । भुजङ्ग-नाथ ८४ । इन लोगों ने, जिस जिस आसन से हठ-योग सिद्ध किए हैं, उन्हीं

आसन-संबन्धी नाम हैँ। जैसे जिस ने सिद्धासन से हठ-योग सिद्ध किया उस का नाम सिद्ध-नाथ पडा। कहीँ कहीँ इन के दूसरे नाम भी मिलते हैँ। काशी के श्रीरामशास्त्री-भारद्वाज के शिष्य ब्रह्मचारी नृसिंहशर्मा ने मुंबई "कर्नाटक" मुद्रालय में सन् १८९८ ई० में एक "चौरासी-आसन" नाम की पुस्तक छपवाई है। उस में चौरासी आसनोँ के अवान्तर भेद से ९७ आसन चित्र के साथ दिखलाए हैँ। परन्तु ज्यौतिषशास्त्र में सिद्ध शब्द से आज कल २४ संख्या लेते हैँ। जैनिओँ में चौबीस जिन देव सिद्ध हुए हैँ इस लिये जान पडता है कि आज कल प्रचलित ज्यौतिष-ग्रन्थोँ में 'जिन' या 'सिद्ध' वा 'अर्हत्' से चौबीस का ग्रहण करते हैँ॥

गोरक्ष-पद्धति में भी चौरासी लाख आसनोँ में से ८४ ही को मुख्य माना है।

चतुराशीतिलक्षाणामेकैकं समुदाहृतम्।
ततः शिवेन पीठानां षोडशोनं शतं (८४) कृतम्।

बहुत लोग दोहे के 'चउरासी सिद्ध' से चौरासी आसनोँ के द्वार से जो सिद्ध हैँ, उन्हेँ लेते हैँ॥ २७७॥

चउपाई।

जोगी धरि मेले सब पाछइँ। अउरु माल आए रन काछइँ॥
मंत्रिन्ह कहा सुनहु हो राजा। देखहु अब जोगिन्ह के काजा॥
हम जो कहा बड ता कर जूझू। होत आउ दर बहुत असूझू॥
खन एक मँह छरहट होइ बीता। दर मँह छरहिँ रहइ सो जीता॥
कइ धीरज राजा तब कोपा। अंगद आइ पाँओ रन रोपा॥
हसति पाँच जो अगुमन धाए। ते अंगद धरि सूँड फिराए॥
दीन्ह अडारि सरग कहँ गए। लउटि न बहुरे तहँ के भए॥

दोहा।

देखत रहे अचंभउ जोगी हसति बहुरि नहिँ आए।
जोगिन्ह कर अस जूझब पुहुमि न लागहिँ पाए॥ २७८॥

जोगी = योगी। धरि = धृत्वा = धर कर = पकड कर। मेले = मेलइ (मेलयति) का भूत-काल, पुंलिङ्ग, प्रथम-पुरुष, बहु-वचन। सब = सर्व। पाछइँ = पृष्ठे = पीछे। अउरु = और = अपर। माल = मल्ल = कुश्ती लडने-वाले। आए = उपेयुः। रन =

रण = सङ्ग्राम । काछइँ = कच्छित = कच्छ कसे = लँगोटा कसे । मंचिन्ह = मन्त्रिभिः = मन्त्रिओं ने । कहा = अकथयत् । सुनज = शृणुथ = सुनिए । हो = अहो = हे = उच्च सम्बोधन । देखज = पश्यथ = देखिए । अब = इदानीम् = अधुना । जोगिन्ह = जोगी का बज-वचन । के = का का बज-वचन । काजा = कार्य = काम । हम = हौं वा मैं का बज-वचन । जो = यः = जो । बड = बृहत् = बडा । ता कर = तस्य = तिस का = उस का । जूझू = युद्ध । होत = होता = भवन् । आउ = आयाति = आता है । दर = दल = सेना । बजत = बजतर = अधिक । असूझू = असूझ = अशोध = जिस की गणना न हो । खन = चण । एक = एक । मँह = मध्ये = मेँ । छरहट = चरहट्टा = मरने की बाजार । होइ = भूला = हो कर । बीता = बीत = बीतता है = व्यत्येति । छरहिँ = चरन्ति = मरते हैँ । रहइ = तिष्ठति = रहता है । सो = सः = वह । जीता = जीत = जयति = जीतता है । कइ = क्त्वा = कर के । धीरज = धैर्य । तब = तदा । कोपा = चुकोप = कोप किया = क्रोध किया । अंगद = अङ्गद = बालि का पुत्र, सुग्रीव का भतीजा । आइ = एत्य = आ कर । पाँओ = पाद = पैर । रोपा = रोपइ (रोपयति रुह, बीजजन्मनि प्रादुर्भावे से) का भूत-काल, पुंलिङ्ग, प्रथम-पुरुष, एक-वचन । हसति = हस्ती = हाथी । पाँच = पञ्च । अगुमन = अग्रगमन = पहले । धाए = धावइ (धावति) का भूत-काल, पुंलिङ्ग, प्रथम-पुरुष, बज-वचन । ते = वे । सूँड = शुण्ड = हाथी का हाथ । फिराए = फिरावइ (भ्रमयति) का भूत-काल, पुंलिङ्ग, प्रथम-पुरुष, बज-वचन । दीन्ह = अदात् = दिया । अडारि = अधारण = प्रक्षेपण = फँक । सरग = स्वर्ग । कहँ = को । गए = जाइ (याति) का भूत-काल, पुंलिङ्ग, बज-वचन । लउटि = परावर्त्त्य = लौट कर । बजरे = फिरइ (परिवर्त्तयति) का भूत-काल, पुंलिङ्ग, प्रथम-पुरुष, बज-वचन । तहँ = तत्र । भए = बभूवुः = जए ॥

देखत = पश्यन् = देखते । रहे = तस्थुः = थे । अचंभउ = अचंभा = आश्चर्य । बजरि = फिर = भूयः । आए = आए । कर = का । अस = एतादृश = ऐसा । जूझब = योद्धव्य = जूझना = लडना । पुजमि = भूमि = पृथ्वी । लागहिँ = लगन्ति = लगते हैँ । पाँए = पाँय = पैर = पाद ॥

(पहले कहे जए ब्रह्मादिक ने) योगिओं को पकड कर पीछे कर दिए, और रण में लँगोटा कस कस सब (ब्रह्मादि) माल उतर पडे । (गन्धर्व-सेन के) मन्त्रिओं ने कहा कि हे राजा, (मेरी बात) सुनिए, अब योगिओं के काम को देखिए । हम ने जो

(पहले-ही आप से) कहा कि योगिओँ का संग्राम बडा (भयङ्कर) होता है, (सो देखिए) असूझ बड़त दल होता आता है, अर्थात् असंख्य सेना चली आती है। एक चण में मुर्दों की बाजार लगी चाहती है, दल में (लोग) मरा चाहते हैं, सो जो जीतेगा वही (दल में) रहेगा। (मन्त्रिओँ की इतनी बात सुन कर) राजा (गन्धर्व-सेन) ने तब क्रोध किया, (इतने-ही में) रण में आ कर अङ्गद ने (लडने के लिये) पैर को जमाया। पहले जो (राजा गन्धर्व-सेन के) पाँच हाथी (अङ्गद की ओर पकडने को) दौडे, अङ्गद ने उन्हें सूँड पकड कर फिराया (और फिरा कर आकाश में फेंक दिया। वे (उड कर) स्वर्ग को चले गए, फिर न लौटे, वहीं के हो गए॥

योगी लोग इस आश्चर्य को देखते रह गए कि वे हाथी फिर नहीं (जमीन पर) आए। (कवि कहता है कि) योगिओँ का ऐसा लडना होता है कि जमीन पर पैर नहीं लगता, अर्थात् योगी लोग आसमान-ही से लडते हैं, जमीन पर नहीं उतरते॥

अङ्गद की कथा रामायण में प्रसिद्ध है। ये राम का दूत बन कर रावण की सभा में गए थे, और प्रतिज्ञा की थी कि रावण, मेरे टेके ऊए पैर को जौं घसका दो, तो मैं सीता को हार जाता हूँ, राम जी विना लडे लौट जायँगे॥ २७८॥

चउपाई।

कहहिँ बात जोगिहिँ हम पाई। खन एक मँह चाहत हहिँ धाई॥
जउँ लहि धावहिँ अस का खेलहु। हसतिन्ह केर जूह सब पेलहु॥
जस गज पेलि होइ रन आगइँ। तस बगमेल करहु सँग लागइँ॥
हसति कि जूह जउहिँ अगुसारी। हनुवँत तउहिँ लँगूर पसारी॥
जउहिँ सो सइन जीति रन आई। सबहि लपेटि लँगूर चलाई॥
बहुतक टूटि भए नउ खंडा। बहुतक जाइ परे ब्रहमंडा॥
बहुतक फिरा करहिँ अँतरीखा। अहे जो लाख भए ते लीखा॥

दोहा।

बहुतक परे समुँद मँह परत न पावा खोज।
जहाँ गरब तहँ बेरा जहाँ हँसी तहँ रोज॥ २७९॥

कहहिँ = कथयन्ति = कहते हैँ । बात = वार्त्ता । जोगिन्हि = योगिनाम् = योगिओँ का । हम = हौँ (मैँ) का बहु-वचन । पाई = पावइ (प्राप्नोति) का भूत-काल, स्त्रीलिङ्ग, प्रथम-पुरुष, बहु-वचन । खन = क्षण । एक = एक । मँह = मध्ये = मेँ । चाहत हहिँ = इच्छन्ति = चाहते हैँ । धाई = धावनम् = धावा मारना । जउँ लहि = जब तक = यावद्धि । धावहिँ = धावन्ति = दौडते हैँ = धावा मारते हैँ । अस = एतादृश । का = कि । खेलहु = खेलन्तु = खेलो । हसतिन्ह केर = हस्तिनाम् = हाथिओँ का । जूह = यूथ = झुंड । सब = सर्व । पेलहु = पीलयन्तु = पेलो = झुलाओ । जस = यथा = जैसे । गज = हस्ती = हाथी । पेलि = पीलयित्वा = पेल कर = झुला कर । होइ = भवेत् = हो । रन = रण = सङ्ग्राम । आगइँ = अग्रे = आगे । तस = तथा = तैसे । बगमेल = वागमेल = वाग से वाग को मिलाना = मुठ भेर = डट जाना = ऊपर पहुँच जाना । करहु = कुर्वन्तु = करो । सँग = संग = साथ । लागइँ = लगे हुए = लगन्तः । हसति = हस्ती = हाथी । कि = की । जउहिँ = यदा हि = जैसे-ही । अगुसारी = अग्रसरण = आगे गमन । हनुवँत = हनुमान् = हनुमंत । तउहिँ = तदा हि = तैसे-ही । लँगूर = लाङ्गूल = पोंछ = पुच्छ । पसारी = पसारइ (प्रसारयति) का भूत-काल, स्त्रीलिङ्ग, प्रथम-पुरुष, एक-वचन । सो = सः = वह । सइन = सेनायाम् = सेना मेँ । जीति = जीतने के लिये = जयार्थ । आई = आवइ (आयाति) का भूत-काल, स्त्रीलिङ्ग, प्रथम-पुरुष, एक-वचन । सबहि = सर्वेषाम् = सब को । लपेटि = प्रपुञ्ज्य = लपेट कर । चलाइ = चलावइ (चालयति) का भूत-काल, स्त्रीलिङ्ग, प्रथम-पुरुष, एक-वचन । बहुतक = बहुतरकः = बहुत एक = बहुत तो । टूटि = त्रुटित्वा = टूट कर । भए = बभूवुः = हुए = हो गए । नउ-खंडा = नव-खण्ड = नव टुकडे । जाइ = यात्वा = जा कर । परे = परइ (पतति) का भूत-काल, पुंलिङ्ग, प्रथम-पुरुष, बहु-वचन । ब्रहमंडा = ब्रह्माण्ड = आकाश । फिरा करहिँ = भ्रमन्तः सन्ति = फिरा करते हैँ = घूमा करते हैँ । अँतरीखा = अन्तरिक्ष । अहे = आसन् = थे = रहे । जो = यः = जो । लाख = लक्ष । ते = वे । लीखा = लीक्षा = लीख ॥

समुँद = समुद्र । परत = पडत-ही = पतन्त एव । पावा = पावइ (प्राप्नोति) का भूत-काल, पुंलिङ्ग, प्रथम-पुरुष, एक-वचन । खोज = चिह्न = निशान = पता । जहाँ = यत्र । गरब = गर्व = अभिमान । तहँ = तत्र । बेरा = बेँडा = वक्र = कठिनता । हँसी = हास्य = ठट्ठा । रोज = रुज = रोग ॥

(राजा गन्धर्व-सेन के पक्ष-वाले) कहने लगे कि हम लोग जोगिओं के (मतलब को) पा गए, अर्थात् समझ गए, (ये लोग) एक क्षण में (हमारी सेना के ऊपर) धावा मारा चाहते हैं। जब तक (ये लोग) धावा मारें (तब तक) ऐसा खेलो कि (धावा न करने पावें, इसी बीच में इन की सेना में) हाथिओं का झुंड पिला दो। जैसे हाथी पिल कर रण के आगे हों, वैसे-ही सब लोग साथ में लगे हुए मुठ भेर करो, अर्थात् शत्रुओं से भिड जाओ। जैसे-ही हाथिओं का झुंड (रत्न-सेन की सेना के) आगे आया, वैसे-ही हनुमान ने अपने लंगूर को फैलाया। जैसे-ही वह झुंड (रत्न-सेन की) सेना में जीतने के लिये रण-क्षेत्र में आया, (वैसे-ही) हनुमान ने सब को लंगूर में लपेट कर (ऊपर की ओर) चलाया। बहुत टूट कर नव टुकडे हो गए, बहुत जा कर ब्रह्माण्ड में पडे। बहुत अन्तरिक्ष में घूमने लगे, जो लाख थे वे लीख हो गए, अर्थात् लाखों हाथी लीख के ऐसे छितिर बितिर हो गए॥

बहुत समुद्र में जा कर पडे, पडते-ही उन का पता न लगा (कि क्या हो गए)। (कवि कहता है कि) जहाँ अभिमान है वहीं कठिनता पडती है, अर्थात् घमंडी-ही के ऊपर विपत्ति पडती है, (और) जहाँ हँसी होती है वहीं (लडाई का) रोग होता है। कहावत है कि 'रोग की जड खाँसी और झगडे की जड हाँसी'। कवि का अभिप्राय है कि भाट और मन्त्रिओं के समझाने पर भी राजा गन्धर्व-सेन ने न माना, घमंड से भरा लडने-ही लगा, जिस का फल यह हुआ कि जिन हाथिओं का बडा घमंड था वे हनुमान के फेंकने से लीख के ऐसे टुकडे टुकडे हो कर छितिर-बितिर हो गए॥ २७९॥

चउपाई।

फिरि आगइ का देखइ राजा। ईसुर केर घंट रन बाजा॥
सुना संख सो बिसुन जउँ पूरा। आगइँ हनुवँत केर लँगूरा॥
लीन्हइँ फिरहिँ सरग ब्रहमंडा। सरग पतार लोक म्रितमंडा॥
बलि बासुकि अउ इँदर नरंदू। गरह नखत सूरज अउ चंदू॥
जावँत दानउ राकस पुरी। अहुठउ बजर आइ रन जुरी॥
जिन्ह कर गरब करत हुत राजा। सो सब फिरि बइरी होइ साजा॥
जहवाँ महादेओ रन खरा। नारी घालि आइ पाँ परा॥

दोहा ।

केहि कारन रिस कीजिअ हउँ सेवक अउ चेर ।
जेहि चाहिअ तेहि दीजिअ बारि गोसाईँ केर ॥ २८० ॥

फिरि = पुनः = भूयः। आगइँ = अग्रे = आगे। का = किम् = क्या। देखइ = पश्यति = देखता है। ईसुर = ईश्वर = महादेव। केर = का। घंट = घण्टा। रन = रण = सङ्ग्राम। बाजा = बाजइ (वाद्यते) का भूत-काल, पुंलिङ्ग, प्रथम-पुरुष, एक-वचन। सुना = सुनइ (शृणोति) का भूत-काल, पुंलिङ्ग, प्रथम-पुरुष, एक-वचन। संख = शङ्ख। सो = सो = सः = वह। बिसुन = विष्णु = भगवान। जउँ = यथा = जैसे-ही। पूरा = पूरइ (पूर्यते) का भूत-काल, पुंलिङ्ग, प्रथम-पुरुष, एक-वचन। हनुवँत = हनुमान = हनुमन्त। लँगूरा = लाङ्गूल = पूछ = पुच्छ। लीन्हइँ = लीन्हे = लिए। फिरहिँ = भ्रमन्ति = फिरते हैँ। सरग = स्वर्ग। ब्रहमंडा = ब्रह्माण्ड। पतार = पाताल। मिरतमंडा = मृत्युमण्डित = मर्त्यलोक। बलि = पाताल का प्रसिद्ध राजा। बासुकि = नाग की एक जाति। अउ = अपि = और। इँदर = इन्द्र। नरंदू = नरेन्द्र = राजा। गरह = ग्रह। नखत = नक्षत्र। सूरज = सूर्य। चंदू = चन्द्र। जावँत = यावन्तः = जितने। दानउ = दानव = दनु के सन्तान। राकस = राक्षस, जो मनुष्य को खाते हैँ। पुरी = नगरी। अऊठउ = आवर्त्य = औटने-वाला। बजर = वज्र = बिजली। आइ = एत्य = आ कर। जुरी = जुरइ = (युज्यते) का भूत-काल, स्त्रीलिङ्ग, प्रथम-पुरुष, एक-वचन। जिन्हकर = येषाम् = जिनका। गरब = गर्व = घमंड = अभिमान। करत ऊत = करता था। सब = सर्व। बइरी = वैरी = शत्रु। होइ = भूला = हो कर। साजा = साजइ (सज्जते) का भूत-काल, पुंलिङ्ग, प्रथम-पुरुष, एक-वचन। जहवाँ = जहाँ = यत्र। महादेओ = महादेव। खरा = खडा = उत्थित। नारी = स्त्री। घालि = गिरा कर = अवघार्य (घृ क्षरणदीप्त्योः से)। पाँ = पाद = पैर। परा = परइ (पतति) का भूत-काल, पुंलिङ्ग, प्रथम-पुरुष, एक-वचन॥

केहि = कस्य = केन = किस। कारन = कारण। रिस = रोष = क्रोध। कीजिअ = क्रियन्ते = करते हैँ। हउँ = अहम् = मैँ। सेवक = दास। चेर = चेटः = चेटक = टहलुआ। जेहि = यस्य = जिसे। चाहिअ = चाहिए = इच्छ्यते। तेहि = तस्य = तिसे = उसे। दीजिअ = दीयताम् = दीजिए। बारि = बाला = बालिका = कन्या = लडकी। गोसाईँ = गोस्वामी = मालिक। केर = की॥

फिर (इस के) आगे राजा क्या देखता है कि रण में महादेव का घंटा बजा। (उस घंटे की आवाज ज्यौँ ही सुनी गई (त्यौँ ही) विष्णु ने (अपनी) उस (पाञ्च-जन्य) शंख को (स्वर से) पूरा, अर्थात् मुँह में लगा कर फूँक को भरा (जिस से बहुत भारी शब्द हुआ। (फिर इस के) आगे हनुमान के लंगूर में शत्रु की सेना के सब हाथी घोडे योद्धा लिपटे हुए (उसी लंगूर में) पडे स्वर्ग से ब्रह्माण्ड में, स्वर्ग से पाताल में और (पाताल से) मर्त्य लोक में घूमा फिरते हैँ। बलि, वासुकि, और (देवताओं का राजा) इन्द्र, मनुष्यौं के राजा, (भौमादि) ग्रह, नक्षत्र, सूर्य और चन्द्र, (सब) पुरिओं के जितने दानव और राक्षस, (सब को) ओटने-वाला वज्र, ये सब (महादेव के घंटा के बजते ही) आ कर रण में जुट गए। राजा गन्धर्व-सेन जिन लोगौं का गर्व करता था वे सब उलट कर (राजा गन्धर्ब-सेन के) शत्रु हो कर (उन्ही के ऊपर लडने के लिये) तयारी करने लगे। (इस आश्चर्य को देख कर राजा गन्धर्व-सेन घबडा गया) जहाँ रण में महादेव खडे थे (वहाँ महादेव जी के पैर पर अपनी) स्त्री (चम्पावती) को गिरा कर (आप भी वहाँ पर) आ कर (महादेव जी के) पैर पर गिर पडा॥

(और गिडगिडाने लगा कि आप) किस कारण से क्रोध करते हैँ। मैं तो (आप का) दास और टहलुआ हूँ। (आप) गोसाईँ की (वह पद्मावती) बेटी है, जिसे चाहिए उसे दीजिए। मैं जो आप की इच्छा में कुछ बाधा करूँ तो अवश्य मेरे ऊपर क्रोध कीजिए॥

महादेव प्रसिद्ध तीन देवताओं में एक देवता हैँ जो सृष्टि का नाश करते हैँ।

विष्णु भी प्रसिद्ध तीन देवताओं में एक देवता हैँ जो सृष्टि का पालन करते हैँ।

हनुमान की कथा रामायण में प्रसिद्ध है।

स्वर्ग के लिये इस ग्रन्थ का २ पृ० देखो।

पाताल के लिये इस ग्रन्थ का २ पृ० देखो।

बलि के लिये इस ग्रन्थ का ४२८ पृ० और २०२ दोहे की टीका देखो।

वासुकि के लिये इस ग्रन्थ का १६५ पृ० देखो।

इन्द्र देवताओं का राजा, अदिति का ज्येष्ठ पुत्र, पुराणौं में स्वर्ग का राजा कहा जाता है।

ग्रह से यहाँ पर भौम, बुध, बृहस्पति, शुक्र और शनैश्चर हैँ।

नक्षत्र प्रसिद्ध ज्यौतिषशास्त्र में सत्ताइस हैं, पर यहाँ पर कवि ने नक्षत्र से सब ताराओं को लिया है ।

दानव और राक्षस में भेद है इसी लिये मनुस्मृति के १ अध्याय ३७ वें श्लोक में लिखा है कि

यक्षरक्षःपिशाचांश्च गन्धर्वाप्सरसोऽसुरान् ।
नागान् सर्पान् सुपर्णांश्च पितॄणां च पृथग् गणान् ॥ २८० ॥

चउपाई ।

तउ महेस उठि कीन्ह बसीठी । पहिलइँ कडुइ अंत होइ मीठी ॥
तूँ गँधरब राजा जग पूजा । गुन चउदह सिख देइ को दूजा ॥
हीरामनि जो तुम्हार परेवा । गा चितउर गढ कीन्हेसि सेवा ॥
तेहि बोलाइ पूछहु ओहि देस्रू । अउ पूछहु जोगिन्ह कर भेस्रू ॥
हमरे कहत रहइ नहिँ मानू । वह बोलइ सोई परवाँनू ॥
जहाँ बारि तहँ आउ बरोका । करहु बिआह धरम बड तो का ॥
जो पहिले मन मान न काँधी । परखि रतन गाँठी तब बाँधी ॥

दोहा ।

रतन छपाए ना छपइ पारख होइ सो परीख ।
घालि कसउटी दीजिअइ कनक कचउरी भीख ॥ २८१ ॥

तउ = तदा = तर्हि । महेस = महेश = महादेव । उठि = उत्थाय = उठ कर । कीन्ह = अकृत = किया । बसीठी = विशिष्टत्व = दूतत्व = दूत का काम । पहिलइँ = पहले = प्रथमे । कडुइ = कटु = कडुई । अंत = अन्त्य = आखिर । होइ = भवति = होती है । मीठी = मिष्ट । तूँ = त्वम् = तैँ । गँधरब = गन्धर्व = गन्धर्व-सेन । जग = जगत् = संसार । पूजा = पूज्य । गुन = गुण । चउदह = चतुर्दश = चौदह । सिख = शिक्षा । देइ = दद्यात् = देवे । को = कः = कौन । दूजा = द्वितीय = दूसरा । हीरामनि = हीरामणि शुक । जो = जो = यः । तुम्हार = तुम्हारा = तव । परेवा = पारावत = पक्षी । गा = अगात् = गया । चितउर = चित्र-वर वा चित्र-पुर । गढ = गाढ = दुर्ग = किला । कीन्हेसि = अकृत =

किया । सेवा = टहल = खिद्मत । तेहि = तम् = तिसे = उसे । बोलाइ = आहूय = आवाद्य = बुला कर । पूछहु = पृच्छथ = पूछिए । ओहि = तस्य = उस का । देसू = देश । अउ = अपि = और । जोगिन्ह कर = योगिनाम् = योगिओं का । भेसू = वेष । हमरे = अस्माकम् = हमारे । कहत = कथने = कहने में । रहइ = रहता है (तिष्ठति) । मानू = मान = आदर । वह = सः । बोलइ = बदेत् = बोले । सोई = स एव = वही । परवाँनू = प्रमाण । जहाँ = यत्र । बारि = वालिका = वाला = कन्या । तहँ = तत्र = तहाँ । आउ = आयात् = आया । बरोका = बर ओका = उस का वर । करहु = कुर्वथ = कीजिए । बिआह = विवाह = व्याह । धरम = धर्म = पुण्य । तो का = तवक = तुझे = तुझ को । मन = मनसि । मान = मानइ = मन्यते । काँधी = स्कन्धी = कन्धा देनेवाला = आधार देने-वाला । परखि = परीक्ष्य = परीक्षा कर = परख कर । रतन = रत्न । गाँठी = ग्रन्थि = गाँठ । तब = तदा । बाँधी = बाँधइ (बध्नाति) का भूत-काल, स्त्रीलिङ्ग, प्रथम-पुरुष, एक-वचन ॥

छपाए = छिपाने से = क्षपयन् । ना = न = नहीं । छपइ = क्षपति = छिपता है । पारख = पारखी = परीक्षक । होप्र = भवेत् = स्यात् = हो । सो = सो = वह । परीख = परीक्षेत = परखे । घालि = घाल कर = कर्षयित्वा = कस कर । कसउटी = कषवटी = कसौटी । दीजिअइ = दीयेत = दीजिए । कनक = सुवर्ण = सोना । कचउरी = कचौरी = सोने ताँबे का मेल । भीख = भिक्षा ॥

(जब राजा गन्धर्व-सेन अपनी रानी के समेत महादेव के पैरों पर पड अपना अपराध क्षमा कराया) तब महादेव जी उठ कर दूतत्व करने लगे (और कहने लगे कि जो बात) पहले कडुई लगती है वह अन्त में मीठी होती है। हे गन्धर्व-सेन राजा, तूँ जग में पूजनीय है, चौदहो (विद्या के) गुण (तेरे में) है, दूसरा कौन है जो तुझे सिखावें। जो तेरा हीरामणि पक्षी है वह चितौर गढ गया था (और उसी ने यह तेरी) सेवा की है, अर्थात् उसी ने तेरी कन्या के योग्य इसे लाया है। उस (शुक) को बुला कर उस (रत्न-सेन) के देश को पूछो, और योगिओ के वेष को (भी) पूछो, अर्थात् उस से पूछो कि ये सब योगिओं के वेष बनाए कौन हैं। मेरे कहने से मान न रहे, अर्थात् मेरे कहने का प्रमाण तूँ न माने, तो (जो) वह कहे उसी का प्रमाण करो। जहाँ (तेरी) कन्या है वहाँ ही उस का वर आ गया, (अब इस के साथ) व्याह कर दो (ऐसा करने से) तुम्हें बडा धर्म होगा। जो आधार

देने-वाला पहले (जिस को) मन से नहीँ मानता, अर्थात् जो जडिआ पहले जिस नग को सच्चा नहीँ मानता, वही परख कर (उस) रत्न को गाँठ मेँ बाँध रखता है ॥

रत्न छिपाए से नहीँ छिपता, जो पारखी हो सो परख ले। (सो हे राजा) कसौटी पर सोने और कचौरी को कस कर (तब इस रत्न-सेन को अपनी कन्या) भीख दीजिए ।

चौदहविद्या–नैषध के 'अधीतिबोधाचरणप्रचारणैर्दशाश्चतस्त्रः प्रणयन्नुपाधिभिः । चतुर्दशत्वं कृतवान् कुतः स्वयं न वेद्मि विद्यासु चतुर्दशस्वयम्,' इस १ सर्ग के ४ स्लोक की टीका मेँ मल्लि-नाथ ने लिखा है कि

अङ्गानि वेदाश्चत्वारो मीमांसा न्यायविस्तरः ।
पुराणं धर्मशास्त्रं च विद्या ह्येताश्चतुर्दश ॥

अङ्ग = व्याकरण, ज्यौतिष, निरुक्त, कल्प, शिक्षा, छन्द, = ६ । ऋक्, साम, यजुः, अथर्व = ४ । मीमांसा = १ । न्यायविस्तर = नीतिशास्त्र = १ । पुराण = १ । धर्मशास्त्र = १ । ६ + ४ + १ + १ + १ + १ = १४ ॥ ॥ २८१ ॥

चउपाई ।

हीरामनि जो राजइ सुना । रोस बुझान हिअइ मँह गुना ॥
अगिआँ भई बोलावहु सोई । पंडित हुतइँ दोख नहिँ होई ॥
भइ अगिआँ जन सहसक धाए । हीरामनिहि बेगि लेइ आए ॥
खोला आगइँ आनि मँजूसा । मिला निकसि बहु दिन कर रूसा ॥
असतुति करत मिला बहु भाँती । राजइ सुना हिअइ भइ साँती ॥
जानहुँ जरत अगिनि जल परा । होइ फुलवारि रहसि हिअ भरा ॥
राजइँ मिलि पूछी हँसि बाता । कस तन पीत भएउ मुख राता ॥

दोहा ।

चतुर बेद तुम्ह पंडित पढे सासतर बेद ।
कहाँ चढे जोगिन्ह का आनि कीन्ह गढ भेद ॥ २८२ ॥

हीरामनि = हीरामणि शुक । जो = यत् । राजइ = राज्ञा = राजा ने । सुना = सुनइ (शृणोति) का भूत-काल, पुंलिङ्ग, प्रथम-पुरुष, एक-वचन । रोस = रोष = क्रोध ।

बुझान = बुझाना = बुझइ (बुध्यते) का भूत-काल, पुंलिङ्ग, प्रथम-पुरुष, एक-वचन। हिअइ = हृदय = हिय। मँह = मध्ये = में। गुना = गुनइ (गुणति) का भूत-काल, पुंलिङ्ग, प्रथम-पुरुष, एक-वचन। अगिआँ = आज्ञा = हुक्म। भई = बभूव। बोलावहु = आह्वयथ = बुलावो। सोई = वही, यहाँ उसे। पंडित = पण्डित। हुतइँ = से। दोख = दोष। होई = भवति = होता है। भइ = भई। जन = आदमी = मनुष्य = नोकर = चाकर। सहसक = सहस्रैक = हजारों। धाए = धावइ (धावति) का भूत-काल, पुंलिङ्ग, प्रथम-पुरुष, बहु-वचन। हीरामनिहि = हीरामणिम् = हीरामणि को। बेगि = वेगेन = शीघ्र। लेइ = आलाय = ले कर। आए = आवइ (आयाति) का भूत-काल, पुंलिङ्ग, प्रथम-पुरुष, बहु-वचन। खोला = खोलइ (खलयति वा उद्घाटयति) का भूत-काल, पुंलिङ्ग, प्रथम-पुरुष, एक-वचन। आगइँ = अग्रे = आगे। आनि = आनीय = ला कर। मँजूषा = मञ्जूषा = संदूक = पिँजडा। मिला = मिलइ (मिलति) का भूत-काल, पुंलिङ्ग, प्रथम-पुरुष, एक-वचन। निकसि = निकल कर = निष्कर्ष्य। बहु = बहुत। कर = का। रूसा = रुष्ट = कुपित। असतुति = स्तुति। करत = कुर्वन् = करते। भाँती = भङ्गी = तरह = प्रकार। साँती = शान्ति। जानहुँ = जाने = जानों। जरत = ज्वलन् = जरते। अगिनि = अग्नि = आग। जल = पानी। परा = परइ (पतति) का भूत-काल, पुंलिङ्ग, प्रथम-पुरुष, एक-वचन। होइ = भूत्वा = हो कर। फुलवारि = पुष्पवाटिका = फुलवारी। रहसि = क्रीडा से = खुशी से। भरा = भरइ (भरति) का भूत-काल, पुंलिङ्ग, प्रथम-पुरुष, एक-वचन। राजइँ = राज्ञा = राजा ने। मिलि = मिलित्वा = मिल कर। पूछी = पूछइ (पृच्छति) का भूत-काल, स्त्रीलिङ्ग, प्रथम-पुरुष, एक-वचन। हँसि = हसित्वा = हँस कर। बाता = बात = वार्त्ता। कस = कथम् = कैसा। तन = तनु = शरीर। पीत = पीली। भएउ = बभूव = हुआ = भया। मुख = मुँह। राता = रक्त = लाल॥

चतुर = चतुर्णाम् = चारो। बेद = वेद। तुम्ह = आप। पढे = पढइ (पठति) का भूत-काल, पुंलिङ्ग, प्रथम-पुरुष, बहु-वचन। सासतर = शास्त्र। कहाँ = कुत्र। चढे = चढइ (उच्चलति) का भूत-काल, पुंलिङ्ग, प्रथम-पुरुष, बहु-वचन। जोगिन्ह = योगिनः = योगी लोग। का = किमु = क्यों। कीन्ह = अकृत = किया। गढ = गाढ = दुर्ग = किला। भेद = सँध = विदीर्ण॥

राजा (गन्धर्व-सेन) ने जो हीरामणि के नाम को सुना, (तो नाम सुनते ही) क्रोध ठंढा हो गया, हृदय में सोचने लगा। (सोचने के बाद राजा की) आज्ञा हुई

कि उस हीरामणि को बुलाओ, (क्योंकि हीरामणि पण्डित है) पण्डित से बुराई नहीं होती। (बुलाने के लिये) आज्ञा हुई, (आज्ञा होते ही) हजारों नोकर (बुलाने के लिये) दौडे (और) शीघ्र हीरामणि को ले आए। (नोकरों ने राजा के) आगे ला कर पिँजडे को खोला, बहुत दिनों का रूसा हुआ (हीरामणि पिँजडे से) निकल कर (राजा से) मिला। बहुत प्रकार की स्तुति करते हुए (वह) मिला, (उन स्तुतिओं को सुन कर) राजा के हृदय में शान्ति हुई (क्रोध ठंढा हो गया)। जानों आग से जरते हुए के ऊपर पानी पड गया, (राजा का) हृदय फुलवारी हो कर आनन्द से भर गया। (हीरामणि से) मिल कर राजा ने हँस कर बात पूछी कि क्यों (तेरी) शरीर पीली हुई और मुँह लाल ॥

तुम चारो वेदों के पण्डित हो, शास्त्र और वेद को पढे हो। (कहो तो सही, ये) जोगी कहाँ चढे हैं, क्यों (इन सब को यहाँ) ला कर गढ को (छिन्न) भिन्न किया, अर्थात् क्यों गढ में सेँध दिलाया ॥

ऋक्, साम, यजुः, और अथर्व ये चार वेद प्रसिद्ध हैं।

न्याय, वैशेषिक, पूर्वमीमांसा, उत्तर मीमांसा (वेदान्त), सांख्य, और योग ये षट् शास्त्र, और व्याकरण, ज्योतिष, निरुक्त, कल्प, शिक्षा और छन्द ये षडङ्ग भी कभीं कभीं शास्त्र कहे जाते हैं ॥ २८२ ॥

चउपाई।

हीरामनि रसना रस खोला। देइ असीस अउ असतुति बोला ॥
इँदर राज-राजेसुर महा। सउँहीँ रिस किछु जाइ न कहा ॥
पइ जेहि बात होइ भलि आगइँ। सेवक निडर कहइ रिस लागइँ ॥
सुआ सुफल अबिँरित पइ खोजा। होइ न बिकरम राजा भोजा ॥
हउँ सेवक तुम्ह आदि गोसाईँ। सेवा करउँ जिअउँ जब ताईँ ॥
जेइँ जिउ दीन्ह देखावा देस्। सो पइ जिअ मँह बसइ नरेसू ॥
जो मन सवँरइ एकइ तूँही। सोई पंखि जगत रत-मूही ॥

दोहा।

नइन बइन सरवन बुधी सबइ तोर परसाद।
सेवा मोर इहइ निति बोलउँ आसिरबाद ॥ २८३ ॥

हीरामनि = हीरामणि। रसना = जिह्वा = जीभ। रस = रस भरी बात। खोला = खोलइ (खलयति = उद्घाटयति) का भूत-काल, पुंलिङ्ग, प्रथम-पुरुष, एक-वचन। देइ = दत्वा = दे कर। असीस = आशीर्वाद। अउ = अपि = और। असतुति = स्तुति। बोला = बोलइ (वदति) का भूत-काल, पुंलिङ्ग, प्रथम-पुरुष, एक-वचन। इँदर = इन्द्र। राज-राजेसुर = राजराजेश्वर = राजाओं के राजाओं का ईश्वर। महा = महान् = बडा। सउँहीँ = सम्मुखे हि = सामने। रिस = रोष = क्रोध। किछु = किञ्चित् = कुछ। जाइ = जाता। कहा = कथनम्। पइ = अपि = निश्चयेन। जेहि = यस्य = जिस। बात = वार्त्ता। होइ = भवति = होता है। भलि = भला = अच्छा = वर। आगइँ = अग्रे = आगे। सेवक = दास। निडर = निर्दर = निर्भय। कहइ = कथयति = कहता है। लागइँ = लगे = लग्ने। सुआ = शुक = सुग्गा। सुफल = अच्छा फल। अबिँरित = अमृत। खोजा = खोजइ (अन्वेषति) का भूत-काल, पुंलिङ्ग, प्रथम-पुरुष, एक-वचन। होइ = अस्ति = है। बिकरम = विक्रम = विक्रमादित्य = उज्जयिनी का प्रसिद्ध एक राजा। भोजा = भोज = धारानगरी का प्रसिद्ध एक राजा। हउँ = हौं = अहम् = मैं। तुम्ह = आप। आदि = प्रथम = प्रधान। गोसाईँ = गोस्वामी = मालिक = प्रभु। सेवा = टहल = खिदमत। करउँ = करवाणि = करूँ। जिअउँ = जीवानि = जीऊँ। जब ताईँ = यावत् = जब तक। जेइँ = यैः = जिन्हों ने। जिउ = जीव। दीन्ह = अदात् = दिया। देखावा = देखावइ (दर्शयति) का भूत-काल, पुंलिङ्ग, प्रथम-पुरुष, एक-वचन। देसू = देश। सो = सः = वह। जिअ = जीव। महँ = मध्ये = में। बसइ = वसति = बसता है। नरेसू = नरेश = राजा। जो = यः। मन = मनसि = मन में। एकइ = एकः = एक। तूँही = त्वं हि। सोई = स एव = वही। पंखि = पक्षी = पंखी = पंछी = चिडिया। जगत = जगत् = संसार। रत-मूँही = रक्त-मुखी = लाल मुँह की॥

नइन = नयन = आँख। बइन = वचन। सरवन = श्रवण = कान। बुधी = बुद्धि। सबइ = सर्वे हि = सभी। तोर = तव = तेरा। परसाद = प्रसाद। मोर = मम = मेरी। इहइ = इयमेव = यही। निति = नित्य = रोज। बोलउँ = वदामि = बोलता हूँ। आसिरबाद = आशीर्वाद = शुभवचन॥

हीरामणि ने जीभ से रस को खोला, अर्थात् अमृत-वाणी बोलना आरम्भ किया, (राजा गन्धर्व-सेन को) आशीर्वाद दे कर और स्तुति कर बोलने लगा। (कि) हे इन्द्र, हे बडे राज-राजेश्वर, (प्रभु को) सामने क्रोध से (भरा देख) कुछ कहा नहीँ जाता,

अर्थात् आप के क्रोध से डरता हूँ इस से मुँह से बोल नहीँ निकलती। पर जो बात आगे भली हो (उसे) बेधडक हो कर सेवक को कहना चाहिए, (मालिक को) रिस लगे तो लगे। सुग्गा निश्चय कर सुन्दर अमृत फल ही का खोजने-वाला है, (यह) न विक्रम है न राजा भोज है। मैँ तो आप प्रथम स्वामी का दास हूँ, जब तक जीऊँ (तब तक आप की) सेवा करूँ (यही मेरा सङ्कल्प है)। पर जिस ने जीव दिया, अर्थात् मेरा प्राण बचाया, और (मेरे इस) देश को देखाया, वह राजा निश्चय कर जीव मेँ बसता है। जो पची 'एक टूँ ही' है 'एक टूँ ही' है वही मन से सुमिरा करता है, वही पची संसार मेँ लालमुँही है। अर्थात् जो एक को प्रभु मान कर मनसा, वाचा, और कर्मणा, से उसी की सेवा मेँ रहता है, उसी के मुँह की लाली सदा बनी रहती है॥

आँख, वचन, कान और बुद्धि सब तेरे प्रसाद से (मेरे मेँ) हैँ, मेरी यही सेवा है कि नित्य (आप के लिये) शुभवचन बोला करूँ॥

राजा विक्रम के लिये इस ग्रन्थ का २५२-२५३ पृ० देखो॥

राजा भोज प्रसिद्ध संस्कृतानुरागी विक्रम के बाद धारानगरी का राजा हुआ था। एक एक श्लोक पर लाख लाख रुपए दिए हैँ। इस की विस्तार से कथा भोजप्रबन्ध मेँ लिखी है॥

अवध और राजपुताने मेँ एक प्रसिद्ध पची है, जिस की बोली मेँ 'एकइ टूँ ही' 'एकइ टूँ ही' ऐसी धुनि जान पडती है। इसी लिये उस पची का नाम ही 'एकइ टूँ ही' पड गया है। कहावत है कि वह पची भगवान की स्तुति किया करता है, कि हे भगवान इस संसार मेँ (सच्चा अविनाशी) एक टूँ ही है॥ २८३॥

चउपाई।

जउ पंखी रसना रस रसा। तेहि क जीभ अबिँरित पइ बसा॥
तेहि सेवक के करमहिँ दोसू। सेवा करत करइ पति रोसू॥
अउ जेहि दोस न दोसहि लागा। सो डरि तहाँ जीउ लेइ भागा॥
जउँ पंखी कहवाँ थिर रहना। ताकइ जहाँ जाए जो डहना॥
सपत दीप फिरि देखेउँ राजा। जंबू-दीप जाइ पुनि बाजा॥
तहँ चितउर गढ देखेउँ ऊँचा। ऊँच राज सरि तोहि पहूँचा॥
रतन-सेन यहु तहाँ नरेसू। आएउँ लेइ जोगी कर भेसू॥

दोहा।

सुआ सुफल पइ आना　हइ ता तैं मुख रात।
कया पीत सो तेहि डर　सवँरउँ बिकरम बात ॥ २८४ ॥

जउ = यदि = जौं। पंखी = पक्षी = पंछी = चिड़िया। रसना = जिह्वा = जीभ। रस = स्वादु की वस्तु। रसा = रसइ (रस्यति) का भूत-काल, पुंलिङ्ग, प्रथम-पुरुष, एक-वचन। तेहि = तस्य = तिस। क = की। जीभ = जिह्वा। अविँरित = अमृत। पइ = अपि = निश्चयेन। बसा = बसइ (वसति) का भूत-काल, पुंलिङ्ग, प्रथम-पुरुष, एक-वचन। सेवक = दास = टहलुआ। करमहिँ = कर्मणाम् = कर्मों का। दोसू = दोष। सेवा = टहल = खिदमत। करत = कुर्वन् = करते। पति = प्रभु = मालिक। रोसू = रोष = क्रोध। अउ = अपि = और। जेहि = यस्य = जिस के। दोस = दोष। दोसहि = दोष को। लागा = लगा = लगइ (लगति) का भूल-काल, पुंलिङ्ग, प्रथम-पुरुष, एक-वचन। सो = वह = सः। डरि = आदर्य = डर कर। तहाँ = तत्र = वहाँ। जीउ = जीव = प्राण। लेइ = आलाय = ले कर। भाग = भागइ (अभ्यगच्छति) का भूत-काल, पुंलिङ्ग, प्रथम-पुरुष, एक-वचन। जउँ = यदि = जौं। कहवाँ = कहाँ = कुत्र। थिर = स्थिर। रहना = अर्हणा = योग्यता। ताकइ = तर्क्यते = ताकता है = देखता है। जहाँ = यत्र। जाए = जाइ = याति। जाता है। जो = यत्। उड़ना = उड्डयन = डैना। सपत = सप्त = सात। दीप = द्वीप। फिरि = भ्रमिला = घूम कर। देखेउँ = अपश्यम् = देखा। राजा = राजन् = हे राजा। जंबूदीप = जम्बूदीप। जाइ = याला = जा कर। पुनि = पुनः = फिर। बाजा = बजइ (वाद्यते) का भूत-काल, पुंलिङ्ग, प्रथम-पुरुष, एक-वचन। तहँ = तहाँ = तत्र। चितउर = चित्तवर या चित्तपुर = चित्तौर। गढ = गाढ = दुर्ग = किला। ऊँचा = उच्च। ऊँच = ऊँचा = उच्च। राज = राज्य। सरि = सादृश्य = बराबरी। तोहि = तव = तुम्हारी। पहूँचा = पहुँचइ (प्राप्नोति) का भूत-काल, पुंलिङ्ग, प्रथम-पुरुष, एक-वचन। रतन-सेन = रत्न-सेन। यहू = यह = अयम्। नरेसू = नरेश = राजा। आएउँ = अगच्छम् = आया। लेइ = आलाय = ले कर। जोगी = योगी। कर = का। भेसू = वेष ॥

सुआ = शुक = सुगा। सुफल = अच्छा फल। पइ = अपि = निश्चय कर। आना = आनइ (आनयति) का भूत-काल, पुंलिङ्ग, प्रथम-पुरुष, एक-वचन। हइ = अस्ति = है।

ता तेँ = तस्मात् = उस से। मुख = मुँह। रात = रक्त = लाल। कया = काय = शरीर। पीत = पीली। सो = सः = वह। तेहि = तस्य = तिस। डर = दर = भय। सवँरउँ = स्मरामि = याद करता हूँ। बिकरम = विक्रम = उज्जयिनी का प्रसिद्ध राजा। बात = वार्त्ता ॥

जब पची की जीभ में रस रस गया (तब) उस की जीभ में निश्चय कर अमृत बस गया। सेवा करते जौं मालिक क्रोध करे तो उस सेवक के कर्मों का दोष समझना चाहिए। और जिस दोष के न (होने पर भी वह) दोष (सेवक के ऊपर) लगाया गया, इस लिये (यह सेवक) डर कर (अपना) प्राण ले कर भागा। (अर्थात् मैं सदा पद्मावती को सुन्दर उपदेश ही देता था। उस पर भी मेरे ऊपर यह दोष लगाया गया कि यह पद्मावती को बुरी राह दिखला रहा है। इस डर से मैं अपना जीव ले कर आप के यहाँ से भागा।) जब पची हुआ तब उस को कहाँ स्थिर रहना, जब डैना है तब जहाँ देखे वहाँ ही पहुँच जाता है। (हे राजा गन्धर्व-सेन मैं आप के यहाँ से भाग कर) सातो दीपों को घूम घूम कर देखा, फिर जम्बूदीप में जा कर पहुँचा। वहाँ (सब से) बडा चित्तौर गढ देखा, (वह) बडा राज्य आप की बराबरी में पहुँचा है। वहाँ का यह रत्न-सेन राजा है, (उसी को) योगी के वेष में ले कर आया हूँ ॥

(मैं) शुक निश्चय कर अच्छे फल को लाया हूँ, इसी से (मेरा) मुँह लाल है। (और) राजा विक्रम की बात याद कर उसी डर से (मेरी) देह पीली हो गई है ॥

सातो दीप के लिये इस ग्रन्थ का २ पृ० देखो। कथा है कि राजा विक्रम के यहाँ एक शुक था। उस ने एक दिन राजा से कहा कि जौं आप छुट्टी देते तो अपने जन्मस्थान को देख आता और आप के लिये एक अमृत-फल भी लेता आता। राजा ने इस बात को सुन सुग्गे को छोड दिया। वह बहुत दिनों तक वन की सैर कर राजा के पास अमृत-फल लिये लौटा। राजा ने विचारा कि इस को बीज से पेँड पैदा करेँ जिस से अनेक फल पैदा किए जायँ। माली को पेँड तयार करने के लिये उस फल को दिया। माली ने दो चार वर्ष में पेँड तयार किया। समय पर उस में फल आए। राजा ने कहा कि पकने पर मेरे पास लाना। दैव-संयोग से रात को वह फल चू कर जमीन पर आया। उसे एक साँप ने अपनी जीभों से अच्छी तरह से चाटा, जिस से वह विष से भर गया। सबेरे

माली उस फल को पानी से धो कर डाली में ले गया। राजा ने अपने लोगों के विचार से उस अजान फल के एक टुकडे को कुत्ते को खिलाया। वह खाते ही मर गया। इस पर राजा ने क्रोध कर कि यह दुष्ट सुग्गे ने मुझे मारने के लिये विष-फल लाया था, उस सुग्गे को मरवा डाला। फिर पीछे से बहुत दिनों तक वह पेँड विष-वृक्ष नाम से प्रसिद्ध हुआ। एक दिन बुढिया मालिन ने अपने पति से रूठ कर मरने की इच्छा से उस विष-फल को खा लिया। खाते ही सोरह वर्ष की जवान हो गई। इस लीले को देख कर उस का पति माली ने भी खाया। वह भी खाते ही बीस वर्ष का जवान हो गया। राजा को जब ये सब बातें मालूम हुईं तब हाथ मल मल कर पछताने लगा कि हाय मैं ँ विना जाने नाहक अपराध के विना ही अपने सुग्गे को मरवा डाला ॥ २८४ ॥

चउपाई।

पहिलइँ भएउ भाट सत-भाखी। पुनि बोला हीरामनि साखी ॥
राजहि भा निसचइ मन माना। बाँधा रतन छोरि कइ आना ॥
कुल पूछा चउहान कुलीना। रतन न बाँधइ होइ मलीना ॥
हीरा दसन पान रँग पाके। बिहँसत सबहिँ बीजु बर ताके ॥
मुँदरा स्रवन मइन सउँ चाँपे। राज-बइन उघरे सब झाँपे ॥
आना काटर एक तुखारू। कहा सो फेरइ भा असवारू ॥
फेरा तुरइ छतीसउ खूरी। सबहिँ सराहा सिंघल-पूरी ॥

दोहा।

कुअँर बतीसउ लक्खना सहस करा जस भानु।
कहा कसउटी कसिअइ कंचन बारह बानु ॥ २८५ ॥

पहिलइँ = पहले = प्रथमे। भएउ = बभूव = भया = हुआ। भाट = भट = स्तुति करने-वाला। सत-भाखी = सत्य-भाषी = सच बोलने-वाला। पुनि = पुनः = फिर। बोला = बोलइ (वदति) का भूत-काल, पुंलिङ्ग, प्रथम-पुरुष, एक-वचन। हीरामनि = हीरामणि (शुक)। साखी = साक्षी = गवाह। राजहि = राज्ञः = राजा को। भा = बभूव = भया = हुआ। निसचइ = निश्चय = विश्वास। माना = मानइ (मन्यते) का

भूत-काल, पुंलिङ्ग, प्रथम-पुरुष, एक-वचन। बाँधा = बाँधा ऊआ = बद्ध । रतन = रत्न = रत्न-सेन। छोरि कद्द = छोडयिला = छोड कर। आना = आनद्द (आनयति) का भूत-काल, पुंलिङ्ग, प्रथम-पुरुष, एक-वचन। कुल = वंश। पूछा = पूछद्द (पृच्छति) का भूत-काल, पुंलिङ्ग, प्रथम-पुरुष, एक-वचन। चउहान = चऊश्रान = चतुःस्थान = अग्नि से पैदा ऊए चार क्षत्रिय वंशों में से एक प्रसिद्ध क्षत्रिय वंश। कुलीना = कुलीन = प्रतिष्ठित। बाँधद्द = बाँधने से = बन्धनेन। होद्द = भवति = होता है। मलीना = मलिन = मैला। हीरा = हीर = हीरक (रत्न)। दसन = दशन = दाँत। पान = पर्ण। रँग = रङ्ग = रंग। पाके = पक्क = पके। बिहँसत = विहसन् = बिहँसते। सबहिँ = सर्वे = सबों ने। बीजु = विद्युत् = बिजली। बर = वर = श्रेष्ठ। ताके = तर्क्य = जान पडे = अनुमान किए गए। मुँदरा = मुद्रा = गोरख-नाथी-पंथिओं का एक कान में पहरने का पदार्थ। स्रवन = श्रवण = कान। मदन = मदन = मोम। सउँ = से। चाँपे = चापित = दबाए ऊए। राज-बदन = राज-वचन = राजा की बोल। उघरे = उद्घटित = खुले। सब = सर्व। झाँपे = झम्पित = ढँपे ऊए = बंद किए ऊए = छिपाए ऊए। आना = आनद्द (आनयति) का भूत-काल, पुंलिङ्ग, प्रथम-पुरुष, एक-वचन। काटर = कर्त्तक = कट्टर = काटने-वाला। तुखारू = तीव्र तुरङ्ग = तीखा घोडा। कहा = अकथयत्। सो = सः = वह। फेरद्द = फेरे = भ्रामयेत्। असवारू = अश्ववार = सवार। फेरा = फेरद्द (भ्रामयति) का भूत-काल, पुंलिङ्ग, प्रथम-पुरुष, एक-वचन। तुरद्द = तुरग = घोडा। छतीसउ = षट्त्रिंशदपि = छत्तीसो। खूरी = खुरविन्यास = पैरों की चाल। सराहा = सराहद्द (श्लाघते) का भूत-काल, पुंलिङ्ग, प्रथम पुरुष, एक-वचन। सिंघल-पूरी = सिंहल-पुरी = सिंहल-पुर के रहने-वाले ॥

कुअँर = कुमार = राज-कुमार। बतीसउ = बत्तीसो = द्वात्रिंशदपि। लक्खना = लक्षण। सहस = सहस्र = हजार। करा = कला = किरण = कर। जस = यथा = जैसे। भानु = सूर्य। कहा = किमु = क्या। कसउटी = कषवटी = कसौटी = सोना परीक्षा करने का एक विशेष पत्थर का टुकडा। कसिअद्द = कसिए = कष्येत। कंचन = कञ्चन = सुवर्ण = सोना। बारह = द्वादश। बानु = वर्ण ॥

पहले भाट सच बोलने-वाला ऊआ फिर हीरामणि ने (भी) गवाही में (वही बात) कही। (भाट और सुग्गे की एक ही बात होने से) राजा (गन्धर्व-सेन) को निश्चय हो गया (और यह राजा अच्छे वंश का है यह बात) मन ने मान ली।

बाँधे ऊए रत्न-सेन को छोड कर (लोग राजा गन्धर्व-सेन के पास) ले आए। (राजा गन्धर्व-सेन ने) कुल पूछा (और पूछने पर मालूम ऊआ कि) प्रतिष्ठित चौहान है, (कवि कहता है कि) रत्न बाँधने से मैला नहीँ होता, अर्थात् रत्न जब तक बाँधा रहेगा तब तक छिपा रहेगा खुलने पर उस की कान्ति से झट लोग समझ लेँगे कि यह बढिआँ जवाहिर है। हीरा ऐसे दाँत पान के रँग से पके ऊए हैँ, अर्थात् पान के रंग से सुशोभित हैँ, विहँसने पर सभी ने देखा कि (जानोँ) बिजली से भी बढ कर हैँ। कानोँ मेँ मोम से मुद्रा चपकाए ऊए हैँ, अर्थात् कान फाड के मुद्रा नहीँ पहनाई ऊई है किन्तु मोम से नकली मुद्रा चिपकाई ऊई है, राजा की जितनी बातेँ ढँपी ऊई थीँ सब खुल गईँ। (राजा गन्धर्व-सेन की आज्ञा से लोग) एक कट्टर (और बडे) तेज घोडे को ले आए। (राजा गन्धर्व-सेन ने अपने प्रधान से कहा कि कहो) यह (योगी) घोडे को फेरे। (इस बात के सुनते ही राजा रत्न सेन उस घोडे पर) सवार ऊआ। (राजा रत्न-सेन ने) उस घोडे को छत्तीसो चाल से फेरा, (उस फेरने को देख कर) सब सिंहलपुर के रहने-वाले बाह बाह करने लगे॥

(ध्यान कर देखने से प्रसिद्ध हो गया कि) यह बत्तीसो लक्षणोँ से युत राज-कुमार है, जैसे हजार किरण-वाला सूर्य। (लोग कहने लगे कि) बारह वर्ण-वाले सोने को क्या कसौटी पर कसना (वह तो आप चमका करता है)॥

कथा है कि वशिष्ठ ऋषि के यज्ञ से पृथ्वी की रक्षा के लिये यज्ञ की अग्नि मेँ से चार प्रकार के क्षत्रिय उत्पन्न ऊए।

चौहान १। प्रमार २। चालुक्य ३। परिहार ४। (नागरी-प्रचारिणी सभा सीरिज़ नं० ४—८ के रासोसार का ६—८ पृ० देखो)।

घोडे को बारह समय पर निपुण सवार कोडे से एक वार धीरे, दो वार कुछ जोर और तीन वार बडे जोर से बारह स्थानोँ मेँ मारते हैँ। इस तरह से घोडे के फेरने मेँ छत्तिस भेद होते हैँ इन के जाननेवाला चतुर सवार कहाता है।

शिशुपालवध महाकाव्य—पंचमसर्ग के दशवेँ श्लोक की टीका मेँ मल्लिनाथ ने लिखा है कि—

"अत्र कशाः कशाघातास्तासां त्रयमुत्तममध्यमाधमेषु यथा संख्यंमृदुसमनिष्ठुर-सकृद्द्विस्त्रिकरणरूपं त्रितयं तस्य विचारः। एतेषु निमित्तेष्वङ्गेष्वेवं ताड्य इति विमर्षः। तद्वता तज्ज्ञेन।

यथाह भोजः ।

मृदुनैकेन घातेन दण्डकालेषु ताडयेत् ।
तीक्ष्णं मध्यं पुनर्द्वाभ्यां जघन्यं निष्ठुरैस्त्रिभिः ॥
उपवेशेऽथ निद्रायां स्खलिते दुष्टचेष्टिते ।
बडवालोकनौत्सुक्ये बहुगर्वितह्रेषिते ॥
सन्त्रासे च दुरुत्थाने विमार्गगमने भये ।
शिक्षात्यागस्य समये सञ्जाते चित्तविभ्रमे ॥
दण्डः प्रयोज्यो वाहानां कालेषु द्वादशस्वपि ।
ग्रीवायां भीतमाहन्यात् त्रस्तं चैव च वाजिनम् ॥
विभ्रान्तचित्तमधरे त्यक्तशिक्षं च ताडयेत् ।
प्रह्रेषितं स्कन्धबाह्वोर्वडवालोकिनं तथा ॥
उपवेशे च निद्रायां कटिदेशे च ताडयेत् ।
दुश्चेष्टितं मुखे हन्यादुन्मार्गप्रस्थितं तथा ॥
जघने स्खलितं हन्यान्नेत्रमार्गे दुरुत्थितम् ।
यः कुण्ठप्रकृतिर्वाजी तं सर्वत्रैव ताडयेत् ॥"

उसी जगह "पुला नाम प्लुताद्यनेकापरनामा हयानां गतिविशेषः। तदुक्तं हयलीलावत्याम् ।

प्लुतां प्लवङ्गतिमाहुर्याधारा पुलनाभिधा ।
पुनरेनां रलोपान्तां पुलामित्याह देशिकः ॥" यह भी लिखा है ।

जयादित्य के अश्ववैद्य की टीका में शुक्र का वचन है—

गतयः षड्विधा धाराः स्कन्दितं रेचितं प्लुतम् ।
धौरीतकं वल्गितं च तासां लक्ष्म पृथक् पृथक् ॥

इन छत्रों गतिओं में अल्प, मध्य, और अधिक वेग करने से अठारह भेद होते हैं। फिर अठारह में सुख से पैर रखता है या दुःख से ये दो दो भेद से सब गति छत्तीस तरह की हो जाती हैं। जयादित्य का टीकासहित अश्ववैद्य बंगाल की एशियाटिक सोसाइटी में छपा है ॥

मनुष्य के बत्तीसो लक्षणों के लिये इस ग्रन्थ का ७६—७७ पृ० देखो।

बारह वर्ण-वाले सोने के लिये इस ग्रन्थ का १५१ पृ० देखो ॥ २८५ ॥

चउपाई।

देखि सुरुज बर कवँल सँजोगू। असतु असतु बोला सब लोगू॥
मिला सो बंस अंस उँजिआरा। भा बरोक अउ तिलक सँवारा॥
अनिरुध कहँ जो लिखी जइमारा। को मेटइ बानासुर हारा॥
आजु बरी अनिरुध कहँ ऊखा। देओ अनंद दइति सिर दूखा॥
सरग सूर भुइँ सरवर केवा। बन-खँड भवँर भएउ रसलेवा॥
पछिउँ क बार पुरुब कइ बारी। लिखी जो जोरी होइ न निनारी॥
मानुस साज लाख पइ साजा। साजा बिधि सोई पइ बाजा॥

दोहा।

गए जो बाजन बाजत जेहि मारन रन माँह।
फिरि बाजे ते बाजे मंगलचार उनाँह॥ २८६॥

इति सूरी-खंड॥ २५॥

देखि = दृष्ट्वा = देख कर। सुरुज = सूर्य। बर = वर = श्रेष्ठ = विवाह योग्य पुरुष। कवँल = कमल। सँजोगू = संयोग्य = लायक। असतु = अस्तु। बोला = बोलइ (वदति) का भूत-काल, पुंलिङ्ग, प्रथम-पुरुष, एक-वचन। सब = सर्व। लोगू = लोग = लोक = प्राणी। मिला = मिलइ (मिलति) का भूत-काल, पुंलिङ्ग, प्रथम-पुरुष, एक-वचन। सो = वह = सः। बंस = वंश। अंस = अंश = अवतार। उँजिआरा = उज्ज्वल। भा = बभूव = भया = हुआ। बरोक = वर परीक्षा = बरेखी। अउ = अपि = और। तिलक = टीका। सँवारा = सँवारइ (संमार्जयति) का भूत-काल, पुंलिङ्ग, प्रथम-पुरुष, एक-वचन। अनिरुध = अनिरुद्ध = कृष्ण का पोता प्रद्युम्न का बेटा। कहँ = को। जो = यत्। लिखी = लिखई (लिखति) का भूत-काल, स्त्रीलिङ्ग, प्रथम-पुरुष, एक-वचन। जइमारा = जयमाला = विजय-माला। को = कः = कौन। मेटइ = मेटे = मृदसेतु। बानासुर = वाणासुर = वलि का बेटा। हारा = हारइ (हारयति) का भूत-काल, पुंलिङ्ग, प्रथम-पुरुष, एक-वचन। आजु = आज = अद्य। बरी = बरइ (वृणोति) का भूत-काल, स्त्रीलिङ्ग, प्रथम-पुरुष, एक-वचन। ऊखा = ऊषा = वाणासुर की बेटी।

देश्रो = देव = देवता। श्रनंद = श्रानन्द = खुशी। दइति = दैत्य = दिति से उत्पन्न। सिर = शिर। दूखा = दूखइ (दुष्यति) का भूत-काल, पुंलिङ्ग, प्रथम-पुरुष, एक-वचन। सरग = स्वर्ग = श्राकाश। सूर = सूर्य। भुइँ = भूमि = पृथ्वी। सरवर = सरोवर = उत्तम तडाग = श्रच्छा पोखरा = श्रच्छा तालाव। केवा = कमल। बन-खँड = वन-खण्ड = वन-भाग। भवँर = भ्रमर = भौँरा। भएउ = बभूव = ऊश्रा = भया। रस-लेवा = रस लेने-वाला = रसग्राहक = रसलः। पछिउँ = पश्चिम = पच्छिम। क = का। बार = बाल = बालक = वर। पुरुब = पूर्व = पूरब। कइ = की। बारी = बालिका = लडकी। जोरी = जोडी = युग = युग्म। होइ = भवति = होती है। निनारी = श्रलग-निर्नला। मानुस = मानुष = मनुष्य। साज = सज्जन = तयारी। लाख = लच। पइ = श्रपि = निश्चय कर। साजा = साजइ (सज्जते) का भूत-काल, पुंलिङ्ग, प्रथम-पुरुष, एक-वचन। बिधि = विधि = ब्रह्मा। सोई = स एव = वही। बाजा = बाजइ (वाद्यते) का भूत-काल, पुंलिङ्ग, प्रथम-पुरुष, एक-वचन॥

गए = श्रगुः। बाजन = वादन = बाजा। बाजत = बजते = वदन्। जेहि = यस्य = जिसे मारन = मारणार्थ = मारने के लिये। रन = रण = सङ्ग्राम। माँह = मँह = मध्ये = में। फिरि = फिर कर = भ्रमित्वा = घूम कर। बाजे = बाजइ (वाद्यते) का भूत-काल, पुंलिङ्ग, प्रथम-पुरुष, बऊ-वचन। ते = वे। बाजे = बाजन = वादन। मंगलचार = मङ्गलाचार = मङ्गल की रीति। उनाँह = उनद्ध = संनद्ध = संबन्ध॥

कमल (पद्मावती) के लायक (रत्न-सेन) सूर्य वर को देख कर सब लोग 'एवमस्तु' 'एवमस्तु' श्रर्थात् 'यह योग्य वर है' 'यह योग्य वर है' ऐसा बोलने लगे। (कवि कहता है कि इस प्रकार से) वह उज्ज्वल वंश का श्रंश मिला, (फिर) बरच्छा ऊश्रा श्रौर (विवाह के लिये) तिलक रचा गया। श्रनिरुद्ध को जो (ब्रह्मा ने ऊषा की) जय-माला लिखी थी उस को कौन मिटावे, (श्रन्त में) वाणासुर हार ही गया। श्राज ऊषा ने श्रनिरुद्ध को वरा, देवताश्रों में श्रानन्द ऊश्रा, दैत्यों का शिर दुखने लगा, श्रर्थात् श्राज पद्मावती ने रत्न-सेन को वरा, पद्मावती के पच के लोग श्रानन्दित ऊए श्रौर विरोधिश्रों का शिर दुखने लगा। (कवि कहता है कि देखो) स्वर्ग में सूर्य रहता है, पृथ्वी पर सरोवर में कमल रहता है (जिस से कमल खिल उठता है), श्रौर वनविभाग से भौँरा श्रा कर (उस कमल का) रस लेने-वाला ऊश्रा, श्रर्थात् सिंहल की रहने-वाली पद्मावती हीरामणि शुक सूर्य से खिल उठी श्रौर समुद्र पार

चित्तौरगढ-रूप दुर्गम वन से रत्न-सेन भौँरा आ कर उस का रस लेने-वाला ऊआ। पश्चिम का वर और पूर्व की कन्या (इन दोनों की) जोडी जो (ब्रह्मा ने) लिखी वह अलग नहीँ हो सकती है। मनुष्य निश्चय कर लाखाँ तयारी करता है, पर ब्रह्मा ने जो रची है वह (बात) होती है॥

जो बजते ऊए बाजे रण में जिस के मारने के लिये गए थे वे ही फिर (उसी के) विवाह-संबन्ध के मङ्गलचार में बजने लगे, अर्थात् दैवी गति जानी नहीँ जाती कि क्या होगी। किसी कवि ने सच लिखा है कि—

गिरौ कलापी गगने पयोदा लक्षान्तरेऽर्कस्य जलेषु पद्माः।
इन्दुर्द्विलक्षे कुमुदस्य बन्धुर्यो यस्य मित्रं न हि तस्य दूरे॥

वरोक के लिये इस ग्रन्थ का ८३ पृ० देखो।

अनिरुद्ध, ऊषा और बाणासुर के लिये इस ग्रन्थ का ४४३-४४४ पृ० देखो।

वामनपुराण के ९२ अध्याय में लिखा है कि राजा बलि के रसातल जाने पर उस का पुत्र बाणासुर पृथ्वी में शोणितपुर बनवा कर राज करने लगा॥ २८६॥

इति खूरी-खण्डं नाम पञ्चविंश-खण्डं समाप्तम्॥ २५॥

208. 1. Ia *māreu*, U *marā na gājā*. 2. K *jabahi agani apunai sira*. Ia U *aurah kahā̃* (U *kā*) *bujhāwai jarai* (U *jarā* with *parā* in the preceding half verse). 4. Ia K *sā̃ga* for *saba*. 6. U *phaniga* for *patā̃ga*. Is *jama gahā*, U *jama līnha*. 8. Ia *ajahū̃*, Ic *abahū̃* U *ajahū̃ kā̃pinī mō hiai*, K *abahū̃ maraū̃ na cēta tanu*. Is *na pāwaū̃ sā̃sa*.

209. 2. Ib *hitū* for *hateu*. K *hōta*. 4. Iac *mohi tanu āgi lāi kai hōrī*. Is *mohi jia*. 5. Ia *asa jāni*. 6. Is *līnha āhara*, so all except Ib (*ōhara*), and K *kehi gati bhau*. 7. Ic *sara sāji*. U *caḍhi aba citai jaraū̃ jyō̃ sātī*. 9. Ia U *aba yaha hōri ghāli tanu*.

210. 1. Is *gagana* for *kakanū* (ققنوس). Is U *sara baiṭhi*, Id *sara caḍhi baiṭhi jarai*. 4. Id *tehi kē āgi*. 5. Is *abahū̃......tē*. U *aba dēkhahu tasa cinagi chūṭai*. 7. U *hai kōū jō rākhi*. K *hai kōi unha rākhi*. 9. Ics U *birahī*.

211. 1. Ics U *rahā rakhawārī*. 2. Icds *tahā̃ bhā*. Ib *eka hā̃kā*, U *soi hā̃kā*. 4. *jāi kahā tinha tahā sā̃dēsū*. 5. Icd *jōgī ēka*. 6. Iad *jo rātē*, U *so lāgeu ūhā̃*. Ic *nisari* for *nikasi*. 7. Ia *jari uṭhatahi*. Ib *bajara āgi tehi jarai na bhāgā*. Ic *jari uṭhā to bhāga*. 9. Ia *kanaka pahāra jarā rāwata*, Ib *bhaē* (or *ghanē*) *pahāra jarā rāwaṭa*. Is *kanai pahāra jarata hai*. U *kanaka pahāra jarata hai*. K *kanaka pahāra hōta hai rāwaṭa*. K² *tīnau lōka jarata hai*, K³ *ga pahāraē saba hōta hai*. Others as in text.

212. 2. Iacds K *ruṇḍa*. The *muṇḍa* of Ib and U makes the best sense. 6. Ia *kapi kai rūpa so adhika sohāwā*.

213. 2. Ic K *paraū̃ maraū̃*, Is *paraū̃ jaraū̃*, U *paraū̃ ēkahi bārā*. Ic *nisari parāna jāi*. 9. Ia *jaū̃ mahēsa nahi āwata*, Is *jaū̃ mahēsa nahi amia bujhāwata*. K *jau mahēsa nahi āi bujhāwata*, K² *jau na mahēsa bujhāwata*, K³ *jau na mahēsa nahī amia bujhāwata sakala jagata hoi lāgi*.

214. 1. Is K *upajā*. 4. Ia UK *sata bā̃ta*. 5. Ia *sunī so cā̃da jāi siu lōkā*. Ic *sunā̃ so sabada*. 9. UK *mohi taji ohi jaū̃ sawā̃rahu*.

215. U *bhalehi rūpa*. Is *āchari tātā*. 6. Ia *jiu bali dīnhā*, । *sira utāri neochāori kīnhā*; U *jīu maī̃ wāraū̃*. Ib *sīsa utāri nichā̃?*, U *sīsa kāṭi neochāori sāraū̃*. K² K³ *sira utāri nevachāori sāraū̃*. 7. Ias *dēū̃ baḍhāī*.

216. 2. All N give *parimala*. Ia has *prēmala prēma rahai tehi chapā*. Other P. are doubtfnl. They may be read as *parabala*. 3. Is *kasata*. 4. *ḍabhakahī*, so Ias U. Ib *ṭapakahī*, Ic *dēkhahī*, Id *baha-kai*, K *ḍahaḍaha*. 5. Ia *yaha ohi lāgi janama kai sījhā*. Ids U *ohi lāgi janama puni* (Is *tō*, U *taī*) *sījhā*. K *ohi lāgi tribēnī sījhā*. 7. Ib has *ehu* for *ēhū*, and inserts *tumha* after *tasa*. Ia U *siu* for *tasa*. Id *aba ēhū kahā̃ mayā*. 8 Ib has *hatiā du eka caḍhāehu māthaī*, *mahā dukha aparādhu*. Ids *abahū̃* for *ajahū̃*. Ic transfers *kā̃dhaī* to second half line and has *kā̃dhaī tohi aparādhu*. 9. The first half runs as follows in the various copies :—

Ia	*tīsari ēhū lēhu tumha.*
Ibd	*tīsara ēhu laihu kai māthaī.*
Ic	*tīsara bhūlahu aba* (sic).
Is	*tīsari lēhu ēhu kai kā̃dhaī.*
U	*tīsara yahau lēhu sira.*
K	*tīsara hoi lei aba.*
K²	*tisarī ihau lēhu māthē.*
K³	*tisarī ihau lēhu kī māthē.* We have followed Ibd.

For secod half, Ia has *jau lāwai kai*, Ib *kai purawahu ehi sādhu*, U *jaure lewai kai sādhu*.

217. 1. Ib *lēkhā*, Is U *rākhā*, for *lākhā*. 5. Ia *basaha* for *baila*. Ib *kaha rājai sata*. Ias *girijā-*[illegible]*ti sō āhi*. Ic *girijā-suta tapa āhi*, U *yaha* for *sata*. K *kākara suta pati āha mahēsū*. 6. Ia U *jō jiu cāha rahai soi nārī*, । *taji mahēsa kita hōta bhakhārī*. ॥ 7. Ia substitutes 6 for this, thus,—*cīnhai sō jo karai asa khōjā* । *para kāyā para dēsa sā̃jōgā* ॥ Ids U *jabahī bhā*. U *phērā* for *mērā*. 9. Is *cēlā siddha*. Ia transposes this dōhā with No. 218.

218. 2. Ias *jaū pai asa phãda pēma kē ghālā*, U *jinha asa khēla prēma kai ghālā*. 4. Ia second half *dhara nahī mūta ratana tasa rōā*. 6. Ia *Jaraị pahāra nīra taĩ āṭī*. 7. Ia *jarai nīra tasa marai bihūnā ı parabata jarai hōi jasa cūnū*. ॥ 8 Ia *jō jō sunai so rōai dhara nahi rakata kai ãsu* ı U *tasa rōai jasa mēgha ghana*, K² *tasa rōai jō jārai jiu* ı *garai rakata au mãsu*. K³ *tasa roai au khōai* ...

219. Ib *tū rōā*. K *bhā parasana dukha dārida*. 4. Ic *taĩ*. 5. Iac *bāta sunahu upadēsī*. K² *kahaū hāta aha haū upadēsī*. K³ *kahaū hāta suna hō upadēsī*.

220. 1. Iak *dēkhu dahū kā kara chāya*. U *nirakhi*. 3. Ia *nau paurī kahā̃ lāgu kewārā* K *ḍiṭhiārā* Id *diwasahi phirahī*. Is U *pai tahā̃ phirahī*. 5. Ia *jasa kari bhēda caḍhai hai cā̃ṭi*. UK *caḍhai gura cā̃ṭī*. 6. Iak *gaḍha tara surāga kuṇḍa tehi māhā*. So Is U but *kuṇḍa augāhā*. Ia K *tahawā̃ pantha agama augāhā* U *jahā̃ na wāra pāra nahi thāhā*. 8. Ids have *dhasi marai* for *dhasai*. Ia *jasa marajiā samūda māha dhūḍhi uṭhai lei sīpu*. 9. Ia *khōji lēhu caḍhi saraga saū tū caḍhu*, &c. K² *ḍhūḍhi lēi sō saraga dvārī tau caḍhasī* ... K³ *ḍhūḍhi lēi jō saraga dvāri au caḍhai*....

221. 2. Ia *jāe so tahā̃ sā̃sa mana sā̃dhē* ı ...... *kānha mana, bā̃dhē*. Ib *tahā̃ so jāe*. Ic *jāe sōijō asa mana*. Ia K insert after No. 2 the following :—

gau patāra kālī puni nāthā ı *apuruba kawāla āu taba hā̃tha* ॥

3. Is *tū paru nātha*. Ia *jaū pai karasi āpu kahā̃ nāsā* ॥ Is *marahu āhi*. U *karahu* for *marahu*. 4 Ia *karu bātā*. 5. Ias *kahaba* for *kahata*. Is *au tū āhi nāhī saba*. U *āpu hai sōī* 6. Is U *muai* for *marai*. Ia *puni kahā̃*. Is U *puni kata mīcu marai kō mārā*. 7. Ia K om. this line, see above. U *āpuhi gurū suā yaha cēlā*. 9 Ia *āpuhi āpu jo karasi taĩ*. K² *āpuhi āpu karai jo au dūsara na kōi*. K³ *āpuhi āpu karai yaha kahā̃ sō dūsaru kōi*.

222. 2. K *chāḍi manṭha. jōginha*. 3. Ia K *saba gaḍha chē̃ka gaī taji māḍhī*. Is *gaī* or *kīnha*. 4. Ia *khara-bharā* for *khara-pharā*. 6. Ib *rājā saū bhai jāe pukārā*. 7. Icd *kaunu kahā̃ kahā̃*. 8. Ia K *asa ko*, Ib *kō so*. Ic U *ko bhikhārī asa*. 9. Ic *bēgi* for *jāi*. Ia *paṭhahu basīṭha*, K² *dai jāhu basīṭha*, K³ *dai bhēji basīṭha*.

223. 1. U *basīṭha so āi*. 2. Ic *dūra hoi mēlahu*. Is *yaha gaḍha chā̃ḍi*. 5. Ia *lēhu jita cāhahu*. K *phirahu besāhi lēi jo cāhahu*. 6. U *bhuguti dēhī*. 7. Ia *ihā̃ dēo asa gaē johārī* ı *tumha jōgī kehi mānahu bhikhārī* (sic). K² *ihā̃ deotā asa gaē johārī* ı *tumha patagga kō ahahu bhikhārī*. K³ *ihā̃ deotā asa gaē johārī* ı *tumha patagga kā ahahu bhikhārī*.

224. 1. Is U *anu haū bhīkhi jo*. 2. Ib *ghara bārī*. 4. Is UK *asa āhi na dūjā*. 7. U *yaha prīti nihōrā*. 8. U *bāra āwahī jehi*, etc. 9. Ic *āsa nahī*. U *āsana gahē̃*. K has an altogether different and very corrupt dōhā. K² and K³ *ḍiḍha ātana*

225. 1. K. *jau sāga pīsā*. 2. U *jōga jehi hōī*. 5. Ia *saba bajara*, Id *punī bajara*. 8. Ib *jōgata kī*, UK *jōgati*. 9. Ia *sundara bara nahi rāja*. Ib *sundari cāhi*. K² *sundari parī*, K³ *sundari jāi*.

226. 2. U *prēma sādhi nā kōū sādhai*. 4. Ic *hasati baḍa sāthī*. Id *hamaraĩ sata gurū hai sāthī*. 6. The MS. are as follows :—

Ia *kurakuṭi hai jō pāihi bārū* ı *tehi uṭhāi kai karai pahārū* ॥
UK *kurakuṭi rahai jo pāū tarērī* ı *parai* (K *uḍai*) *naina uṭhi sakai na hērī* ॥
Ib *jō gaḍha garaba karahī tē kīē* ı *mandira uṭhai ḍahai bhai nāyē* ॥
Icd *gaḍha kai garaba khēha mili kīē* ı *mandira uṭhai ḍahai bhai nayē* ॥
Is *jo guru ē gaḍha jāwāta bhaē* ı *jo gaḍha garaba karahi tē gaē* ॥
K² *jau re garuē gaḍha jawatu bhaē* ı *jau gaḍha garaba karahī tau gaē* ॥
K³ *mandila ḍhāhi uṭhāwai naē* ı *gaḍha kara garaba kheha mili gaē* ॥

We have followed Icd. 7. UK *jā kē gaḍai na nisarai sōī* ı *hā̃sai jo garaba marai sō rōī* ॥

227. 2. *jōgihi kahā̃ rākhē*. 3. Ic *kita hōū*. 4. *pati*, so Iad UK. Ib *bata*, Ic ? *tapa*, Is *mati*. 7. Ia *jō jōgī āē sō khēlē*. Ic *jōgī āē so asahī khēlē*. K *jōgī hōihi jāihi khēlē*.

228. 3. Ib UK insert before 3 *paŋkha na mō kahā̃ dīnha gosāī̃* ı *paŋkha hōta tau jātiũ ḍāī* ॥ UK also omit 7, but Ib has it. 4. Ib *pāchaĩ suā*. 9. Ia *na chua sakai sō*, Ib *na*

kōi chuai sō. Is *na kēhu gahai sō.* U *na jāi gahi.* K² *ākhara likhē pēma kē.* K³ *hātha achara nahi chui sakē.*

229. 1 Ia *kahehu*, Ic *kahau*. 2 Ia *kahehu*. Ic *kahau*. Is has *bali* throughout, so UK, P give no indication. 4 Ia *īsa tumha-hĩ*, Ib *īsa-hũ tumha*. Ib *īsa tumha mohi*. Is *aisa haũ tumha*. U *pahilaī-hĩ kēhũ bala dīnhā*. K *sō aba-hĩ tapasī bala*. K² *bhalehi aisa bala tumha kahã dīnhā* K³ *bhalehu tumhahu aisa bali dīnhā*.

230. 1. K *sō dukha-bāta likhaũ* 2 Ia, *tana jō kara saba rakata*. 3. Some copies make this line the 5th U *biraha bijāri jarai bana*. Is *tana jarata na jarai*. Ia substitutes *wā-saũ kahaũ dūkha kau nāmã* । *jā-saũ hōe duhũ jaga kāmã*, and makes the line No. 5. 4. Ia *citā...hōi anacitā* Ic *cintā......nintā*, V. *nītā ...mītā*. 5. Ia *kai bātā... hōi dukha tātā*. 6. K *tua* for *tumha* Ia *rakata ke aṅka likhē bhai syāmã*. 7. Is *kāhū* for *kōī*. Ia *ata dukha*. 8. Is *aba tau maraũ*. 9 Ia *tehi sātha*.

231. 2. Ia *sūra* for *suruja*. 3. Ia *sãga tahã*, Is *bhaũra tahã basai hulāsū*. 5. Is *kā sukha bisarāmā*. 9. Ic *bhau*, Id *jyō* for *bhai*.

232. 1. Ia *āsa jala pāī*. 2. Id *na jāē*. Is *na jānahū*, U *kaṭhina jīu sō prītama kērā*. 3. U *bīcahī jānahu*, Iac *agama* for *bikhama*, Ia U *milana*. 4. Is *kā trāsā*. 5. Ia *tumha pũ°*, Ic *jiu pũ°*. U *pēma mada mātā*. 8. Is *bāna sara mārehu*. 9. Ia *dōsari bōli*, Ib *bāra jo bōlā*, Ic *dūji bāra jō māra*. U *ēka bāra phiri bōlisa*.

For the whole of this set K has:—

Hīrāmani āwā tehi māhā । *jānahu pyāsē sītala chāhā* ॥
Bhala tuha suā kīnha hai phērā । *kahā rajāesu prītama kērā* ॥
Bāta o haṭa bica gagana pahārā । *hirdaā milā no hōi ninārā* ॥
Aisa na tuha cita jāu bidēsī । *kahasi na tehi ka sã dēsa sãdēsī* ॥
Kā rānī pūchahu ohi bātā । *jani kai hōi viraha kai mātā* ॥
Toharē darasana lāgi biyōgī । *ahai so mahādēo maṭha jōgī* ॥
Tu basanta kai ihã sīdhāi । *ohi kā marama to jānu gosāī* ॥
Dōsari bōla na bōlai lihai padumāwati nāu ॥
Disiṭi bānā asa mārehu ghāela bhā tehi ṭhāo ॥

So K² and K³ ॥

233. 1. Is *bāna jana phū°*. Ia *rudhira*, U, *jasa chūṭī*. 2. Is *nainahu*. 3. K. *sūruja udai*. 4 Iac K. *banaspati*. U *banipatī*. 5. Is *puhumī pūji bhaī*, U *bhūmi*. The second half varies. The reading given is that of Ib.

Ia *au saba tahã jo rāta pakhērū* ॥
Icd *autahī bana saba rāta pakhērū* ॥
Is *au tahã sō rāta pakhērū* (sic) ॥
U *au rātē tahã bahuta pakhērū* ॥
K *rātē nirakhata sabai pakhērū* ॥
K² *jahã rāga rāta bhae tahã pakhērū* ॥
K³ *au tahã rahē so rāta pakhērū* ॥

6. Ia, *jala kāyā*. Ic. *tehi kāyā*, Is. U. *sahi kāyā*. Is *mēgha rātau*. 7. Ia UK *saba bhījā* Is *jahã bhījā* 8. Id *jahã cakōra*, UK *cakōra au kōkilā*. 9. Ic *bhari rōai*.

234. 1. Ic *sīsa parāē*. 2. Ia *tau jānu*, Icd *jasa jānu*. K has second half *dēo pūji puni ō pahã āī*. 3. K *ēkahi bāra hōū nistārā*. 4. Ia *cāhu ēka jo lāī*. 5. Is *gaḍha āgama*, U *gama āgama*, K *tahã* । *mana kara khēla agama kara jāhã*. 6. UK *kara bārā*. Iac K *au parai*, Id *jō parai*. 7 Ia *cāna*, Is *caḍhai*, for *cahai*. Ic *pāwai sãsa ki marai nisāsā*. 9. Ia U *nikasai*. K *nikarai* Ia UK *kahā* for *kāha*.

235. 1. Ia *kai sandēsu chōḍi dahi pātī*; *dipa*, all P have دپ, which Ib vocalises, *dibba*, Is has *divya*. UK have *dipa*. All printed editions translate *dibba* by *nihāi* or 'anvil.' Ia *jasa tātī* 2 Icd *bandhē*, K *kanṭha janu lā°*. 3. Is *tasa nisarai pātī......kā wātī*, U *tasa nikasai tātī ...aura kō pātī*, K *sãga nikasai pātī.... kē wātī*. 4. Ia *yaha bātā*, Ids *mukha*,

bātā. Ic *ãsu bhaeu*, Id *ãsũ bhā*. 5. *gērā*, so Is. All P may be either *gērā* or *kērā*, U has *mērē* K *kērā*. Ic *dēkhi jo kaṇṭha lāgi jari gērā* (or *kērā*). U *dēkhahu kaṇṭha lāgi kai mērē* K *dēkhā kaṇṭha jasa lāgu su kera*. In second half, Is *kā ghēra*, U *kē*, K *kai*. 6. Iac *jari jari biraha hāḍa bhai cũnā*. Is *mānusa kā rakata*, Ia UK *mãsa kā rakata*. 7. Id *tarapata* for *tapata*, Ids U *dēi na pārī*. 8. UK *tohi kārana jōgī bhā*, Ia *kīnha āga dāhi*. 9. Ic *tumha*, Id *taĩ*. UK *bhuguti dēsi na tāhi*. K2 *bāta na puchē tāhi* K3 *bāta na pūchasi tāhi*.

236. 1. Ia *kahau*, K *kahau suā tō sō nija bātā*, Ia *so āju...hoi rātā*, so U *hoi ratā*. Id *cāhaũ āju*. K *wahi rāta*. 2. Ia *jānai sōi*, U *jānai marama*. 3. Iacd *ajahũ*. Is K *nā jahu*, and so throughout the following lines, U *ajahũ na (prīti*, and so throughout the following lines. 5. Ia *ajahũ jiai*. 6. Is *hia mahā kai ḍara*. 8. Ia *rahaba*. K *tehi kā kahi thira rahanā*. Id *jō hia*, U *jō jehi*. 9. Ias *jahā wahā sunahī lēhi*, Ic *jahawā sunai*. Id *jhūṭhī sunahi*. K *jahā nāũ sunai*. We have adopted the text of Ib U.

237. 2. Ia *lāgu sohāgā*. Iab *hōi to lāgā*, Is *hoi sālāgā*. 3. Ia *siu maṇḍapa*. Ic *maṇḍapa tōrī*, U *jōri gaiũ maḍha maṇḍapa hōrī*, K *gai jōgī maḍha manḍapa hōrī*. *Tahawāi* &c., so Ibds. Ia *tahãwahã khana gāṭhī taĩ jōrī*. Ic *tahawā kasa na gāṭhi*, U *tahā taĩ naina gāṭhi nahi jōrī*, K *tahawā naina gāṭhi tuha jōrī*. 4. Ic *tu bisābhāri so dēkhata nainā*. Ia *mukha āu na bainā* 5. Ia *maku khana jāgu dēũ*. 6. Ib U have for second half line *kaisai bhuguti parāpati hōī*. 7. Ia *rabi hoi caḍhai*, K *sasi maĩ caḍheũ*. U *āwahu pāsā*. 8. Iab *taba tũ*. Ics *rāma sīa*. 9. Ia *kachu kahaũ*, Ia K *aba milaũ*, U *aba milai*.

238. 1. Ic U *jō hō sūra*, Ias UK *caḍhi dhāvahu...hōhu . pāwahu*. 2. Ia *tũ bhikhāri*. Ib *tũ rē jōga kō āha akēla*. K *tũ jōgī kā āha*. 3. *campāwati*, so Ib U Ias K *sapanāwat*, Icd *sampāwati*. 4. *sudai baccha*, so I as U Ibd سدي پچھ Ic, سداپچھ (without any points, K *rudumacha* (sic . Id *kanakapūra*, Is *kaṅkanapura*, UK *gagana upari* 6. *gandhāwati*, so Ib. Ia, *kumudāwati*, Icd K, *manōhara*, Is *kaḍāwati*, U *kundāwati*. 7. *sara sura*, so all except Is *śrīdhara*, U *sīdhara*, K *siradhara*. Icd *ga bādhā*. 9. Iad *jiu nāsa*, UK *karai jo āpuhi nāsa*. K2 and K3 *prathama karai apanāsa*.

239. 1 Ia *haũ puni aisī tō saũ rātī*. Cf below, V. 8. 2. Ia *nibāhasi*, Ic *yaha jaũ prīti......kētakī kāṭā*. 5. Id *pīwī na pāni*. Is U *piai*, *na pāni*, R *piahi*. 6. Is *jimi jōrī*. 7. Ia UK *dala māhā*, Is *jala māhā*. 8. The readings vary as follows :—

Ia *hamahũ ahaũ asi tō saũ*	*sakasi to ōra nibāhu* ।
Ib *hamahũ aisi haũ tō saũ*	*utara likhā jasa āhu* ।
Ic *hamahũ aisi haũ tō saũ*	*sakasi to ōra nibāhu* ।
Id *hamahũ aisi tohi rātī*	*sakasi to prīti nibāhu* ।
Is *ahaũ aisē jaũ rātē*	*sakasi to prīti nibāhu* ।
U *jasa haũ sası tō saũ kahaũ*	*sakahu to prīti nibāhu* ।
K *hau asi dēkhahu tau sō* (sic)	*sakahu to ōra nibāhu*
K2 *haũ aisī tohi rātī*	*ūtara likhā nibāhu*.
K3 *haũ aisī haũ tōhi kō*	*sakahu to prīti nibāhu*.

We have followed the majority.

9. U *rāhu bēdhi jaũ pārathē*.

240. 1. Ia *aisa tapa*, U *baiṭhi tapa*. Ic *haũ asa maĩ gayā bimōhī* (sic). Id U *mauna gāwāē*. Is *jauna lawāē*, Ias U *nirajīu jīu dayo* (Ias *disa*) *ōhī*. 3. Ia *sukhana*, Is *sukhanā*, Icd *sukhamā*. 4. Iab *gāherāi puni*. 9. Iab *jhāri kai*.

241. 1. There are wide discrepancies in the first half of this verse as follows :—

Ia *murchita āsa pāsa jo pāwā* ।
Ibc *mua jehi āsa pāsa so pāwā* ।
Id *mari jahā āsa pāsa so pāwā* ।
Is *suā ahā jehi āsa so pāwā* । (the reading adopted).
U *suā ju āi hātha tani lāwā* ।
K *suā jo āi hātha tana lāwā* ।

For *bahurī*, Ic *līnhesi*, Is *phiri kai*, K *palaṭā s̃ãsa āsa jiu āwā*. K^2 *phirī suāsa pēṭa jiu āwā*. K^3 *bahura suāsa pēṭa jiu lāwā*.

2. Ibs *dēkhesi jāgi suā hai ṭhāḍhā* । *gurū ka bacana dēkhu* (Is *sunẽ*) *mukha kāḍhā* ।

3. Here again there are wide discrepancies. Ib gives two alternative readings (Ib 1 and Ib 2) for this and the next line.

Ia *guru kara bacana sarõ dui mēlā* ।

Ib K^1 *gurū sabada dui sarawana mēlā* ।

Ibs K^2 *sabada bōli kai sarõ* (Is *sravana*) *ughēlā* ।

Ic *guru kā sabada sarõ dui mēlā* ।

Id *sabada ēka jo sunahi akēlā* ।

U *guru kā bacana srawana lae mēlā* ।

For the second half, Ib1 and U have *kīnhi so disiṭi bēgi calu cēlā* ॥

4. Ia *bhai kēwā*. Ib1 *hai bīca*. Ib2 Is and K^2 omit this verse, and substitute the following, which is also given as an alternative reading by Icd. All these (except Ic) agree in placing this substituted verse at the end of the set of seven *caupāīs*.

Ib2 अउ दरसन कहँ नइन पसारी । दरसन चाहउँ रूप तुम्हारी ॥

IcsK^2 अउ अस कह हउँ नइन पसारी । &c.

Id अउ अस कहँ मइँ नइन पसारी । &c.

5. K *pauna sātha tō kahã sãga lāē*. Ic *disiṭī chipāī*, Is *bujhāī*.

7. The first two words are in all N. तबउडंत P all differ. They have

Ia تباوڈنت

Ib آد انت

Ic تب اونت

Id تب آونت. In all these و may also be read as ڈ. For the second half Ic UK have *pala mohã āu*, Ia *bēgi calāu cahaũ*, Id *bēgi jo āu*, Is *pagu cali āu*.

8. Ia *sulacchanẽ*.

242. 1. Iac UK *suni padumāwati kai asi mayā* (Ia K *māyā*), Ia *nau kāyā*, K *nai kāyā* UK *paluhĩ* for *upanī*. 2. Ia *sōi saṅkhahi*, Icd. *asa jāgā* 3. Iac *milai kahã*, Id *cãda kalaṅkahi dīnhi āsā*. Icd *sahasa kalā sūruja*. 4. Ia *pātī līnhi ūsa lai lāwā*, Ic *pātī lai kai*, Id *pātī lai lai*. Ic *jimi pāwā*. 5. Ib *aisa piāsā*, U *āsa nirāsā kou kehũ kēra*, Ib *jō jehi gāra*, IdK *jō jhīkāra*, U *ujiyara sōi jāhi saũ hērā*, Ia *ohī disa hērā*. 6 Ia *sunatahĩ kauna pauna sikha kīā*, Ids *pauna*, U *gauna pauna*, K *aba tō tahã gauna bhai dīā*. 8. Id *hahĩ basai*. 9. Ia *maĩ sō calaũ*, Ib *haũ tahã dharaũ*, Is *hama tahã calahĩ*. K^2 *haũ tahũ caḍhaũ lilāṭa*. K^3 *hama cali āu lilāṭa*.

243. 2. Ia *tahã pāyasa thāhā*, Ic *parā tahã*, Id *parā janu*, Is *pāī thāhā*, U *janu pāwai na thāhā*, K *jahã pāi athāhā*. 3. Ib *prīti kō lāgū*, Icd U *prīti kara*, Ic *saũha dhasā na sūjē āgū*. 4. U *dhãsi jasi sãsa na mārā*, K *līnha sãsa jasa sīdhanha mārā*. 5. Ic *tarai*. Ia *mãcha*, Ib *cēlā pãchhi gurū*, Is U *gurū bhā kāchū*. 6. Ic *jimi dhãsi*, U *jasa dhãsi*. Ic *jimi dīā*. 7. Is *ḍhũḍi līnha*, U *khōli līnha*. Ia *bajara kewāra so jāe*. Id U *bajara mũda sō gā ūghārā*. 8. Ia UK *saraga kara*, Ib *saraga asa*, Is *surãga gaḍha*, Ia *caḍhata raini bhā bhōra*, Is U *caḍhata hōi gā bhōra*. K^2 *caḍhata gaeu hoi bhōra*. K^3 *caḍhatai bhai ga bhōra*.

9. Ids *pukāra rājā saũ*.

244. 1. Ib *pũchī bāta*, Is *pũchī pāsa patrī jō*, UK *pũchā rāja-pãḍita au* (K *jata*) *paḍhē* 2. Ia *karanī kauna siddhi*, Id *kahahu jo*, Is *jehi pāwahī*, UK *kahahu sajāi kauna sō* (K *wai* · *pā*°. 4. Ia *sīsa para*. 5. Ia *saraga jāi sūrī para sikhē*, Icd *caḍhē saraga sūrī*. 6. Ia *pai* for *para*, Ias UK *tāhi na dōkhū*. 7. Ia *cōra pakari bēdhatī*, U *cōra parāwa*, K *cōra pagāra*. 8. Ic *jasa ehi rāja mãdira kahã dīnha raini hoi sẽdhi*, UK *jasa rē rāja* (K *oi cōra*) *bhãḍāra kahã*. 9. Ia *tasa inha mōkha hoi taba*, Ic *tasa tinha tapa mōkha hai*, Id *taisa caḍhē puni*.

U *taba tinha mōkhu hōi jaū̃*, K *tasa unha mōkha hōiai*, Ia *jaba sūrī saū̃ bēdhi*, K *jaba mara sūrī bēdhi*. K² *māria sūrī bēdhi*. K³ *mārahu sūrī bēdhi*

245. 1. Ia *aisā cōra*. 2. Ia *nisaṅka aisā jo bhā̃°*. K *tākahī̃ jahā̃ tahā̃ uḍi jāwahī̃*, with *bhā̃wahī̃* in the preceding half line. 3. Icd *siddha ḍarai nahi*. 4. Ia *jāi tā kī* (sic) *mana jahā̃*. Ib *hia* for *pai*, K *jia mahā̃ jahā̃*. 5. Ias *caḍhā*. Ib *pai nāhī̃*, Is *tē nāhī̃*, U *dharai wai nāhī̃*. 6. There are great variations.

Ia *mānata gīda dharai tō rājā* I *siddha dharai to kuccī kājā* II
Ib *jambū kahana calai jō rājā* I etc. as in text
(or) *chambaka kahā̃ jō cāhai rājā* I
(both readings given)
Ic *campaka para jaū̃ caḍhiau rājā* I *siṅgha sāji kai caḍhia sājā* II
Id *campaka jo dharai hoihō rājā* I *sīgha kai sāji charai tehi rājā* II
Is as in text.
U as in text, except *dharihō* for *caḍhiau* I *siṅgha samāja caḍhai tau chājā* II
K as in text except *dharai koi rājā* I As in text, except *caḍhai* for *caḍhia* II
K² *jambuka kahai so caḍhiē rājā*.

7. Ia *chalahī̃ marai bali jāi na mārā*. Ib *jarai na jārai marai na mārā*.

8, 9. Ia *chalahi chalā bali bā̃wana* *mēlā hā̃dhi taṅgra* I
chalahi chalā laṅkēsara *chanata nalā kai bāra* II

The latter half of the second line is very doubtful. No vowels are marked.

8. Id *rājā caḍahi*, Is has for second half *charahadanasāi*, from which some syllables are missing. U for second half *chāraū̃ milai sukhāi*, K *rājā chārā sōī*.

9 Ib *siddha karahī̃ jehī̃ disiṭi*. Id U *binu chara māri na jāi*. K *binu chara māri na hōi*.

246. Ia آوهُ کرنه کودر مس ساجا
Ib آوهو کروی گدّر مِس ساجو
Ic آوه کوری کدر منس ساجو
Id آوه کوري کيدر منس ساجو
Is आवइ करी गुदर मिस साजू ।
U आवइ करइँ गुदर मिस आजू ।
K आवइ करी गुदार मिसु आजू ।
K² आवइ करिए गुदर मिसि साजू ।
K³ आवइ करी गुदर मिसु साजू ।

Iacd do not distinguish between گر and کر

Ibcd *caḍhī*. 2. Ibc *hōhī̃*, Ia K *sā̃jōwa*. Is *subhōgī*, Ibc *dharahī̃*. 3. Ia *kōṭi kaṭaka dala bājē*. 4. Ia *sakala pahāra sahata mahi halē*. Ibc *pahāra parbata*. A printed commentary says that *puai* = *pahāra* = *giri*. 6. Ia *hā̃kē āwahī̃*.

247. 2. Ib *jānata hoihai puni jū̃°*, Id *asa jānata kichu*. 5. Ia *niti tākā*, Ic *jia tākā*, U *hia tākā*. 6. Iab *para* for *baru*. Ia *jāu jāu*, Ic UK *jāe jāe*. 7. Ib *cakara phirāwahī̃*. 8. Ia UK *satta bīca*. Ibd *jia rākhi*.

248. 1 Ia *caḍhi karī na*, Ib *hoi jūjhi na*, with v. l. *karī* for *jūjhi*, UK *karia na*. 2 K. *dijai*. Ia *raṅga na rahai*, Ib *jūjhi* for *ūbha*. U *hoe ūbhai*, K *raṅga na rahai jo ūca karījai*. 4. U *jaū̃ pai nāi*. Is *pēma pā̃tha sūjhā* Iac U *karahī̃* for *marahī̃*, which Id also gives as a v. l. Is *pēma jeī̃ būjhā*. 5. U *jūjhi nikariai*. 6. Id *sōī puni*, U *pāni taisaī̃ jani mārā*, K *pāni nahī̃ hōe nirārā*. 8. Ia *pēma pāni*, Ic *pēma pantha*.

249. 2. Ia *nā ḍara jiu dharata*, U *ḍaraki*, K *ḍarai*. Ib *janai*, Ia *nāhĩ marana*. 3. Ic *phā̃sa dhari mēlī*. Ia *bisamai*. 4. Ib *dēu*, *lēhu*. Ia *jaba lagi tana*, Ic *jo āhi tana*. 5. Is *kĩgarī taba tēi bajāwā*, U *nēhu bajāwā*. K. *nēhu guputa*. Ibs *bairāginha*. 6. Ics *pahilahĩ*. 8. Iacd *rahā sō nāũ*. 9. Ia *jahā̃ jāũ ohi*, Is *jahā̃ tākaũ*, U *jahā̃ tahā̃*.

250. 1. Ia *jau lahi gurū ahā nahĩ cīnhā*. Ia انترپت ناسون کینها. Ib *taba lagi kōṭi ā̃tarapaṭa dīnhā*, Is *ā̃tarapaṭa bica hata*, U *bica bica*, K *bica taba dīnhā*. 2. Ia *tana mana jībana jōbana sōī*, Ic *puni sōī*, U *tanu manu dhanu jiu jōbana sōī*. 3. Is *haũ tō*, Ic *maĩ maĩ*, K *uparāhĩ*. 5. Is U *kara pūrū*, all P vocalized plainly *guru*. Ia has *sāĩ mōra asti guru pūrū*, Id *sūri dinha masta guru*, K *guru mēlī hastī kahā̃ pūrū*. 6. Ia *guru asti*, Ib *caḍhā bisēkhā*, Ib *nāsti kai dēkhā*, U *nāsti asti*, K *asti nāsti*. 7. Iac U *jala* for *puni*. Verse 8 is as follows :—

Ia گرو مور موری هئین * دئین ترنک—م دهاتهه

Ib گُرو مور مورین سِر * دینهین جس ترنکهه دهاتهه

Ic گُرو مور مورین هت * دینهین ترنکهه دهاتهه

Id گرو مور مورین هین دینهه ترنکهه دهاتهه

Is गुरू मोर मोरे चित दिह्े तुरंगह्वि ढाठ।

U गुरू मार मोरें सिरह्विं। दिए कुंरंगह्विं ढठि।

K गुरुमोरमोरसिर देइ तुरंगह्वि ढाठ ।

K[2] गुरू मोर मोरे सिर दीन्ह तुरंगम ठाटि ।

K[3] गुरू मोर हिरदै बसै गह्े तुरंगह्वि ठाट ।

Iacd do not distinguish between کر and گر.

251. 1. Is K *padumāwati kara cēlā*. 2. Ibds *ohi nāũ na jānaũ*. 3. Is *baiṭhaka dēū*. 4. Instead of *lai so*, U has *āni* and K *lēi*. Iabc *nau autāra*. 6. Is U *sai* for *saĩ*, Ic K *sō*. 7. Ia *bāra caḍhi*, Id *bāra bhai*. 8. UK *darasa dikhāwahu* (K *diyāwahu*) *tāhi kara*. Is *haũ so bhikhāri*, K *haũ jōgī jaisē pataŋga* (sic). 9. K *sira dei mohī*.

252. 2 Ia *nahī rōjū*. 3. Iad U *jabahī . . . tabahī*, Ia UK *kawā̃la kahā̃*. 4. Ias UK *bisamai*. Iad UK *hie gaeū*. 5. Ib *gaṭa gaṭa mā̃su*, K *rakata* for *guputa*, Ia *kara nāsū*, U *bhā nāsū*. 6. Ia *lāgu kumhilāī*, Ib *lāgu sukhāī*, Ic *gaeu murujhāī*. 7. Ias U *bhawā̃ti bhawā̃ti*, Iac *hoi gai*. 8 Ia *citara jo kīnha bicitara dhani rōma rōma gā bhē̃ṭi*, Ib *cita kīnha dhani*, Ic *cētahi jo*, Is *citahī to citara kīnha dhani rōwā̃ rōwā̃ rā̃ga bhē̃ṭi*. U *rōma rōma ā̃ga nitta*. 9. Ia *sīsa sāla*, Is *sahasa sahasa dukha hia bhari*, Ic *dukha ubharī*, U *dukha āhi kai muruchi parī gā mitta*.

253. 1. Id *gaŋgana nakhata* (so also a v. l. in Ib). 3. Ib U *kāma kai kalā*. Ias *baru bhalā*. 5. Ia *mēlata*. 6. Ibc *bāna pasārā*. 7. Ib K *kūla para kāla*. 9. Is *jārē para jārai sō*. U *jārai para taba jāraī*. Ia *kara na sakai bhasamanta*.

254 1. Ia *kumōda lai*, Ic *kumōda koi*, Id *kumōda parasahĩ mukha pāyā*, Is *ku° parasahī gai pāyā*, U *kōi kumōdina parasai*, K *kumōda dai*. 3. Ia *koi awĩrita dhari nīra nicōā*, . . . *adhika baru*. 6. Ic *khina eka dasana bā̃dha*.. Is *gahē jībha*, K *gahesi jībha*. 7. For *bajara*, Ic has بيدا, Ic بيجهه Id بيجه, Is बैभ. U *jānahu biraha bāna saũ mārā*, K *jānahu bīj(u) bāna saha mārā*. 9. *ā̃dhēra*, so Ib. Ia *andhā*, Ic *andhara*, U *adhara*, Is *rōahĩ*. Id *bhā ā̃dhiāra akāsa*, K *ā̃dhiārā dharati akāsa*. K[2] *adhiara dharati akāsa*. K[3] *ā̃tarikha dharati akāsa*.

255. 1. Ia K *jō gahana*. K *puni budhi cēti hiaĩ*. 2. Id *gahesi suāsā*. K *ūbhi līnh dhani sāsā*. Ia U *bhā adhāra kuchhu jiuna ka āsā*, Icd *adhāra kucchu jī kara āsā*. 4. Ia *kaĩ hari līnha jo kīnha ā̃dhārā*. 5. Iac *karati gahēlā* (Ic *gahīlā*). Ia *aba kata sata chā̃ṛa hoi duhēlā*, Ib *aba kaisaĩ*, Ic *saba ḍhīlī*, Is *tasa ḍhīlī*, U *aba kasa āsa chā̃ḍi sati ḍhīlī*, K *aba*

kasa sata chāḍī tana ḍhīlī. 6. Ia *tumharī layka harī kā kēhara*, Ib *layka harī kēhárī . . . karesi hēhárī*. Icd *tū̃ hari layka harī aba kēharī*, Is *tumharī layka*. Ia *aba kata hāri karesi hā hēhara*, Ic *hāri parī jī hēhari*, Is *aba kyaĩ hari kahau sasi hēhari*, U *aba tū̃ hahā karesi kasa hēhara*, K *aba kata tua saka rahī jō hēhari*. 7. Is has *nichōhā* for *bichōhā*, Ic is doubtful, all others clearly *bichōhā*, Ia *kaĩ byādhā hoi gahana*, Ib *hoi gaeu*, Icd *hoi kīnha*.

K केद् नीनार के दीन्ह बिछोहा ।

K² के व्याधी गहनी नीछोही ।

K³ केद् व्याधा होद् गहा बिछोहा ।

8. K *rātī bītā bhā bihāna* (*sic*). 9. Ias U *khōlahu*. Ia *jaũ re uā jaga*, Ic *ueu jaga*, U *jōreu wā jaga*, K *bēgi uthā jaba bhāna*.

256. 1. Ic *bahu bāsā*, U *rasa bāsā*. 2. Id *mukha-canda ughēlī*, Is U *mukha jānu ughēlī*. 3. K *mukha tāhī*. Ib *piu gai bōli*, Id *mari mari nāri*, Is *mari mari jiai bōla bariāī*, U *mari mari bōli jiaī*, K *mari mari wō jīwana bara nāhī*. 4. U *dūni biraha*, K *dahai biraha*. Is *bōli na jāe*. 5. K *biraha samū̃da*. The second half reads as follows in the various MSS.

Ia چکهه کهوتهنه (? گهوتهنه) مکهه بچن نه آوا

Ib هیٔین کوث مکهه ایک ناوا

Ic چکهه کهومنهه مکهه بکت نه آوا

Id چکهه.گهونده مکهه ایك نه آوا

Is चखु छूटहिँ मुख एक न आवा ॥

U चखु कोटि निमिख एक न आवा ॥

K चखु कोटिन्ह मुख एक न आवा ॥

K² चाख घुमत मुख बोलि न आवा ॥

K³ चख छूटद् मुख बात न आवा ॥

6. Ias *jiu hātha parāwā*, U *jiu hōtha na āwā*. 7. Ic *bikha dēhu to khāū̃*. Ia *pēṭa hiaĩ ḍara*, Ic *pēṭa jo marata sakāū̃*, Is *pēṭa tabahi ḍara*, UK *pēṭa marana kā ḍaraū̃*. 8. Ib *asa bhai kawā̃la*. 9. U. *bēgi gahana*, K *sakhī biraha jiu lēta*.

257. 1. IaK *puraini sakhī*, Ic *cērī dhāī*, Ia U *uṭhi dhāī*, Id *sakhī sabahi jo uṭhi kai dhāī*. Ia UK *hīrāmani lai āi bolāī*. 2. Ia *rogiaī*, Ic *rōga so marata jiāwā*. 4. K *jiu bāḍhī . . . . hia kāḍhi*. 5. Ia *lēta dina*, Id *līnha dhani*. 6 Ib gives *piāsa* as v. l. for *bibhāsa* ; Ic has *vithā* for *bibhāsa*. In all MSS. except Ic *bibhāsa* is quite clear. K *āsa tua bharī*, Ic *sakala bithā birahini kē lēhī*. 7. K *janama nibāhū̃*. 8. Ib *hoi gai nāri acēta*. 9. Ia K *cēta sā̃bhāri jaū̃ uṭhī bakatā wai mukha lēta*. Is *puni jaū̃ cēta sā̃bhāri cita bakatā*, &c. as Ia K. U *birahini cēta sā̃bhārī uhai guputa mukha lēta*.

258. 2. Ia *baiṭha tana khōī*, Ibc *ḍāhi karai tana sōī*, Is *ḍāhi lāi tana khōī*. 3. Ia *yaha na bujhai āgi tasa jāgi*, Ic *ā̃ca bajāgī*, Id *ū̃ca bajāgī*, Is *yaha na bujhāi upanī bajāgī*, U *bujhāi upajī bajarāgī*. 4. K has second half *dahai dēha saba lāgu apārā*. 5. Ibs *kaṭi kaṭi mā̃su*. Ias U *saba dhōā*, K *rakata ke ā̃sunha tē̃ mukha dhōā*. 7. Ia *dagadha tē̃ utima maranā̃ । dagadha ke sahahī̃ jīu kā karanā̃*. Is *dagadha baru*, U *dagadha tē̃ utima*, K *dagadha saū̃*. U *jiu pai dījia*.

259. 1. Iad *upajī*, UK *jia bhārī*. 2. Ia *arujhī pēma pirītama bēlī*, K *kāma prīti*. 5. Iabcs omit *so*, thus spoiling the metre. Id *amara jo*. Iads, *bōī* for *pōī*. 8. Is *taba pāwai sukha*, U *sōi chā̃ha*. 9. Is U *milai jaū̃ prītama*.

260. I. Is *tumha tē hō*. U *tumha tō hahu prī°*. 2. Icd *dosari disi pīū*, which Ib also notes as a v. l. 3. Ib notes this verse as extra, and adds an eighth *caupāī* lower

down. Iad UK omit this verse and substitute one lower down, see below. 4. Iacd *gahanē līnha*. Ics *cā̃da kū̃bhilānā*. 5. Ia *ō huti bhai maraū̃ tasa jhūrī*. Is *nahī̃ jhūrī*. Ibs *maaū̃* for *marana*. 6. Ia *milā na jāe parā*. After this line Iabd UK insert the following :—

दसइँ (Ia UK दसउँ) अवस्था अव (Iad अस, K सव) मोहि भारी ।

दसइँ लखन होउ (K कोइ) उपकारी ॥

7. Icd *dāmani nalahi jo* (Id *jasa*) *haṁsa*, Is *dāmahi nala jō haṁsa*. In K² it is 4th line, and runs as follows :—

दमही नल जस हंस मिलावा K³ दमावती नल हंस मेरावा

8. Ia *mūri sajiwana āni kai*. UK *dūri ati*. Ias K *sāli sakati hia* (K *jasa*) *bāna*. 9. Ia *prāna rahahī̃ ghaṭa jāta aba . . . . bhānu*. Ic *bēgi milāwahu*, Is *dekhāwahu bhānu*, U *milāwahu bhānu*.

261. 3. Id *rāja ghara*. Ia U *pūjai bipara so mārai jōgī*, Id *pūjai āsa*, Is *pūjai bēda*. 4. Iad *pawāri pawāri kotawāra*. Ib *kotawāra jo baiṭhā . . . . surā̃ga dai paiṭhā*. 5. UK *ānā bā̃dhi dharā*. 6. Ia *aba ohi dēi gaē lai sūrī* । *ohi kai bithā sōga tumha pūrī* ॥ 7. Ic *tuma sō jiu kāyā waha jōgī*. Ia K *rōga jiu bhā rōgī*, Ic *jīu lai*, Id U *jīu pai*. 9. Ia *āpu lukāi*.

262. 1. Ia *saba bāta jaū̃ kahī*. For (Ib) *puni*, Iac *kē*, Id *kahā̃*, Is *gai*, K *mō*. U *suruja gahana canda gahagahī*. 2. Ia *suruja ke dukha tarunī bhai dukhī*. U *suruja ki dukha saū̃*, Ics *hō dukhī*, K *suruja ke gahana*. 3. Ia *dharana gā̃ganēhā*. Id *sātha jo dharata sinēhā*. Is *gananēhā*. 4. Ias UK *janama* for *jarama*. 5. Ia *karanī kahahu kaunu kina sōī*. Id *sō karanī kara kahu guru sōī*. U *kaunu so karanī jō guru hōī*. K *guna sōī*. U *paravēsa hai sōī*. 6. Ia U *guru bhā cēlā*, Id *guru waha cēlā*. 7. Ia *rahai lukāī*, Id *kahahu khaṇḍa*, K *chapāī* for *lukāī*, Ic U *kāla ḍhū̃ḍhi phiri*. 9. Ia *guru karai jaū̃ māyā*. UK *kiripā mayā guru karai*. Ibc *cēlā bhēda*. Is *kahai to*.

263. This set of chaupāīs and on to No. 266 are not in Is, the pages being missing. 1. Ib *āna rāni*, K *sunu rānī tumha guru maī̃ cēlā*. This second half commences as follows in the various MSS. Ia *pūjehu* (?) *minatahi* (منتهه) *siddha*, Ibd as printed. Ic *mayā mōha kē siddha*, U *būjhi mohi kai*, K *bujhu mayā karu*. 2. Iac *tumha jō* (Ic *sō*) *cēlahi parasana*. Ia U *darasana dēna*. 3. Ia *jo* for *so*, Ib *rūpa gurū sō*, Icd *tumhāra tahā̃ waī ḍiṭhā*, UK *tumhāra jabahi waha ḍī°*. Iac U *baiṭhā* for *paiṭhā*. 4. Ia *ohi kai kayā*. 6. Ia *bithā sōga tumha āī*. 7. Ia *tumha ohi kai ghaṭa waha tumha māhā̃*, K *waha tū̃ tū̃ waha aba ghaṭa. mahā̃*. Ia *kāla na jānai āchai kāhā̃*. Ic *kāla na jānai pāwai chāhā̃*. 9. The following are the various readings :—

Ia	*āwai*	*kāla*	*gurū*	*tinha*	*dēkhē*.
Ib	„	„	*tumahī* „		„
Ic	„	„	*tahā̃ tumha*		„
Id	„	„	*tumha nahi*		„
U	*āi*	*kāla*	*tumha*	*hēri*	*kai*.
K	*āwā*	*kāla*	*tuha*	*dēkhai*.	
K²	*āwai*	*kāla*	*tumhahī*	*tahā̃*	*dēkhai*.
K³	„	„	*guru*	*tahā̃ dē bahurai kayā adēsa*.	

U *bahurā kai ādēsa* K *bahurā karī adēsa*.

264. Not in Is. See No. 263. 1. Ia *bithā kai baranī*, K *bithā dukha haranī*. 3. U *jō bhā siddha*, K *tehi ehi bidhi kō*. The second half is as follows :—

Ia جگین سدهه دنیهه سوئي رکهوارا

Ib نیو رسي جيۀ هوی چهارا

Ic نیورس نهه جي هوے حهارا

Id نیلوٚ رس تهه جلي هوي چهارا

U नवौओरसी होइ तिँहिँ झारा ॥

K नवो रसी जनि होइ विकारा ॥

K[2] निह रस तजिए छोही छारा ॥

K[3] नीऊ रसूति जरइ होइ छारा ॥

4. Icd K *bhaehu narēsū.* 5. Iac *tumha mō saũ*, Id *mō saũ tumha.* 6. Ia *tumha paragaṭa*, Ib *para siddha*, Ic *parahasta*, Id *parasasta*, U *parasvēta*, K *parasāda.* All printed editions have *parasēta* with glosses stating that the word means '*pasīnā.*' We have followed this, on the authority of U. Ia *mohi jiu ghaṭata ghaṭata*, Ib *mohi guputa jiu ghaṭa bahu bērā.* Ic *mohi ghaṭa jīu ghaṭata nahī̃ bērā.* Id *jō ghaṭa jīu ghaṭata yaha bērā*, U *mohi jiu ghaṭata na lāgē bērā*, K *mō jiu ghaṭana na lāgai bērā.* 8. Ia *mili. sukha.* Ibd *mili kala rahahī̃.* U *jō rē jiyahu mila kēla kara.* Id *marahī̃ ēka sāga dōu.* K *marahī̃ to saŋgahi dōa.*

9. Ia تمهه جئي جان كچهو هوي

Ib تمهه بي جين جن هؤو كچهو

Ic تمهه لي جيهه من هوى كچهه

Id تمهه جيو سيو (?) نهوي كچهه

U तुम पिय जिय जनु होऊ कछु ।

K तुह जिउ जनि कछु होउ विधि ।

K[2] तुम्ह पै जीउ न होइ कुछु मोहि जिउ होइ सो होउ ॥

K[3] तुम्ह जीअ पेम हौँ जाना हम जिअ होइ सो होउ ॥

Iad *hōi* for *hōu* both times.

265. Not in Is. See No. 263. 1. Iab *ānī jahā̃.* U *jurī tahā̃.* 3. K *ahai biōgī.* Others *bhōgī.* 4. Ia *hiaī japa-māla.* Ic. *hiaī jō māla.* Ib *garai makha japā.* K has for the second half *parimala prēma rahai nahī̃ chapā.* 7. Ib *lēhu pai khōjū.* 8. Ic *rē jōgī* Ibcd *jarama*, others (IaK) *janama.* 9. K *roibē kara.* U *hā̃sā sō kawanē bhāū.*

266. Not in Is. See No. 263. 3. Iac *parai.* IaUK *mati kōī*, Ic *kā kōī.* 5. Ic *āju pēma.* Ia *karaũ nibērā.* 7. Ib *āju pēma*, K *āju nēma.* Iac *hōũ ninārā.* U has for the first half *ājuhi jagata hōi ā̃dhiārā.* U *calai piārā.* 8. IaU *awadhi pahũcāī sira, kaī so calā* (Ia *calaũ*). Id *gaē jāũ mukha.* K *calaũ mukha kai rāta.* 9. Ia *kā pū̃chata hahu jāti.* Ic *kā pū̃chahu aba bāta.* U *kā pū̃chahu yaha bāta.* K *kā pū̃chahu kusalāta.*

267. Is has the first three lines, and then goes on with the last six lines of 269. Id puts No. 268 before this. 1. Is *kahesi.* For *karahī̃*, Ia *karaba*, Is *kārana.* For *kēti kara*, Is *kētuki*, U *kētu kara.* 2. IaU *sawāraũ sōi nāũ hari phērā.* 3. Icd *au suwāraũ Padumāwati.* 4. Id *jaba* for *jata.* 5. The second half runs as follows in the different MSS.

IaUK *parahī̃ uṭhahī̃ sōī lai nāũ.*
Ibd *parahī̃ to sōī lai lai nāũ*
Ic *parahī̃ to sōi lēta waha nāũ.*

We have followed Ibd. 6. Ia *tā saũ sīdhā* । *sūta sūta saba ō saũ bīdhā* ॥ Ic *sūta sūta tanu tā saũ ōdhā* । *kahata kahata rō̃ rō̃ wai sōdhā* ॥ K has *jasa bōdhā* for *jiu sōdhā.* 8. K *biraha gāta kahā̃.* IcdU *kī hāni*, with *samāni* in the rhyme. K *kī ghrāni*, with similar

rhyme. 9. Id *sāca dhara rahā.* IaK *haũ aba rahā sāca hoi,* U *hō aba rahā sāci hōai.* IaK *ohi kē rūpa.*

268. From here to No. 277 the various MSS. differ widely in the arrangement of the sets of *caupāīs* and *dōhās.* We have mainly followed the arrangement of Ib. The present set is not in U. 1. Iad *jabahī* for *jauhī.* Is *māra* for *gāḍha.* 2. Ib *suruja* for *sūra.* IasK *gagãna kasa áhā,* Ib has *gãgana,* corrected on the margin to *gahana,* Id *gãgana risa gahā.* 3. Ia *gahana* for *gahā.* Ia *puni chapā,* Is *ḍara chapā.* 4. Ia *kā kautuka ājū,* Ic *calu dēkhai eka kautuka tahā̃ ı dharatī tapā mārai kahā̃ jahā̃ ıı* Id *hai ājū* K *gai ājū.* Ia *jahā̃ tapā.* 5. Ic *calu kusā maĩ dē.°* IsK *dēkhia.* 7. Ia *dēkhana.* Ia *dhani mūrati kasa sūrati bhāgē.* Icd *dahũ sumirata kasa satī sohāgē* (Id *sabhāgē*). Is *sunē sabhāgē.* K *dahu sumirata kai satī sabhāgē.* 8. Ia om. *āpani.* 9. Ic *jiu dēi.*

269. This is complete only in Ib and Ic. The latter misplaces it. Is gives all but the first three lines (see No. 267). Id in place of this set repeats the *caupāīs* of 268, but gives the right *dōhā,* 2. Ic *samādhi tā saũ dhuni lāgī.* Ib *pāsa jahā̃ jāũ.* 4. Ib *jehi mahā̃ pantha.* 5. Is *au bhari.* 6. Is *hia mahēsa waha bhaē mahēsī, kata.* Is *tē̃ paradēsī,* Ic *tē pa°.* 7. Ic *mana mahā̃ līnha.* Is *sunata ehi.* Ic has second half *tumha kasa mushṭa dharī tehi ṭhāũ.* 8. Is *mārita.* Is *ehi bāru.* 9. Is *kōnu kāhũ,* Is *jaũ hoi jāi nināru.*

270. This occurs only in Ib U and K. 1. Ib *lai so sādēsa sua gaeu tahā̃.* K *gau tahā̃.* U *sūrī dēi.* K *surī dēna lē āē jahā̃.* 2. K *lōganha jōā.* 3. K *muha hērā.* 4. K *bara bidhinā sō rōī.* U *bidhinā pai rōī.* K *kari upakāra.* 5. K *bipati sunāī.* 6. UK *baiṭhi.* UK *jiaĩ to jiaũ marai tau* (K *maraũ eka*) *sāthā.* 8. U *bhaē dōu eka ṭhāũ.* 9. Ib *calahu jāi tehī kahahī.* K *jahā̃ baiṭhā hahī rāũ.*

271. This occurs in all MSS. except Is, but with widely differing readings. UK omit the third line, and substitute another between the sixth and seventh. Ib transposes the second and fourth lines. 1. Ic *kahi kai rahā,* Id U *suni kai rahā.* Ia K *ratana sēna kara bhāṭa dasaũdhī ı bhāṭahī kahā rahai risa aũdhī ıı* Ib *sahi na sakā.* 2. Ic *kahā mēli kari.* U *ghālesi hātha kaṭārā mūṭhī ı uṭhā so kōpi sūra asa ūṭhī ıı* K *ghālē hātha kaṭāra so mūṭhī ı uṭhā kōpi jaba sūrī ūṭhī ıı* 3. Ib *kōpi mārā puni kansū.* Ia *taba jānā eha purukha ka ansū.* Ibd have :—

Ib گونگ كه پهونک بنا جي بنْسوُ

Id گونک كي بهونک بنا جي بنسو

Id does not distinguish between ک and گ. Ib is quite clear. This line is not in UK. K[2] K[3] गुँग कि फूँक न बाजइ बंसू 4. Iabo *gãdharapa.* Ia *tahā̃ risa.* UK *risa bharā.* For the second half UK have *gahai kaṭāra jāi* (K *āi*) *bhā kharā.* 5. For first half UK have *cahai kīnha tahā̃ āpuhi ghāū.* 6. UK *bānā birada bōla asa kahā ı gandhrapa sēna tũ rājā mahā ı* Ia has second half *sōhai risa kachu jāi na kahā.* Ibcd as in text. Between this and the next line UK insert *haũ mūrati mahēsa kai kalā ı rājā saba rākhai aragalā ıı* 7. UK *siddha pāni tũ āgi* (K *agni*) *asūjhā ı agina* (K *agni*) *kōha pānī saũ būjhā ıı* 8. After *pāni saũ* Ic adds *jūjha na,* and K *jūjhai.* The readings of the last line are as follows :—

Ia *jōgī bāra khapara lai māni kai*	*bhīkha dēhi mana jūjha.*
Ib *tōraī bāra khapara hai līnhē*	*bhikhiā dēhi na jūjha.*
Icd „ „ „ *lai māni kai*	„ „ „ „
U *jōgī bāra jo āwā*	*bhīkha dēi mati jūjhi.*
K „ „ *khapara līnha hai*	*bhicchā dēhi na jūjha.*

We have followed Ib.

To sum up the above. U and K differ so widely from the other MSS. that we here give the text of U. That of K closely agrees as indicated above.

चउपाई ।

सुनि कइ रहा दीठि कइ अउँधी । रहि न सका तब भाट दसउँधी ॥
घालेसि हाथ कटारा मूँठी । उठा सो कोपि सूर अस जठी ॥
गंध्रप सेन जहाँ रिस भरा । गहइ कटार जाइ भा खरा ॥
चहइ कीन्ह तहँ आपुहि घाऊ । बाएँ हाथ दीन्ह बर भाऊ ॥
बाना बिरद बोल अस कहा । गंध्रप सेन तुँ राजा महा ॥
हउँ मूरति महेस कइ कला । राजा सब राखइ अरगला ॥
सिद्ध पानि तूँ आगि असूझा । अगिन कोह पानी सउँ जूझा ॥

दोहा ।

आगि बुझाई पानि सउँ तूँ राजा मन बूझि ।
जोगी बार जो आवा भीख देइ मति जूझि ॥

272. Is has only *caupāīs* 3 to 6. The remaining *caupāīs* and the *dōhā* in Is are taken from an imperfect and incorrect set of six *caupāīs* and a *dōhā* in Ib. 1. Ib *ubhāū*. Ia *hātha rāu bara*. U *dēi bara*. K *rājahi bara*. Ic substitutes for the entire line *bōlā gandhrapa sēna risāī* । *kaisaī jōga ko bhāṭa abhāī* ॥ 2. Ib *āwai gaḍha*. U *jō gaḍhi caḍhai sēdhi dai cōrī*. 3. Is *ḍarai mohi nā°*, IcK *ḍarai nāwāi mohi māthā*. U *kānha ḍarai*. Icds *sēsa* for *kāli*.. 4. Ia *caturbhuja*. IaK *pātāla ḍarai kabilāsū*. 5. Ia *kumbha* for *kuruma*. 6. Ic *ḍarai au mandila*, U *ḍarai mandira sumērū*. Ib *gagana sumērū*. Id *gagana gābhīrū*. K *cāda surja au ḍarai kubērū*. 7. The following are the various readings :—

Ia *cāhau tō māgaū dhai kēsā* ।	*auru ko kīṭa pataṅga narēsā* ॥
Ib *sabaī deotā karai adēsū* ।	*auru ganai kō patāga narēsū* ॥
Ic *cahaū ta saba gahi māgaū kēsā* ।	*aurū kīṭa pataṅga narēsā* ॥
IdK ,, ,, ,, ,, ,, ,, ।	*au kō* ,, ,, ,, ॥
U *cāhaū tō māgaū dhai kēsā* ।	*auru kōṭi pataṅga narēsā* ॥
K2 *cāhaū haū bhanjaū gahi kēsā* ।	*auru ko guputa pataṅga narēsā* ॥

8. UK *bōlā bhāṭa kahaū sata* (K *tasa*) *rōsa na lāgē jīū*. Is *na kījai jīū*. 9. K *tajā garaba bala bhīū*. Ic has an altogether different *dōhā*, viz :—

sura nara rikhi guni gādharapa *asura sūra jita dēu* ।
paragaṭa guputa sirisiṭī *karahī sabai mili sēu* ॥

This is made up of portions of an imperfect set of *caupāīs* in Ib.

273. 1. Ic has duplicate first lines. It first has a line the same as Is, and then a line the same as the text. Is substitutes *bōlai bhāṭa phūra hama jhūṭhē* । *jaū yaha garaba dēu tohi rūṭhē* ॥ For the second half IaUK *garabahi bharā kīnha* (K *kiā*) *sāgarāmū*. Ic *uhai bhaeu laṅkā sā°*. 2. UK *rāwana asa jaga kō*. Id *rāona saū*. Is *bhua daṇḍā*. UK *bhuja daṇḍā*. 3. IaU *jehi sūruja tapa karai rasōī*. Icd *suruja jai niti tapai*. K *jā ke suruja tapa karai rasōī*. K *baisudarā jehi dhōbī hōī*. 5. UK *bādhā*. Id *rahā na dōsara ō saū kādhī*. U *rahā na jaga mahā dōsara kādhā*. K *tahā na dōsara ohi sama kādhā*. 6. Id *risa* for *asa*. Ia *muā so dui tapasinha kara mārā*. U *muā sōu tapasī kara mārā*. K *sōu muā tapasī kā mārā*. 7. K *dui ahā*. IaU *na kōū ráhā*. IcK *na kōī ráhā*. 9. Ib *ōchē sāta*. Id *ōchē bāra*. K *ōchē kē disa daiu*. U *jayati patra tehi dēi*. Ib *jai dēi*. Ic *tehi dēi*. Ia substitutes for the last *dōhā*—

dai kai disa nahi dēkhai dahū kā kahā jai dēi.

274. Not in Is. K here gives three sets of *caupāīs* and *dōhās* all to the same effect, but in slightly different versions, with the lines in the present set scattered through them. 1. IaU *suni kai bhāṭa bhāṭa jaba* (U *kai*) *jātī*. Ib *ahahi jō*. K *ṭhāra huta*. IaU *rājā kahā̃ uṭhi* (U *racchā kai kai*) *kīnha binātī*. Ic *puni ūṭhā*, Id *binati uṭhā*, K *binai uṭhā*. Ib *rājahi*. 2. IaU omit this line, and substitute another before line 7. Ic *bhāṭa ahai*. K *bhāṭa jāti*. 3. Icd *mīcu āpana pai dīsā*. K *mīcu apanē mana dīsā*. Ia *tā saũ kā kījai rīsā*. Ib *tā kahā̃*. U *tā saũ aba kā kījai rīsā*. K *tuha sō kaunu karai dai rīsā*. 4. IaU have second half *kahā̃ caḍhā asa* (U *yaha*) *mīcu nasēnī*. K *kā tohi jīu mīcu mana ṭhēnī*. 5. This is as follows in the different MSS. :—

Ia کهان آی بانی اس کرئی * کرون بتند بهات اس مرئی

Ib کاه اتی بانی جس مرءی * کرءی بگهند بهتنت نه کرءی

Ic کاه اونی بالی اس مرسے * کرس بگیند بهرم نهه کرسے

Id کاه اونی بائین اس مریے * کرس بتند بهرم تنه کریے

U कहा आगि पानी सउँ करई। करइ बिडम्भ भाट नहिँ मरई॥

K काहे अनबानी अस धरई। करइ बिटंड भटंत न करई॥

K2 कहइ न प्रानि पिअसि कह मरई। करइ बिटंड भाट तन अहई॥

K3 एन्ह सउँ रीस न करिए राजा। करहिँ बिटंड बात के काजा॥

6. Ia *jāti ko rāu auguna lāwai*, Ib *jāti kaunu kita*, Ic *jāti karā̃*, U *jāti karā kunu au°*, K *jāti ka bhāṭ au au°*. Here IaU insert *satta* (U *satya*) *na kahai* (U *kahō*) *kaṭāwō̃ mātha* (U *hāthā*) *kahā̃ parā* (U *parē*) *jōgina kē sāthā*. 7. IaUK *bhāṭahi kā aba* (K *kata*) *māraũ jīwā* | *pūchahu kahai* (K *bōlu*) *nāi kai gīwā* ‖ Ic has *bhāṭa ṭhāṭa mukha ambirita mānī* | *kīṭa kapaṭa risa kathā kahānī* ‖ 8. Id *kahā̃ kara saṅga*. 9. K2 K3 *charai*. U *mati bhaṅga*.

275. Not in Is. Ic has a different set here, with the same purport, but worded differently. 1. IaUK have a different first line, as follows :—

jaũ rājā sata (Ia *tumha*) *pūchahu antū* | *satta kahaũ jōginha* (Ia *jō hai*) *biritantū* ‖

2. IaU *bhāṭa kahā maranē-saũ ḍaraī*, K *bhāṭa kahā maranahi jiu ḍaraũ*, with, for the second half, IaUK *mīcu nāũ suni agumana* (K *aga tehi*) *maraī*. 3. For *jō*, Ia *sō*, Id *ō*, U *hai*. K. *jambu-dipa citaura gaḍha dēsū*. 4. U omits this line and substitutes the verse noted lower down. 5. IaK omit this line, and substitute the same line noted lower down. 6. Ib *samũda sumēru na kāhū khā̃gā*, Id *dāna samunda dēta*, UK *dāna sumēru samunda na khāgā*. For second half K *tehi ka bhāṭa haũ ōhī mā̃gā*. After this IaU insert the following, which K also has, but after the next line :—

tehi ka bhāṭa haũ bōlō bānā | *nāũ mahāpātara au rānā* (K *nāũ mahāpratāpa pradhāna*) ‖

7. IaU *dahinai hātha wahī baribhāũ*, K *dahina hātha ō kahā̃ baramhāō*, with for second half IaUK *dosarai kahā̃ nahi janama uṭhāũ* (K *uṭhāō*). Ib *auru ko aisa uṭhāwaũ jāhī*. 8. IaK *ohi chuṭi auru na mā̃gaũ jehi ka bhikhārī ḍhīṭha*. U *waha taji* etc. as IaK. 9. Ib *jaũ kahi bāta*, U *bāta kahai risa lāgai*. For second half K *khari puni kahai basīṭha*.

276. Not in IaUK. 1. Ic *tatakhana sunā mahā̃ mana*. Ids *bhāṭa karā*. Id *binawai*. 2. Ib *asa kāhā*. 3. Id omits this verse, see below. Ib *pīchahi bhāṭa hōi bhala āgaī*. Ics *kahā cahai*. 4. Ic *suni padumini kahā̃*. 5. Ic *jō hui likhā*. Id *jāe nahī mēṭā*. Is *so kōi na*. 6. Id *waha jā kara*. Ibs *barōka*, Ic *biōga tuī*, Id *biōga tasa*. 7. Is *karu so biāha*. Ib *dharama aba tō kā̃*. After this Id repeats *caupāī* 275, 2, to make up for the missing third *caupāī* above. 8. Ic *khapara liē sō mā̃gai*. 9. Instead of *jō*, Id *jāi*, Is *dahū̃*.

277. Ic omits the first two lines, and adds two others after the seventh *caupāī*. IaK substitute the following for the first two lines :—

Ia jōgi na hōi so āhi narēsū | *au parasana tehi siddha mahēsū* ‖
bhāratha hōi jūjha jaũ ōdhā | *āhi sahāi hōhī saba jōdhā* ‖

K *jōgi na āhi so ahai narēsū* I *au parasana tehi siddha mahēsū* II
bhāratha hōi jūjhi jaba kōdhā I *hoi sahāc āc saba jōdhā* II

1. Ib *īsura asa*, Is *īsura jō*. IcsU *hanuwāta bīra rahai na*. 3. Is *mahādēo taba*, UK *mahādēo asa*. Ia *suni sō*, IdUK *siŋgi sabada baramhā*. 4. For *caḍhē*, Is *calā*. For *atara*, ic *cakara*, Id *utara*. Ib *dēo-lōka*. 5. Ibs *bāsuki phana patāra*. 6. IaK *chānawai kōṭi mēghu dala*, Ib *chānawai mēghu āwa dala gājā*, Ic *chappana kōṭi mēghu*. Isd U *mēghu suni gā°*. 7. For *bárā*, IdU *párā*, Is *wārā* (sic), K *járā*. For *pharahárā*, Is *bhiriharā*, U *kharabhárā*, K *bharahárā*. Here, as above explained, Ic adds two lines which are palpably made up to fill the lacuna. As they are far from legible, it is not worthwhile attempting to reproduce them here. 8. U *nawā nātha jōgī calā*. 9. The commencement differs in the various copies. Thus :—

Ia K[3] *āju mahā rana bhāratha*
Ibd *ahuṭi bajara jara dharatī*
Ics *āju mahābhāratha rana*
U *ahuṭhi bajra bhai dharatī*
K *ahuṭha hātha dhara dharatī*
K[2] *ahuṭha bujaru dharuti jurē*

We have followed Ibd. Iacs *calā* for *gāgana*.

278. Ic has the lines of this verse in different order. 1. This is 6 in Ic, which has *mahādēo lai jōgī pāchai* I *uṛa-kai māla āi rana kāchai* II 2. This is 1 in Ic. Icd *kahā chatarapati rājā*. IasUK *sājā for kājā*, IaUK *kara* for *kē*. 3. This is 2 in Ic. Ib *bidyā-kara jūjhū*, IdU *bidā-kara*, Is *bighna-kara*. Is *hota āwata hai jagata asūjhū*, K *hōta asūjha so jagata*. 4. This is 7 in Ic, which also has *jhuramuṭa* for *charahaṭa*. For second half Ic *rana māha khēta rahai*, U *dara mañjhāra rahai sō jītā*, K *dila māha raini rahai* &c. 5. This is 3 in Ic. For second half, Ic *aŋgada sama sō pāõ rōpā*, K *rana gaḍha āi*. Ib *bhaē rōpā*, U *taba rōpā*. 6. This is Ic 4. 7. This is Ic 5. All N. have *aḍāri*, the P. readings are as follows :—Ia اڈار Ib اوڑر or اوڈر Ic چلاى Id اودار 8. K *ajāna hau jōgī*. Id om. *jōgī*. 9. U *jōginha kara asa jūjhi lakhi kē ina ḍōla tehi ṭhāwa* with *āwa* in the preceding rhyme. K *asa jō cahata padumini lāgai pāe*. Id *āguwai pāe*.

279. 1. Is *jōgi*. U has a different line here, *viz.*, *khina eka tahā bhaī sōkhaī* I *jayati patra jōgina kī bhaī* II In second half, Icds *māha cahata*, K *kahi kai māha hēta hia dhāī*. Ib has for the last two words *tinha khāī*. 2. Iad *jōgī dhāwata asa*, U *jaba wai dhāwai taba asa khēlaū*, with *pēlaū* in the rhyme, K *jau dhāwahī aisa kai khēlahu*. Iab *kai*, Id *rana* for *kā*. 3. Icds *hasti* for *pēli*. U *jasa gaja mēla*. IsK *eka bagamēla*. Is *hōi*, U *karaī*, for *karahu*. 4. Ia *mati kai hasti sunḍa agusārī*. Ic *jauhi samūha hasti agu°*, Id *tata khina jō ḍarai agu°*, Is *mati kai jabahī saina agu°*, U *mati kai jabahī anī agu°* K *hasti kera jūha raini agu°*. U *dīnha* for *tauhī*. 5. Ia *jūjhi karai jita rana māha āī*, Ic *aura jaisai sanamukha hoi dhāī* I *hanūmanta laṅgūra calāī* II Id *jahā lahi saina*, Is *jabahi so*, U *sainā jō jītē rana āī*, K *jabā siu sabhā jatana jana āī*. 6. U *katēka* for *bahutaka* here and elsewhere. 9. Ibs and (?) Iac *bērā*, Id *binati*, U *bairī*, K *bapurā*. Iac have بیرا, with no dots under the first letter. Ic may possibly be read *sērā*.

280. 1. Ia *puni* for *phiri*, Icd *āgaī hoi kā*. 2. Ia *sunā jo saṅkha bisuna jaba pūrā*, Id *sēnā saṅkha jau bisuna pūrā*. Ic *dēkhai* for *āgaī*. 3. Ic *āi jurī jiṭa sura barh°*. Isd *liaī* for *līnhaī*. For *saraga*, Id *gagana*, Is *surāga*. 4. K om. this, and adds another line before No. 7. In second half, Ia *sēwā karahī nakhata au candū*, Is *gērahai* (sic) *nakhata*. 5. For *ahuṭhau*, Ib *ahuṭau*, Id *āṭhau*, U *ahukhē*. All others quite plainly *ahuṭhau*. 6. Ic *jā kara*. Is *hata rājā*, U *hō rājā*. Ic *tinha phiri sāja bīra karu sājā*, Id *tē saba*. K *sō saba lēi bīra hoi sājā*. For *sājā*, Ia *bājā*, Is *gajā*. After this line, K inserts *pārabatī mana cintā bhaeū* I *aba kasa karaū kauna bidhi laeū* II 7. IcU *jahā so* for *jahawā*, *huta* for *rana*.

Ia *nārī ghālī pāõ párā*, Ic *kaī* (?) *paṭa ghāli rāu paga párā*, Is *jāi* for *āi*, U *nāri samēta pāi lai párā*, K *nāri ghāli jā pāena párā*. 9. Id *bhāwai* for *cāhia*. Is *dījiu*, Is *bāra*.

281. 1. Ia *sunu binatī saũ karaũ basīṭhī*, U *au asi binatī kahaũ ba°*, K *tasa binatī maĩ karaũ basīṭhā*, with *mīṭhā* in the rhyme. For *hoe*, Ibc *hō*, Is *bhau*, U *sō*. 2. For *jaga*, Ibs *saba*. 3. Ia *jō tumhara*, K *hīrāmani hai tehi ka pa°*. For second half, Ia *kīnha jo phūṭa* (?) *karata tinha sēwā*, Ibs *gaeu tahā̃ au kī°*, U *sō bulāi kina pūchahu dēwā*, K *tinha hankāri pūchahu kina dēwā*, Icd as printed. 4. IaUK *waha jānata hai gā waha* (Ia *tā kara*) *dēsā* । *au ānesi jōginha kai bhēsā* ॥ Id has second half *ohi jōgī kai ṭhīka* (?) *narēsū*. Is *jasa bhēsū*. Lines 5, 6, 7 differ in nearly all the copies, as follows :—

Ia آنت جون نه کهال کین کنتها * راجا کوئي نچهادت پنتها
راخ روب کل سونک کاتهي * رتن دیکهه کو باندهه نکانتهي
جهان بار تنهه آو بروکا * کری بیاهه دهرم بد او کا

Ib هم ري کهت رهي نهه مانون * وه بولي سوئي پروانون
تم بد راجا ادات گیانے * سمجهه ندیکهو من سوجانے
هیرامن تس کری بکهانون * رتن سین راجا جس بهانون

Ic همرین کهت رهي تیهه مانون * جو وه کهے سوي پر مانون
جنهه باري تنهه او براوکان * کره بیاه دهرم بد توکان
جو تمهار من مان نه کانده * پرکهه رتن کانٹهے تب بانده

Id همرے کهت رهی نهه مانون * جو وه کهے سوئي پروانون
جهان بار تنهه اوپر اوکان * کري بیاه دهرم بد اوکان
جولهه مورا تپارین کاندهي * پرکهي رتن کانٹهه تب باندهي

Is हमरे कहत रहइ नहि मानू। वह बोलइ सोई परवानू ॥
जहाँ बारि तहँ आउ बरोका। करु सो बिआह धरम बड तो का ॥
जउँ पहिलेँ मन मान तउ काँधी। परिखी रतन गाँठि तब बांधी ॥

U जोगि उघाल न आनत कंथा। राजा कोउ न छाँडत पंथा ॥
जहाँ बारि तहँ आउ बरोका। करइ बिआह धरम बड ओ का ॥
हमरे कहत रहइ नहिँ मानूँ। वह का बचन होइ परवाँनूँ ॥

K आनत जौ न घालि सिर कंथा। राजा कोइ न छाडत पंथा ॥
राजा रूप नग कुल सो काँठी। परिखि रतन अब बाधऊ गाँठी ॥
जहाँ बारि तहँ आउ बरोका। करइ बियाह धरम बड ओ का ॥

K[2] हमरे कहे न रहइ वह मानू। वह जो बोलहिँ सोइ परवानू ॥
जहाँ बारि तहँ आउ बरोका। करिअ बिआह धरम बड ओका ॥
जउ पहिले मन मान त काँधी। परखी रतन गाँठि तउ बाँधी ॥

K³ हमरे कहत रहइ नहिँ माना । जो तुम्ह कहउ सोइ परवाना ॥
जहाँ बारि तहँ नाउ बरोखा । करइ बिआह धरम सत मोखा ॥
जउ पहिले ही मानत धोखा । परखि रतन तब गाँठि बँधोखा ॥

It will be seen that Ia UK form one group, and the others another.

8. Ia *parakha hōe so*, U *parakha na hāra parīkha*. 9. Ia *bā̃dhi gā̃ṭhi sō dījiai*, U *bā̃dhi gā̃ṭhi pai dī*°, K *gā̃ṭhi bā̃dhi sō hī jiai*. UK *kanaka kaṭōrē*.

282. After 1, Ia UK insert the following verse, omitting verse 5. Id also has this verse, and also inserts verse 5 on the margin.

Ia *hīrāmani hai pā̃ḍita parēwa* |	*kīnhesi Padumāwati kai sēwā* ||
Id *hīrāmani huta* ,, ,, |	*kiyau rōsa para saũ taji sēwā* ||
UK *hīrāmani hai* ,, ,, |	*au unha kīnha hamārī sēwā* ||

After this Ia UK vary the order of the verses. 2. This is 4 in Ia UK, which have *nēgī* for *sōī*, and have for second half *ēka kahata dhāē dasa nēgī*. 3. The various readings are :—

Ibs *bhai agiā jana sahasaka dhāē* |	*hīrāmanihī bēgi lai āē* ||
Id *ēka kahata sahasana dasa dhāē* |	,, ,, ,, ,, ||
Ic *dhāwata ēka jāna sau dhāē* |	,, ,, ,, ,, ||
Ia *hama sē rūṭhi gawā huta sōī* |	*paṇḍita hutē dhōkha nahī hōī* ||
UK ,, ,, *rūsi gayā* ,, ,, |	,, ,, ,, ,, ,, ||

We have followed Ibs. 4. This is 5 in Ia UK. IaK *āni so* (K *āi jo*) *khōlā bēgi mãjūsā*. Ic *tehi* for *bahu*. 5. Ia UK omit this verse. Ids *tehi* for *bahu*. 7. IaK *kaṇṭha lāi pū̃chī*, Ic U *puni rājaī hā̃si pū̃chesi bātā*, Id *rājaī puni pū̃chī*, Is *mili rājaī pū̃chī eka bātā*. Ia U *piara* for *pīta*. 8. U *tumha sayāna au paṇḍita*. IasK *paḍhē sāstra au bēda*. 9. Here again there are variations as follows :—

Ib	*kahā̃*	*caḍhē jōginha*	*kari*
Ic	,,	*charē* ,,	*gaḍha*
Id	,,	*caḍhē* ,,	*kahā̃*
Is	,,	*calē* ,,	*kara*
IaU	,,	*parē* ,,	*sā̃ga*
K	,,	,, ,,	*kara.*
K²	,,	*caḍhē* ,,	*kā*
K³	,,	*caḍhāē* ,,	*āni kīnha* Id *asa bhēda.*

283. 1. UK *hīrāmani kara-añjula kīnhā* \| *bēda bhēda paḍhi āsisa dīnhā* \|\| 2. IaK *rājāesu* for *rājēsura*. K *saũha diṣṭi kachu*. 3. Is *kahai cahai kā bhā risa lāgaī*. IaK *hōhu na bikarama*, Ic *hai tumha hōhu bikarrama* (sic) *bhōjā*. 6. Ia makes this 5 and has for second half *tāhi jiu kahata basai narēsū* (sic). Ics *sōī jiu mahā̃ basai*. U *cita* for *jia*. 7. Ia K *tū̃ saba kachu au sabha para tū̃-hī* \| *haũ kachu nā̃hi paŋkhi ratimūhī* \|\| 8. Iabd insert *au* before *sarawana*. Ib om. *budhī*. 9. has as follows :—

Ia UK *kahā̃ jībha asa pāwaũ*
Ib *mōra hai dina parata*
Ics *sēwā mōri ihai niti*
Id *kāhu jāni kai āpanā*

284. This set of *caupāīs* is wanting in U, and Ia K, have a similar but independent set. Ia is as follows :—

Af

ni